शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

सत्र–1

आधुनिक हिंदी साहित्य–I

सत्र–2

आधुनिक हिंदी साहित्य–II

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2024-25 से)

बी. ए. भाग–1 हिंदी

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2024
बी. ए. भाग 1 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 300

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-48427-53-3

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. के. बी. पाटील (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ हिंदी अध्ययन मंडल ■

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. सातापा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. (डॉ.) नितीन चंद्रकांत धावडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.
- **प्रो. (डॉ.) वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा
- **प्रो. (डॉ.) अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग–1 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को अध्ययन सामग्री सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। बी. ए. 1 के छात्र प्रस्तुत स्वयं–अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संबंध नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक–वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन–सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री बी. ए. 1 के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। इकाई लेखकों ने अपनी–अपनी इकाईयों का लेखन समय पर पूरा कर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, कुलसचिव, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय विकास मंडल के संचालक, दूरशिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी सदस्यों ने समय–समय पर आवश्यक सहयोग दिया। अतः इन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

धन्यवाद।

– संपादक

	सत्र 1	सत्र 2
★ **प्रो. (डॉ.) नाजिम शेख** श्री. विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठवडगाव, जि. कोल्हापुर	**1**	**-**
★ **प्रो. (डॉ.) सुनील बनसोडे** जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर	**2**	**-**
★ **डॉ. गोरख बनसोडे** सरदार बाबासाहेब माने महाविद्यालय, रहिमतपुर, जि. सातारा	**3**	**-**
★ **श्री. संतोष साळुंखे** नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस ॲण्ड कॉमर्स, इचलकरंजी, जि. कोल्हापुर	**4**	**-**
★ **डॉ. गजानन चव्हाण** श्रीमती गंगाबाई खिवराज घोडावत कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपुर	**-**	**1**
★ **डॉ. संग्राम शिंदे** आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा	**-**	**2**
★ **डॉ. संजय चोपडे** दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर	**-**	**3**
★ **डॉ. नरसिंग एकिले** शिवराज कॉलेज ऑफ आर्टस ॲण्ड कॉमर्स, गडहिंग्लज, जि. कोल्हापुर	**-**	**4**

■ **सम्पादक** ■

डॉ. गजानन चव्हाण
श्रीमती गंगाबाई खिवराज घोडावत कन्या
महाविद्यालय, जयसिंगपुर, जि. कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) सुनील बापू बनसोडे
तुळजाराम चतुरचंद कॉलेज,
बारामती, जि. पुणे

अनुक्रमणिका

इकाई		पाठ्यविषय	पृष्ठ
		सत्र-1 आधुनिक हिंदी साहित्य-I	
1.	1.	जो बीत गई सो बात गई - हरिवंशराय बच्चन	1
	2.	कृष्ण की चेतावनी - रामधारी सिंह 'दिनकर'	
	3.	कठपुतली - आचार्य निशांतकेतु	
2.	4.	शहर (गजल) - जहीर कुरेश	22
	5.	प्रश्न - जयप्रकाश कर्दम	
	6.	रीढ़ - कुसुमाग्रज	
3.	7.	फर्क, ईश्वर का चेहरा, पानी की जाति (तीन लघुकथाएं) - विष्णु प्रभाकर	45
	8.	दोपहर का भोजन (कहानी) - अमरकांत	
	9.	ढाई बीघा जमीन (कहानी) - मृदुला सिन्हा	
4.	10.	बूढ़े जीवन की एक रात - डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल	67
	11.	काला सागर - तेजेंद्र शर्मा	
	12.	टूटते तट बंध - भगवानदास मोरवाल	
		सत्र-1 आधुनिक हिंदी साहित्य-II	
1.	1.	'उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप'	105
	2.	''नीलोत्पल मृणाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''	
2.	1.	डार्क हॉर्स उपन्यास की कथावस्तु	122
	2.	डार्क हॉर्स उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता	
	3.	डार्क हॉर्स उपन्यास में चित्रित समस्याएं।	
3.	1.	डार्क हॉर्स - उपन्यास में पात्र एक चरित्र-चित्रण	150
	2.	डार्क हॉर्स - उपन्यास में कथोपकथन	
	3.	डार्क हॉर्स - उपन्यास का देश काल तथा वातावरण	
4.	1.	डार्क हॉर्स उपन्यास की भाषा-शैली	181
	2.	डार्क हॉर्स उपन्यास का उद्देश्य	

हर इकाई की शुरूआत उद्‌देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्‌वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्‌ध होगी।

इकाई –1 कविता

1.1 जो बीत गई सो बात गई – हरिवंशराय बच्चन

अनुक्रम –

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय विवेचन
   - 3.1 हरिवंशराय बच्चन का परिचय
   - 3.2 'जो बीत गई सो बात गई' कविता का परिचय
   - 3.3 'जो बीत गई सो बात गई' कविता का आशय
4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1) डॉ. हरिवंशराय बच्चन के जीवन एवं साहित्य से परिचित होंगे।

2) डॉ. हरिवंशराय बच्चन के हालावादी विचारों से परिचित होंगे।

3) 'जो बीत गई सो बात गई' कविता में व्यक्त यथार्थवादी विचारों से परिचित होंगे।

4) 'जो बीत गई सो बात गई' कविता के आशय से परिचित होंगे।

5) जीवन की सच्चाई का सामना कैसे किया जाता है इसे समझ पाएंगे।

2. प्रस्तावना

हरिवंशराय बच्चन हालावाद के अत्यंत महत्वपूर्ण कवि रहे हैं। बच्चन जी का पूरा काव्य समाज को प्रेरणा देनेवाला काव्य है। स्वतंत्रपूर्ण और स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की मूल समस्याओं को बच्चन जी ने प्रस्तुत किया है। बच्चन जी हालावाद के प्रवर्तक, मधु काव्य के प्रमुख लोकप्रिय कवि, सामाजिक रुढियों के प्रबल विरोध कवि के रूप में पूरे हिंदी साहित्य जगत में लोकप्रिय रहे। भाषा की सहजता, अभिव्यक्ति की सरलता यह आपके काव्य की प्रमुख विशेषता रही है। 'जो बीत गई सो बात गई' कविता में जीवन की सच्चाई को अभिव्यक्त किया गया है। व्यवहारिक जीवन के कई उदाहरण देकर उन्होंने बताया है कि हम सब को बीती हुई घटनाओं को भूला देना चाहिए, जो बीत गया उसे छोड देकर आगे बढ़ने में ही - जीवन की सार्थकता है। बीता हुआ कितना ही सुखदायक, सुहावना और मधुर क्यों न हो लेकिन उसके जाने के बाद जो सच्चाई है, उसे स्वीकारना ही बुद्धिमानी है। जीवन के सत्य को बतलाती बच्चन जी की प्रस्तुत कविता अखंड मानव जाति को जीवन जीने का सही रास्ता दिखाती है।

3. विषय विवेचन

3.1 हरिवंशराय बच्चन का परिचय

जन्म: हरिवंशराय बच्चन जी का जन्म 27 नवंबर, 1907 ई. को - इलाहाबाद के मोहल्ला में हुआ।

शिक्षा : बच्चन जी की संपूर्ण शिक्षा इलाहाबाद में ही हुई। बच्चन जी ने हाईस्कूल की अध्यापकी करते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा आगे इंग्लैंड के कैंब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

नौकरी : अपने नौकरी की शुरुआत बच्चनजी ने 'दै. पायोनियर' समाचारपत्र में संवाददाता के रूप में की, आगे चलकर उन्होंने इलाहाबाद के अग्रवाल विद्यालय में अध्यापक का कार्य किया। कुछ दिनों तक - इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहे। कुछ दिन आकाशवाणी इलाहाबाद में प्रोड्यूसर रहे तथा अंत में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया।

रचनाएँ

काव्य : मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमंत्रण, एकांत-संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, बंगाल का काल, सूत की माला, खादी के फूल, मिलन यामिनी, प्रणय-पत्रिका, धार के इधर-उधर, आरती और अंगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभंगिमा, चार खेमे चौंसठ खूँटे, दो चट्टानें, तेरा हार, जाल समेटा, बहुत दिन बीते, उभरते प्रतिमानों के रूप ।

अनुदित काव्य : उमर खैय्याम की मधुशाला, जनगीता, खैय्याम की रुबाइयाँ, चौंसठ रुसी कविताएँ, नागर गीता

गद्य–कृतियाँ आत्मकथा : क्या भूलूँ क्या याद करूं, नीड का निर्माण फिर, टूटी छूटी कडियाँ, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक।

कहानियाँ : प्रारंभिक रचनाएँ भाग 1,2,3.

निबंध : नए पुराने झरोके

अन्य : राजनीतिक जीवन चरित, कवियों में – सौम्य संत।

पुरस्कार/सम्मान : 1. साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2. सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, 3. सरस्वती सम्मान, 4. पद्म भूषण

3.2. 'जो बीत गई सो बात गई' कविता का परिचय

'जो बीत गई सो बात गई' यह बच्चन जी की अत्यंत लोकप्रिय कविता है। प्रस्तुत कविता में कवि ने जीवन की वास्तविकता को रेखांकित किया है। हमारा जीवन बहुत ही छोटा है, इस कई लोग मात्र जीने के लिए जीते हैं। लेकिन कवि को लगता है कि इस जीवन में हम आनंद लेकर जीएगें तो यह जीवन सार्थक सिद्ध होगा। कवि जीवन की सार्थकता पर विश्वास करते हैं। वे बीती हुई – घटनाओं को को भूलने की सलाह देते हैं। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में ऐसे कई प्रसंग आते रहते हैं जो उसे कष्ट देनेवाले लगते हैं लेकिन उसपर सोचने से क्या हासिल होगा, उसे भूलाकर आगे बढ़ने में ही आनंद है। कवि ने व्यवहारिक जीवन के कई उदाहरण देकर यह बताने का प्रयास किया है कि 'जो बीत गई सो बात गई' समझकर आगे चलने में ही जीवन की सार्थकता है। व्यक्ति के जीवन में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के क्षण आते हैं। बीते हुए आनंदी क्षण चाहे जीतने भी सुखर सुहावने एवं मधुर क्यों न हो लेकिन उन क्षणों के बीतने के बाद जीवन की सच्चाई का ही हमे सामना करना पड़ता है। वैसे ही हर एक के जीवन में कई क्षण ऐसे आते हैं जो दु:खदायक होते हैं, लेकिन वह क्षण भी बीतते हैं। इन क्षणों के बीतने के पश्चात व्यक्ति को फिर से नए जीवन की शुरुआत करनी चाहिए। बच्चन जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से यही महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

3.3 'जो बीत गई सो बात गई' कविता का आशय

हरिवंशराय बच्चन हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के हालावादी काव्य के प्रवर्तक रहे। आपके प्रारंभिक काव्य पर उमर खय्याम तथा मौलाना रुम के फारसी काव्य का बड़ा प्रभाव रहा। बच्चन जी ने हालावादी काव्य के माध्यम से जीवन की क्षणभंगुरता को रेखांकित किया है। साथ ही इस काव्य में सामाजिकता भी है जिससे मनुष्य को वर्तमान सच्चाई का पता चलता है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से बच्चन जी ने व्यवहारिक जीवन के कई उदाहरण देकर यह स्पष्ट किया है कि जीवन में कई प्रकार के उतार–चढ़ाव आते रहते हैं। जो व्यक्ति इन उतार चढ़ाओं को भूलकर जीवन की वास्तविकता का सामना करता है वही व्यक्ति अपने जीवन में सफल सिध्द होता है, और जो व्यक्ति बीती हुई घटनाओं पर ही सोचता रहता है वह व्यक्ति अपने जीवन में आगे बढ नहीं सकता।

कवि स्पष्ट शब्दों में जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत करते हैं। वे कहते हैं कि व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा में अपने विभिन्न जीवनानुभव से गुजरता है यह अनुभव कभी सुखद होते हैं तो कभी अत्यंत दुखद् होते हैं। इन दोनों अनुभवों का सामना करनेवाला व्यक्ति इन दोनों अनुभवों को भूल कर आगे चलेगा तभी इसका जीवन सार्थक सिध्द होगा। कवि ने इसके लिए अंबर में खिलनेवाले सितारे का उदाहरण दिया है। अंबर में अंनत सितारे होते हैं। इसमें वे कितने ही टूट जाते हैं, कितने ही सितारे अंबर से छूट जाते हैं, जो अंबर से एक बार छूट जाते हैं या टूट जाते हैं वह फिर अंबर से कहाँ मिल पाते हैं, लेकिन इसपर अंबर कहाँ शोर मचाता है वर तो जो बीत गई सो बीत गई कहकर आगे चलते रहता है। कवि अंबर के माध्यम से मानव को यह बात समझाते हैं कि, हमे भी अंबर की तरह ही शोक को भूलना चाहिए और अपने जीवन-प्रवाह में आगे बढ़ना चाहिए।

आगे कवि ने मधुवन का उदाहरण देकर हमें इसी बात को समझाना चाहा है। वे कहते हैं- एक वक्त होता है जब पूरा मधुवन हरा-भरा होता है, सभी ओर बहार ही बहार होती है लेकिन जब - पतझड का मौसम आता है तब इसी मधुवन की सारी कलियाँ सूख जाती हैं। इसकी बेहरियाँ मुर्झा जाती हैं, फूल भी सूख जाते हैं। जो सूख जाते हैं वे कहाँ खिल पाते हैं, लेकिन इन सारी घटनाओं को अपनी आँखों से देखनेवाला मधुवन कहाँ शोर मचाता है वह तो जो बीत गई सो बात गई कहकर अपने अगले कार्य में जुट जाता है। वह यह सोचता है कि मेरे जीवन का सफर अब तक उनके साथ था वहीं तक चला, अब हमें यह याद कर दुःखी होकर शोर नहीं मचाना चाहिए। हमें भी उस मधुवन की तरह ही सब-कुछ भूल कर अपना जीवन आगे बढाना चाहिए।

कवि ने मदरालय के और प्याले का उदाहरण देकर भी यही समझाया है कि व्यक्ति को दुखी नहीं होना चाहिए। कवि कहते हैं मदिराय में अनेक प्याले होते हैं इन प्यालों के आधार पर ही मदिरालय चलता रहता है। इसी मदिराय में कितने ही प्याले रोजाना टूटते रहते हैं लेकिन इन सारों के बीच मदिरालय अपने आपको संभालता है। वह अपना काम करता रहता है। जो प्याले एक बार टूट कर मिट्टी में मिल जाते हैं वे फिर उठकर मदिरा पिलाने का कार्य नहीं करते - लेकिन इतना सब-कुछ होने के बाद भी मदिरालय कब इन टूटे प्यालों पर चिल्लाता है। कवि हम सब से यही कहते हैं कि हमे जीवन के सत्य को स्वीकारना चाहिए। जो बीत गई वह लौटकर नहीं आती, इसी कारण हमेंफिर से जीना सीखाना चाहिए।

आगे कवि इसी मधुघट का उदाहरण देकर समझाते हैं कि मधुशाला के प्याले मानव की तरह ही मृदु मिट्टी के ही बने हुए होते हैं। यह अकसर फुटा ही करते हैं, लेकिन मदिरालय अपनी मदिरा को लुटाने से कब ठहरता है। वह तो अपनी मादिए लुटाता ही रहता है, वह तो मधु पिलाता ही रहता है। मनुष्य को भी अपने जीवन में ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए, चाहे जितना जो हो जाए रोने और चिल्लाने से कुछ नहीं होगा, उसे अपने जीवन-पथ पर आगे बढ़ना चाहिए।

हरिवंशराय बच्चन जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से अंबर, मधुबन और मधुशाला के उदाहरणों के माध्यम से अखंड मानव जाति को यह संदेश दिया है कि मनुष्य के जीवन में दुःखद घटनाएँ आती ही रहती

हैं लेकिन इसका विचार न करते हुए जिस तरह प्रकृति किसी का विचार न करते हुए अपने पास जो है उसे बांटती रहती है वैसे ही मनुष्य को चाहिए कि वह भी जो घटना घटित हो गई उसपर विचार न करते हुए अपने पास जो है उसे दूसरों पर न्योछ।वर करते रहना चाहिए। अपने दुःख को भूलकर जीवन में नए रंगों को भरते रहना चाहिए, यही सही अर्थ में जीवन का तत्वज्ञान है।

4. स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1) हरिवंशराय बच्चन .... काव्य के प्रवर्तक रहे।

अ) छ।यावाद ब) प्रगतिवाद क) प्रयोगवाद ड) हालावाद

2) हरिवंशराय बच्चन का जन्म.............. में हुआ।

अ) दिल्ली ब) मुंबई क) इलाहाबाद ड) कानपुर

3) हरिवंशराय बच्चन की कविता पर ....कवि का प्रभाव रहा।

अ) उमर खय्याम ब) कबीर क) सूरदास ड) तुलसीदास

4) 'जो बीत गई सो बात गई' कविता का मुख्य स्वर .... है।

अ) निराशावादी ब) आशावादी क) प्रगतिवादी ड) छ।यावादी

5) 'जो बीत गई सो बात गई' में कविता में जीवन की .... को चित्रित किया गया है।

अ) अस्तित्व ब) निराशा क) सच्चाई ड) बुराई

6) 'जो बीत गई सो बात गई' कविता में .... के माध्यम से हमें समझाया गया है।

अ) प्रकृति ब) समाज क) राजनेता ड) धर्म

7) जीवन में एक .... था, माना वर बेहद प्यारा था।

अ) चाँद ब) सूरज क) सितारा ड) तारा.

8) बच्चन जी .... को भूलाना चाहते हैं।

अ) दुःख ब) मधुबन क) सितारा ड) अंबर

9) .... टूटने से मदिरालय कब पछताता है।

अ) घट ब) मटका क) प्याला ड) घडा

10) सुखी कितनी इसकी .... मुर्झाई कितनी वल्लियाँ।

अ) बेला ब) कलियाँ क) फूल ड) टहनियाँ

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1) अंबर – आकाश

2) आनन – मुख, चेहरा

3) कुसुम – फूल

4) वल्लरियाँ – लताएँ

5) मधु–घट – शराब का घडा.

6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1) हालावाद	2) इलाहाबाद	3) उमर खय्याम	4) आशावादी
5) सच्चाई	6) प्रकृति	7) सितारा	8) दुःख
9) प्याला	10) कलियाँ		

7. सारांश

1) 'जो बीत गई सो बात गई' कविता में जीवन की सच्चाई को अभिव्यक्त किया गया है।

2) कवि स्पष्ट करते हैं कि, जीवन में जो घटना घटित हुई, उसे भुला देना, छोड देना और आगे बढ़ने में ही जीवन की सार्थकता है।

3) बीता हुआ कितना ही सुखदायक, सुहावना और मधुर क्यों न हो लेकिन उसके जाने के बाद जो सच्चाई है, उसे स्वीकारना ही उचित है।

4) कवि प्रकृति के माध्यम से मनुष्य को आगे बढ़ने की सलाह देते हैं।

5) सम्पूर्ण कविता में हरिवंशराय बच्चन भी का आशावादी स्वर दिखाई देता है।

8. स्वाध्याय

8.1 लघुत्तरी प्रश्न :

1) 'जो बीत गई सो बात गई' कविता में चित्रित प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डालिए।

2) 'जो बीत गई सो बात गई' में अभिव्यक्त आशावादी स्वर पर प्रकाश डालिए।

8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'जो बीत गई सो बात गई' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।

2) 'जो बीत गई सो बात भाई' कविता में कवि बच्चन बच्चन जी ने कौनसी समस्या का चित्रण किया है।

8.3 संदर्भ व्याख्या

वह कच्चा पीनेवाला है
जिसकी ममता घट-प्यालों पर,
जो सच्चे मधु से जल हुआ
कब रोता है, चिलाता है!
जो बीत गई सो बात गई।

9. क्षेत्रीय कार्य

1) 'जो बीत गई सो बात गई' कविता का मराठी में अनुवाद कीजिए।

2) हरिवंशराय बच्चन की तरह मराठी में लिखनेवाले कवियों की सूची बनाईए।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) मधुशाला - हरिवंशराय बच्चन

2) मधुबाला - हरिवंशराय बच्चन

3) मधुकलश - हरिवंशराय बच्चन

***

1.2 कृष्ण की चेतावनी – रामधारी सिंह 'दिनकर'

अनुक्रम

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विष्य विवेचन
    3.1 रामधारी सिंह 'दिनकर' का परिचय
    3.2 'कृष्ण की चेतावनी' कविता का परिचय
    3.3 'कृष्ण की चेतावनी' कविता का आशय
4. स्वयं अध्यायन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1) रामधारी सिंह 'दिनकर' के जीवन एवं साहित्य से परिचित होंगे ।
2) रामधारी सिंह 'दिनकर' के विचारों से परिचित होंगे।
3) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता की ऐतिहासिकता से परिचित होंगे।
4) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता के आशय से परिचित होंगे।
5) कृष्ण की चेतावनी' कविता के माध्यम से महाभारत के सत्य को समझ पाएंगे।

2. प्रस्तावना

रामधारी सिंह 'दिनकर' स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर काल के अत्यंत महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उनकी कविताओं में भाषा की ओजस्विता, ललकार तथा भारतीय अतीत के प्रति गहरा प्रेम दिखाई देता है। राष्ट्रप्रेम उनकी कविताओं में कूट-कूट कर भरा है। उनकी कविताओं में प्राचीन भारत के गौरव का स्मरण तथा गान हुआ है। दिनकर जी मूलतः एक क्रांतिकारी राष्ट्रकवि के रूप विख्यात हैं। भारतीय जनता के दुख-दर्द के प्रति उनके मन में अपार संवेदना है। उनकी कविताओं में शोषितों का पक्ष तथा शोषकों का विरोध

देखा जा सकता है। दिनकर जी ने हिंदी कविता को छायावाद के दायरे वे बाहर निकाला तथा उस में जीवन का तेज भरा और उसे राष्ट्र और समाज की ज्वलंत समयाओं से जूझना सिखाया। अपनी आरंभिक कविताओं में सौंदर्य और उमगों का तरंग भरनेवाले दिनकर जी ने उत्तरोत्तर प्रगतिवाद तथा मानवतावाद की व्यापक भावनाओं से अपनी कविता को समृध्द किया।

3. विषय विवरण

3.1 रामधारी सिंह 'दिनकर' का परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, 1908 में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया घाट में हुआ। आपका परिवार एक सामान्य किसान परिवार था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण पाठशाला में हुई। आगे उन्होंने मोफामा घाट से हायस्कूल की तथा पटना कॉलेज से स्नातक तक की शिक्षा पूरी की। बी.ए. होने के पश्चात उन्होंने स्कूल अध्यापक की नौकरी की। उसके बाद सीतामढी मेंसब-रजिस्ट्रार बने । द्वितीय महायुद्ध के दौरान उन्होंने सरकारी विभाग में काम किया तथा 1947 के बाद वे बिहार सरकार के शिक्षा विभाग में उपनिदेशक पद पर रहे। 1950 में मुजफ्फरपुर के महाविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के रूपमें काम किया। सन 1952 में उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया तथा अंत में आप भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी बने। इस प्रकार दिनकर जी अपने जीवन-काल में विविध पदों पर कार्यरत रहे।

रचनाएँ

काव्य : रेणुका, हुंकार, द्वंद्वगीत, कुरुक्षेत्र, सामधेनी, बापू, धूप और धुँआ, रश्मिरथी, नीलकुसुम, सीपी और शंख, परशुराम की प्रतीक्षा, कोयला और कवित्व, आत्मा की आँखे, हारे को हरिराम, इतिहास के आँसू, नीम के पत्ते, चक्रवात, उर्वशी, रसवंती।

आलोचना और निबंध : मिट्टी की ओर, अर्ध नारीश्वर, वेणुवन, रेती के काठ, काव्य की भूमिका, पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण वह-पीपल, शुद्ध कविता की खोज।

सांस्कृतिक इतिहास : संस्कृति के चार अध्याय, हमारी सांस्कृतिक एकता, धर्म, नैतिकता और विलान।

यात्रा वृत्तांत और संस्मरण : देश-विदेश, लोक देव: नेहरू।

सम्मान –

इतनी विपुल साहित्यिक उपलाब्धियो के उपरांत में उन्हें भागलपुर विश्वविद्यालय ने सन 1962 ई. में डी. लिट. उपाधि से सम्मानित किया। सन 1969 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' सम्मान से सम्मानित किया गया। सन 1960 में 'संस्कृति के चार अध्याय' पर उन्हें साहित्य अकादमी सम्मान प्राप्त हुआ तथा

सन 1973 में उन्हें 'उवर्शी' काव्य के लिए भारतीय साहित्य का सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मृत्यु – ऐसे इस महान राष्ट्रकवि दिनकर जी की मृत्यु 24 अप्रैल, 1974 ई. में अकस्मित रूप से मद्रास में हुई।

3.2. 'कृष्ण की चेतावनी' कविता का परिचय

दिनकर जी की 'कृष्ण की चेतावनी' कविता उनके 'रश्मिरथी' काव्य से ली गई है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से दिनकर जी ने – कृष्ण ने दी हुई चेतावनी का उल्लेख किया है। श्री कृष्ण ने अपने पूरे- जीवन में न्याय का पालन किया और धर्म की रक्षा की, उन्होंने अधर्मियों को धर्म पर चलने की प्रेरणा दी। प्रातुत कविता के माध्यम से वे सब को धर्म और न्याय के मार्ग पर चलने का संदेश देते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि अधर्म का हम सब को सख्त विरोध करना चाहिए। धर्म और न्याय के मार्ग से ही समृद्धि और शांति स्थापित हो सकती है। संक्षेप में दिनकर जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मानवता के मूल्यों को उजागर किया है, साथ ही व्यक्ति को अहंकार को त्याग कर अपने आप में नैतिक मूल्यों की स्थापना करने की बात की है।

3.3. 'कृष्ण की चेतावनी' कविता का आशय

'कृष्ण की चेतावनी' कविता रामधारी सिंह 'दिनकर' के प्रसिद्ध ग्रंथ 'रश्मिरथी' से ली गई है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से दिनकर जी ने इतिहास के पन्नों को फिर से उजागर किया है साथ ही मानव – स्वभाव के विभिन्न पहलुओं को दिखाने का प्रयास किया है। पांडव – इतने दिनों के वनवास के पश्चात फिर हास्तिनापुर पहुँचते हैं, तब श्रीकृष्ण पांडवों को लेकर कौरवों के पास पहुँचते हैं और उन्हें मात्र पांच गांव की मांग करते हैं लेकिन दुर्योधन सुई की नोक के बराबर भी जमीन देने के लिए तैयार नहीं होता। जब-जब कृष्ण ने पांडवों का पक्ष लेकर कौरवों से कुछ मांगा है तब-तब उन्होंने साफ इन्कार ही किया है।

दिनकर जी ने प्रस्तुत कविता में इसी घटना को सामने रखकर कहा है वर्षो तक वन में घूम-घूम कर असंख्य कठिनाईयों का सामना कर, अनेक बाधाओं को पार कर, धूप-छांव का सामना करते हुए पांडव जब वापस आये तब मानो और निखरकर आए प्रतित होते थे। कृष्ण यह चाहते थे कि अब-तक जो हुआ सो हुआ अब पांडव इतने वर्षों के पश्चात वापस लौटकर आए हैं, उनका हमें सब मिलकर स्वागत करना चाहिए और कौरवों को फिर से उनके साथ मैत्री के द्वार खोल देने चाहिए। कृष्ण के मन में यह स्पष्ट था कि इतने वर्षों के बाद अब कौरव सारी घटना को भूल गए होंगे, मेरे कहने पर वे फिर एक बार पांडवों के साथ मैत्री करने तैयार हो जाएंगे। कवि कहते हैं कृष्ण कौरवों को मैत्री की राह दिखाने को, कौरवों और पांडवों को फिर एक बार सुमार्ग पर जाने के लिए, दुर्योधन को समझाने के लिए और आगे चलकर होनेवाले भीषण विध्वंस को बचाने के लिए हास्तिनापुर आते हैं। पांडवों का शुभ-संदेशा कौरवों के सामने रखते हैं।

श्री कृष्ण कौरवों को समझाते हैं न्याय तो यह होगा कि पांडवों को आधा राज्य दे दो लेकिन इसमें अगर तुम्हें कुछ- गलत लग रहा है तब मैं केवल उनके लिए पाँच गांवों की मांग करता हूँ, उन्हें मात्र पाँच गाँव दो। इतने पर वे सब खुश होंगे किसी के सामने हाथ नहीं फैलाएंगे। लेकिन दुर्योधन ने स्पष्ट रूप से इसे देने से इन्कार कर दिया। भरी सभा में सब के सामने कहा पांच गांव तो क्या मैं हम एक इंच भूमि भी पांडवों को नहीं देंगे। उलटे दुर्योधन ने श्री कृष्ण को ही कुछ सुनाया। दिनकर जी लिखते हैं पूरे राज्य में से केवल पांच गांव मांग कर पांडव अपना बचा-कुचा जीवन चैन-सुख-शांति से जीना चाहते थे लेकिन कौरवों के पास उतनी दानत भी न थी कि वे पांडवों को मात्र पांच गांव दे दे। कवि करते हैं दुर्योधन अब तक पांडवों ने क्या क्या किया है इसी को दोहराने लगा। दिनकर भी कहते हैं जब विनाश का होगा तय हो जाता है तब सब से पहले आदमी के अंदर का विवेक पूर्ण खत्म होता है। ठीक वैसे ही हुआ कौरवों के अंदर का विवेक पूर्ण खत्म हुआ।

दुर्योधन के इस प्रकार के उत्तर को सुनकर श्री कृष्ण प्रचंड क्रोधित हुए। कौरवों से पांच गांव के मांगने के पीछे भगवान श्रीकृष्ण का किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं था, वे यह चाहते थे कि कौरव और पांडवों के बीच की दूरी हमेशा के दिए खत्म हो जाए दोनों हमेशा सुख-चैन से अपना जीवन व्यतित करे, दोनों के बीच भविष्य में भी कभी युद्ध न हो। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण की बात मानने के लिए कौरव तैयार न हुए तब श्री कृष्ण कुपित होकर बोले तुम युद्ध ही करना चाहते हो तो सब से पहले जंजीरों में मुझे बांध लो। जब तक तुम मुझे बाँधकर घायल नहीं करोगे तब-तक तुम पांडवों से- युद्ध नहीं कर सकते। आगे श्रीकृष्ण स्पष्ट वाणी में कहते हैं यह गगन में बहनेवाली पवन मेरे अंदर समाई हुई है। मैं केवल संसार के सुख के लिए यह सब-कुछ करना चाहता था, संसार का सुख इसी में है कि फिर से कोई नर-संहार न हो, सभी मानव अपना जीवन- सुख-चैन से व्यतित करें।

दुर्योधन के इस प्रकार के प्रतिउत्तर से श्रीकृष्ण का मन विदिग्न हो गया। वे सोचने लगे कि मनुष्य की प्रवृत्ति किस प्रकार की है। उसे चाहे जितना सहलाया जाए, सुधारने की कोशिश की जाए लेकिन वह अपनी प्रवृत्ति से बाज नहीं आता। स्वार्थ मनुष्य की प्रवृतिगत विशेषता है, कौरव केवल स्वार्थ के कारण पांडवों से द्वेष करते हैं और उन्हें उन्होंने मांगे पांच गांव के देने से भी इन्कार करते हैं। यह कविता इसलिए भी प्रासंगिक है कि इस में कवि ने कौरवों के माध्यम से वर्तमान मनुष्य की प्रवृत्तियों को भी रेखांकित किया है।

श्रीकृष्ण अंत में दुर्योधन से स्पष्ट शब्दों में कहते हैं अगर तुम्हें पांडवों ने दिया हुआ प्रस्ताव मान्य न होगा तो युद्ध अटल है। तुम मुझे जंजीरों से बांध लो अर्थात इसके आगे मैं तुम दोनों में सलाह नहीं कर सकता अब युध्द अटल हो गया है। श्रीकृष्ण कौरवों को अब-तक घटी घटनाएँ देखने कहते हैं। स्पष्ट रूप से कहते है इस धरती ने अब-तक महाभारत का रण-क्रदन देखा है, मृतकों से पडी हुई भूमि देखी है। फिर से यह सब हो यह कोई नहीं चाहता लेकिन युध्द जब अटल हो जाता है तब उसे स्वीकार किए बगैर चारा नहीं होता। श्रीकृष्ण दुर्योधन से कहते हैं जो वचन अब-तक तुम ने दिए थे उसे तुमने माना नहीं जो मैत्री हम में अब-तक थी उसे तुम ने पहचाना नहीं, अब युद्ध के बगैर कोई मार्ग नहीं बचा। कृष्ण को युद्ध मान्य नहीं है लेकिन जब वह अनिवार्य हो जाता है तब उसे किए बगैर कोई रास्ता बाकी नहीं बचता।

संक्षेप में प्रस्तुत कविता 'कृष्ण की चेतावनी' के माध्यम से दिनकर जी ने हम सब को भी यही संदेश दिया है कि इतिहास में जो घटनाएँ घटित हुई हैं उस से हमें सीखना चाहिए । हमारा जीवन न्यायपरायण जीवन हो। श्रीकृष्ण ने अपने पूरे जीवन में न्याय का पालन किया और कर्म की रक्षा की। उन्होंने अधार्मियों को न्याय के धर्म के रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी। प्रस्तुत कविता 'श्रीकृष्ण की चेतावनी' हमें यह सीख देती है कि हमें न्याय के मार्ग पर चलना चाहिए। जहाँ पर भी अधर्म, अन्याय देखे उसके विरोध में खडा रहना चाहिए। श्रीकृष्ण ने जहाँ कौरवों द्वारा अधर्म और अन्याय की बात देखी वहाँ उन्होंने उन्हें ललकारा, उनके विरोध में युद्ध की बात कही। प्रस्तुत कविता हमें जीने का सही मार्ग दिखाती है। सत्य के साथ जीने में ही जीने की सार्थकता है इसे बताती है। सत्य के साथ जीने में ही समृद्धि और शांति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है। श्रीकृष्ण कहते हैं कौरवों के विरोध का परिणाम भयंकर हो सकता है। अब याचना नहीं युद्ध होगा, पांडव अपने अधिकार के लिए युद्ध करेंगें तब यह बात श्रीकृष्ण को भी मान्य नहीं होती लेकिन सत्य और धर्म के लिए यह अनिवार्य होता है तब उन्हें यह सब करना पड़ता है। यह कविता एक ओर सत्य एवं न्याय के पक्ष को रेखांकित करती है तो दूसरी और भारतीय संस्कृति और मानवता के मूल्यों को भी दिखाती है।

4) स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1) रामधारी सिंह 'दिनकर' को क्रांतिकारी .... के रूप पहचाना जाता है।

अ) राष्ट्रकवि ब) राज्यकवि क) इतिहास कवि ड) अहिंसा कवि

2) रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म............ में हुआ।

अ) रोवली ब) वाराणसी क) सिमरिया ड) कानपुर

3) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता .... काव्य संग्रह से गई है।

अ) कुरुक्षेत्र ब) रश्मिरथी क) उर्वशी ड) कलम और तलवार

4) रामधारी सिंह 'दिनकर' जी को .... काव्य पर भारत का सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अ) कलम और तलवार ब) उर्वशी

क) रश्मिरथी ड) कुरुक्षेत्र

5) 'कृणा की चेतावनी' कविता .... पर आधारित कविता है।

अ) रामायण ब) महाभारत क) कलयुग ड) मध्ययुग

6) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में पांडव कौरखों से .... गांव मांगते हैं।

अ) दो ब) तीन क) चार ड) पांच

7) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में श्री कृष्ण ....को चेतावनी देते हैं।

अ) पांडवों ब) कौंरवो क) हनुमान ड) सुग्रीव

8) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में श्री कृष्ण का ………… रूप दिखाई देता है ।

अ) मानवीय ब) अमानवीय क) रूद्र ड) शंकित

9) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता आज भी ………… लगती है।

अ) अप्रासंगिक ब) प्रासंगिक क) सत्य ड) अर्धसत्य

10) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में पांडवों पर हुए ………… का वर्णन है ।

अ) अत्याचार ब) हिंसा क) अन्याय ड) विभिशिखा

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1) विघन – बाधा

2) विध्वंस – विनाश

3) आशीष - आशीर्वाद

4) असाध्य - जो साध्य होनेवाला नहीं है वह.

5) विवेक – विचार

6) हुँकार – पुकार

7) पवन - हवा

8) संहार– विनाश

9) अमरत्न – कभी न खत्म होनेवाला

10) दृग - आंखे

11) ब्रहमाण्ड- संपूर्ण विश्व

12) सरिता – नदीं

6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1) राष्ट्रकवि 2) सिमरिया 3) रश्मिरथी 4) उर्वशी

5) महाभारत 6) पाँच 7) कौरव 8) मानवीय

9) प्रासंगिक 10) अत्याचार

7. सारांश

1) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में कृष्ण द्वारा कौरवों को दी चेतावनी को व्यक्त किया गया है।

2) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में वनवास से लौटे पांडव कृष्ण के माध्यम से कौरवों को केवल पांच गांव मांगते हैं लेकिन कौरव एक इंच भी भूमि पांडवों को देने से साफ इनकार करते हैं।

3) कौरवों को पांच गांव देने से इन्कार करने के पश्चात भी कृष्ण का मानवीय रूप ही दिखाई देता है।

4) श्री कृष्ण दुर्योधन को जीवन के सही मार्ग पर चलने की चेतावनी देते हैं।

5) अंत में कृष्ण न्याय पालन न करनेवाले दुर्योधन को युद्ध की चेतावनी देते हैं।

6) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में भारतीय संस्कृति एवं मानवता के मूल्यों को दिखाया गया है।.

8. स्वाध्याय

8.1 लघुत्तरी प्रश्न

1) 'कृष्णा की चेतावनी' कविता में चित्रित कृष्ण की मानवीयता पर प्रकाश डालिए।

2) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में कृष्ण युध्द करने क्यों तैयार होते हैं। स्पष्ट कीजिए।

8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।

2) 'कृष्ण की चेतावनी' कविता में भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों का सुंदर चित्रण हुया है। स्पष्ट कीजिए।

8.3 संदर्भ व्याख्या

1) दोन न्याय अगर तो आधा दो
पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पांच ग्राम
रखखो अपनी धरती तमाम ।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उढायेंगे।

9. क्षेत्रीय कार्य

1) राष्ट्रकवि दिनकर के समान मराठी में कविता लिखनेवाले वि. वा. शिरवाडकर 'कुसुमाग्रज' जी की मराठी कविताओं का संकलन कीजिए।

2) दिनकर जी की राष्ट्रीय कविताओं का संकलन कीजिए।

10) अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) रामधारी सिंह 'दिनकर' – विजेंद्र नारायण सिंह

2) रश्मिरथी – दिनकर

3) रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य एक अनुशीलन– डी. गिरीश चंद्र पाल.

4) दिनकर और कुरुक्षेत्र– डॉ. तारकनाथ बाली.

5) हमारे प्रतिनिधि कवि – विश्वंभर 'मानव'

***

इ) कठपुतली – आचार्य निशांतकेतु

अनुक्रम

1. उद्देश्य

2. प्रस्तावना

3. विषय विवेचन

   3.1 आचार्य निशांतकेतु का परिचय.

   3.2 'कठपुतली ' कविता का परिचय

   3.3 'कठपुतली' कविता का आशय

4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

7. सारांश

8. स्वाध्याय

9. क्षेत्रीय कार्य

10. अतिरिक्त अध्ययन के किए

1. उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1) आचार्य निशांतकेतु के जीवन एवं साहित्य से परिचित होंगे।

2) आचार्य निशांतकेतु के विचारों से परिचित होंगे।

3) 'कठपुतली' कविता में व्यक्त यथार्थवादी विचारों से परिचित होंगे ।

4) 'कठपुतली' कविता के आशय से परिचित होंगे।

5) 'कठपुतली' कविता में अभिव्यक्त मनुष्य जीवन की प्रवृत्ति से परिचित होंगे।

2. प्रस्तावना

आचार्य निशांतकेतु आधुनिक हिंदी कविता के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे। आचार्य जी का पूरा साहित्य समाज को प्रेरित करनेवाला साहित्य है। आम आदमी की वास्तविक समस्याओं का चित्रण उनके संपूर्ण

साहित्य में मिलता है। स्वतंत्रता के पश्चात वर्गहीन शोषणरहित प्रजातंत्र का सपना आचार्य निशांतकेतु जी ने देखा था। लेकिन वर्तमान प्रजातंत्र के गलत इस्तमाल की वजह से कवि का यह सपना अधूरा रहा। वर्तमान के प्रजातंत्र को उन्होंने मूल से बदलने की मांग की। प्रस्तृत कविता के माध्यम से भी कवि वर्तमान मनुष्य मात्र कठपुतली बन बैठा है इसे दिखाने का प्रयास किया है। कवि कहते हैं जब-तक हम अपनी आवाज को बुलंद कर व्यवस्था तक नहीं पहुँचाएंगे तब-तक यह सब-कुछ वैसा ही चलता रहेगा। कवि ने आम आदमी के माध्यम से व्यवस्था में बदलाव की मांग की है।

3. विषय विवेचन

3.1 आचार्य निशांतकेतु का परिचय

आचार्य निशांतकेतु जी का जन्म 6 जनवरी 1937 को बिहार के वैशाली ग्राम में हुआ। अपने गांव में ही प्राथमिक की शिक्षा ग्रहण करनेवाले आचार्य निशांतकेतु जी का पूरा नाम चंद्रकिशोर पांडेय है। पिता का नाम गिरिधारी पांडेय तथा माता का नाम कांचन देवी है। अपनी हायस्कूल और महाविद्यालयीन शिक्षा पटना में पूरी करने के पश्चात आचार्य निशांतकेतु जी ने पटना विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में प्रथम क्रमांक में आने का मान प्राप्त किया। सन 1960 से सन 1997 तक आप पटना विश्वविद्यालय में ही हिंदी विभाग में प्रोफिसर पद पर कार्यरत रहे ।

आचार्य निशांतकेतु जी के सौ से अधिक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें संस्मरण, ललितलेख, पुस्तक, समीक्षा, उपन्यास, कहानी-संग्रह, कविता-संग्रह, आलोचना की पुस्तकें तथा संपादित ग्रंथों का समावेश है।

प्रमुख चर्चित रचनाएँ

उपन्यास - योषग्नि, जिन्दा जख्म, सागर लहरी।

- कविता-संग्रह - रेत की उर्वर शिलाएँ, समव्यथी, ज्यालामुखी पुरुषवाक, संगतराश, त्वचा पर जो लिखे आखर, जीवेम शरदः शतम, वंदे मातरम।
- कहानी -संग्रह- दर्द का दायरा, आखरी हंसी, माटी टीला, तीसरे आदमी की शिनाखत, जख्य और चीख, अंध घाटी के टीले, उत्तर शती महा कुंभक आदि।

'कठपुतली' कविता का परिचय-

आचार्य निशांतकेतु जी की 'कठपुतली' यह अत्यंत लोकप्रिय कविता है। कवि ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से वर्तमान आम आदमी की मूल वेदना को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। कवि को लगता है कि आज भी मानव अपना जीवन कठपुतली की तरह बिता रहा है। कहने को तो हम स्वतंत्र दिख रहे हैं लेकिन हमारे अंदर झांक कर देखने से पता चलता है कि हम अपना जीवन दूसरों के इशारे पर जी रहे हैं। जिस तरह कठपुतली वर्षों से धागे में बंधी हुई है और दूसरो के उंगलियों के इशारे पर नाचती रहती है, उसे

यह महसूस तो होता है कि मेरा अपना कोई मत नहीं है, मेरा अपना कोई वजूद नहीं है, लेकिन वह मजबूर है। कवि कठपुतली की तरह जी रहे आम आदमी को उन धागों से अलग करना चाहते हैं। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं आम आदमी का जीवन कठपुतली की तरह हो गया है, उसे इस धागों के बंधनों को तोड़ना चाहिए। जिस दिन आम आदमी इन बंधनों को तोडकर खुद विचार करने लगेगा उस दिन सही अर्थ में वह मुक्त हो जाएगा। कवि आचार्य निशांतकेतु जी ने 'कठपुतली' कविता के माध्यम से आम लोगों को अपना जीवन खुद के विचार से जिने की सलाह दी है।

3.2 'कठपुतली' कविता का आशय

'कठपुतली' कविता निशांतकेतु की अत्यंत महत्वपूर्ण कविता है।आचार्य निशांतकेतु जी प्रस्तुत कविता के माध्यम से वर्तमान आम आमदी की जिन्दगी को तलाशते हैं। स्वतंत्रता के इतने वर्षों पश्चात भी आम आदमी का जीवन एक कठपुतली की तरह ही हो गया है। कवि एक थोर आदमी की जिन्दगी को तलाशते हैं तो दूसरी और आम आदमी से आग्रह करते हैं कि अपने जीवन में बदलाव लाओ, तुम्हारा जीवन एक कठपुतली की तरह हो गया है। जिस तरह उपर से तो हमें दिखाई देता है कि कठपुतली' नाच रही है लेकिन वास्तव में वह खुद नहीं नाचती बल्कि उसे नचानेवाला कोई और होता है। कवि आम जनता को कठपुतली की तरह दूसरों के इशारे पर नाचने से मना करते हैं।

कवि आम आदमी को स्पष्ट शब्दों में कहते हैं तुम कठपुतली नहीं हो प्यारे, तुम्हें खुद चलना होगा, अब तुम दूसरों के इशारे पर चलना बंद करो। तुम्हें अपनी राह खुद खोजनी होगी। कोई अदृश्य धागों में बांधकर सदियों से तुम्हें नचाता है, उसे अब स्पष्ट शदों में कहना होगा, अब हम किसी के इशारे पर नाचनेवाले नहीं हैं। हम अपना रास्ता खुद तय करेंगे। अब-तक जो हमें नचाता था हम उसे अब-तक देख ही नहीं सके इसीलिए हम अब इस डोर को काटना चाहते हैं। कवि आम आदमी से स्पष्ट शब्दों में कहते हैं इस डोर के काटने से डरो नहीं, तुम अकेले नहीं हो तुम्हारे साथ सेंकडों हैं, जो इस डोर के कांटने चाहते हैं। वे आगे कहते हैं बाहर निकालकर आओ इस चुभती हुई धूप में तपती हुई रेत पर अर्थात संकटों का सामना करने के लिए तैयार हो जाओ। संकट ही जीवन जीने का सही मार्ग दिखाता है, इसीलिए घबराओ नहीं इस चुभती हुई धूप से और तपती हुई रेत से कोई मर तो नहीं सकता। चाहे जितनी बारिश हो, उसमें भी भीगना सीखो चाहे जितना बारिश में भीगो उससे भी तुम्हें कुछ नहीं होगा। वैसे ही सर्द सर्दी के दिनों में बाहर आकर सर्दी का सामना करो, तुम्हें कुछ नहीं होगा। जब-तक तुम धूप, बारिश और सर्दी का सामना करने नहीं सीखते तबतक तुम ऐसे ही डरते दूसरों के इशारे पर नाचते रहोगे। धूप, बारिश और सर्दी से तुम्हें ज्यादा कुछ नहीं होगा, सिर्फ चोट लग सकती है जिससे तुम मरोगे तो नहीं। और- यही चोट तुम्हें ताकत देगी, तुम्हें अपने जीवन के मार्गक्रम पर बढ़ने के लिए यही चोट प्रेरित करेगी। इसी चोट से प्रेरणा लेकर तुम अब किसी के हाथों की कठपुतली नहीं बनोगे।

इसी चोट के कारण जब तुम अपना चलना खुद सीख जाओगे तब तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारा तन, तुम्हारा मन कितना मजबूत हो गया है। फिर तुम खुद ही खुद पहचान जाओगे कौन था वह जो तुम्हें अपनी

उंगलियों के इशारे पर नचाता था और खुद बैठकर आराम से तुम्हारी कमाई का पैसा हडपकर जाता था । वह कौन था जो तुम्हें नचाकर खुद सारी कमाई खा जाता था तुम न जाने कितने सदियों से भूखे हो, तुम्हें पता भी नहीं कि तुम्हारी कमाई पर जीनेवाला कोई दूसरा ही है। आम आदमी की मेहनत पर ऐश–ओ–आराम की जीन्दगी बसर करनेवाला कोई दूसरा है। कवि आम आदमी को प्रेरणा देते हुए कहते हैं तुम सदियों से भूखे हो लेकिन बेजान भी नहीं हो। तुम ने कभी बोलकर देखा ही नहीं, लेकिन तुम बेजुबान भी नहीं हो। तुम ने ही शब्दों को जन्म दिया है, तुम ही शब्दों के प्रजापति हो, तुम अपनी इच्छा के, कर्म के और ज्ञान के स्वामी हो अर्थात तुम में करने की इच्छा है, अपने कर्म से तुम सब–कुछ प्राप्त कर सकते हो और ज्ञान से तुम उस आदमी को पह्चान सकते हो, जिस ने तुम्हें इतने दिन नचाया है।

कवि आचार्य निशांतकेतु जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से भारतीय आम आदमी की वर्तमान सा स्थिति को दर्शाया है, साथ ही उसे खडा होने की प्रेरणा दी है। जब तक आम जनता उसे नचानेवाले तथा उसकी कमाई पर बैठकर खानेवाले को नहीं पहचानती तब–तक आम आदमी के जीवन में कोई बदलाव नहीं आएगा। आचार्य निशांतकेतु जी की यह कविता एक ओर आम जनता को प्रेरणा देती है तो दूसरी ओर उसे कठपुतली की तरह नचानेवाले उच्चवर्ग का भी पर्दाफाश करती है।

4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न –

1) आचार्य निशांतकेत का मूल नाम...............है।

अ) विश्वनावथ पांडेय ब) रमानाथ पांडेय

क) कुँवर पांडेय ड) चंद्रकिशोर पांडेय

2) आचार्य निशातकेतु जी का अधिकतर जीवन .... में बिता।

अ) कानपुर ब) लखनौ क) पटना ड) नागपुर

3) 'कठपुतली' कविता में...............आदमी का चित्रण हुआ है।

अ) आम ब) खास क) अमीर ड) गरीब

4) कवि ....को कठपुतली नहीं हो तुम कहता है।

अ) अमीर आदमी ब) आम आदमी क) गरीब आदमी ड) भिकारी

5) कवि आचार्य निशांतकेतु जी कठपुतली की .... को काटने कहते हैं।

अ) धागा ब) सुतली क) डोर ड) रबर

6) कठपुतली को नचानेवाला .... वर्ग का प्रतीक है।

अ) निम्न ब) उच्च क) मध्य ड) गरीब

7) ‘कठपुतली ’ कविता ....वर्ग के संघर्ष को अभिव्यक्त करती है।

अ) तीन ब) चार क) पांच ड) दो

8) कवि आचार्य निशांतकेतु आम आदमी को ....आग्रह करते हैं।

अ) बोलने ब)चलने क) फिरने ड) लिखने

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1) कठपुतली – दूसरों के इशारे पर नाचनेवाली गुडिया

2) डोर – धागा

3) लू – गरमी

4) बेजुबान - न बोलनेवाला

5) प्रजापति - राजा

6) कर्म - काम

6. स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) चंद्रकिशोर पांडेय	2) पटना	3) आम	4) आम आदमी
5) डोर	6) उच्च	7) दो	8) बोलने

7. सारांश

1) ‘कठपुतली’ कविता में कवि आचार्य निशांतकेतु जी ने आम आदमी के वास्तविक जीवन का चित्रण किया है।

2) ‘कठपुतली’ कविता में कवि आम आदमी को जीवन की सच्चाई का सामना करने का आग्रह करते हैं।

3) ‘कठपुतली’ कविता उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच के संघर्ष को अभिव्यक्त करती है।

4) ‘कठपुतली’ कविता के माध्यम से कवि आम आदमी को कठपुतली की तरह जीवन न बिताने की सलाह देते हैं।

5) ‘कठपुतली’ कविता में कवि ने आम आदमी को खुद चलने की खुद बोलने की प्रेरणा दी है।

6) कवि आचार्य निशांतकेतु सामान्य जनता को उच्चवर्ग के इशारे पर चलने से रोकते हैं तथा अपना रास्ता खुद ढूंढने की सलाह देते हैं।

8) स्वाध्याय

8.1 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'कठपुतली' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।

2) 'कठपुतली' कविता में कवि ने आम आदमी की वेदना का चित्रण किस प्रकार किया है?

8.2 ससंदर्भ व्याख्या

1) "कौन था वह एक
जो तुम्हें अब-तक नचाता था,
खुद बैठ खाता था।
तुम सदियों से भूखे हो
लेकिन बेजान भी नहीं हो ।''

9) क्षेत्रीय कार्य

1) आचार्य निशांतकेतु जी के सभी पुस्तकों की सूची बनाईए ।

2) 'कठपुतली' कविता का मराठी में अनुवाद कीजिए।

10) अतिरिक्त अध्ययन के लिए -

1) रेत की उर्वर शिलाएं - आ. निशांतकेतु

2) समव्यथी - आ. निशांतकेतु

3) ज्वालामुखी पुरुषवाक - आ. निशांतकेतु

4) संगतराश - आ. निशांतकेतु

5) त्वचा पर जो लिखे आखर - आ. निशांतकेतु

❑❑❑

इकाई –2 कविता
2.1 शहर (गजल) – जहीर कुरेशी

अनुक्रम

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय विवेचन
   3.1 जहीर कुरेशी का जीवन परिचय एवं कृतित्व
   3.2 'शहर' गज़ल का परिचय
   3.3 'शहर' गज़ल का आशय
4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

1. गज़लकार जहीर कुरेशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. हिंदी के प्रसिद्ध गज़लकार जहीर कुरेशी के दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
3. हिंदी गज़ल में जहीर कुरेशी के योगदान से परिचित होंगे।
4. गज़ल काव्य रूप से परिचित होंगे।
5. प्रस्तुत गज़ल के माध्यम से शहरी लोगों की छद्म मानसिकता एवं संवेदनहीनता से परिचित होंगे।

2. प्रस्तावना :

गज़ल कविता का एक रूप है। गज़ल अरबी भाषा का स्त्रीलिंग शब्द है। 'गजाला' से 'गज़ल' शब्द बना है। 'गजाला' का अर्थ है हिरन। हिरन को जो छोटा बच्चा होता है उसको 'गजाला' कहा जाता है।

'गज़ल' का दूसरा अर्थ प्रेमालाप है, जिसमें प्रेमी तथा प्रेयसी के मध्य अनेक प्रेमदशाएँ जैसे अनुनय, विनय, मिलन, वियोग, जलन, पीड़ा, उपालम्भ आदि प्रेम की भावनाओं की अभिव्यक्ति की जी है। मूलतः गज़ल शृंगारिक भावों की अभिव्यक्ति की विधा रही है। लेकिन समय के साथ-साथ इसमें काफी परिवर्तन आया है। वर्तमान समय की हिंदी गज़ल समयगत यथार्थ को रू-ब-रू करती हुई जनचेतना के विविध आयामों को अभिव्यक्त करती है।

प्रत्येक विधा का अपना एक रूप होता है जिससे उसकी एक अलग पहचान बनती है। गज़ल शेरों से बनती है। हर शेर में दो पँक्तियाँ होती है। इनमें से हर पँक्ति को 'मिसरा' कहते हैं। ऐसे दो मिसरों से एक शेर बनता है। इनमें से पहली पँक्ति को 'मिसरा-ए-उला' और दूसरी पँक्ति को 'मिसरा-ए-सानी' कहते हैं। गज़ल का प्रत्येक शेर एक भाव, एक विचार, एक अनुभव होता है। इस प्रकार गज़ल का प्रत्येक शेर एक स्वतंत्र भावचित्र चित्रित करने की शक्ति रखता है। वह अपने आप में एक संपूर्ण कविता होती है। लेकिन एक पूरी गज़ल तब समझी जाती है जब दो-दो पँक्तियों का पाँच से सत्रह शेरों तक का संग्रह पेश किया जाता है। गज़ल के प्रारंभिक शेर को 'मतला' कहते हैं। गज़ल के अंतिम शेर को 'मकता' कहा जाता है। इसके साथ गज़ल समाप्त होती है। सामान्यतः इसमें गज़लकार अपने नाम या उपनाम का प्रयोग करता है।

फारसी-उर्दू के गज़लकारों ने शिल्प विधान को विशेष महत्त्व दिया था। लेकिन हिंदी के गज़लकारों ने शिल्प के कई अंगों की उपेक्षा की है। इसका प्रमुख कारण हिंदी गज़लकारों ने शिल्प की अपेक्षा कथ्य की ओर अधिक ध्यान दिया है। कथ्य की दृष्टि से लोगों में गलत धारणा बनी है कि गज़ल व्यापक है, उसमें व्यक्ति, समाज, राजनीति, धर्म, शासन व्यवस्था आदि सभी विषय समेटे जाते हैं, इसे हम हिंदी गज़ल में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

हिंदी के साहित्य के इतिहास में हिंदी गज़ल विधा की एक सुदीर्घ परंपरा दिखाई देती है। हिंदी गज़ल के जन्मदाता के रूप में तुगलक दरबार के राजकवि अमीर खुसरो को माना जाता है। उनके पश्चात् संत कबीर, कृष्णभक्त कवयित्री मीराबाई, फारसी कवि प्यारेलाल शौकी, भारतेंदु, प्रेमधन, प्रतापनारायण मिश्र, श्रीधर पाठक, हरिऔंध, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, नरेंद्र शर्मा, शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन शास्त्री, दुष्यंतकुमार, नीरज, चंद्रसेन विराट, कुँअर बेचैन, अदम गोंडवी, ज्ञान प्रकाश विवेक आदि गज़लकारों ने हिंदी गज़ल विधा को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। समकालीन हिंदी गज़ल के चर्चित हस्ताक्षरों में एक नाम जहीर कुरेशी है। विषय की दृष्टि से उनकी गज़लों का दायरा विस्तृत है। समाज जीवन के प्रत्येक घटना विसंगतियों को इन्होंने अपनी गज़ल का विषय बनाया है। जहीर कुरेशी एक तरह से सामाजिक सरोकार के गज़लकार है।

3. विषय विवेचन :

3.1 जहीर कुरेशी का जीवन परिचय एवं कृतित्व :

जहीर कुरेशी का जन्म 5 अगस्त, 1950 ई. में मध्य प्रदेश के चंदेरी नामक गाँव में हुआ। चँदेरी गाँव अशोकनगर जिले में स्थित है। जहीर कुरेशी की माता का नाम मासूमा बेगम था, पिता का नाम शेख

मोहम्मद नज़ीर कुरेशी था। वे कस्टम विभाग में कार्यरत थे। उन्हें शायरी का बड़ा शौक था। उनकी सुंदर हस्तलिपि में लिखी डायरी उन्हें विरासत के रूप में मिली। सन 1956 में कैंसर की वजह से उनके पिताजी का असामयिक निधन हुआ। जहीर कुरेशी परिवार में सबसे छोटे थे। उनकी शुरुआती शिक्षा घर से ही प्रारंभ हुई। उनकी माँ ने उन्हें अरबी, उर्दू और हिंदी का अक्षरज्ञान कराया। बाद में चंदेरी गाँव की प्राथमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से पढ़ाई हुई। उन्होंने सैफिया कॉलेज, भोपाल से बी.एस्सी. की उपाधि प्राप्त की और केंद्र सरकार की सेवा में चले गए। जहीर कुरेशी पर बचपन में ही नियति की ऐसी मार पड़ी कि लकवे से उनका दाहिना पैर क्षतिग्रस्त हो गया। परंतु उन्होंने अदम्य साहस का परिचय दिया और अपने व्यक्तित्व को तराशने का प्रयास किया। सन 1975 में उनका विवाह राबिया खान से हुआ। उनका वैवाहिक जीवन आनंदमय रहा। पुत्र समीर अर्किटेक्ट है तथा पुत्री तब्बसुम दंत चिकित्सक है।

जहीर कुरेशी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर गीतकार मुकुट बिहारी 'सरोज' का प्रभाव रहा है। सरोज जनवादी लेखक संघ-ग्वालियर के अध्यक्ष थे। उन्होंने जहीर को इस संघ के सचिव पद पर नियुक्त किया था। जहीर ने संघ के माध्यम से युवा साहित्यकारों से संपर्क कर उन्हें सृजन कार्य के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात वे जनवादी संघ के अध्यक्ष बने। जहीर कुरेशी के लिए जीवन का एक मात्र श्रेय और प्रेय गज़ल-सृजन रहा है। सन 1965 से उनका लेखन सृजन कर्म गतिशील रहा है जिसमें जीवनानुभव का यथार्थंकन मिलता है। समकालीन समाज की विसंगति और विद्रूपता के कारण उन्होंने अपनी चिढ़ गज़ल के माध्यम से व्यक्त की है। सन 1965 से सन 2021 तक उन्होंने आठ गज़ल संग्रह तथा अन्य साहित्य लिखा। 20 अप्रैल, 2021 ई. को कोरोना बीमारी की वजह से उनकी मृत्यु हो गई।

✻ कृतित्व :

✻ गज़ल संग्रह :

1. लेखनी के स्वप्न - 1975 ई., इस काव्य संग्रह गीत, गज़ल और मुक्तछंद में लिखी कविताएं संकेलित हैं।
2. एक टुकड़ा धूप - 1979 ई., इस संग्रह में 30 नवगीत एवं 40 गज़लें संग्रहीत हैं।
3. चाँदनी का दुःख-1986 ई. इस गज़ल संग्रह में कुल मिलाकर 65 गज़लें संग्रहित हैं।
4. समंदर ब्याहने आया नहीं है -1992 ई., इस गज़ल संग्रह में कुल 78 गज़ले संग्रहित हैं।
5. भीड़ में सबसे अलग - 2003 ई., इस संग्रह में 100 गज़लें संग्रहित हैं।
6. पेड़ तनकर भी नहीं टूटा - 2010 ई, इस गज़ल संग्रह में 101 गज़ले संकलित हैं।
7. बोलता है बीज भी - 2014 ई., इस संग्रह में 100 गज़लें संग्रहित हैं।
8. निकला न दिग्विजय को सिंकंदर- 2016 ई., जिसमें 100 गजलें संग्रहित हैं।

✻ पुरस्कार एवं सम्मान :

1. सन 1980 में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 'एक टूकड़ा धूप' सम्मानित

2. सन 2006 में क्षितिज इंकार्पोरेटेड, अमरीका द्वारा 'नदी के साथ दुर्घटना' गीत पर गोपाल सिंह नेपाली स्मृति सम्मान ।

3.2 'शहर' ग़ज़ल का परिचय :

जहीर कुरेशी हिंदी गज़ल के नये दौर का एक प्रमुख और महत्त्वपूर्ण नाम है। हिंदी गज़ल के लिए उनका योगदान अपने आप में एक उपलब्धि हैं। उन्होंने दुष्यंतकुमार की तरह ही गज़ल के कथ्य को अपनाया है। उनकी गज़लों में सामाजिक विसंगतियाँ, विद्रुपताएं एवं आम आदमी की व्यथा-कथा का चित्रण दिखाई देता है। नये प्रतीकों एवं बिंबों के माध्यम से उन्होंने आम आदमी की जिंदगी को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत गज़ल सन 1979 में प्रकाशित 'एक टुकड़ा धूप' गज़ल संग्रह में से एक है। यह गज़ल कुल सात शेरों के संग्रह से बनी है। इसमें प्रस्तुत एक-एक शेर वर्तमान महानगरीय वास्तव को बखूबी पेश करता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद और विशेषकर औद्योगिक क्रांति के बाद महानगरों का विकास अत्यंत तीव्र गति से हुआ। जहाँ एक ओर महानगर सभी सुख सुविधाओं और चकाचौंध के केंद्र बनें, वहीं दूसरी ओर महानगरीय परिवेश में अनेक प्रकार की विसंगतियाँ, विडंबनाएं, विद्रुपताएं व्याप्त होने लगी। यांत्रिकता, खोखलापन, आडंबर, मुखौटे, तनाव, एकाकीपन, शोषण, महानगरीय जीवन की विशेषताएं दृष्टिगत होती हैं। आज हो रहे मानवीय मूल्यों के पतन में महानगरीय सभ्यता का पूरा-पूरा हाथ है। छल, कपट, स्वार्थ, विश्वासघात तथा मानसिक तनाव के कीटाणु महानगरीय वातावरण में जन्मते और पलते जा रहे हैं।

3.3 'शहर' गज़ल का आशय :

आजादी के बाद हमारे देश में विकासशील अर्थव्यवस्था प्रारंभ हुई। औद्योगिक, शैक्षिक आदि प्रगति के साथ महानगर विकसित होते चले गए। महानगरों की चकाचौंध, सुख-सुविधाओं, विलासिता ने ग्रामीणों को आकर्षित किया, इसी वजह से महानगरों की जनसंख्या बढ़ती चली गई। वर्तमान में शहरों में जहाँ पूँजीपति वर्ग ऐशो-आरामी की सुखमय जीवन का आनंद ले रहा है, वहाँ शोषक वर्ग अनेक समस्याएं, दयनीय, प्रताड़ित एवं सडांध भरी जिंदगी जी रहा है। एक ही महानगर में रहने वाले मानव जाति के लोगों में खोखलापन दिखाई देता है। जिस प्रकार गाँव के लोगों में प्रेम, भाईचारा एवं अपनापन दिखाई देता है, उसी प्रकार की भावनाएं शहर में नदारत है। इसी प्रकार का चित्रण जहीर कुरेशी अपनी 'शहर' नामक गज़ल में करते हैं।

कुरेशी जी कहते हैं, शहर में रहनेवाले शहर को तो अपना मानते हैं परंतु वे शहरी लोगों से अनजान है। मतलब शहरी परिवेश में एक-दूसरे के चेहरों को पहचानते हैं, केवल एक दूसरे के चेहरे को देखते हैं परंतु एक-दूसरे के दु:ख-दर्द को नहीं पहचानते हैं।

शहर में रिश्तों-नातों का स्थायित्व नहीं है, वे बार-बार टूटते हुए दिखाई देते हैं, इसका कारण है स्वार्थ। शहर में स्वार्थ इतना बढ़ गया है कि ऐसा लगता है बेरहम पर्वतों जैसा बढ़ गया है। मतलब शहर में स्वार्थ सर्वोपरि हो गया है।

गज़लकार कहते हैं अब शहर में कहीं भी प्यार या प्यार की खुशबू नहीं मिलती, शहर में प्यार एक वेश्या के होटों की मुस्कान जैसा मिलता है। वेश्या जिस प्रकार ग्राहक को आकर्षित या खूश करने के लिए बनावटी हँसी-हँसती है, उसी प्रकार की स्थिति शहर में प्यार की हो गई है।

शहर में हर रोज नई-नई उलझनें मतलब समस्याएं निर्माण होती जा रही है, अब उन्हीं उलझनों से शहर परेशान है। शहर में रहनेवाला मनुष्य ही नई-नई समस्याओं को जन्म देता है और अपने जीवन में परेशानी पैदा करता रहता है। शहरी मनुष्य की अवस्था उस मकड़ी जैसी बन गई है, जो खुद ही जाल बुनता है और उसमें फँसकर अपने लिए परेशानी पैदा कर लेता है।

शहर में आदमी उदासी-निराशा को लेकर जीता है। अत: गज़लकार को शहर किसी श्मशान के समान लगता है। बढ़ती जनसंख्या एवं समस्याओं के जंजाल के कारण शहर के लोग किड़ों-मकड़ों सी जिंदगी जी रहे हैं। उनकी भावनाएं मर गई है, तो गज़लकार अनुभव करते हैं कि यह शहर कुछ लाख जिंदा लाशों का श्मशान सा है।

आज हो रहे मानवीय मूल्यों के पतन में शहरी सभ्यता का पूरा-पूरा हाथ है। छल, प्रपंच, स्वार्थ, विश्वासघात शहरी संस्कृति के प्रतीक बन गए हैं। ऐसे शहरी परिवेश में किसी से अपनापा स्थापित करना, रिश्ता जोड़ना या दिल लगाना जैसे विचारों से ही शरीर काँपने लगता है क्योंकि ये शहर एक पापी आदमी का गिरेबान है। जिस प्रकार गिरेबान हमारे गरदन के चारों ओर पड़ता है उसी प्रकार पापी आदमी के झुंड ने शहर को जकड़ के रखा है।

गज़लकार आगे आश्चर्य व्यक्त करते हैं, इतना सबकुछ होने पर भी इस पापी गिरेबान को लोग पहनते हैं। कुरेशी जी को लगता है यें जो शहर है वह कीचड़ की ताल में घुला परिधान है। किसी भी प्रकार के कपड़े के तालाब में धोने का प्रयास करेंगे तो भी उस कपड़े पर गंदगी बनी रहेगी। उसी प्रकार शहरों में कितनी भी विसंगतियाँ या समस्याएं बनी रहेंगी फिर भी लोग शहर को छोड़ना नहीं चाहते। शहरी आदमी की मानसिकता में परिवर्तन नहीं हो रहा है, चाहे शहर में यांत्रिकता या संवेदनहीनता की अधिकता क्यों न हो। शहरी लोगों की मानसिकता में सकारात्मकता आए, इसी आशा के साथ गज़लकार ने 'शहर' गज़ल में शहर की वास्तविकता हमारे सामने रखी है।

4. स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1. जहीर कुरेशी का जन्म .... गाँव में हुआ था।

   (अ) खेवली (ब) चंदेरी (क) खांडवा (ड) येवली

2. हिंदी साहित्य में जहीर कुरेशी .... के रूप में चर्चित है।

   (अ) कहानीकार (ब) उपन्यासकार (क) गज़लकार (ड) निबंधकार

3. जहीर कुरेशी का जन्म 5 अगस्त .... में हुआ।

   (अ) 1950 ई. (ब) 1949 ई. (क) 1951 ई. (ड) 1952 ई.

4. 'एक टुकड़ा धूप' गज़लसंग्रह का प्रकाशन कब हुआ।

(अ) 1979 ई. (ब) 1980 ई. (क) 1951 ई. (ड) 1951 ई.

5. 'शहर' गज़ल कौनसे गज़ल-संग्रह में संकलित है।

(अ) भीड़ में सबसे अलग (ब) एक टुकड़ा धूप

(क) चाँदनी का दु:ख (ड) बोलता है बीज भी

6. 'शहर' नामक गज़ल किसके द्वारा लिखित है।

(अ) चंद्रसेन विराट (ब) जहीर कुरेशी (क) दुष्यंत कुमार (ड) जयप्रकाश कर्दम

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

* बेरहम - निर्दय, जिसके हृदय में दया न हो।

* चट्टान - पाषाणशिला, पत्थर का बहुत बड़ा और विशाल खंड।

* गिरेबान - गले में पहनने के कपड़े का वह भाग जो गरदन के चारों ओर रहता है।

* परिधान - पहनावा, पोशाक, कपड़ा पहनना।

6. स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. (ब) चंदेरी 2. (क) गज़लकार 3. (अ) 1950 ई.

4. (अ) 1979 ई. 5. (ब) एक टुकड़ा सच 6. (ब) जहीर कुरेशी

7. सारांश

(1) जहीर कुरेशी की गज़लों में सामाजिक विसंगतियाँ, विद्रुपताएं, आम-आदमी की जिंदगी को चित्रित करने के लिए नये प्रतीकों एवं बिंबों का प्रयोग दिखाई देता है। आधुनिक काल में नागरीकरण के दौर में सामान्य जनता नारकीय जीवन जी रही है। आर्थिक समस्या मनुष्य को सहज नहीं रखा है, वह कृत्रिम तथा यांत्रिक बनता जा रहा है। आर्थिक विपन्नता और शारीरिक विकलांग होने पर भी उन्होंने अदम्य साहस का परिचय दिया और अपने व्यक्तित्व को तराशने का प्रयास किया और उसमें जहीर कुरेशी सफल भी हुए। 'शहर' गज़ल का एक-एक शेर वर्तमान महानगरीय वास्तव को बखूबी पेश करता है। प्रस्तुत गज़ल जहीर कुरेशी लिखित गज़लसंग्रह 'एक टुकड़ा धूप' से ली गई हैं।

(2) इस गज़ल में महानगरीय समाज जीवन की संवेदनहीनता, आत्मकेंद्रीत प्रवृत्ति पर गज़लकार ने प्रकाश डाला हैं। वैसे देखा जाए तो मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण वह समाज में घुल-मिलकर रहना पसंद करता हैं। मनुष्य और समाज एक-दुसरे के पुरक है। समाज से जुड़कर ही मनुष्य को अपने अस्तित्व की पहचान होती हैं। लेकिन वर्तमान मानवी जीवन तमाम विसंगतियों से घिरा हुआ है। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक आदि स्तरों पर होने वाले भ्रष्टाचार, शोषण के कारण मानवीय मूल्यों का पतन बड़ी तेजी से हो रहा है। साथ ही मनुष्य के मन में अकेलेपन की भावना पनप रही है।

(3) इक्कीसवीं सदी की घोर उपभोगतावादी और बाज़ारवादी संस्कृति ने मनुष्य को स्वकेंद्रीत बना दिया है। सत्य, अहिंसा, मानवता, नैतिकता तथा कर्तव्यपरायणता जैसे शाश्वत जीवन मूल्यों से मनुष्य दूर जा रहा है।

(4) आज का समाज एक भटकी हुई अमानवीयता के रास्तें पर जा रहा है। भौतिक सुविधा को पाने की लालसा ने उसके सारे रिश्तें-नातें तोड़ दिए हैं। कहने के लिए वह भीड़-भाड़ से भरे शहरों में रहेता है। लेकिन इस भीड़ में उसे अपना कोई चेहरा नज़र नहीं आ रहा है। यहाँ उसके लिए सब अजनबी पराये हैं।

(5) शहरों में लोग जरूरत के मुताबिक रिश्तें बना लेते हैं। और अपना स्वार्थ पूरा होने के बाद रिश्ता तोड़ भी देते हैं। स्नेह के अभाव में पूरा जीवन नीरस और बेजान लगने लगा है। मानवीय संबंधों की गरिमा और उष्मा ठंडी पड़ती जा रही है। इसलिए जहीर कुरेशी जी को शहर जिंदा लाशों का श्मशान नज़र आता हैं।

(6) महानगरीय सभ्यता ने व्यक्ति को इतना खुदगर्ज बनया हैं कि यहाँ व्यक्ति सिर्फ और सिर्फ मतलब के लिए संबंध बनाता है। यहाँ हर रिश्तें की बुनियाद स्वार्थ है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न व्यक्ति के साथ हर कोई संबंध बनाना चाहता हैं।

(7) फायदे के उम्मीद में अनैतिक व्यक्ति का भी आदर सत्कार किया जाता है। इसलिए जहीर कुरेशी जी को शहर एक वेश्या के अधरों की मुस्कान लगती है। जितना बड़ा शहर उतना ही यांत्रिक आदमी और जितना ही यांत्रिक आदमी, तन-मन, आत्मा, प्राण से जर्जर, असहाय, पराश्रित आदमी जो हर स्थिति में मशीन द्वारा संचालित हैं।

(8) इस तरह की स्थिति देखकर गज़लकार कहते हैं, अपनी धड़कनों को बेचकर मनुष्य मुर्दों की जिंदगी जीने पर मजबूर हो रहा है। मनुष्य अपने यथार्थ सुखों से कोसो दूर चेहरे पर नकाब ओढे दोहरी जिंदगी जी रहा है। जो ऊपर से देखने पर चकाचौंध-सी है लेकिन अंदर से कुंठाओं का मरूस्थल है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि, यह सब कुछ समझते हुए भी मनुष्य अपने मन को लहुलुआन करते हुए तन के उत्सव मनाये जा रहा है।

8. स्वाध्याय

8.1 ससंदर्भ के उदाहरण

1. बुनता रहा है रोज नई - ताजा उलझनें,
   अपनी ही उलझनों से परेशान है शहर।
2. दिल झाँकने के नाम से ही काँपता रहा,
   एक पापी आदमी का गिरेबान है शहर।

8.2 टिप्पणियाँ

1. 'शहर' गज़ल का उद्देश्य

8.3 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'शहर' ग़ज़ल का आशय

9. क्षेत्रीय कार्य

1. 'शहर' ग़ज़ल का मराठी में अनुवाद कीजिए।

2. 21 वीं सदी के प्रमुख हिंदी ग़ज़लकारों की सूची बनाइए।

10. **अतिरिक्त अध्ययन के लिए**

1. ग़ज़लकार जहीर कुरेशी की काव्य दृष्टि - डॉ. मधु खराटे, विद्या प्रकाशन, कानपुर-208022
2. दुष्यंतोत्तर हिंदी गज़ल - डॉ. मधु खराटे, विद्या प्रकाशन, कानपुर- 208022
3. एक टुकड़ा धूप - जहीर कुरेशी, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली- 110002
4. सप्तरंग - सुरेश भट

***

2.2 प्रश्न – जयप्रकाश कर्दम

अनुक्रम

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय विवेचन
   3.1 जयप्रकाश कर्दम का जीवन परिचय एवं कृतित्व
   3.2 'प्रश्न' कविता का परिचय
   3.3 'प्रश्न' कविता का आशय
4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

1. कवि जयप्रकाश कर्दम के जीवन परिचय एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. कवि जयप्रकाश कर्दम के दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
3. हिंदी दलित साहित्य में जयप्रकाश कर्दम के योगदान से परिचित होंगे।
4. दलित काव्य रूप से परिचित होंगे।
5. प्रस्तुत कविता के माध्यम से दलित जीवन एवं भूख की समस्या को समझ सकेंगे।

2. प्रस्तावना

बहुसर्जक कवि डॉ. जयप्रकाश कर्दम हिंदी साहित्य के एक सुप्रसिद्ध रचनाकार है। मानवीय चेतना से सम्पन्न जयप्रकाश कर्दम एक नए भाव-बोध के कवित हैं, जिसमें एक और सामाजिक विसंगतियों के प्रति आक्रोश की आग है तो दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं का शीतल प्रवाह है। कर्दम जी उन दलित रचनाकारों में हैं, जिन्होंने दलित समाज का यथार्थ वर्णन अपने साहित्य में किया है। दलित समाज और उनकी समस्याओं को समझकर उन्हें बारीकी और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य के लिए

अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जयप्रकाश कर्दम की कविताओं में परिवर्तन की गूँज नज़र आती है। वे बदलाव के लिए उत्सुक दिखाई पड़ते हैं। उनकी कविताओं में जाति-भेद, आवास, शिक्षा, शोषण, अपमान, दु:ख-दर्द, भूख, सांप्रदायिकता, उत्पीडन आदि का बेबाकी वर्णन मिलता है।

दलित साहित्य के माध्यम से दलितों का संघर्ष केवल भूख और दारिद्रय तक ही सीमित नहीं रहा है, बल्कि आत्मसम्मान की प्राप्ति के लिए यह संघर्ष चल रहा है। इसका सशक्त उदाहरण हमें जयप्रकाश कर्दम के साहित्य में मिल जाता है। कर्दम जी के लेखन पर फुले-अम्बेडकरवादी विचारधारा एवं बौद्धदर्शन का मिला-जुला संगम है। जिसके माध्यम से वे समता, बंधुता, स्वातंत्र्य एवं मानवीय मूल्यों की घोषणा करते हैं। हिंदी दलित कविता की शुरुआत 19 वीं शताब्दी के आठवें दशक से मानी जाती है। इसकी प्रेरणा डॉ. बाबासाहेब की विचारधारा ही रही है। जयप्रकाश कर्दम जी के आठ कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनका दलित साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

3. विषय विवेचन

3.1 जयप्रकाश कर्दम का जीवन परिचय एवं कृतित्व :

जयप्रकाश कर्दम का जन्म 5 जुलाई, 1958 ई. में उत्तर प्रदेश गाजियाबाद के निकट हापुड रोड स्थित इंदरगढी गाँव में एक दलित परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम हरिसिंह और माता का नाम अतरकली है। इनके पिताजी मैट्रिक तक पढे-लिखे थे। वे मेहनत मजदूरी करते थे और अपनी घर-गृहस्थी चलाते थे किंतु सन 1976 में बीमारी से उनकी असमय मृत्यु हो गयी। तब जयप्रकाश ग्यारहवीं कक्षा में पढते थे। पिताजी के देहांत के कारण घर की सारी जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गयी। उनके तीन भाई और तीन बहनें हैं। वे दिनभर मजदूरी करते थे और रात के समय पढाई करते थे। जयप्रकाश की प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में हुई है। हायस्कूली शिक्षा इण्टरमीडिएट कॉलेज, गाजियाबाद में विज्ञान विषयों को लेकर पूरी की। सन 1980 से 1986 तक दर्शनशास्त्र, अंग्रेजी एवं हिंदी साहित्य विषयों में स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधियाँ उत्तीर्ण की। सन 2000 में ''राग दरबारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' विषय पर मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ से पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की। सन 1989 में संघ लोकसेवा आयोग के माध्यम से केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा में सहायक निदेशक के पद पर चयनित हुए। उनका विवाह 1988 ई. में उच्चशिक्षित तारा जी से बौद्ध पद्धति से हुआ। उनको दो लड़कियाँ और एक बेटा है। जयप्रकाश कर्दम संघर्षशील, परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ, मानवतावादी, मूल्यों के अनुयायी आदि विविध गुणों से भरे हुए हैं। सम्प्रति वे निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली के पद से सेवानिवृत्त है और पूर्णकालिक लेखन कार्य के साथ जुड़े हुए हैं।

*** कृतित्व :**

हिंदी लेखक के रूप में देशभर में प्रतिष्ठित डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रा वृत्तांत, निबंध, नाटक, आलोचना आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। कई पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

कविता संग्रह :

1. गूँगा नहीं था मैं
2. तिनका तिनका आग
3. बस्तियों से बाहर
4. दुनिया के बाज़ार में
5. लाशों के शहर में
6. जिंदा रहने की जिद
7. बेवजह रहने की जिद
8. विषाक्त हवाओं के बीच
9. कविता में आदमी (प्रतिनिधि कविताएं)

खंड काव्य : 1. राहुल

उपन्यास : 1. करूणा 2. छप्पर 3. उत्कोच

कहानी- संग्रह : 1. तलाश 2. खरोंच 3. उधार की जिंदगी

यात्रा वृत्तांत : 1. जर्मनी में दलित साहित्य : अनुभव और स्मृतियाँ

साक्षात्कार : 1. मेरे संवाद

बाल साहित्य : 1. मानवता के दूत 2. डॉ. अम्बेड़कर की कहानी
3. बुद्ध की शरणागत नारियाँ 4. बुद्ध और उनके प्रिय शिष्य
5. महान बौद्ध बालक 6. आदिवासी देवकथा-लिंगो
7. हमारे वैज्ञानिक: सी.वी.रामन 8. श्मशान का रहस्य

अनुदित : 1. चमार - 'दिम चमार्स' जी. डब्यू. ब्रिग्स का हिंदी में अनुवाद

प्रकाशनाधीन पुस्तकें :

1. चरत भिक्खवे (नाटक)
2. लक्ष्मी नारायण सुधाकर समग्र (रचनावली)
3. विचारों के वातायन (सूक्ति एवं विचार)
4. दलित साहित्य : चिंतन के फुट प्रिंट

पुरस्कार/सम्मान :

1. केंद्रीय हिंदी संस्थान (मा.सं.वि.मं.) भारत सरकार द्वारा महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन सम्मान

2. हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा विशिष्ट योगदान सम्मान
3. उ. प्र. हिंदी संस्थान, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लोहिया साहित्य सम्मान
4. दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संत रविदास सम्मान
5. अस्मितादर्शी साहित्य अकादमी, उज्जैन द्वारा साहित्य सारस्वत सम्मान
6. सत्यशोधक समाज, मुंबई द्वारा सत्यशोधक सम्मान
7. हिंदी संगठन, मॉरीशस द्वारा हिंदी सेवी सम्मान
8. जन लेखक संघ, मधेपुरा (बिहार) द्वारा जन साहित्य सम्मान-2023

उपर्युक्त के अलावा भी अनेक सम्मान / पुरस्कारों से सम्मानित ।

3.2 'प्रश्न' कविता का परिचय :

जयप्रकाश कर्दम के अब तक आठ कविता-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 'प्रश्न' यह कविता 'बस्तियों से बाहर' नामक काव्य-संग्रह में संग्रहित है। इस काव्य-संग्रह का प्रकाशन सन 2013 में हुआ है। इसमें सभ्य समाज द्वारा आज भी दलितों को गाँव से बाहर रखा जाता है मतलब हाशिये पर डाला जाता है, का चित्रण है। समाज में दलित वर्ग के बिच भूख की समस्या ज्यादा मात्रा में दिखाई देती है। दलित वर्ग के लोग उच्च वर्ग के लोगों के यहाँ काम करते हैं, लेकिन इसका मुआवजा समय पर नहीं मिलता, जिसकी वजह से दलितों को भूखा रहना पड़ता है। प्रस्तुत कविता में भूख की समस्या पर प्रकाश डाला है। भूख दलितों के ही पीछे पड़ जाती है, इच्छा न होने पर भी वह आ जाती है। जाति-पाँति और पैसे की दुनिया में दलितों को रोटी की समस्या बार-बार सताती है।

3.3 'प्रश्न' कविता का आशय :

'प्रश्न' कविता में प्रमुखत: भूख की समस्या का विवेचन किया गया है। सर्वहारा वर्ग, दलित समाज, आदिवासी समाज या जिसको हाशिये का समाज कहा जाता है आदि समाज की प्रमुख समस्या भूख है। जयप्रकाश कर्दम दलित समाज में पैदा होने के कारण बचपन से उन्होंने जातिभेद के दंश झेले हैं, इसी कारण भूख की समस्या को एक अनुभूति के तौर पर इस कविता में प्रस्तुत किया है। कवि कहते हैं कि जब से होश संभाला है तब से भूख को छाया की तरह सदैव उसे अपने पास पाया है। जितनी भूख की मेल-जोल और आत्मीयता अपने कवि के साथ है शायद उतनी और किसी के साथ नहीं है। इसलिए सबसे अधिक भूख मेरे साथ रहती है।

समाज में दूसरे भी बहुत से लोग हैं जिनसे भूख का परिचय है। वह उनके पास भी आती-जाती है लेकिन अधिक देर तक भूख वहाँ नहीं रह पाती, बार-बार वह मेरे पास लौट आती है। भूख सर्वाधिक समय तक कवि के पास रहती है, वह कवि से कोई बड़ी अपेक्षा नहीं रखती है। उसे कवि के पास रूखी-सूखी दो रोटी भी मिल जाती है तो वह संतुष्ट हो जाती है।

कवि आगे कहते हैं कि, हमेशा उसके लिए दो रोटी का जुगाड़ नहीं कर पाते। जाति-पाँति और पैसे को महत्त्व देनेवाले दुनिया में तमाम कोशिशों के बावजूद उन्हें हर बार नकार दिया जाता है, दुत्कार कर भगा दिया जाता है, ऐसे में कवि रोटी का जुगाड़ कैसे करें? कवि के सामने प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि क्या कहकर भूख को समझाऊं कवि के तमाम संभावनाओं की राह में एक दीवार सी अड़ी है, भूख कवि के सामने प्रश्न बनकर खड़ी है।

4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. 'प्रश्न' कविता के कवि का नाम ....है।

   अ. उदयप्रकाश ब. जयप्रकाश कर्दम क. स्वयंप्रकाश ड. जहीर कुरेशी

2. 'प्रश्न' कविता .... कविता-संग्रह में संकलित है।

   अ. तिनका-तिनका आग ब. गूंगा नहीं था मैं

   क. बस्तियों से बाहर ड. दुनिया के बाज़ार में

3. 'प्रश्न' कविता में .... की समस्या का चित्रण है।

   अ. भूख ब. जातिभेद क. अकाल ड. भ्रष्टाचार

4. कवि जयप्रकाश कर्दम के सामने कौन प्रश्न बनकर खड़ी है।

   अ. भूख ब. दीवार क. अस्पृश्यता ड. नौकरी

5. जयप्रकाश कर्दम का जन्म कौनसे वर्ष में हुआ।

   अ. 1950 ई. ब. 1958 ई. क. 1960 ई. ड. 1961 ई.

6. जयप्रकाश कर्दम का जन्म कौनसे गाँव में हुआ।

   अ. सामनगढी ब. इंदरगढी क. कश्मीरगढी ड. उत्तरगढी

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

* मेल-जोल - मिलन, मिलाप, सुपरिचय, प्राय- मिलते-जुलते रहने का भाव
* रूखी-सूखी - साधारण खाना, जिसमें चिकनाहट का अभाव हो, घी तेल आदि चिकने पदार्थ न पड़े हों।
* जुगाड़ - प्रबंध, इंतजाम, बंदोबस्त।
* दुत्कार - तिरस्कार करना, अपमानपूर्वक फटकारना।

6. स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. (अ) जयप्रकाश कर्दम 2. (क) बस्तियों से बाहर

3. (अ) भूख	4. (अ) भूख

5. (ब) 1958 ई.	6. (ब) इंदरगढी

7. सारांश

1. बहुसर्जक लेखक डॉ. जयप्रकाश कर्दम हिंदी साहित्य के एक सुप्रसिद्ध रचनाकार है। कर्दम जी की विशेष ख्याति दलित साहित्यकार के रूप में हैं।

2. 'बस्तियों से बाहर' कविता-संग्रह की प्रतिनिधि कविताएं आज के समय के ज्वलंत और जरूरी प्रश्नों पर आवाज उठाती है।

3. जयप्रकाश कर्दम जी ने कविता, उपन्यास, कहानी, यात्रा वृत्तांत, साक्षात्कार आदि विधाओं में लेखन किया है। अब तक उन्होंने आठ कविता-संग्रहों का सृजन किया है।

4. 'प्रश्न' नामक कविता 'बस्तियों से बाहर' कविता-संग्रह से ले ली गई है।

5. 'प्रश्न' कविता में प्रमुखत: दलित समाज को सताने वाली भूख की समस्या का चित्रण किया गया है।

6. आर्थिक अभाव, जाति-पाँति, गरीबी आदि के चलते दलित वर्ग के लोग रोटी का जुगाड़ नहीं कर पाते, परिस्थितिवश उन्हें भूखा रहना पड़ता है।

7. समाज में एक वर्ग ऐसा है, जो ऐश्वर्य और ऐय्याशी का जीवन जी रहा है, उसी समय दूसरी ओर ऐसे भी श्रमिक लोग हैं जिन्हें रोटी की जुगाड़ में रात-दिन मेहनत करनी पड़ती है।

8. कवि का मानना है कि गरीबी और भूख का नाता अटूट और बरसों का है। दलित या गरीब वर्ग के पास ही भूख नामक समस्या चिपकी रहती है।

9. दलित वर्ग प्राथमिक सुविधाओं से वंचित है, उसे न रोटी मिलती है और न ही उसका जुगाड़ करने अवसर मिलते हैं।

10. विकसनशिल भारत में भी समाज का एक वर्ग ऐसा है जिसके सामने भूख एक बहुत बड़ा प्रश्न बनकर खड़ी है।

8. स्वाध्याय :

8.1 ससंदर्भ के उदाहरण

(1) ''दूसरे भी बहुत से लोगों से
परिचय है उसका
उनके पास भी वह आती-जाती है

लेकिन अधिक देर तक वह
वहाँ नहीं रह पाती
बार-बार मेरे पास लौट आती है।''

(2) ''मेरी तमाम संभावनाओं की राह में
एक दीवार सी अड़ी है
'भूख' मेरे सामने
प्रश्न बनकर खड़ी है।''

8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'प्रश्न' कविता की समीक्षा कीजिए।

2) 'प्रश्न' कविता का आशय लिखिए।

8.3 टिप्पणियाँ

1) 'प्रश्न' कविता का उद्देश्य लिखिए।

9. क्षेत्रीय कार्य

1. 'प्रश्न' कविता का मराठी भाषा में अनुवाद करने का प्रयास करें।
2. दोन दिवस (कवि नारायण सुर्वे) और 'भूख' कविता की तुलना करें।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. कवि जयप्रकाश कर्दम : एक अध्ययन - डॉ. सुनील बनसोडे, श्री. सचिन कांबळे
2. बस्तियों से बाहर - डॉ. जयप्रकाश कर्दम

***

2.3 रीढ़ – कुसुमाग्रज

अनुक्रम

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय विवेचन
   3.1 कुसुमाग्रज एवं गुलजार का जीवन परिचय एवं कृतित्व
   3.2 'रीढ़' कविता का परिचय
   3.3 'रीढ़' कविता का आशय
4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

1. कुसुमाग्रज एवं गुलजार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. मराठी के प्रसिद्ध कवि कुसुमाग्रज के दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
3. गुरू–शिष्य परंपरा को समझ सकेंगे।
4. प्राकृतिक आपदाओं का किस तरह मुकाबला कर फिर से खड़ा रहने की जिद को समझ सकेंगे।
5. संकट के समय में बड़ों के आशीर्वाद एवं प्रेरणाएं काम आती है, इससे परिचित होंगे।

2. प्रस्तावना :

कविवर कुसुमाग्रज वास्तववादी और मानवतावादी कवि है। उनके काव्यमन पर समाजवाद का असर है। साथ ही ईश्वर के बारे में श्रद्धा भी दिखाई देती है। उन्होंने 'कुसुमाग्रज' उपनाम से मराठी में कविता लेखन किया है। कुसुमाग्रज ने लगभग चार दशक तक मराठी साहित्य में प्रभाव रखा है। वे श्रेष्ठ प्रतिभावान

कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार एवं समीक्षाकार रहे हैं। उनके काव्य में प्रामाणिक सामाजिक आस्था, क्रांतिकारक वृत्ति और भाषा-शैली का प्रभुत्व दिखाई देता है।

गुलजार हिंदी फिल्मों के एक प्रसिद्ध गीतकार है। इसके अतिरिक्त वे एक कवि, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक, नाटककार तथा प्रसिद्ध शायर है। हिंदी फिल्मों में उनके द्वारा लिखे गए गाने आज भी लोगों की जुबान पर हैं, वह केवल एक बेहतर गीतकार ही नहीं बल्कि कवि भी है। वे कम शब्दों में अपनी बात कहते हैं। उनके द्वारा बोले गए शब्द दिल को ऐसे छू जाते हैं, ऐसा लगता है जैसे उन्होंने हमारे मन की बात कह दी हो।

3. विषय विवेचन

3.1 कुसुमाग्रज एवं गुलजार का जीवन परिचय एवं कृतित्व :

*** कुसुमाग्रजः**

कुसुमाग्रज का जन्म 27 फरवरी, 1920 ई. को पुणे में एक देशस्थ ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका नाम गजानन रंगनाथ शिरवाड़कर था परंतु 1930 ई. में गोद लिए जाने पर उनका नाम बदलक विष्णु वामन शिरवाड़कर कर दिया गया। बाद में उन्होंने 'कुसुमाग्रज' उपनाम अपनाया। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा पिंपलगाँव में, हाईस्कूल की शिक्षा नासिक और मुंबई विश्वविद्यालय से मैट्रिक पास किया। 1934 ई. में उन्होंने नासिक के एच.पी.टी. कॉलेज से मराठी और अंग्रेजी भाषाओं में कला स्नातक की डिग्री प्राप्त की। सन 1944 में उन्होंने मनोरमा से शादी की। वह राजाराम कॉलेज, कोल्हापुर से जुड़े थे। शिरवाड़कर जी ने 1936 ई. में 'सती सुलोचना' फिल्म की पटकथा लिखी और फिल्म में लक्ष्मण की भूमिका भी निभाई। बाद में उन्होंने एक पत्रकार के रूप में काम किया।

कृतित्व :

सन 1942 में वि. स. खांडेकर जी ने अपने खर्च पर उनका 'विशाखा' नाम का कविता संकलन प्रकाशित किया। उसके बाद कुसुमाग्रज ने मराठी साहित्य के लिए अनेक विधाओं में लेखन करके महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने 22 कवितासंग्रह, 2 निबंध संग्रह, 22 नाटक, 9 कहानी संग्रह, 3 उपन्यास, 6 एकांकी और 7 अन्य विधाओं में लेखन किया है।

*** पुरस्कार**

मराठी साहित्य में उनके योगदान के सम्मान में हर साल कुसुमाग्रज का जन्मदिन, २७ फरवरी 'मराठी राजभाषा दिन' के रूप में मनाया जाता है।

1. सन 1974 – 'नटसम्राट' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार।
2. सन 1987 – साहित्यिक उपलब्धियों के सम्मान में भारत सरकार का 'ज्ञानपीठ पुरस्कार'।
3. सन 1991 – साहित्य और शिक्षा क्षेत्र में पद्मभूषण पुरस्कार।

4. सन 1986 – पुणे विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट. की मानद उपाधि।

5. सन 1996 – आकाशगंगा में 'कुसुमाग्रज' नामक तारा।

❊ **निधन :**

10 मार्च, 1999 ई. को नासिक में उनका निधन हो गया।

❊ **गुलजार :**

गुलजार का जन्म 18 अगस्त, 1936 ई. में दीना, झेलम जिला, पंजाब, ब्रिटिश भारत–अब पाकिस्तान में हुआ था। उनके पिता का नाम माखनसिंह कालरा तथा माता का नाम सजान कौर था। गुलजार का वास्तविक नाम सम्पूर्ण सिंह कालरा है। गुलजार अपने पिता की दूसरी पत्नी की इकलौती संतान है। उनकी माँ उन्हें बचपन में ही छोड़ कर चल बसी। देश विभाजन के वक्त इनका परिवार पंजाब के अमृतसर में आकर बस गया। वहीं गुलजार मुंबई चले आए और एक गैरेज में मैकेनिक का काम करना शुरू किया। वह खाली समय में किताबें पढना और कविताएं लिखने लगे। इसके बाद उन्होंने गैरेज का काम छोड़ हिंदी सिनेमा के मशहूर निर्देशक बिमल राय, ऋषिकेश मुखर्जी और हेमंत कुमार के सहायक के रूप में काम करने लगे। बिमल राय की फिल्म 'बंदिनी' के लिए उन्होंने अपना पहला गीत लिखा। गुलजार की शादी तलाकशुदा अभिनेत्री राखी गुलजार से हुई हैं। हालांकि उनकी बेटी की पैदाइश के बाद ही यह जोड़ी अलग हो गयी। लेकिन गुलजार और राखी ने कभी भी एक–दूसरे से तलाक नहीं लिया। उनकी मेघना नामक एक बेटी है जो कि एक फिल्म निर्देशक है।

गुलजार ने हिंदी फिल्मों के लिए अनगिनत गीत लिखे हैं। उनकी रचनाएं मुख्यत: हिंदी, उर्दू तथा पंजाबी में है, परंतु ब्रजभाषा, खड़ी बोली, मारवाड़ी और हरियाणवी में भी इन्होंने रचनाएं की। गुलजार द्वारा लिखी गई पुस्तकों की सूची–

1. चौरस रात (लघु कथाएं, 1962 ई.)
2. जानम (कविता संग्रह, 1963 ई.)
3. एक बूँद चाँद (कविताएं, 1972 ई.)
4. रावी पार (कथा संग्रह, 1997 ई.)
5. रात, चाँद और मैं (2002 ई.)
6. रात पश्मीने की
7. खराशें (2003 ई.)

गुलजार ने बतोर निर्देशक अपना सफर 1977 ई. में 'मेरे अपने' से शुरू किया। हिंदी फिल्मों के लिए निर्देशन, गीत लेखन, पटकथा लेखन आदि में गुलजार जी असंख्य और महत्त्वपूर्ण योगदान देते आ रहे हैं।

* **पुरस्कार और सम्मान :**

1. 10 बार सर्वश्रेष्ठ गीतकार के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार
2. सन 2002 में साहित्य अकादमी पुरस्कार ।
3. सन 2004 में भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित ।
4. सन 2009 में 'जय हो' गीत के लिए ऑस्कर पुरस्कार ।
5. सन 2010 में 'जय हो' गीत के लिए ग्रैमी पुरस्कार ।
6. सन 2013 में दादा साहब फालके पुरस्कार ।
7. सन 2024 में साहित्य के सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार ज्ञानपीठ से सम्मानित ।

3.2 'रीढ़' कविता का परिचय :

'रीढ़' कविता कुसुमाग्रज द्वारा लिखित 'प्रवासी पक्षी' कविता संग्रह में संकलित है। यह मूलत: मराठी भाषा में लिखी कविता है, मराठी में इसका शीर्षक है 'कणा'। हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीतकार गुलजार जी ने इस कविता का अनुवाद हिंदी में 'रीढ़' शीर्षक से किया है। इस कविता में गुरू-शिष्य की परंपरा का चित्रण है, साथ ही संकट आने पर उसका डंटकर मुकाबला करने की सिख इस कविता के माध्यम से मिलती है। कविता में चित्रित छात्र बरसों बाद अपने गुरूजी के पास चला जाता है और बाढ़ की वजह से उसका सब कुछ तबाह होने की व्यथा सुनाता है। उसकी व्यथा बहुत ही प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत की गई है।

3.3 'रीढ़' कविता का आशय :

बारिश में कोई आ गया और बोला, 'सर मुझे पहचाना क्या? उसके कपड़े मुचड़े हुए और सब बाल भीगे हुए थे। वह अंदर आकर बैठ गया और हँसते हुए ऊपर देखकर बोलने लगा कि गंगा मैया मेहमान बनकर आई थी और कुटिया में रह कर गई। माइके आई हुई लड़की की मानन्द चारों दीवारों पे नाची, परंतु वापस जाते वक्त खाली हाथ नहीं गई तो घर में जो कुछ था सब बहाकर लेकर गई। सिर्फ पत्नी बच गई, चुल्हा बुझ गया, दीवारें ढह गई, जो था नहीं था सब कुछ बह गया। प्रसाद के रूप में पलकों के नीचे पानी के चार कतरे रख गई है।

सर, मैं और मेरी पत्नी लड़ रहे हैं, मिट्टी कीचड़ फेंक कर दीवार उठा कर आ रहा हूँ। उसकी व्यथा सुनने पर सर जी का हाथ जेब की ओर गया कि वह हँसकर उठकर बोला कि सर मुझे पैसे नहीं चाहिए। घर-परिवार खोने के कारण बहुत अकेला लग रहा था, जरूर मेरा घर टूट गया लेकिन रीढ़ की हड्डी नहीं टूटी। आप सिर्फ इतना करिये कि आपका हाथ मेरे पीठ पर रखिए और कहिए की बस सिर्फ लड़ते रहो।

'रीढ़' कविता का सरल भावार्थ या आशय इस प्रकार लिखा जा सकता है, बारिश के दिनों में एक पूर्व छात्र अपने गुरूजी के घर चला जाता है। बारिश के कारण उसके कपड़े मुचड़े हुए और बाल भीगे हुए हैं।

वह बोलता है कि सर मुझे पहचाना क्या? ऐसा कहकर, ऊपर देखते, हँसकर बोलने लगा कि नदी गंगा मैया में बाढ़ आ गई, एक मेहमान बनकर कुटिया में रही, पहली बार माइके आए लड़की तरह उछल-कूद की। वापस जाते वक्त यही बाढ़ खाली हाथ नहीं गई तो मेरा सबकुछ ध्वस्त करके चली गयी, सिर्फ पत्नी और मैं बच गया। हमारे ऊपर छत भी नहीं बची। इसी कारण सिर्फ हमारे आँखों में आँसू बचे हैं। मैं और मेरी पत्नी मिट्‌टी, कीचड़ फेंककर, दीवार खड़ी करने का प्रयास कर रहे हैं। छात्र की व्यथा कथा सुनने के बाद गुरूजी को लगता है कि शायद यह आर्थिक मदद चाहता है। इसी समय वे अपना हाथ अपनी जेब की ओर बढाते हैं, इतने में छात्र कहता है कि नहीं, मुझे पैसे नहीं चाहिए। मेरा सबकुछ नष्ट होने पर मुझे बहुत अकेला लग रहा था। मेरा घर टूट गया लेकिन मेरी रीढ़ की हड्‌डी नहीं टूटी है, आप सिर्फ पीठ पर हाथ रखकर कहिए की लड़ते रहो, यही मेरी अपेक्षा है। मतलब गुरूजी का आशीर्वाद साथ है तो छात्र किसी भी संकट का सामना कर सकता है।

4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. 'रीढ़' कविता मूलत ....भाषा में लिखी गई है।

   (अ) हिंदी (ब) मराठी (क) गुजराती (ड) उर्दू

2. 'रीढ़' कविता का अनुवाद .... ने किया है।

   (अ) कुसुमाग्रज (ब) जावेद अख्तर (क) गुलजार (ड) कैफी आजमी

3. 'रीढ़' कविता .... काव्य संग्रह में संकलित है।

   (अ) विशाखा (ब) प्रवासी पक्षी (क) मराठी माती (ड) जीवन लहरी

4. 'रीढ़' कविता मराठी में शीर्षक: .... है।

   (अ) कणा (ब) भींत (क) वाचन (ड) स्वागत

5. कुसुमाग्रज का पूरा नाम............... है।

   (अ) वि. वा. शिरवाड़कर (ब) ग. रं. शिरवाड़कर

   (क) कु. वा. शिरवाड़कर (ड) के. रं. शिरवाड़कर

6. कुसुमाग्रज का जन्मदिवस मराठी .... दिवस के रूप में मनाया जाता है।

   (अ) राजभाषा (ब) राष्ट्रभाषा (क) राज्यभाषा (ड) संपर्क भाषा

7. कुसुमाग्रज का जन्म कौनसे वर्ष में हुआ था?

   (अ) 1910 ई. (ब) 1912 ई. (क) 1914 ई. (ड) 1916 ई.

8. गुलजार का पूरा नाम क्या है?

   (अ) गुलजार सिंह कालरा (ब) सम्पूर्ण सिंह कालरा

   (क) बिमल सिंह कालरा (ड) हेमंत सिंह कालरा

9. गुलजार का जन्म कौनसे वर्ष में हुआ था?

(अ) 1930 ई. (ब) 1932 ई. (क) 1934 ई. (ड) 1936 ई.

10. गुलजार हिंदी फिल्मों के एक प्रसिद्ध क्या है?

(अ) संगीतकार (ब) गीतकार (क) गायक (ड) अभिनेता

11. गुलजार को कौनसे वर्ष दादासाहेब फालके पुरस्कार मिला?

(अ) 2013 ई. (ब) 2014 ई. (क) 2015 ई. (ड) 2016 ई.

12. गुलजार को कौनसे वर्ष ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

(अ) 2020 ई. (ब) 2021 ई. (क) 2022 ई. (ड) 2024 ई.

13. कुसुमाग्रज को कौनसे वर्ष ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला?

(अ) 1987 ई. (ब) 1988 ई. (क) 1990 ई. (ड) 1992 ई.

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- मुचड़े- बारिश में भिगे एवं शरीर से चिपके कपड़े ।
- कुटिया - झोपड़ी ।
- मानन्द - जैसी ।
- खैर - मात्र बचना ।
- कतरे - आँसु की बँदें ।
- जानिब - जेब के अंदर ।
- रीढ़ की हड्डी - शरीर के पीठ की प्रमुख हड्डी ।

6. स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. (ब) मराठी
2. (क) गुलजार
3. (ब) प्रवासी पक्षी
4. (अ) कणा
5. (अ) वि. वा. शिरवाड़कर
6. (अ) राजभाषा
7. (ब) 1912 ई.
8. (ब) सम्पूर्ण सिंह कालरा
9. (ड) 1936 ई.
10. (ब) गीतकार
11. (अ) 2013 ई.
12. (ड) 2024 ई.
13. (अ) 1987 ई.

7. सारांश :

1. वि. वा. शिरवाड़कर एक मराठी कवि, नाटककार, उपन्यासकार और लघु कथाकार थे, जिन्होंने स्वतंत्रता, न्याय और वंचितों की मुक्ति के बारे में लिखा है।

2. गुलजार हिंदी फिल्मों के एक प्रसिद्ध गीतकार है, साथ ही वें एक कवि, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक, नाटककार तथा प्रसिद्ध शायर है।

3. कुसुमाग्रज और गुलजार भारतवर्ष की प्रसिद्ध हस्तियाँ हैं जिन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

4. कुसुमाग्रज द्वारा लिखित 'कणा' यह कविता मराठी साहित्य क्षेत्र की एक प्रसिद्ध कविता है, जिसका गुलजार जी ने हिंदी में अनुवाद करके उसे भारतीय साहित्य क्षेत्र में पहुँचा दिया है।

5. 'रीढ़' कविता के माध्यम से भारतीय गुरू-शिष्य परंपरा के संबंधों को चित्रित किया गया है।

6. जीवन में कितने भी संकट आये उसका डंटकर मुकाबला करने की सिख 'रीढ़' कविता देती है।

7. संकट के समय यदि मन में नैराश्य या अकेलापन आ जाता है तो उसे दूर करने या मन को हल्का करने का एकमात्र आधार गुरूजी का सान्निध्य है।

8. संकट के समय में किसी के आगे हाथ पसारने के बजाय अपनी मेहनत पर खड़ा रहने का प्रयास करना चाहिए, अपनी रीढ़ की हड्डी पर विश्वास होना चाहिए, उसके लिए गुरूजनों द्वारा दिया जानेवाला हौसला और आशीर्वाद की आवश्यकता होती है।

8. स्वाध्याय :

8.1 ससंदर्भ के उदाहरण :

'' न न न पैसे नहीं सर,
यूँ ही अकेला लग रहा था,
घर तो टूटा, रीढ़ की हड्डी नहीं टूटी मेरी
हाथ रखिए पीठ पर और इतना कहिए कि लड़ो.बस।''

8.2 टिप्पणियाँ :

1. 'रीढ़' कविता का उद्देश्य

8.3 दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. 'रीढ़' कविता का आशय

9. क्षेत्रीय कार्य :

1. 'रीढ़' कविता पर वैचारिक निबंध लिखने का प्रयास करें।

2. कुसुमाग्रज और गुलजार के जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व पर निबंध लिखिए।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. प्रवासी पक्षी – कुसुमाग्रज
2. विशाखा – कुसुमाग्रज
3. जानम – गुलजार
4. एक बूँद चाँद – गुलजार

❑❑❑

इकाई –3 (क)
7. फर्क, ईश्वर का चेहरा, पानी की जाति (तीन लघुकथाएं)– विष्णु प्रभाकर

अनुक्रम

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 विषय–विवरण

7.3.1 विष्णु प्रभाकर का जीवन परिचय एवं कृतित्व

7.3.2 तीन लघु कथाओं का परिचय

7.3.2.1 ‘फर्क’ कथा का आशय

7.3.2.2 ‘ईश्वर का चेहरा’ कथा का आशय

7.3.2.3 ‘पानी की जाति’ कथा का आशय

7.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

7.5 पारिभाषिक शब्द शब्दार्थ

7.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

7.7 सारांश

7.8 स्वाध्याय

7.9 क्षेत्रीय कार्य

7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

7.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1) विष्णु प्रभाकर के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित होंगे।
2) तीन लघु कथाओं की कथावस्तु समझ लेंगे।
3) तीन लघु कथाओं के कथ्य को जान लेंगे।
4) जाति–धर्म से बढ़कर इंसानियत, मानवतावाद को स्वीकारना आवश्यक है, इस कथ्य को समझ लेंगे।
5) हिंदू–मुस्लिम एकता के महत्व को समझ लेंगे।

7.2 प्रस्तावना :

भारत में कथा लेखन की लंबी परंपरा है। मनोरंजन से सामाजिक सुधार तथा प्रबोधन तक कथा लेखन का विकास हुआ है। आलोचक हिंदी में लघु कथा लेखन का आरंभ सन 1970 के आसपास मानते हैं। उनका कहना है की लघु कथा स्वतंत्र विधा है। लघु कथा लिखना कठिन तथा चुनौतिपूर्ण काम है। वह एक गागर में सागर भरनेवाला संक्षिप्त तथा गंभीर विषय है। प्रेमचंद, माखनलाल चतुर्वेदी, हरिशंकर परसाई, विष्णु प्रभाकर, माधवराव सप्रे, रमेश बत्रा, अशोक भाटिया आदि लेखकों ने अपनी लघु कथाओं को कलात्मक तथा सांकेतिक शैली में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

विष्णु प्रभाकर जी ने अनेक लघु कथाओं का अपनी प्रखर बौद्धिक क्षमता से लेखन किया है। भारतीय दर्शनशास्त्र, मानवीय मूल्य, आदर्शवाद आदि सिद्धांत लघु कथाओं में झलकते हुए दिखाई देते हैं। विष्णु प्रभाकर जी ने 'फर्क', 'ईश्वर का चेहरा', 'पानी की जाति', 'पाप की कमाई', 'खोया और पाया', 'हिरे की पहचान', 'ब्राह्मण कौन', 'एक भाव एक मान', 'वह आवाज', 'बाहुबली' आदि अनेक लघु कथाएं समाजसुधार तथा जन जागृति के उद्देश्य से लिखी है।

7.3 विषय विवरण :

7.3.1 विष्णु प्रभाकर का जीवन परिचय :

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून 1912 को उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के मीरापुर गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम दुर्गा प्रसाद और उनकी माता का नाम महादेवी था। उनकी पत्नी का नाम सुशीला था। विष्णु प्रभाकर की आरंभिक शिक्षा मीरापुर में हुई। उन्होंने हिंदी में प्रभाकर व हिंदी भूषण की उपाधि के साथ ही संस्कृत में प्रज्ञा और अंग्रेजी में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की।

विष्णु प्रभाकर पर महात्मा गाँधी के दर्शन और सिद्धांतों का गहरा असर पड़ा। इसके चलते ही उनका रुझान कांग्रेस की तरफ हुआ और स्वतंत्रता संग्राम के महासमर में उन्होंने अपनी लेखनी का भी एक उद्देश्य बना लिया, जो आजादी के लिए सतत संघर्षरत रही। अपने दौर के लेखकों में वे प्रेमचंद, यशपाल, जैनेंद्र और अज्ञेय जैसे महारथियों के सहयात्री रहे, लेकिन रचना के क्षेत्र में उनकी एक अलग पहचान रही। 11 अप्रैल 2009 को दिल्ली में उनका निधन हो गया।

कृतित्व :

उपन्यास – ढलती रात, स्वप्नमयी, अर्धनारीश्वर, धरती अब भी घूम रही है, क्षमादान, दो मित्र, पाप का घड़ा, होरी।

नाटक – हत्या के बाद, नव प्रभात, डॉक्टर, प्रकाश और परछाइयाँ, बारह एकांकी, अशोक, अब और नहीं, टूट्ते परिवेश।

कहानी संग्रह – संघर्ष के बाद, धरती अब भी धूम रही है, मेरा वतन, खिलोने, आदि और अन्त।

लघु कथा – फर्क, व्यवस्था का राजदार, पानी की जाति, ईश्वर का चेहरा आदि।

आत्मकथा – पंखहीन नाम (तीन भागों में)

जीवनी – आवारा मसीहा।

यात्रा वृतान्त् – ज्योतिपुंज हिमालय, जमुना गंगा के नैहर में।

सम्मान – पद्मभूषण, अर्धनारीश्वर उपन्यास के लिये भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी सम्मान तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार आदि।

7.3.2 तीन लघु कथाओं का परिचय :

विष्णु प्रभाकर जी की 'फर्क' इस लघु कथा में भारत-पाकिस्तान की सीमारेखा के बीच सुरक्षा विषयक सख्त कानून व्यवस्था के नियम है, उसका चित्रण किया गया है। शत्रुता के कारण इन दोनों देशों के लोग और जवान एक-दूसरे पर थोड़ा भी विश्वास नहीं रखते। देश के मिलटरी के लोग कानून के डर से ईद जैसे सांस्कृतिक एवं भाई चारे के पावन त्यौहार पर भी एक दूसरे की सीमारेखा में कदम रखने का ढाढ़स नहीं रखते। ऐसे समय में पाकिस्तान की बकरियां भारत देश की सीमा में आकर फिर पाकिस्तान की सीमा में चली जाती है। सीमा और धर्म का बंधन मनुष्य मानता है, जानवर हैं मानते। विष्णु प्रभाकर जी की फर्क यह लघु कथा दो देश, संस्कृति, धर्म इनमें मानवीय चिंतन को प्रकट करती है।

विष्णु प्रभाकर जी की 'ईश्वर का चेहरा' इस लघु कथा में असाध्य बीमारी से झुंझते हुए पीड़ित हिंदू और मुस्लिम दो महिलाएं अस्पताल के एक ही वार्ड में इलाज ले रही हैं। शायद वे दोनों भी इस दुनिया में कुछ ही दिनों की मेहमान है। हिंदू महिला की तबीयत ठीक हो, उसे अधिक उम्र मिले ऐसी मुस्लिम महिला अल्लाह से प्रार्थना करती हैं। स्वयं बीमार होते हुए भी उसकी हिंदू नारी के प्रति आत्मीयता देखकर हिंदू महिला को लगता है, ईश्वर का अगर कोई चेहरा होगा तो सबीना जैसा ही होगा। यहाँ एक धर्म की महिला दूसरे धर्म की महिला के प्रति अच्छे आरोग्य एवं कल्याण की भावना व्यक्त करती है। यह अनुभव दुर्लभ है। प्रेम, आत्मीयता यह भाव जाति-धर्म से परे हैं।

विष्णु प्रभाकर जी की 'पानी की जाति' इस लघु कथा में पानी किसी जाति-धर्म की वस्तू न होकर वह समस्त मानव, प्राणी, जीव-जंतु तथा सजीव वर्ग का है। इसलिए पानी की मूलभूत अनिवार्यता ध्यान में रखकर उसे जीवन कहा गया है। 'पानी की जाति' इस लघु कथा में विष्णु प्रभाकर जी ने पानी जाति-धर्म से परे हैं। किसी मनुष्य को पानी की आवश्यकता है तो उसे पानी देकर प्यास बुझाना मानवताका कार्य है। पानी की जाति इस लघु कथा में एक मुस्लिम लड़का एक हिंदू लड़के को पानी पिलाकर प्राण बचाता है। अर्थात मनुष्य को पानी की तरह तरल, सरल और निर्मल होकर जीवन जीने की आवश्यकता है। ऐसा जीवन जीने से हम हिंदू-मुस्लिम आदि सांप्रदायिक द्वोषपूर्ण विषय से मुक्त होकर मैत्री, भाईचारा, स्नेह, प्रेम से भरपूर मानवीय आनंददायी तथा खुशहाल जीवन जी सकेंगे।

7.3.2.1 फर्क लघु कथा का आशय :

सन 1947 से पहले भारत-पाकिस्तान दो देश न होकर भारत नाम से एक ही देश था। अंग्रेज अपने देश में वापस जाते समय इन दो देशों की धार्मिक कट्टरता को देखकर इनमें अशांति बनाए रखने के लिए इनका भारत, पाकिस्तान दो देशों में विभाजन किया। देश आजाद होने से पहले हिंदू - मुस्लिम लोगों ने एक होकर देश का स्वतंत्रता आंदोलन चलाया। वही लोग देश के विभाजन पर धार्मिक कट्टटता से दंगों का अमानवीय रूप लेकर इतनी भयानकता से लढ़े-झगड़े की एक देश का भारत पाकिस्तान इन दो देशों में विभाजन करना पड़ा। आज दोनों देश के लोग यह भूल गए हैं, कि कभी हम भाई-भाई बनकर रहते थे, एक साथ खाते-पीते थे। हिंदू-मुस्लिम दोनों धर्मों के त्यौहार मिलकर मनाते थे। लोग आज इस तरह अलग हो गए हैं कि इंसानियत ही भूल गए है। एक दूसरे की चाय पीना भी कठिन हो गया है।

लेखक पत्नी के साथ भारत पाकिस्तान देश की सीमारेखा देखने गए थे। पहले यह एक देश था। आज इसके भारत पाकिस्तान दो देश हो गए हैं। अब वे देश कैसे दिखाई देते हैं। इस विचार से इन दो देशों की सीमारेखा के बीच में जिस भूमि पर किसी भी देश का अधिकार नहीं है, उस जमीन पर कोई भी खडे हो सकते है। ऐसी जमीन पर यह पति-पत्नी खडे होकर दोनों देशों को देख रहे थे। उन दोनों देशों की सीमारेखा पर सुरक्षा के लिए दोनों देशों के सैनिक तैनात है। भारत देश के अठारह सशस्त्र सैनिक और उनका कमांडर भी उपस्थित था।

ईद का त्यौहार था। पाकिस्तान के सैनिक खुश होकर चाय-पान कर रहे थे। सीमारेखा का उल्लंघन होने के लिए किसी भारतीय को चाय-पान के बहाने जानबूझकर बुला सकते हैं। देखने के लिए आए हुए पति-पत्नी से सीमारेखा में कोई गलती न हो जाए, इसलिए निगरानी रखते हुए कमांडर ने उसके कान में कहा, ''उधर के सैनिक आपको चाय के लिए बुला सकते हैं, जाइएगा नहीं। पता नहीं क्या हो जाए? आपकी पत्नी साथ में हैं और फिर कल हमने उनके छह तस्कर मार डाले थे।'' कमांडर की इस बात पर लेखक कहता हैं, ''जी नहीं, मैं उधर कैसे जा सकता हूँ?'' और मन ही मन कहा - मुझे आप इतना मुर्ख कैसे समझते हैं? मैं इंसान, अपने-पराये में भेद करना मैं जानता हूँ इतना विवेक मुझ में है।

इसी समय पाकिस्तान का सैनिक रौबीले पठान आ जाता हैं। ईद की शुभकामनाएँ देते हुए लेखक से हाथ मिलाकर कहता है, ''इधर तशरीफ लाइए। हम लोगों के साथ एक प्याला चाय पीजिये ।'' इस बात पर लेखक का नम्रता से उत्तर तैयार था, ''बहुत-बहुत शुक्रिया। बडी खुशी होती आपके साथ बैठकर, लेकिन मुझे आज ही वापस लौटना है और वक़्त कम हैं। आज तो माफ़ी चाहता हूँ।''

ऐसी शिष्टाचार की बातें हुई कि पाकिस्तान की ओर से बकरियों का एक दल उनके पास से भारत की सीमा में दाखिल हुआ। एक साथ सब उनकी ओर देखने लगे उसने पूछा, ''ये आपकी है?'' उनके एक सैनिक ने गहरी मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया, ''जी हां, जनाब! हमारी है। जानवर है, फर्क करना नहीं जानते।''

अर्थात बकरीयों का सीमा, धर्म का बंधन न मानना उसकी भेदभाव विरहित सात्विकवृत्ति आज मनुष्य के व्यवहार में आवश्यक है।

7.3.2.2 'ईश्वर का चेहरा' कथा का आशय :

प्रभा और सबीना दो भिन्न धर्म की दो महिलाएं एक असाध्य बीमारी की शिकार हुई है। दोनों एक अस्पताल में एक ही वार्ड में इलाज ले रही है। दोनों ने अपने मन में निश्चित किया है, कभी भी अपना जीवन समाप्त हो सकता हैं।

प्रभा अच्छे परिवार की हिंदू महिला है। बीमारी के कारण उसके बच्चे पति के पास घर में है। हर रोज उसे देखने और बीमारी का हाल पूछने के लिए अनेक लोग अस्पताल में आते थे। उसके पति महंगी दवाइयां, फल, तथा अंडे लेकर हमेशा उसे मिलने के लिए आते थे। प्रभा की तबीयत में सुधार नहीं है, यह देखकर रोते रहते हैं।

सबीना मुस्लिम परिवार की अच्छे खानदान की एक कुलीन महिला है। लेकिन वह आर्थिक स्थिति से थोड़ी कमजोर होने के कारण झोपड़पट्‌टी में रहती है। वह महंगी दवाईया, फल ला नहीं सकती है। वह देखती है, कि प्रभा पर बच्चे, पति, परिवार, मेहमान सभी बहुत प्रेम करते हैं। सभी को लगता हैं, वह इस बीमारी से ठीक हो जाए। इसलिए सबीना हमेशा प्रभा के पास बैठकर सुख-दुःख की बातें करती रहती है। नई-नई पौष्टिक दवाइयां, फल, तथा अंडे खाने की सलाह देते हुए कहती है, ''मैंने सुना है यह दवा खाने से तुम्हारे से भी खराब हालत वाले मरीज भी खुदा के घर से लौट आए हैं।'' ऐसा कहकर सबीना प्रभा का हौसला बढ़ाने का प्रयास करती है।

प्रभा और उसके परिवार वालों की प्रभा ठीक होने की प्रबल इच्छा देखी है। इसलिए सबीना अल्लाह को उसके ठीक होने की बार-बार प्रार्थना करती है। सबीना का यह प्रेमभाव देखकर प्रभा को लगता है कि ईश्वर का अगर चेहरा होगा तो सबीना जैसा ही होगा।

यहा दो भिन्न धर्म की नारियों का एक दूसरे के प्रति जो आदर, प्रेमभाव है यह उच्च कोटि का है। वह जाति- धर्म की सीमाएं पार करके इंसानियत, मानवता तक पहुंच चुका है।

7.3.2.3 'पानी की जाति' कथा का आशय :

बी. ए. की परीक्षा देने के बाद लेखक लाहौर गए थे। उन दिनों में उनकी तबीयत खराब थी। सितंबर महीना था। मलेरिया काफी बढ़ चुका था। एक प्रसिद्ध व्यक्ती डॉ. विश्वनाथ कृष्णनगर से दूर रहते थे। उन्हें लेखक को मिलना था। लेखक गांधी टोपी और धोती पहने थे। उन्हें मिलने के लिए लेखक को पैदल ही चलना पड़ा।

अचानक उनकी तबीयत इतनी बिगड गईं की चलना कठिन हो गया । प्यास के कारण प्राण कंठ को आए। पास में मुस्लिम बस्ती में एक छोटी-सी दुकान थी। लेखक साहस करके एक दुकान में घुस गये। प्यास, बुखार के कारण बेंच पर लेटकर बोले, ''मुझे बुखार चढ़ा है। बड़े जोर की प्यास लग रही है। पानी

या सोडा, जो कुछ भी हो, जल्दी लाओ!'' उस मुस्लिम युवक ने जवाब दिया, ''हम मुसलमान है। क्या तुम हिंदू नहीं हो? हमारे हाथ का पानी पी सकोगे?'' इस बात पर लेखक ने कहा, ''हिंदू के भाई, मेरी जान निकल रही है और तुम जात की बात करते हो। जो कुछ हो, लाओ!''

युवक ने अंदर जाकर सोडे की एक बोतल लाई। सोडा पीते ही उल्टी हो गईं और छोटी-सी दुकान गंदगी से भर गईं। मुस्लिम युवक ने उसका मुँह पौछा, सहारा दिया और बोला, ''कोई डर नहीं। अब तबीयत कुछ हल्की हो जाएगी। दो-चार मिनट इसी तरह लेटे रहो। मैं शिकंजी बना लाता हूँ। इससे लेखक का मन शांत हो चुका था और वे सोच रहे थे की यह पानी, जो वह पी चुका हैं, क्या सचमुच मुसलमान पानी था?

7.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

1. उधर के सैनिक आपको .... के लिए बुला सकते हैं, जाइएगा नहीं।

   अ) चाय ब) दूध क) नाश्ता ड) भोजन

2. उस दिन ....थी। उसने उन्हें मुबारक बात कहा।

   अ) ईद ब) दिवाली क) दशहरा ड) रंग पंचमी

3. हमारी हैं। .... हैं। फर्क करना नहीं जानते।

   अ) बकरी ब) जानवर क) घोड़ा ड) बैल

4. बीमारी के कारण धरती पर अपनी छुट्‌टी समाप्त हो गईं है, ऐसा .... को लगता हैं।

   अ) सबीना ब) प्रभा क) लेखक ड) पति

5. एक मुस्लिम .... भी उसी रोग से पीड़ित है।

   अ) मौलवी ब) खातून क) महिला ड) मरीज

6. ईश्वर का अगर कोई चेहरा होगा तो .... के जैसा ही होगा।

   अ) प्रभा ब) सबीना क) मरीज ड) बहन

7. जो वह पी चुका है, क्या सचमुच .... पानी था।

   अ) हिंदू ब) शिख क) मुसलमान ड) ईसाई

8. आसपास देखा, ... की बस्ती थी।

   अ) मुसलमानों ब) गरीबों क) शिखों ड) हिन्दुओं

9. मैं .... बना लाता हूँ।

   अ) शिकंजी ब) सोडा क) खाना ड) शरबत

10. 'पानी की जाति' यह लघु कथा .... की है।

    अ) विष्णु प्रभाकर ब) अमरकांत क) मृदुला सिन्हा ड) भगवानदास मोरवाल

7.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

1. कमांडर – नौसैनिक और वायुसैनिक अधिकारी।
2. तस्कर – चोर, दो देशों, प्रदेशों की सीमा पर चुंगी आदि दिए बिना चोरी से माल ले आनेवाला।
3. खातून– रानी या साम्राज्ञी के समतुल्य, सभ्य, भद्र, ऊंचे खानदान की, कुलीन परिवार की या राज परिवार की स्त्री।
4. अल्लाताला– सबसे बढ़कर है, परमेश्वर।
5. तल्खी– तेज़ी, चिड़चिड़ापन।
6. शिकंजी – नीबूके रस से बना एक पेय है, इसे आमतौर पर गर्मियों में पिया जाता है।

7.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर:

1 – अ) चाय, 2– अ) ईद, 3– ब) जानवर, 4– ब) प्रभा,

5 – ब) खातून, 6 – ब) सबीना, 7 – क) मुसलमान,

8 – अ) मुसलमानों, 9 – अ) शिकंजी, 10 – अ) विष्णु प्रभाकर

7.7 सारांश :

1. 'फर्क' लघु कथा दो देशों की सीमारेखा के कानून व्यवस्था की जानकारी देनेवाली कथा है।
2. 'फर्क' कथा आज के वास्तविकता से जुडी कथा है।
3. 'फर्क' कथा में भारत पाकिस्तान के बीच की मनुष्य निर्मित शत्रुता को दर्शाया है।
4. 'फर्क' कथा के मध्यम से सांस्कृतिक लेन-देन से दो देशों के बीच संबंध सुधारे जा सकते हैं यह दिखया है।
5. कथा में बकरियों के सीमारेखा के उल्लंघन से दो देशों में मानवीय सबंध निर्माण हो सकते हैं यह सांकेतिक रूपमे दिखाया है।
6. इस लघु कथा में आज के असाध्य बीमारी से ग्रस्त मनुष्य जीवन की त्रासदी का वर्णन किया हैं ।
7. इस लघु कथा में दो नारियों के संवेदनशील जीवन का चित्रण किया हैं ।
8. इस लघु कथा में खुशहाल जीवन जीने के लिए जाति – धर्म के बजाय मानवीय संबंध श्रेष्ठ मानने की सिख मिलती हैं।
9. इस लघु कथा में अहंकार के बजाय एक दूसरे का आदर करके सम्मान से जीवन जीया जा सकता हैं यह आदर्श सिख मिलती हैं।
10. इस लघु कथा में सभी धर्मों में दया, प्रेम, करुणा समान होती हैं यह सिख मिलती हैं।
11. इस लघु कथा में सभी जाति, धर्म और मनुष्य समान होने की सिख मिलती हैं।

12. इस लघु कथा में सभी जाति, धर्म में सेवाभाव यह एकमात्र आदर्श तथा श्रेष्ठ तत्व हैं यह सिख मिलती हैं।
13. इस लघु कथा में मनुष्य जाति, धर्म के कारण विभाजित हैं लेकिन सेवाभाव के कारण एक हैं यह सिख मिलती हैं।
14. इस लघु कथा में पानी, हवा, आकाश, पृथ्वी आदि प्रकृति की सभी वस्तुएं मनुष्य की एकता, सेवा और जीवन के लिए है यह चिंतन प्रस्तुत करती हैं।

7.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1. 'फर्क' लघु कथा का आशय।
2. 'फर्क' लघु कथा के उद्देश्य।
3. 'ईश्वर का चेहरा' लघु कथा का आशय।
4. 'ईश्वर का चेहरा' लघु कथा के उद्देश्य।
5. 'पानी की जाति' लघु कथा का आशय।
6. 'पानी की जाति' लघु कथा के उद्देश्य।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. तीनों लघु कथाओं की कथावस्तु लिखिए।
2. तीनों लघु कथाओं के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. तीनों लघु कथाओं के माध्यम से सर्वधर्मसमभाव का चित्रण कीजिए।
4. तीनों लघु कथाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का चित्रण कीजिए।

7.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. हिंदू-मुस्लिम राष्ट्रीय एकता विषयक कहानियाँ पढ़िए।
2. तीनों लघुकथोओं का मराठी में अनुवाद करने का प्रयास कीजिए।

7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. ईदगाह - प्रेमचंद
2. व्यवस्था का राजदार - विष्णु प्रभाकर

***

इकाई 3 (ख)

8. दोपहर का भोजन (कहानी) - अमरकांत

अनुक्रम

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 विषय विवरण

8.3.1 अमरकांत का परिचय

8.3.2 'दोपहर का भोजन' कहानी का परिचय

8.3.3 'दोपहर का भोजन' कहानी का आशय

8.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

8.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

8.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

8.7 सारांश

8.8 स्वाध्याय

8.9 क्षेत्रीय कार्य

8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

8.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1) अमरकांत के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित होंगे।

2) 'दोपहर का भोजन' कहानी की कथावस्तु समझ लेंगे।

3) 'दोपहर का भोजन' कहानी के कथ्य को जान लेंगे।

4) गरीब परिवार के अभावग्रस्त जीवन के कारण उनकी भूख की संवेदनशील स्थिति को समझ लेंगे।

5) गरीब परिवार के नारी जीवन की शोकांतिका जान लेंगे।

8.2 प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन का प्रारंभ सन 1955-56 से माना जाता है। कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी इनके साथ अमरकांत एक प्रमुख कहानीकार है। साहित्य सृजन में उनकी बचपन से ही रूचि थी। इन्होंने किशोर अवस्था में कहानी लेखन का प्रारंभ किया था। अपनी कहानियों में शहरी और ग्रामीण जीवन का वास्तववादी चित्रण किया है। वर्तमान काल की सामाजिक अमानवीयता, असंवेदनशीलता, पाखंड, आडंबर आदि विषयों पर सुंदर लेखन करनेवाले सिद्धहस्त लेखक के रूप में हिंदी साहित्य में अमरकांत जी विशेष सुपरिचित लेखक है।

सहजता, सरलता, सादगी फिर भी प्रभावात्मकता अमरकांत के कहानी लेखन की खास विशेषता है। कहानियों के चरित्र, भाषा, वातावरण कहानी में सजीवता लाते हैं। उनके लेखन की शैली कहानियों को प्रसिद्धि और अमरता प्रदान करती है।

8.3 विषय–विवरण :

8.3.1 अमरकांत का परिचय :

अमरकांत का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगारा गांव में 1 जुलाई 1925 को हुआ था। इनके पिता का नाम सीताराम वर्मा व माता का नाम अनंती देवी था। अमरकांत जी का वास्तविक नाम ‘श्रीराम वर्मा’ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव बलिया में ही हुई थी। यह वो दौर था जब संपूर्ण भारत में ब्रिटिश हुकूमत से आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था। वहीं इनका संपर्क स्वतंत्रता आंदोलन के सेनानियों से हुआ। वहीं साहित्य–सृजन में उनकी बचपन से ही गहरी रूचि थी, किशोरावस्था से ही उन्होंने कहानी–लेखन प्रारंभ कर दिया था।

अमरकांत हिंदी कथा साहित्य में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के बाद यथार्थवादी धारा के प्रमुख कहानीकार माने जाते हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में ग्रामीण और शहरी जीवन का सजीव चित्रण किया है। वो मुख्यत: मध्यमवर्ग के जीवन की वास्तविकता और विसंगतियों को व्यक्त करने वाले कहानीकार माने जाते हैं। हिंदी साहित्य जगत में अमरकांत को भारत के ‘मैक्सिम गोर्की’ के नाम से भी जाना जाता था। उन्हें यह नाम हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक ‘यशपाल’ जी ने दिया था। अमरकांत जी का निधन **17** फरवरी **2014** को इलाहबाद में हुआ।

अमरकांत का साहित्य परिचय :

कहानी संग्रह : जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र–मिलन, कुहासा, तूफ़ान, कला प्रेमी, एक धनि व्यक्ति का बयान, सुख और दुःख का साथ।

उपन्यास : सूखा पत्ता, ग्राम सेविका, काले उजले दिन, सुखजीव, बीच की दीवार, इन्हीं हथियारों से, पराई दाल का पंछी।

संस्मरण : कुछ यादें, कुछ बातें, दोस्ती।

बाल साहित्य : नेउर भाई, वानर सेना, खूंटा में दाल है, सुग्गी चाची का गाँव।

सम्मान : साहित्य अकादमी सम्मान 2007, ज्ञानपीठ पुरस्कार 2009, व्यास सम्मान 2010, सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार, मैथलीशरण गुप्त पुरस्कार, जन संस्कृति सम्मान, यशपाल पुरस्कार, मध्य प्रदेश राज्य का 'अमरकांत कीर्ति' सम्मान आदि।

8.3.2 दोपहर का भोजन कहानी का परिचय

दोपहर का भोजन यह गरीबी के कारण अभावग्रस्त जीवन जी रहे एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। दोपहर के एक समय के भोजन की घटना से भारतीय परिवार के पीढ़ी दर पीढ़ी गरीबी की रेखा के नीचे अपना जीवन बिताते है। देश की इस भयावह स्थिति को चिंता के रूप में लेखक अमरकांत जी ने जाहीर किया है। इससे भी दर्दनाक यह है कि इसकी शिकार सिद्धेश्वरी जैसी देश की सैकडों महिलाएं देश की आजादी के अमृत महोत्सव के बाद भी अपने परिवार के लिए आधे पेट ही भोजन करके जीवन चला लेती हैं। यह अनाज उत्पन्न करने वाले भारत देश के युवा और नारी शक्ति के भविष्य के बारे में अनारोग्य की धोखे की घंटी है।

8.3.3 'दोपहर का भोजन' कहानी का आशय :

सिद्धेश्वरी खाना बनाकर चूल्हा बुझाकर दोपहर के भोजन के लिए अपने घर के सदस्यों की राह देख रही है। पति मुंशी चन्द्रिका प्रसाद जी अस्थाई रूप से मकान किराया नियंत्रण विभाग में क्लर्क का काम करते है। बाकी के समय में जहाँ काम मिले वह करते हुए अपने परिवार की जीविका चला रहे हैं। अधिक मेहनत और खान-पान की कमी के कारण उनकी उम्र पैंतालीस वर्ष की होकर भी वो पचास-पचपन के लगते थे।

बडा लड़का रामचंद्र अब इक्कीस वर्ष का हुआ है। वह लम्बा, दुबला-पतला है। इंटर पास करके एक स्थानीय दैनिक समाचार-पत्र के दफ़्तर में प्रूफ-रीडरी का काम सिख रहा है। उसे घर में बडकू नाम से पुकारा जाता है। मंझला लड़का मोहन 18 वर्ष का है। उसके चेहरे पर चेचक के दाग है। बड़े भाई की तरह दुबला-पतला था। वह स्कूल का प्राइवेट इम्तिहान दे रहा है। वह उम्र की अपेक्षा अधिक गंभीर और उदास दिखाई देता है। प्रमोद छः वर्षीय छोटा लड़का है। खाने-पीने की अव्यवस्था के कारण उसकी हड्डीया साफ दिखाई दे रही है, और पेट बडा हो गया है। पहनने के लिए पर्याप्त कपड़े न होने के कारण नंग-धडंग दिनभर ओसरे में अध-टूटे खटोले पर पड़ा रहता है।

दोपहर 12 बजे बडा लड़का रामचंद्र भोजन के लिए आता है। वह बहुत थका हुआ था। आते ही बेजान-सा लेट जाता है। सिद्धेश्वरी ने उसकी तबीयत देखकर उसे खाना खाने को उठाया। थाली में दो रोटियां, कटोरा भरकर पनियाई डाल और चने की तली तरकारी लाई। खाना खाते समय रामचंद्र ने पिताजी और भाई मोहन के बारे में पूछ-ताछ की मोहन बहुत देर से गायब था। लेकिन सिद्धेश्वरी झूठ-मूठ ही

कहती है, ''किसी लडके के यहाँ पढ़ने गया है आता ही होगा। दिमाग़ उसका बडा तेज है और उसकी तबीयत चौबीसों घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है। हमेशा उसी की बात करता रहता है।''

रामचंद्र ने प्रमोद की बात उठाई तो सिद्धेश्वरी कहने लगी, आज तो सचमुच नहीं रोया। वह बडा ही होशियार हो गया है। कहता था, बड़का भैया के यहाँ जाऊंगा। ऐसा लड़का.. वास्तव में कल ही प्रमोद ने रेवड़ी खाने की जिद पकड़ ली थी और उसके लिए डेढ़ घंटे तक रोने के बाद सोया था।

मँझला लड़का मोहन खाने के लिए आया तो उसे पंखा डुलाती हुई सिद्धेश्वरी बोली, ''बड़का तुम्हारी बड़ी तारीफ कर रहा था। कह रहा था, मोहन बडा दिमागी होगा, उसकी तबीयत चौबीसों घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है।

मोहन के खाने के बाद सिद्धेश्वरी के पति मुंशी चन्द्रिका प्रसाद खाने के लिए आते हैं। खाना खाते-खाते मुंशी चन्द्रिका प्रसाद जी बड़े लडके के बारे में पूछने पर कहती है, ''अभी-अभी खाकर काम पर गया हैं। कह रहा था, कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा बाबू जी-बाबू जी किए रहता है। बोला बाबू जी देवता के समान है।

इस बात पर मुंशी जी के चेहरे पर कुछ चमक आई। शरमाते हुए पूछा, ''ऐ, क्या कहता था कि बाबू जी देवता के समान है? बडा पागल है।'' इस तरह दोनों पति-पत्नी अपने बच्चौं की तारीफ करते है। उनकी चर्चा के पीछे भावना यह थी कि अपने घर में गरीबी है, इसलिए एक दूसरे से सभी मिल-जुलकर रहे, एक-दूसरे का सम्मान, इज्जत करते हुए आदर देते रहे।

मुंशी के भोजन के बाद अब सिद्धेश्वरी खाना खाने बैठ गईं। छोटा लड़का सोया है, यह बात उसकी ध्यान में आई। इसलिए अंतिम एक मोटी, भद्दी और जली रोटी का आधा हिस्सा उसके लिए रखकर आधी रोटी और बटलोई की दाल लेकर खाने बैठ गईं। पहला ग्रास मुँह में रखा और तब उसे अपने परिवार की गरीबी, पति की अनिश्चित नौकरी, बच्चों का भविष्य देखकर उसकी आँखों से टपटप आंसू गिरने लगे।

8.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. 'दोपहर का भोजन' कहानी .... की है।

   अ) विष्णु प्रभाकर   ब) अमरकांत   क) मृदुला सिन्हा   ड) भगवानदास मोरवाल

2. 'दोपहर का भोजन' कहानी का प्रमुख पात्र .... है ।

   अ) सिद्धेश्वरी   ब) मुन्शी चंद्रिका प्रसाद

   क) रामचंद्र   ड) मोहन

3. 'दोपहर का भोजन' कहानी के बडे लडके का नाम .... है ।

   अ) प्रमोद   ब) मुन्शी चंद्रिका प्रसाद

   क) रामचंद्र   ड) मोहन

4. ‘दोपहर का भोजन’ कहानी के मंझले लडके का नाम .... है।

अ) प्रमोद | ब) मुन्शी चंद्रिका प्रसाद
क) रामचंद्र | ड) मोहन

5. ‘दोपहर का भोजन’ कहानी के छोटे लडके का नाम .... है।

अ) प्रमोद | ब) मुन्शी चंद्रिका प्रसाद
क) रामचंद्र | ड) मोहन

6. सिद्धेश्वरी के पति का नाम .... है।

अ) गंगाशरण बाबू | ब) मुन्शी चंद्रिका प्रसाद
क) रामचंद्र | ड) मोहन

7. रामचंद्र ....का काम सिख रहा था।

अ) पत्रकार ब) प्रूफ-रीडरी क) टायपिंग ड) प्रिंटिंग

8. रामचंद्र ....पास था।

अ) दसवी ब) इंटर क) बी.ए. ड) एम.ए.

9. रामचंद्र को .... नाम से पुकारते थे।

अ) भैय्या ब) बडकू क) रामा ड) रामू

10. ....के चेहरे पर चेचक के दाग थे।

अ) प्रमोद ब) मुन्शी चंद्रिका प्रसाद
क) रामचंद्र ड) मोहन

8.5 पारिभाषिक शब्द– शब्दार्थ:

1. व्यग्रता - व्याकुलता, घबराया हुआ।
2. बर्राक - चमकता हुआ।
3. पंदूक - कबूतर की तरह का एक प्रसिद्ध पक्षी।
4. कनखी - आँख के कोने से।
5. ओसारा - बरामदा।
6. छिपुली - खाने का छोटा बर्तन।
7. अलगनी - कपड़े टांगने के लिए बांधी गईं रस्सी।
8. किवाड़ - दरवाजा।
9. प्रूफ-रीडरी - लेखन की अशुद्धियां दूर करनेवाला।

10. गमछा – सूती तौलिया जैसा वस्त्र।

11. रेवड़ी – पगी हुई चीनी या गुड़ की सफ़ेद तिल मिश्रित छोटी टिकिया।

12. चेचक – (शीतला, बड़ी माता, स्मालपोक्स) एक विषाणु जनित रोग।

8.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर:

1– ब) अमरकांत, 2– अ) सिद्धेश्वरी, 3– क) रामचंद्र, 4– ड) मोहन,

5– अ) प्रमोद, 6– ब) मुन्शी चंद्रिका प्रसाद, 7– ब) प्रूफ–रीडरी,

8– ब) इंटर, 9– ब) बडकू, 10– ड) मोहन

8.7 सारांश:

1. दोपहर का भोजन कहानी में एक गरीब परिवार के पति–पत्नी अपने तीन बेटों के साथ अभावग्रस्त जीवन जीते हुए भूख की समस्या का सामना हररोज करते हैं। इस एक उदाहरण से समस्त भारत देश की गरीबी का चित्रण किया हैं।
2. भूख और गरीबी का अधिकतर सामना नारी वर्ग को करना पड़ता हैं।
3. भूख से शरीर का पोषण ठीक से नहीं हो पाता है। इससे कुपोषण का सामना माँ के साथ संतान को सहना पड़ता है। इससे बचपन में उत्पन्न हुई बीमारी को बच्चों को जीवन भर स्वीकार करके चलना पड़ता है। परिणामत: गरीबी की रेखा के नीचे के देश के युवा वर्ग का भविष्य तबाह हो जाता हैं।
4. 'दोपहर का भोजन' यह एक गरीब परिवार के दोपहर के वक़्त के भोजन की घटना को संवेदनशीलता से प्रकट करनेवाली कहानी है।
5. गरीब परिवार की सुशील महिला गरीबी में भी अपने परिवार को प्रेम, स्नेह और विश्वास के एक सूत्र में बांधकर किस तरह अपना दैनंदिन दुःखी जीवन आनंद में बिताती है। यह कलात्मक रूप में दिखाने का प्रयास किया है।
6. यह एक यथार्थवादी कहानी है।
7. इस कहानी में गरीबी के साथ बेरोजगारी की कठिन समस्या का सुंदरता के साथ चित्रण किया है।
8. गरीबी से भूख की मूल समस्या निर्माण होती है।

8.8 स्वाध्याय:

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1. 'दोपहर का भोजन' कहानी का उद्देश्य।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'दोपहर का भोजन' कहानी की कथावस्तु लिखिए।

2. ‘दोपहर का भोजन’ कहानी की नायिका सिद्धेश्वरी का चरित्र चित्रण कीजिये।

3. ‘दोपहर का भोजन’ कहानी के आधार पर भूख की समस्या का चित्रण कीजिये।

8.9 क्षेत्रीय कार्य:

1. ‘दोपहर का भोजन’ कहानी का नाट्य रूपांतर कीजिए।

2. ‘दोपहर का भोजन’ कहानी का मराठी में अनुवाद कीजिए।

8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. जिंदगी और जोंक – अमरकांत

2. परदा – यशपाल

इकाई 3 (ग)

9. ढाई बीघा जमीन (कहानी) – मृदुला सिन्हा

अनुक्रम

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 विषय विवरण

9.3.1 मृदुला सिन्हा का जीवन परिचय

9.3.2 मृदुला सिन्हा का कृतित्त्व

9.3.3 'ढाई बीघा जमीन' कहानी का परिचय

9.3.4 'ढाई बीघा जमीन' कहानी का आशय

9.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

9.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

9.6 स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

9.7 सारांश

9.8 स्वाध्याय

9.9 क्षेत्रीय कार्य

9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

9.1 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1) मृदुला सिन्हा के जीवन परिचय और कृतित्व से परिचित होंगे।
2) 'ढाई बीघा जमीन' कहानी की कथावस्तु समझ सकेंगे।
3) 'ढाई बीघा जमीन' कहानी के कथ्य को जान लेंगे।
4) युवा वर्ग खेती की ओर सकारात्मकता से देखेगा तो देश के गांव स्वयंपूर्ण और प्रगत होंगे, इसको जान सकेंगे।
5) नगर, महानगर की तरह गांव भी विकसित होंगे, इससे परिचित होंगे।

9.2 प्रस्तावना:

विश्व में तथा भारत देश में नौवें दशक अर्थात सन 1991-92 में उदारीकरण की नीति का प्रारंभ हुआ। देश में अब औद्योगिक विकास होना चाहिए। यह एक मांग राजनीति में प्रबल बनी। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना, विस्तार, भूमंडलीकरण, उत्तर आधुनिकता का अधिक तीव्र गति से विकास हुआ। इस काल में उपभोक्तावादी और पूंजीवादी संस्कृति का बोल-बाला रहा।

दूसरी ओर शहरीकरण, नागरीकरण बढ़ने लगा। गावों पर मात्र नकारात्मक परिणाम दिखाई देने लगे। गांव के लोग खेती बेचकर शहर में जाने लगे। आदिवासीयों के जंगल पर हमला होने लगा। जंगल तोड़कर वहां कंपनियां आने लगी। इस विषय पर उदय प्रकाश, संजीव, शिवमूर्ति, स्वयं प्रकाश, चित्रा मुदगल, सुरेंद्र तिवारी, कैलाश बनवासी, मृदुला सिन्हा आदि कहानीकारों ने प्रकाश डालकर पीड़ित वर्ग को न्याय देने का प्रयास किया।

9.3 विषय-विवरण :

9.3.1 मृदुला सिन्हा का परिचय:

मृदुला सिन्हा का जन्म 27 नवंबर 1942 को भारत के बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र के मुजफ्फरपुर जिले के छपरा धरमपुर यदु गांव में हुआ था। उनके पिता बाबू छबीले सिंह थे और उनकी मां अनुपा देवी थीं। उन्होंने छपरा के स्थानीय स्कूल में पढ़ाई की और बाद में लखीसराय जिले में लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय बालिका विद्यापीठ में पढ़ाई की।

अपनी स्नातक की डिग्री पूरी करने से कुछ समय पहले, मृदुला के माता-पिता ने उनकी शादी राम कृपाल सिन्हा से की। वे बिहार के मुजफ्फरपुर के कॉलेज में लेक्चरर थे। शादी के बाद मृदुला ने मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री ली। बाद में मृदुला जी प्रिंसिपल भी रहीं किन्तु अचानक नौकरी को सदा के लिये छोडकर राजनीति में प्रवेश लिया और साहित्य लेखन भी जारी रखा। अगस्त 2014 से अक्टूबर 2019 तक गोवा की राज्यपाल के रूप में कार्य किया। वह गोवा की पहली महिला राज्यपाल थी।

9.3.2 मृदुला सिन्हा का साहित्य परिचय :

राजपथ से लोकपथ पर (जीवनी), नई देवयानी, घरवास, ज्यों मेहंदी को रंग, सीता पुनि बोली (उपन्यास) देखन में छोटे लगें, बिहार की लोक कथाएँ भाग - 1 और 2, ढाई बीघा ज़मीन (कहानी संग्रह) मात्र देह नहीं है औरत (स्त्री-विमर्श) विकास का विश्वास (लेखों का संग्रह) यायावरी आँखों से (साक्षात्कार) इसके साथ उन्होंने अनेक फिल्मों और टीवी धारावाहिक के लिए लेखन किया।

सम्मान :

मृदुला जी को मुजफ्फरपुर में बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि मिली। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से साहित्य भूषण सम्मान व दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार, 2021 में मरणोपरांत भारत सरकार से पद्मश्री पुरस्कार दिया गया।

9.3.2 'ढाई बीघा जमीन' कहानी का परिचय:

आज विश्व में वैश्वीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण बढ़ चुका है। इससे वर्तमान युग में लोग गांव और खेती को कम महत्व देने लगे है। लोग गांव छोड़कर शहर में रहना पसंद कर रहे है। इसलिए महानगरीय संस्कृति का बोल बाला हो गया है। पैकेज वाली नौकरी, गाडी, अपार्टमेंट आदि से जीवन चकाचौद हो चुका है। लेकिन औद्योगीकरण की व्यवस्था से खलबली मच रही है। पुरे जगत में आर्थिक मंदी के कारण पैकेजवाली नौकरियां घाटे में आ रही है। युवक विदेश से देश और शहर से गांव लौट रहे है। पैकेज, फ्लैट, गाड़ी के अनमेल हिसाब के कारण निराश होकर आज उच्च शिक्षित नवयुवक आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहे है। शहरी संस्कृति से गांव की वर्तमान व्यवस्था बहुत अच्छी है। इस मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन करके जीवन बचाकर अधिक सुंदरता के साथ जीया जा सकता है। गांव की ढाई बीघा जमीन मूल्यवान है। खेती में युवा वर्ग विज्ञान के माध्यम से नये-नये प्रयोग करके गांव को संजीवनी दे रहा है। शहर में रहने वाली रामबाबू की बेटी सुभद्रा जब अपने बेटे मनीष की पैकेज वाली नौकरी पर आर्थिक मंदी आ जाती है, तब यही अपने गांव की जमीन जीवन बनाने के लिए आधार देती है। मृदुला सिन्हा की 'ढाई बीघा जमीन' यह कहानी गांव के युवा वर्ग को शहरीकरण, वैश्वीकरण और औद्योगीकरण के मायाजाल से बाहर निकालने में सफल होगी।

9.3.4 'ढाई बीघा जमीन' कहानी का आशय :

रामचरण सिंह को साढ़े सात बीघा जमीन थी। तीन बेटों में बटवारा होकर एक-एक को ढाई बीघा जमीन आ सकती है। ऐसा रामबाबू ने अनुमान लगाकर अपनी बेटी सुभद्रा का रिश्ता रामचरण सिंह के बडे बेटे किशोर के साथ पक्का किया। लड़का बहुत अच्छा था। रेल में नौकरी था। लेकिन खेती कम और उसमें दो-तीन बार बाढ़ आने से जमीन जोतना कठिन था। गांव की जमीन परिवार को गुजारा करने के लिए उपयुक्त होती है। इसलिए खानदानी जमीन चाहिए।

सुभद्रा के पति की अचानक मृत्यु होने पर उसकी भी शहर में रहने की समस्या निर्माण हुई। बड़े बेटे को अनुकंपा के नियम से पिता के जगह रेलवे में नौकरी लग गईं। एक साल के बाद दोनों बेटों की शादी की तैयारी हुई। छोटा बेटा मनीष कंप्यूटर इंजीनियर था। उसे दस लाख का पैकेज मिला था। सभी लड़कीवालों को सुभद्रा कहती थी, मेरे बेटे के सिर पर पुश्तैनी जमीन भी है। इस बात पर सभी का एक ही जवाब था, ''है तो क्या? आज कौन नौजवान खेती करने जाता है, नौकरी है न!'' इस बात पर शादी हो गईं।

बेटों के विवाह के बाद बड़ी जेठानी बोली, ''सुभद्रा, कभी-कभी गांव आ जाया करो। बच्चों को पाल-पोस दिया, अब क्या? अब तो गांव भी शहर जैसा है।'' इस बात पर सुभद्रा इतनी ही कहती, ''आऊंगी दीदी, आऊंगी।'' उसने ऐसे ही कह दिया था। उसे फुरसत ही नहीं थी।

दोनों बेटों के दो घर थे, एक अलीगढ में और एक गूढगांव में। एक करोड़ का फ्लैट लिया था। छह लाख की गाड़ी ली थी। सब कर्जे पर लिया था। मनीष सुबह 7 बजे निकलकर रात्रि के 8-9 बजे आता था।

यह देखकर सुभद्रा ने कहा, ''तुम अपनी कंपनी के बंधुआ मजदूर हो क्या? यदि ऐसे स्थिति रही तो कौन लड़की तुम्हारी पत्नी बनकर घर में रहेगी।''

मनीष मुस्कराया था। जिस लड़की से उसका विवाह निश्चित हुआ था। उसे भी सात लाख का पैकेज था। लेकिन अचानक विश्व में मंदी की हवा चली। सबको फ्लैट, गाड़ी, और पत्नी मंदी के कारण बोझ लगने लगा। मंदी का पहला प्रहार पैकेज पर हुआ। मनीष चुपचाप रहने लगा। सुभद्रा चिंतित थी। शाम को नौकरी बरखास्तगी की चिट्ठी आ गईं। दूसरे दिन दूरभाष पर विवाह का रिश्ता तोड़ने की सूचना मिली।

मनीष ने सुभद्रा को कहा, ''अब क्या होगा, माँ? ''सुभद्रा बोली, ''एक उपाय मन में आया है, गांव लौटने का। चलो, वहां जमीन भी और मेरे हिस्से की एक बड़ी कोठरी और आँगन का कोना। तुम्हारे पापा के सिर ढाई बीघे जमीन होने का बडा शोर सुना था। हमने उसका उपयोग नहीं किया। नौकरी करते थे। उनकी नौकरी की अनुकंपा नौकरी बड़े बेटे को मिली। पुश्तैनी जमीन तुम ले सकते हो। यह किसी की अनुकंपा नहीं, तुम्हारा हक है।'' मनीष और सुभद्रा किसान का खुशहाल जीवन आरंभ करते हैं, जहां उन्हें मंदी का अहसास भी नहीं होता।

9.4 स्वयं–अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. 'ढाई बीघा जमीन' कहानी ....की है।

   अ) विष्णु प्रभाकर ब) अमरकांत क) मृदुला सिन्हा ड) भगवानदास मोरवाल

2. रामचरण सिंह की .... खेती थी।

   अ) एक बीघा ब) दो बीघा क) ढाई बीघा ड) साढ़े सात बीघा

3. रामबाबू पेशे से ....थे।

   अ) किसान ब) शिक्षक क) इंजिनियर ड) डॉक्टर

4. सुभद्रा के पति का नाम .... था।

   अ) रामबाबू ब) किशोर क) मनीष ड) चूड़ामणि सिंह

5. रेल में .... नौकरी पर थे।

   अ) रामबाबू ब) किशोर क) मनीष ड) चूड़ामणि सिंह

6. .... को आर्थिक मंदी के कारण नौकरी छोड़नी पड़ी।

   अ) रामबाबू ब) किशोर क) मनीष ड) चूड़ामणि सिंह

7. .... कंप्यूटर इंजीनियर था।

   अ) रामबाबू ब) किशोर क) मनीष ड) चूड़ामणि सिंह

8. कर्जे पर मनीष ने .... लाख की गाड़ी ली थी।

अ) पांच ब) छह क) सात ड) आठ

9. सुभद्रा के बड़े बेटे का घर .... में था।

अ) अलीगढ़ ब) दिल्ली क) गुड़गांव ड) नोएडा

10. .... रूपये कर्जे पर मनीष ने फ्लैट लिया था।

अ) पचास लाख ब) साठ लाख क) अस्सी लाख ड) एक करोड़

9.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ:

1. बीघा – हिन्दू लम्बाई गणना में क्षेत्रफ़ल मापने की इकाई है। एक बीघा एक एकड़ से थोड़ा छोटा होता है और महाराष्ट्र में एक बीघा में 20 गुंठे होते हैं।
2. पुश्तैनी – कई पीढ़ियों से चला आता हुआ। दादा परदादा के समय का पुराना। जैसे, पुश्तैनी बीमारी, पुश्तैनी नौकर।
3. कोठरी – छोटा कमरा, घर के भीतर का छोटा कमरा।
4. अनुकंपा – दया। कृपा। अनुग्रह। सहानुभूति। यदि कोई कर्मचारी सेवा के दरम्यान अपाहिज हो जाता है, या किसी कारण सेवा पुरी नहीं कर सकता है, या मृत्यु हो जाती है तब उसकी जगह उसका वारिस काम पर आ जाता है। उस व्यवस्था को अनुकंपा कहा जाता है।
5. मंदी – किसी भी चीज़ का लंबे समय के लिए मंद या सुस्त पड़ जाना और जब इसी को अर्थव्यवस्था के संदर्भ में कहा जाए, तो उसे आर्थिक मंदी कहते हैं।

9.6 स्वयं–अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1– क) मृदुला सिन्हा, 2– ड) साढ़े सात बीघा, 3– ब) शिक्षक,

4– ब) किशोर, 5– ब) किशोर, 6– क) मनीष,

7– क) मनीष, 8– ब) छह, 9– अ) अलीगढ़,

10– ड) एक करोड़

9.7 सारांश:

1. ढाई बीघा जमीन यह कहानी वैश्वीकरण, नागरीकरण, औद्योगीकरण के मायाजाल से भारतवासियों को बाहर निकालने का सार्थक प्रयास करनेवाली है।

2. कहानी के रामबाबू खेती को अधिक महत्व न देते हुए नौकरी को महत्व देते है। बाद मे गांव की खेती का महत्व महसूस होता है।

3. सुभद्रा के पति किशोर का अचानक निधन होने पर एक लड़का अनुकम्पा में रेल में नौकरी पर लगता है। लेकिन एक लड़के को कंपनी में पैकेज पर नौकरी मिलती है।

4. मंदी के कारण छोटे बेटे की नौकरी चली जाती है। तब मम्मी खेती में काम करने की सलाह देकर गांव और खेती की संस्कृति को मजबूत करती है।

5. माँ का कहना सही है, ऐसा मानकर बेटा मनीष शहरी संस्कृति वाला होकर भी गांव की खेती का काम स्वीकारता है। यह उसका व्यक्तित्व गांव तथा शहर के युवा वर्ग के सामने आदर्श है।

6. यह एक आदर्श और यथार्थवादी कहानी है।

7. वैश्वीकरण, नागरीकरण, औद्योगीकरण के कारण वर्तमान काल में नगरों का विकास हुआ। शहरीकरण बढ़ता गया। लेकिन गांव अविकसित रहे।

8. गांव के बुजुर्ग लोग खेती करते रहे, लेकिन युवा वर्ग खेती से विभक्त होकर शहर में जाकर बस गए, यह दिखाया है।

9. वैश्वीकरण, नागरीकरण, औद्योगिकरण के कारण नौकरी की पैकेज की पद्धति और वर्क फ्रॉम होम की संस्कृति विकसित हुई, जो कभी भी आर्थिक मंदी के कारण डावाडोल होकर नौकरी जाने का संकट बन सकती है। इससे निराश होकर युवक आत्महत्या का गलत मार्ग स्वीकार करते है।

10. गांव के लोग शहर में बसने के बाद भी गांव की खेती करें। खेती को न बेचे। यह परंपरागत उदरनिर्वाह का साधन बनाए रखे। भविष्य में यह उनकी ही अगली पिढी को उदरनिर्वाह का साधन बन सकता है।

9.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1. 'ढाई बीघा जमीन' कहानी का उद्देश्य।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'ढाई बीघा जमीन' कहानी की कथावस्तु लिखिए।
2. 'ढाई बीघा जमीन' कहानी की नायिका सुभद्रा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. 'ढाई बीघा जमीन' कहानी में चित्रित विविध समस्याओं का चित्रण कीजिए।

9.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'ढाई बीघा जमीन' कहानी का नाट्यरूपांतर कीजिए।

1. 'ढाई बीघा जमीन' कहानी का मराठी में अनुवाद करें।

9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. बाजार में रामधन – कैलास बनवासी
2. देखन में छोटे लगें – मृदुला सिन्हा

❑❑❑

इकाई –4 (कहानी)
4.1 बूढ़े जीवन की एक रात – डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल

अनुक्रम

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय विवेचन
   3.1 डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का जीवन परिचय एवं कृतित्व
   3.2 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का परिचय
   3.3 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का कथानक
   3.4 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी के प्रमुख पात्र
      2.3.5 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी में चित्रित समस्याएँ
      2.3.6 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का उद्देश्य
4. स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य :

विवेच्य कहानी को पढने के बाद आप–

1) डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के जीवन एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2) 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी में अभिव्यक्त बुढ़ापे की समस्या को जानेंगे।
3) 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी पढने के बाद संवेदनशीलता का महत्त्व समझेंगे।
4) 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी पढने के बाद वृद्धों का सम्मान करना सिख जाओगे।
5) 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी के उद्देश्य को समझेंगे।

2. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में कहानी विधा सबसे लोकप्रिय मानी जाती है। भारत में प्राचीन काल से कहानी सुनना, पढना और बताना मानवी जीवन का अभिन्न अंग रहा है। लोककथाओं में प्रारंभिक कहानी के बीज देखने मिलते हैं। लिपि की खोज होने के बाद इन्हीं मौखिक लोकगाथा, आख्यानों, लोककथाओं को लिखा जाने लगा और लिखित कथा-परंपरा का निर्माण हुआ। 'कथा' मानवी जीवन से जुड़े रोचक घटना और प्रसंगों का कौतुहलवर्धक ब्यौरा होता है, जिससे मनुष्य का मनोरंजन भी होता है और उसका ज्ञानवर्धन भी होता है। हिंदी कहानी के बीजस्रोत 'बृहत् कथा' को माना जाता। आधुनिक कहानी का प्रारंभ बीसवीं शताब्दी से हुआ है। इसी आधुनिक युग के एक सशक्त कहानीकार के रूप में डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल को पहचाना जाता है। हिंदी के प्रख्यात लेखक एवं प्राध्यापक के रूप में वे मशहूर हैं। उन्होंने हिंदी की लगभग सभी साहित्य विधाओं में लेखन करते हुए सौ से अधिक किताबों का लेखन किया है। उन्होंने लगभग 80 से अधिक कहानियाँ लिखी हैं, जो मानव जीवन की गहराई से जाँच-पड़ताल करते हुए जीवन के उच्च सरोकारों को स्थापित करने का प्रयास करती है। यहाँ हम उनकी बहुचर्चित कहानी 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का अध्ययन करनेवाले हैं। विवेच्य कहानी वृद्ध विमर्श पर आधारित है जिसमें जीवन के अंतिम पड़ाव अर्थात् बुढापे की समस्या का कारूणिक वर्णन आया है।

3. विषय विवेचन

3.1 डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का जीवन परिचय एवं कृतित्व

※ जीवन एवं व्यक्तित्व परिचय :

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का जन्म 14 जुलाई, 1944 ई. को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में स्थित संभल नामक गाँव में हुआ। एक बड़े संयुक्त परिवार में इनका बचपन बीता। पिता का नाम लाला रघुराजशरण और माता का नाम कमलादेवी था। दोनों माता-पिता धार्मिक वृत्ति एवं अनुशासनप्रिय थे। खांडसारी इनका पैतृक व्यवसाय था लेकिन बालक गिरिराजशरण को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। बचपन से ही इनका लगाव पढने-लिखने की ओर था लेकिन घर में ऐसा माहौल नहीं था। बचपन में गिरिराज जी बहुत ही शरारती बालक थे। पं. श्याम किशोर शर्मा से इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। इसके बाद हिंदू इंटर कॉलेज-संभल से वे इंटरमिडियट की परीक्षा उत्तीर्ण की। महाविद्यालयीन शिक्षा के दौरान वे साहित्य के प्रति रूचि ज्यादा बढ गई। उन्होंने के. जी. के. कॉलेज-मुरादाबाद से 1963 ई. से बी. ए. और 1964 ई. को बी.टी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। संभल बाल विद्यामंदिर से उन्होंने अपने अध्यापकीय जीवन की शुरुआत की। अध्यापन करते हुए उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से एम.ए. और पीएच्.डी. की उपाधियाँ प्राप्त की।

एम. ए. पढाई के दौरान 9 मई, 1968 ई. को उन्होंने विख्यात हास्य कवि काका हाथरसी की बेटी मीना जी से विवाह किया। मीना जी ने शादी के बाद पढाई जारी रखी और पीएच्.डी पूरी करके महिला

महाविद्यालय में अध्यापिका बनी। वे भी मशहूर कहानी लेखिका है। उन्हें गीतिका और अनुभूति नामक दो लड़कियाँ हैं जो कविता, संगीत और चित्रकला में रूचि रखती हैं। पूरा परिवार साहित्य एवं कलाओं का प्रेमी है। डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी है। वे अनुशासनप्रिय अध्यापक, प्राध्यापक एवं संवेदनशील लेखक के रूप में पहचाने जाते हैं। हिंदी साहित्य क्षेत्र में कवि, ग़ज़लकार, संपादक, प्रकाशक, व्यंग्यकार, एकांकीकार, निबंधकार के रूप में पहचाने जाते हैं।

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल जी ने संभल बाल विद्यामंदिर से अपने नौकरी की शुरुआत की। यहाँ कुछ वर्ष नौकरी करने के बाद वे एम.जी.एम. डिग्री कॉलेज, संभल में हिंदी के प्रवक्ता के रूप में नियुक्त हुए और यहाँ 1971 में हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने। इसके बाद कुछ समय के लिए वर्धमान कॉलेज, बिजनौर में प्राध्यापक का कार्यभार सँभाला। साथ ही रोटरी अंतर्राष्ट्रीय मंडल-3100 के मंडलाध्यक्ष (2002-03), हिंदी साहित्य निकेतन-बिजनौर के सचिव, अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ- दिल्ली के आजीवन सदस्य आदि संस्थाओं में भी कार्य किया है। वर्धमान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिजनौर वे रीडर एवं अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

※ कृतित्व परिचय :

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल हिंदी साहित्य में एक बहुआयामी साहित्य संपन्न व्यक्तित्व के रूप में पहचाने जाते हैं। हिंदी में उन्हें ग़ज़लकार और शालीन व्यंग्य के शिखर पुरुष माना जाता है। उन्होंने गीत लेखन, निबंध, ग़ज़ल, कहानी, नाटक, व्यंग्य, समालोचना, संस्मरण, बाल साहित्य आदि विधाओं में रचनात्मक साहित्य लेखन किया है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार, मानवीय संबंध, इतिहास, संस्कृति, राजनीति आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। उनका रचना संसार इसप्रकार है-

अ) **कविता/ग़ज़ल संग्रह –** 'सन्नाटे में गूँज' (1986 ई.), 'भीतर शोर बहुत है' (1995 ई.), 'मौसम बदल गया कितना' (1999 ई.), 'रोशनी बनकर जीओ' (2003 ई.) आदि।

आ) **नाटक –** 'बच्चों के रोचक नाटक' (1999 ई.), 'ग्यारह नुक्कड़ नाटक' (2000 ई.), 'बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक' (2000 ई.), 'बच्चों के हास्य नाटक' (2004 ई.) आदि। एकांकी संग्रह – 'नीली आँखें और अन्य एकांकी' (1994 ई.), 'मंचीय व्यंग्य एकांकी' (2003 ई.)।

इ) **हास्य-व्यंग्य संग्रह –** 'बाबू झोलानाथ' (1996 ई.), 'राजनीति में गिरगिटवाद' (1997 ई.), 'मेरे इक्यावन व्यंग्य' (2005 ई.)।

ई) **बाल साहित्य –** 'बच्चों के हास्य नाटक', 'बच्चों के रोचक नाटक', 'बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक' में बाल साहित्य संकलित हैं।

उ) **निबंध संग्रह –** 'समय एक नाटक' (2003 ई.)।

ऊ) **कहानी संग्र –** 'जिज्ञासा' (1994 ई.)

ए) **संदर्भ साहित्य :** 'शोध-संदर्भ : एक' (1980 ई.), 'शोध-संदर्भ : दो' (1986 ई.), 'शोध-संदर्भ : तीन' (1993 ई.), 'शोध-संदर्भ : चार' (2004 ई.), 'तुलसी मानस संदर्भ', 'सूर साहित्य संदर्भ', हिंदी साहित्यकार संदर्भ आदि।

ऐ) **समालोचनात्मक साहित्य –** 'दंगे : क्यों और कैसे' (1996 ई.), 'विश्व आतंकवाद : क्यों और कैसे' (1997 ई.), 'आओ अतीत चलें' (1998 ई.), 'मानवाधिकार : दशा और दिशा' (2000 ई., 'पर्यावरण : दशा और दिशा' (2003 ई.), 'हिंसा : कैसी-कैसी' (2003 ई.) आदि।

ओ) **संपादित साहित्य –** काका हाथरसी अभिनंद ग्रंथ (1997 ई.), कहानी, एकांकी, व्यंग्य, बाल-साहित्य, भक्ति साहित्य, कोश साहित्य और अन्य किताबों का उन्होंने संपादन भी किया है।

✼ पुरस्कार एवं सम्मान :

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल जी को हिंदी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें मिले कुछ महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों की जानकारी इसप्रकार है-

उत्तर प्रदेश युवा साहित्यकार संघ का 'सरस्वती श्री- सम्मान 1982 ई.', तुलसीपीठ कासंगज द्वारा 'विद्या-वारिधि'-सम्मान 1998 ई.', 'विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, गांधीनगर का 'विद्यासांगर सम्मान-1984 ई.', 'रोटरी अंतर्राष्ट्रीय से 'अनुशंसा पुरस्कार-1984 ई.', अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन-उज्जैन का 'साहित्य सम्मान-1992 ई.', डॉ. रत्नलाल शर्मा स्मृति न्यास- दिल्ली से 'रतन शर्मा बाल साहित्य पुरस्कार-1999 ई.', सहस्त्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन से 'राष्ट्रीय हिंदी सेवी सहस्त्रावादी सम्मान-2000 ई.', उत्तर प्रदेश के हिंदी संस्थान द्वारा 'आओ अतीत में चलें' पस्तुक के लिए 'सूर पुरस्कार-2001 ई.', 'अखिल भारतीय साहित्य कलामंच द्वारा सम्मान-2003 ई.' आदि।

3.2 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का परिचय

डॉ. गिरिराजशरण लिखित 'बूढ़े जीवन की एक रात' यह कहानी उनके 'जिज्ञासा' इस कहानी संग्रह से ली गई है। यह कहानी रोशनलाल और उनकी पत्नी नीलिमा इस बूढ़े दाम्पत्य के बुढ़ापे की समस्या से जुड़ी हुई है। दोनों पति-पत्नी जीवन के इस अंतिम पड़ाव में एक छोटे-से कमरे में असहाय जीवन जी रहे हैं। इसमें कहानीकार गिरिराजशरण अग्रवाल में इस पति-पत्नी के बीच एक रात को हुए संवादों द्वारा वृद्धों के जीवन की समस्याओं को कारूणिक एवं मार्मिक वर्णन किया है।

3.3 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का कथानक

कहानी का प्रारंभ बूढ़ी नीलिमा की शिकायत से होता है जिसमें वे अपने पति रोशनलाल से शिकायत करती है कि क्या हमारे जीवन का आखिरी समय इस कोठरीनुमा कमरे में ही बीत जाएगा? रोशनलाल ने अपनी पत्नी की बात सुनी लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। रोशनलाल की आयु सत्तर वर्ष पार कर चुकी है। उन्हें एक बेटा है जिसका नाम सुदर्शन है। उसकी शादी हुई है और वह अपनी पत्नी सुशिला और

बेटे गुड्डू और बेटी गुडिया के साथ बंगले में रहता है। लेकिन उसने अपने बूढ़े माता-पिता को बंगले के ही पास होने वाले कोठरीनुमा कमरे में रखा है, जहाँ फटी-पुराने चीजें पड़ी हुई। बूढ़े माँ-बाप को भी कबाड़ समझकर उस कमरे में रखने वाले बेटे-बहू पर नीलिमा गुस्सा करती है लेकिन रोशनलाल उसे समझाकर चुप करते हैं।

रोशनलाल और नीलिमा अपने जीवन में बहुत श्रम के साथ अपने घर को बनाया था लेकिन बुढ़ापे उन्हें उसी घर से बाहर निकालकर कबाड़ रखने के लिए बनाए एक कमरे में रखा गया है। रोशनलाल को दमे की बीमारी है और समय-समय पर उन्हें इतनी खाँसी आती हैं कि उनका दम फूल जाता है। लेकिन बहू-बेटा अपने खुशहाल जीवन में इतने व्यस्त हैं कि वे कभी-कभार ही उनका हाल-चाल पूछने आते हैं। खाँसते-खाँसते रोशनलाल की आँखों में अपनी दुर्दशा को लेकर पानी आ जाता है लेकिन वे अपनी पत्नी नीलिमा से ये आँसू छिपाते हैं? उसके पूछने पर कहते हैं कि ''आँखों से हर समय निकलने वाला पानी आँसू ही हो, यह जरूरी तो नहीं?'' नीलिमा को लगता है कि घर में उनके आँसुओं, उनके होने न होने की किसी को फिक्र नहीं है। वे भी अब कबाड़ के समान हो गए हैं जिनके होने का कोई अर्थ नहीं होता ''बिलकुल ऐसे ही न, जैसे सामने पड़े स्कूटर के फटे टायरों का कोई अर्थ नहीं रहा है। जैसे जगह-जगह से उधड़ गई इस जैकेट का कोई अर्थ नहीं रहा है, जैसे।'' नीलिमा अपनी दर्दुशा पर आँसू बहाती और रोशनलाल उन्हें डाँटने के अंदाज से रोकना चाहते हैं।

उन्हें फिर से खाँसी का दौरा आता है तब नीलिमा अपने पास रखी विक्स की दो गोलियाँ देती है। लेकिन रोशनलाल कहते हैं यह बचपन की नहीं बुढापे की खाँसी है। यह तो अब मरने के बाद ही खत्म होगी। नीलिमा को इस तरह कबाड़ हुआ जीवन अच्छा नहीं लगता। वह अंदर-ही-अंदर घूटन महसूस करती है लेकिन रोशनलाल उसे समय की सच्चाई से अवगत कराते हैं। एक दिन कमरे में पड़े फटे-पुराने सामान को कबाड़ी ले जाएगा उसीतरह अब इस असहाय जीवन से हमें मौत ही छुटकारा दे सकती है। सच कितना ही कड़वा क्यों न हो उसे स्वीकारना ही पड़ता है, ऐसा वे कहते हैं।

कहानी के दूसरे प्रसंग में कहानीकार ने बेटे के कमरे का वर्णन किया है। रात के नौ बजे है। उनके बेटे के बेडरूम से टी.वी. चलने की आवाज आ रही है। उनकी पोती गुड़िया अंग्रेजी की कविता पढ़ रही थी। खाने की मेज पर प्लेटें खनकने की आवाज आ रही थी। वृद्ध दम्पति को एहसास हो जाता है कि डिनर की तैयारी शुरू है। नीलिमा को बहुत तेज भूख लगी है। बेटे के कमरे में दुधिया रोशनी देखकर नीलिमा कहती है कि हमारे ही कमरे में इस पच्चीस वॅट बल्ब की मटमैली रोशनी में साफ कुछ दिखाई नहीं देता। रोशनलाल समझाते हैं कि साफ-साफ देखने की भी एक उम्र होती है। रोशनी में क्या हम सुंदर दिख सकेंगे जैसे पहले दिखाई देते हैं। बुढ़ापे में भूख भी एक तरह का एहसास होता है। तुम्हें भूख नहीं लगी है लेकिन बर्तनों की आवाज सुनकर तुम्हारा एहसास तुम्हें सता रहा है। स्त्रियाँ चाहत के मामले में बहुत महत्त्वाकांक्षी होती हैं।

नीलिमा रोशनलाल की इन बातों को नहीं समझती और वह विषय को बदलने के लिए पूछती है, 'क्या टाइम हो रहा है अब?' रोशनलाल अपनी रिस्ट वॉच में देखते हुए बताते हैं कि 'पौने दस बजे हैं

अभी। तुम्हें बहुत ज्यादा भूख लग रही है क्या? रोशनलाल उसे समझाते हैं कि उनके खाने के बाद ही बहू उन्हें खाना लाकर देगी। लेकिन तुम्हारी इच्छा है कि बहू सबसे पहले हमें खाना लाकर देगी। यह तो औरतों की चाहत की महत्त्वकांक्षा होती है। तब नीलिमा गुस्सा कर कहती है तो क्या यह संतानों का कर्तव्य नहीं कि वे अपने माता-पिता का ध्यान रखें। रोशनलाल समझाते हैं कि उनका कर्तव्य जरूर है लेकिन मजबूरी नहीं है। वे कहते हैं- ''बूढ़े आदमी, अनुपयोगी हो जाएं तो वे भी उन वस्तुओं की तरह ही हो जाते हैं, जो किसी काम की नहीं रही हैं। याद आने पर उनकी झाड़ पौंछ कर दी जाती है अन्यथा पड़ी रहती है एक कोने में।''

बेटे के कमरे से बेटे और बहू के हँसने की आवाज आ रही थी। तब रोशनलाल-नीलिमा अपने जवानी की बातें याद करते हैं। नीलिमा जब दुल्हन बनकर आई थी तब वे उसे नीलमपरी कह कर पुकारते थे और नीलिमा उन्हें चाँद राजा कहती थी। युवा दम्पती जीवन एक सुंदर झूठ में गुजार देते हैं, ऐसा रोशनलाल को लगता है। समय बीत जाने की बात नीलिमा को समझाते हैं। लेकिन नीलिमा अपने जीवन का आखिर पल भी सम्मान के साथ जीना चाहती है। इतने में रोशनलाल को फिर से खाँसी का दौरा पड़ जाता है। नीलिमा को बहुत बुरा लगता है कि उनका बेटा-बहू कितनी लापरवाह है कि वे एक बार भी आकर पिताजी की बीमारी का हाल-चाल नहीं पूछते। रोशनलाल समझाते हैं कि हम अपनी स्वर्गवासी माता की फोटो पर पहले रोज फूलमाला चढ़ाते थे। धीरे-धीरे फूलमाला चढ़ाने छोड़ दिए और ध्यान आने पर कभी-कभार उसपर चढ़ी धूल को साफ करते थे। उसी तरह अब हमारे बुढ़ापे का हाल है। बेटा-बेटी अब उनके जीवन में मस्त हैं, वे हमें भूल गए हैं। इसीलिए तो बुढ़ापे को 'बुरा-आपा' कहा जाता है।

उनकी बहू सुशीला उन्हें खाना देना ही भूल गई है। अब रोशनलाल जी भूख से परेशान हो गए हैं। लेकिन उनकी बहू अब पोते गुड्डू को पढाने में व्यस्त हो गई है। रोशनलाल भी आखिर में बेबस होकर नीलिमा को बहू को आवाज देने के लिए कहते हैं। नीलिमा अपने बूढे गले से बहू को आवाज लगाती है। काफी देर बात बहू खाने की थाल हाथ में लेकर आती है और कहती है- ''क्षमा करना माँ जी। खाने को बहुत देर हो गई आज।'' रोशनलाल मजबूरी की हँसी चेहरे पर लाकर बेटे सुदर्शन के बारे में पूछते हैं। तब वह थक जाने के वजह से सोने जाने की बात बताती है। जाते-जाते सुशीला बहू अपने कमर से लगे रूमाल से कृष्ण के चित्र पर लगी धूल साफ करती है। तब रोशनलाल कहते हैं, ''हम और भगवान कृष्ण अब एक ही जैसी स्थिति में हैं, नीलू। ऐसा है तो शिकायत कैसी?'' नीलिमा ने भगवान कृष्ण के तस्वीर के सामने माथा टेकती है और दोनों बूढ़े खाना खाने लगते हैं।

3.4 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी के प्रमुख पात्र

विवेच्य कहानी में कुल छह पात्र है। इसमें बूढी दम्पति रोशनलाल और उनकी पत्नी नीलिमा प्रमुख पात्र है जबकि बेटा सुदर्शन, बहू सुशीला, पोता गुड्डू और पोती गुड़िया सहायक पात्र है। उनका संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है-

※ रोशनलाल

'बूढ़े रात की एक कहानी' में रोशनलाल प्रमुख पात्र है। उनकी उम्र सत्तर पार हो चुकी है। उनकी पत्नी का नाम नीलिमा है। उनका एक बेटा सुदर्शन है जिसकी शादी सुशिला से हुई है। उन्हें गुड्डू और गुड़िया नाम के पोता-पोती है। रोशनलाल को दमे की बीमारी है और वक्त-बेवक्त उनमें खाँसी का उफान आ जाता है। उनके बेटे-बहू ने उन्हें बंगले के पास वाले कोठरीनुमा कमरे में जहाँ कबाड़ रखा जाता है वहाँ रहने का प्रबंध किया है। बहू को याद आने पर उन्हें खाना लाकर दिया जाता है। उनकी बीमारी और दवा के बारे में उनके बेटे को कोई चिंता नहीं है। कबाड़खाने की वस्तुओं की कोई कीमत नहीं होती उसीतर बूढे लोगों को भी अनुपयोगी समझा जाता है, ऐसी उनकी धारणा है। पत्नी नीलिमा बेटे-बहू के इस बर्ताव की हमेशा उनसे शिकायत करती है लेकिन वे उसे अपने जीवन की नियति कहकर स्वीकारने को कहते हैं। क्योंकि वे असहाय है और इसके खिलाफ कुछ नहीं कर सकते। बुढ़ापे में आँखों की रोशनी कमजोर होना, भूख ये सब एहसास होने की बात वे कहते हैं। लेकिन जब एक रात उनकी बहू को खाना देने में देरी होती है तो वे मजबूर होकर बहू को आवाज देने के कहते हैं। बहू आने पर झूठी हँसी चेहरे पर लाकर बेटी की खैर-सलामती पूछते हैं। इसप्रकार कहानी में रोशनलाल एक असहाय, बीमार और मजबूर बूढ़े व्यक्ति है जो बुढ़ापे को अभिशाप मानते हैं।

※ नीलिमा

विवेच्य कहानी में नीलिमा वृद्ध रोशनलाल की पत्नी है। वे भी रोशनलाल के साथ कोठरीनुमा कमरे में जीवन जी रही है। बेटे-बहू ने उन्हें कबाड़ के समान एक कमरे में रखने की बात से वह नाराज़ है और अपने पति से हमेशा इसकी शिकायत करती है। उन्हें अपने पित रोशनलाल से बहुत स्नेह हैं। उनकी दमे की बीमारी और बार-बार खाँसी से वह परेशान होती है। बेटे की अनदेखी को देखकर वह अपने पास की दो विक्स की गोली देकर पति को खाँसी राहत देने का प्रयास करती है। नीलिमा जीवनभर स्वाभिमान से जीती आई इसलिए वह बुढ़ापे में भी सम्मान के साथ जीना चाहती है। जीवन के अंतिम पल वह इस घुटनभरे कमरे में नहीं लेना चाहती। लेकिन वह बेबस है। वह कोठरीनुमा कमरे में कबाड़ के साथ रखे जाने, कमरे में पच्चीस वॅट का बल्ब लगाने, पिताजी की बीमारी की ओर ध्यान न देने, खाना समय पर देने आदि की शिकायतें करती है। लेकिन बहू-बेटे के सामने कुछ कहने की उसकी हिम्मत नहीं होती। वह उस कमरे में ही अपने पति के सामने अपने मन की भड़ास निकालती रहती हैं। इसतरह नीलिमा इस कहानी में एक असहाय, बेबस, स्वाभिमान से जीने की इच्छा रखने वाली बूढ़ी महिला पात्र है।

※ बेटा-बहू

विवेच्य कहानी में बेटा सुदर्शन और बहू सुशीला आज की असवंदेनशील नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र है। सुदर्शन रोशनलाल और नीलिमा के एकलौते बेटे है। जिसकी शादी सुशिला से हुई है। उन्हें गुड़िया और गुड्डू नाम के बेटा-बेटी है। वे चारों बंगले में रहते हैं और बूढ़े माँ-बाप को बंगले के पास एक कोठरीनुमा कमरे में रखते हैं। बेटे-बहू का अपने बूढ़े माता-पिता की ओर कोई ध्यान नहीं है। दमे से

परेशान खाँसते हुए पिता की उन्हें कोई फिक्र नहीं है। उन्हें बहू समय पर खाना भी नहीं देती। बेटा और बहू अपने ही खुशहाल जीवन में व्यस्त है। अपने खुशहाल जीवन में बूढ़े माँ-बाप को वे बाधा मानकर उन्हें अपने से दूर रखते हैं। इसप्रकार बुढ़ापे में अपने माता-पिता को दु:ख देने वाले, उनकी सेवा तो दूर उनकी बुनियादी जरूरतें भी पूरे न करने वाले स्वार्थी बेटे-बहू का चित्रण कहानी में आया है।

2.3.5 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी में चित्रित समस्याएँ

विवेच्य कहानी में वृद्धावस्था की असहायता और अकेलापन यह प्रमुख समस्या है। आधुनिक जीवन में पारिवारिक रिश्तों में स्वार्थ के कारण असंवेदनशीलता आई है। आधुनिक पीढी स्वार्थी बनकर अपने माता-पिता को बुढ़ापे में असहाय और बेबस जीवन जीने के लिए मजबूर कर देती है। जिन माता-पिताओं ने कष्ट उठाकर बच्चों को बड़ा किया था वहीं बेटे अपनी गृहस्थी बनने पर बूढ़े माता-पिता को बोझ समझने लगते हैं। अपने सुंदर से घर में वे उन्हें कुरूप लगने लगते हैं। इसलिए वे या तो उन्हें वृद्धाश्रम भेजते हैं या फिर रोशनलाल-नीलिमा की तरह एक कोठरीनुमा कमरे में कबाड़ की तरह पड़े रहने के लिए मजबूर कर देते हैं। इस कहानी मूल समस्या वृद्धों की बेबसी, उनका अकेलापन, बीमारी, उनके बच्चों की स्वार्थी वृत्ति, असवंदेनशीलता, आत्मकेंद्रीतता, माता-पिता की देखभाल को लेकर लापरवाही आदि हैं।

2.3.6 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का उद्देश्य

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल की कहानियाँ मानवी जीवन के सरोकारों से जुड़ी हुई है। उनकी प्रत्येक कहानी समाज के किसी-न-किसी विसंगति या विकृति को सामने लाकर पाठकों को विचार करने के लिए मजबूर करती है। विवेच्य कहानी के उद्देश्य इसप्रकार है- 1. बेबस वृद्धों की समस्या सामने लाना। 2. पारिवारिक जीवन में असहायता एवं मजबूर वृद्धों के जीवन को दर्शाना। 3. नई पीढ़ी की असवंदेनशीलता और स्वार्थी वृत्ति पर प्रहार करना। 4. नई पीढी में बजुर्गों के प्रति सम्मान जगाना और उनके कर्तव्य बोध से वृद्धों के आखिरी जीवन में स्वाभिमान जगाना।

4. स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.1 सही विकल्प चुनिए।

1. 'बूढ़े जीवन की एक रात' यह कहानी किसने लिखी है?

   अ. मोहन राकेश   ब. जयशंकर प्रसाद

   क. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल   ड. कमलेश्वर

2. 'बूढ़े जीवन की एक रात' में कौनसी समस्या को दर्शाया है?

   अ. बेरोजगारी   ब. बुढापा   क. दहेज   ड. आतंकवाद

3. 'बूढ़े जीवन की एक रात' यह कहानी कौनसे कहानी संग्रह में संकलित है?

   अ. कंकाल   ब. मानसरोवर   क. जिज्ञासा   ड. वितृष्णा

4. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का जन्म कब और कहाँ हुआ है?

अ. 1944 ई. संभल में　　ब. 1945 ई. बनारस में

क. 1946 ई. गोरखपुर　　ड. 1947 ई. बस्तर

5. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल जी व्यंग्य साहित्य में किस नाम से पहचाने जाते हैं?

अ. विद्रोही व्यंग्यकार　　ब. शालीन व्यंग्य के शिखर पुरुष

क. व्यंग्य के हिमालय　　ड. व्यंग्य के बादशाह

4.2 सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. 'बूढ़े जीवन की एक रात' का प्रमुख पुरुष पात्र .... है।

अ. सोहमलाल　　ब. रोशनलाल

क. मगनलाल　　ड. रामलाल

2. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का प्रमुख स्त्री पात्र .... है।

अ. उर्मिला　　ब. कामिनी　　क. नीलिमा　　ड. उषादेवी

3. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी के बेटे-बहू का नाम है।

अ. सुरेश-उमा　　ब. सुदर्शन-सुशीला　　क. सचिन-शशि　　ड. अरूण-पूनम

4. रोशनलाल-नीलिमा .... को अभिशाप मानते हैं।

अ. जवानी को　　ब. बुढापे को　　क. किशोरावस्था को　　ड. बाल्यावस्था को

5. रोशनलाल युवावस्था में नीलिमा को .... नाम से पुकारते थे।

अ. नीलमपरी　　ब. जलपरी　　क. वनपरी　　ड. आकाश की परी

6. नीलिमा युवावस्था में रोशनलाल को .... नाम से पुकारती थीं।

अ. राजाबाबू　　ब. चाँदराजा　　क. राजकुमार　　ड. रोशन चाँद

7. रोशनलाल को .... की बीमारी थी।

अ. कैन्सर　　ब. पीलिया　　क. दमे　　ड. जोड़ों

8. रोशनलाल-नीलिमा के कोठरीनुमा कमरे में .... वाट का बल्ब लगाया था।

अ. पचास　　ब. पच्चीस　　क. दस　　ड. पंद्रह

9. .... और बूढ़े आदमी के बीच कोई अंतर नहीं होता है क्या?

अ. टूटे बर्तन　　ब. फटी कमीज　　क. फटे टायर　　ड. उड़े फ्यूज

10. उस रात बूढ़े रोशनलाल और नीलिमा को रात .बजे खाना मिला।

अ. पौने दस　　ब. पौने ग्यारह　　क. पौने आठ　　ड. पौने नौ

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

- ✲ अल्लम-गल्लम- निरर्थक, फालतू,
- ✲ कबाड़- टूटा-फूटा सामान, रद्दी वस्तुएं,
- ✲ कमीज - कालरदार वस्त्र, लंबी शर्ट
- ✲ मटमैली रोशनी- धुँधली रोशनी,
- ✲ पुत्रवधू - बहू, बेटे की पत्नी,
- ✲ पौत्र - पोता, बेटे का बेटा,
- ✲ पेट में आग लगना- तीव्र भूख लगना,
- ✲ मस्तक नवाना - सिर झुकाकर प्रणाम करना,

6. स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.1 -	1. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल	2. बुढापा	3. जिज्ञासा
	4. 1944 ई. संभल में	5. शालीन व्यंग्य के शिखर पुरुष	
4.2 -	1. रोशनलाल	2. नीलिमा	3. सुदर्शन-सुशीला
	4. बुढ़ापे को	5. नीलमपरी	6. चाँदराजा
	7. दमे	8. पच्चीस	
	9. फटे टायर	10. पौने ग्यारह	

7. सारांश

1. 'बूढ़े जीवन की एक रात' यह कहानी डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल जी के 'जिज्ञासा' इस कहानी संग्रह में संकलित है।
2. विवेच्य कहानी में डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल जी ने प्रमुख पात्र रोशनलाल और नीलिमा के माध्यम से वृद्धावस्था की असहायता और अकेलापन की समस्या को दर्शाया है।
3. सुदर्शन और सुशीला के माध्यम से आधुनिक पीढी में अपने माता-पिता के प्रति निर्माण हुई असंवेदनशीलता और स्वार्थवृत्ति को विवेच्य कहानी में दर्शाया गया है।
4. रोशनलाल-नीलिमा एक कोठरीनुमा कमरे में जहाँ कबाड़ी का सामान रखा जाता है वहाँ पच्चीस वाट की बल्ब की रोशनी में अपना असहाय जीवन जी रहे हैं। रोशनलाल को दमे की बीमारी है। लेकिन बेटे-बहू को उनकी कोई चिंता नहीं है।
5. एक रात उनकी बहू उन्हें खाना देना भूल जाती है और रोशनलाल और नीलिमा को अपना कमजोर पड़ता स्वाभिमान को बाजू में रखकर भूख के कारण मजबूर होकर बहू को खाना देने के लिए कहना

पड़ता है। बहू रात पौने ग्यारह बजे खाना देकर देरी होने के लिए अकृत्रिम माफी माँगकर चली जाती है।

6. विवेच्य कहानी के उद्देश्य इसप्रकार है- 1. बेबस वृद्धों की समस्या सामने लाना। 2. पारिवारिक जीवन में असहायता एवं मजबूर वृद्धों के जीवन को दर्शाना। 3. नई पीढ़ी की असवंदेनशीलता और स्वार्थी वृत्ति पर प्रहार करना। 4. नई पीढ़ी में बजुर्गों के प्रति सम्मान जगाना और उनके कर्तव्य बोध से वृद्धों के आखिरी जीवन में स्वाभिमान जगाना।

8. स्वाध्याय

8.1 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'बूढ़े जीवन की एक रात' के माध्यम से वृद्ध जीवन की समस्या पर प्रकाश डालिए।
2. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखिए।
3. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी के माध्यम से वृद्ध दम्पति रोशनलाल-नीलिमा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

8.2 लघुत्तरी/टिप्पणियाँ प्रश्न:

1. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी के रोशनलाल
2. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी की नीलिमा
3. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी के बेटा-बहू
4. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी की समस्या
5. 'बूढ़े जीवन की एक रात' कहानी का उद्देश्य

9. क्षेत्रीय कार्य

1. 'वृद्ध विमर्श' पर लिखी मराठी कहानियों का संकलन करके पढ़े।
2. आपके परिसर के वृद्धों से बातचीत करके उनकी समस्याओं को लेकर कक्षा में उसपर चर्चा करें।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. कहानी : स्वरूप और संवेदना - राजेंद्र यादव
2. 21 श्रेष्ठ कहानियाँ - डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
3. हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श - संपा. डॉ. दिलीप मेहरा,

***

4.2 काला सागर

– तेजेंद्र शर्मा

अनुक्रम

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय विवेचन
   3.1 तेजेंद्र शर्मा का जीवन परिचय एवं कृतित्व
   3.2 'काला सागर' कहानी का परिचय
   3.3 'काला सागर' कहानी का कथानक
   3.4 'काला सागर' कहानी के प्रमुख पात्र
      2.3.5 'काला सागर' कहानी में चित्रित समस्याएँ
      2.3.6 'काला सागर' कहानी का उद्देश्य
4. स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य :

विवेच्य कहानी को पढने के बाद आप–

1) तजेंद्र शर्मा के जीवन एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2) 'काला सागर' कथा में अभिव्यक्त मानव मूल्यों के गिरावट की समस्या को जानेंगे।
3) 'कला सागर' कहानी में आधुनिकता के कारण जीवन एवं रिश्तों में आई असंवेदनशीलता को जान सकेंगे।
4) 'काला सागर' कहानी पढने के बाद मानवी मूल्यों के महत्त्व को समझ सकेंगे ।
5) 'काला सागर' कहानी के उद्देश्य को जान पाएँगे।

2. प्रस्तावना

हिंदी कहानी साहित्य में प्रवासी साहित्य का विशेष महत्त्व रहा है। प्रवासी साहित्य का अर्थ है, प्रवासी लोगों द्वारा लिखा गया साहित्य। भारत के मूल निवासी लोग जो अपने काम के सिलसिल में विदेशों में रहते हैं, उनके द्वारा लिखा साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है। प्रवासी साहित्यकार ब्रिटन, अमेरिका, कॅनडा, गुयाना, मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि स्थानों को कर्मभूमि मानकर हिंदी साहित्य का सृजन कर रहे हैं। इसमें हरिशंकर आदेश, तेजेंद्र शर्मा, अचला शर्मा, सुधा ओम ढींगरा, उषा राजे सक्सेना, जय वर्मा, जकिया जुबैरी, दिव्या माथुर, जोगिंदर सिंह कंवल, स्नेहा ठाकुर, बासुदेव विष्णु दयाल, रामदेव धुरंधर, अभिमन्यु अनत, डॉ. अखिलेश सिन्हा, नीलम जैन, सुषम बेदी, अब्बास रज़ा अल्वी, प्रेम माथुर, कैलाश भटनागर, अशोक गुप्ता, दीपिका जोशी, भगवत शरण श्रीवास्तव, प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण, चाँद हदियाबादी, अमिताभ मित्रा, ब्रजेंद्र सागर, डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल, अंजल प्रकाश, गौतम सचदेव, पुष्पा भार्गव, डॉ. सुरेंद्र भूटानी आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन प्रवासी साहित्यकारों में तेजेंद्र शर्मा जी का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। भारतीय मूल के हिंदी कवि, नाटकार एवं कहानीकार तेजेंद्र जी ब्रिटेन में रहते हैं। विवेच्य इकाई में हम उनके सन 1990 को लिखे 'काला सागर' इस कहानी संग्रह में प्रकाशित 'काला सागर' इस कहानी का अध्ययन करने वाले हैं। 'काला सागर' यह कहानी हवाई जहाज के दुर्घटना की त्रासदी को बया करने वाली मार्मिक कहानी है। लेखक तेजेंद्र शर्मा जी ने इसमें रिश्तों में आई स्वार्थलिप्सा, संवेदनहीनता, आतंकवाद जैसी समस्याओं को उजागर किया है।

3. विषय विवेचन

3.1 तेजेंद्र शर्मा का जीवन परिचय एवं कृतित्व

✻ जीवन परिचय :

हिंदी के प्रतिभासंपन्न प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा जी का जन्म 21 अक्तूबर, 1952 ई. में पंजाब के एक छोटे से शहर जगरांव में हुआ। जगरांव यह शहर भारत के स्वाधीनता आंदोलन और लाला लाजपतराय के कारण विशेष चर्चा में रहा है। तजेंद्र जी की माँ का नाम श्रीमती पद्मा शर्मा और पिताजी का नाम नंद गोपाल मोहला था। इनका परिवार पहले पाकिस्तान में था लेकिन बँटवारे के बाद वे पंजाब में आए। तेजेंद्र के पिताजी देशभक्त व्यक्ति थे और वे रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर की नौकरी करते थे। उनकी माताजी धार्मिक प्रवृत्ति की कुशल गृहिणी थी। उनके पिताजी की सरकारी नौकरी के कारण उनका हमेशा तबादला होता। इसकारण तेजेंद्र जी का बचपन पंजाब के उचाना, रोहतक, मोडमंडी में बीता। तीन भाई-बहनों में तेजेंद्र जी दूसरे नंबर की संतान थे। उनके बहनों का नाम आदर्श और किरन था। उनकी प्राथमिक शिक्षा दिल्ली के अंधा मगुल सरकारी स्कूल में हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय से अँग्रेजी में बी.ए. और एम. ए. की पढाई पूरी की।

पढाई के दौरान उन्हें सहपाठी इंदुजी से प्रेम हुआ और बाद में दोनों ने विवाह किया। शादी के बाद तेजेंद्र जी एयर इंडिया-मुंबई फ्लाइट परसर के पद पर नौकरी करने लगे। तेजेंद्र जी ने प्रारंभिक जीवन में नौकरी के लिए बहुत संघर्ष किया। उन्होंने रेडियो, टी.वी. और सिनेमा भी अपनी किस्मत अजमाई। तेजेंद्र और इंदु जी की दो संतान हैं। बेटी का नाम दीप्ति है जो टी.वी. इंडस्ट्रीज से जुड़ी है जबकि बेटा मयंक लंदन में एक बड़ी कंपनी में नौकरी करता है। पत्नी इंदुजी के अकाल मौत के बाद वे लंदन में जा बसे। यहाँ वे ब्रिटिश रेल (लंदन ऑवर ग्राउंड) में चालक के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने 'कथा युके' की स्थापना की और आज भी वे निरंतर साहित्य सृजन कर रहे हैं।

❊ कृतित्व :

प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखक है। उन्होंने कविता, ग़ज़ल और कहानी विधा में विस्तृत साहित्य लिखा है। उनके साहित्य में मानव जीवन की यथार्थ अनुभूतियों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। उनका रचना संसार इसप्रकार है-

अ) काव्य संग्रह - 'ये घर तुम्हारा है' (2008 ई.) और 'मैं कवि हूँ इस देश का' (द्विभाषिक कविता संग्रह)।

आ) कहानी संग्रह – 'काला सागर' (1990 ई.), 'ढिबरी टाईट'(1994 ई.), 'देह की कीमत' (1999 ई.), 'यह क्या हो गया' (2003 ई.), 'बेघर आँखें' (2007 ई.), 'सीधी रेखा की परतें' (2009 ई.), कब्र का मुनाफा (2010 ई.), 'दीवार में रास्ता' (2012 ई.), 'प्रतिनिधि कहानियाँ' (2014 ई.), 'मेरी प्रिय कथाएं' (2014 ई.), श्रेष्ठ कहानियाँ (2015 ई.), 'सपने मरते नहीं' (2015 ई.), 'गौरतलब कहानियाँ' (2017 ई.), 'मौत एक मध्यांतर' (2019 ई.), 'स्मृतियों के घेरे' (2019 ई.), 'नई जमीन नया आकाश' (2019 ई.), 'मृत्यु के इंद्रधनुष' (2019 ई.)।

इ) अन्य लेखन – दूरदर्शन के लिए 'शांति' धारावाहिक का लेखन किया।

ई) पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक – 'प्रवासी संसार कथा विशेषांक - 2014 ई.', 'सृजन संदर्भ पत्रिका का 'प्रवासी साहित्य विशेषांक-2012 ई., देशांतर दिल्ली हिंदी अकादमी द्वारा प्रकाशित प्रवासी कहानी संग्रह।

ऊ) अनूदित पुस्तकें – 'ढिबरी टाईट' पंजाबी भाषा-2005 ई., 'ईंटों का जंगल' उर्दू भाषा-2006, 'पासपोर्ट का रंग' कहानी नेपाली भाषा में 'पासपोर्ट का रंग हारू' नाम से 2006 में अनूदित।

❊ पुरस्कार एवं सम्मान –

प्रवासी कहानीकार तजेंद्र शर्मा जी को उल्लेखनीय साहित्य सेवा के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वह इसप्रकार है-

1. मेंबर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर की उपाधि - 2017 ई., 2. डॉ. मोटुरी सत्य नारायण सम्मान-2011 ई., 3. 'प्रवासी भारतीय साहित्य भूषण सम्मान-2013 ई.', 4. हरियाणा राज्य साहित्य अकादमी

सम्मान- 2012 ई.', 5. 'ढबरी टाईट' के लिए महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार-1995 ई. 6. डॉ. हरिवंश राय बच्चन सम्मान- 2008 ई. 7. 'एन.आर.आई. ऑफ दि ईयर- 2018 ई.' 8. निर्मल वर्मा सम्मान और उर्वशी सम्मान- मध्यप्रदेश', 9. 'विश्व नागरी सम्मान-2018 ई.' 10. 'हिंदी सेवी सम्मान-2018 म.गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय से, 11. युवा साहित्यकार पुरस्कार-1998 ई. 12. सुपथगा सम्मान- 2017 ई. 13. प्रथम संकल्प साहित्य सम्मान, दिल्ली-2007 ई. 14. तितली बाल पत्रिका का साहित्य सम्मान-बरेली-2007 ई. 15. अंतर्राष्ट्रीय स्पंदन कथा सम्मान-2014 ई. आदि।

3.2 'काला सागर' कहानी का परिचय

'काला सागर' यह कहानी तेजेंद्र शर्मा लिखित 'काला सागर' कहानी संग्रह में संकलित है। यह कहानी संग्रह 1990 ई. को प्रकाशित हुआ था। विवेच्य कहानी में तेजेंद्र जी ने एक विमान दुर्घटना की घटना को आधार बनाया है। काला समुद्र में आतंकवादियों द्वारा विमान गिराए जाने, सभी यात्रियों की मौत होना और उसके बाद परिजनों की स्थिति को इसमें लेखक ने उजागर किया है। लेखक ने इसमें पारिवारिक रिश्तों में आई स्वार्थपरायणता, असंवेदनशीलता, बनावटी रिश्तें, आतंकवाद आदि विकृतियों पर प्रहार किया है।

3.3 'काला सागर' कहानी का कथानक

विवेच्य कहानी का प्रारंभ विमल महाजन के परिचय से होता है जो इंडियन एअर लाइन में काम करते हैं। आज उन्होंने ऑफिस से छुट्टी ली और सुबह के सभी काम निपटाकर अखबार पढ रहे हैं। समाचार पत्र में पंजाब में घट रही अमानवीय घटनाओं के कारण वे भयभीत हो जाते हैं। उन्हें लुधियाना जिले में स्थित अपनी जन्मभूमि जगराँव की याद आती है। नौकरी के लिए मुंबई में गत तीस वर्षों से बसे हैं। अपनी मातृभूमि से बिछड़ने का उन्हें काफी दुःख भी होता है। समाचार-पत्रों को उलट-पुलट रहे थे इतने में उन्हें ऑफिस से फोन आता है। छुट्टी के दिन भी फोन आने से वे थोड़ा सा गुस्साते हैं। लेकिन उन्हें सूचना मिलती है कि जीरो नाइन वन (091) विमान लंदन के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ है। इस सूचना से विमल महाजन हिल जाते हैं और तुरंत ऑफिस जाने के लिए तैयार होते हैं।

छुट्टी ली है और इतने आनन-फानन में ऑफिस के लिए जाते देख उनकी पत्नी रंजना उन्हें कहती है, 'क्या बात है? आप तो आज आराम करने वाले थे। फिर एकाएक कहाँ की तैयारी होने लगी है?' वे बताते हैं- 'रंजू, न्यूयार्क फ्लाइट क्रैश हो गई है। दफ्तर' 'क्या? अरूण भी तो न्यूयार्क ही गया है।'' ऑफिस जाकर फोन करने की बात करते हुए विमल महाजन निकल पड़ते हैं। रास्तेभर में वे अरूण के बारे में सोचने लगते हैं। अरूण उनके लिए बेटे के समान था। उसकी शादी में वे सारे सिद्धांतों को ताक पर रखकर नाचे थे। उसकी पत्नी अनुराधा भी उनका बहुत सम्मान करती थी। वे भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि अरूण सुरक्षित हो। दफ्तर के बाहर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। लोग अपने परिवारजनों की सूचना पाने के लिए व्याकुल थे। ऑफिस में उनके सहायक अफजल खाने ने उन्हें बताया कि, ''सर, फ्लाइट जीरो नाइन वन मांट्रियल से लंदन आ रही थी। रास्ते में ही लंदन के करीब सागर के ऊपर ही फ्लाइट में एक धमाका हुआ और फ्लाइट क्रैश हो गई। अभी पूरी डिटेल्स आनी बाकी है।'' विमल जी ने अपने आप पर संयम रखते हुए

लंदन ऑफिस से जानकारी लेने का प्रयास किया। क्रू लिस्ट में अरूण का नाम नहीं था, इसकारण उन्हें थोड़ी राहत मिली। लेकिन फ्लाइट में जितने में भी लोग थे वे उनके परिचितों में से थे। उन्हें रमेशकुमार की याद आती है जिसका तीन महीने पहले ही विवाह हुआ था। उसने घरवालों के खिलाफ एक पारसी एअर होस्टेस से शादी की थी। दोनों भी इस फ्लाइट में थे। उनका मन बहुत ही विचलित हो गया। दुर्घटना में मारे गए यात्रियों के रिश्तेदारों को इसकी खबर कैसे दी जाए? इस विचार से ही उनका मन भयभीत हो रहा था।

ऑफिस के टेलैक्स पर संदेश आता है जिसमें यह हवाई जहाज आतंकवादियों के बम विस्फोट का शिकार होने की संभावना जताई गई थी। विमान में क्रू व यात्रियों समेत कुल तीन सौ उनतीस लोग थे। अभी तक किसी के बचने की सूचना नहीं मिली थी। अगर कोई बचता भी है तो एटलांटिक (काला सागर) के बर्फीले पानी में जीवित रहने की संभावना भी बहुत कम थी। विमल महाजन मन में कई प्रश्न निर्माण होते हैं, जैसे आतंकवादियों का यह कौनसा धर्म है? क्या तीन सौ उनतीस लोगों को मारकर उनकी बातें मनवायी जा सकती है? क्या इन लोगों को शहीद कहा जाएगा? वे इसकी तुलना जलियाँवाला बाग से करते हुए क्य कोई ऊधमसिंह फिर से पैदा होगा जो इस आतंकवादियों का सफाया कर सकेगा? इतने में फोन की घंटी बजती है और उनकी तंद्रा टूट जाती है। उनकी पत्नी रंजना का फोन था जो अरूण के बारे में पूछ रही थी। अरूण फ्लाइट में न होने की जानकारी से रंजना राहत की सांस लेती हैं और विमल महाजन को समय पर खाना खाने को कहती है। इस दुर्घटना की आपा-धापी के बीच रंजना की यह सलाह पर उन्हें बहुत गुस्सा आता है और वे अपना पूरा गुस्सा उसपर निकालते हैं। लंदन से फिर से संदेश आता है कि लंदन से सत्तर मील दूर आकाश में एक धमाका हुआ था और विमान सागर में खो गया था। नौकाएं और पनडुब्बियाँ खोल के लिए भेजी जा चुकी है। विमल महाजन अब यंत्रवत हुए थे। लगभग यह तय हुआ था कि इस दुर्घटना में कोई भी नहीं बचा था।

दुर्घटनाग्रस्त विमान के कप्तान विक्रम सिंह थे जो महाजन के बहुत अच्छे दोस्त थे। दोनों इकट्ठा होते तो शामें जिमखाना में बिताते थे। दोनों को ब्रिज खेलना पसंद था। लेकिन महाजन कभी पैसा लगाकर नहीं खेलते थे। कप्तान सिंह हमेशा विमल जी को पोंगा पंडित कहकर पुकारते थे। छह महीने के बाद ही वे रिटायर होने वाले थे लेकिन अब इस दुर्घटना से कुछ भी शेष नहीं बचा। फ्लाइट परस अनिरूद्ध थे जिन्हें महज छः महीने की बेटी है। उनकी पत्नी को कैसे खबर की जाए? इस विचार से विमल महाजन का दिल बैठे जा रहा था। तीन-चार दिनों तक एअरपोर्ट पर रिश्तेदारों का ताता लगा रहा। विमल महाजन इस सदमे के कारण तीन रातों से सो नहीं पाए थे। समाचार पत्रों में यह खबर सुर्खियों में रही। ब्लैक बॉक्स, जाँच समिति का गठन और अन्य औपचारिकताएं निभाई जा रही थी।

दो दिनों से एअरपोर्ट के पास बैठे भिखारी ननकू को भी यह खबर मिली थी तो वह अपने साथी से कहता है कि 'यार, यह विमान अगर गिरना ही था, तो साला समुद्र में क्यों गिरा? सोच् कितनी बढिया-बढिया चीजें, वीसीआर, टीवी, सोना, साड़ियाँ सब-के-सब बेकार। यहीं कही अपने शहर के आस-पास गिरता तो कुछ अपने हाथ भी कुछ लगता।'' इसतरह लोगों की संवेदनहीनता और लालची वृत्ति का दर्शन होता है।

विदेश के आतंकवादियों के गुटों ने इस दुर्घटना की जिम्मेदारी ली थी। आतंकवादियों की इस अमानवीय घटना का श्रेय लेने की विकृत मानसिकता पर गुस्सा आता है। एअरलाइन के मुख्य कार्यालयों में बैठकें होती है और तय किया जाता है कि विदेश नागरिकों को वहाँ के कानून के अनुसार और भारतीयों को भारतीय कानून के अंतर्गत मुआवजा दिया जाएगा। यहाँ पर भी रंगभेद करने से विमल महाजन दु:खी हो जाते हैं। विमल महाजन कार्यालय के सामने प्रस्ताव रखते हैं कि एक विशेष विमान से मृतकों के रिश्तेदारों को लंदन भेजा जाए जिससे मृतकों की शिनाख्त हो सके। उच्च अधिकारी उनकी माँग का स्वीकार करते हैं। क्रू यूनियन ने मृतक क्रू-मेंबर के परिवार के लिए एक-एक लाख रुपया देने का फैसला लिया था। तब रमेश के पिताजी विनय महाजन से मिलते हैं और मुआवजा का रुपया उन्हें मिलने की माँग करते हैं। क्योंकि उन्होंने अपने पत्नी से तलाक लिया है। पिछली विमान दुर्घटना में उनकी बेटी नीना की मौत हुई थी तब भी उन्हें ही मुआवजा दिया गया था। अब बुढापे में कमाई का कोई जरिया न होने के कारण मुझे ही रमेश की मौत का मुआवजा मिलने की वे माँग करते हैं। महाजन को इस बात से धक्का लगता है और वे उन्हें अर्जी करने के लिए कहते हैं।

लंदन के लिए मृतकों के परिजनों ले जाने के लिए विशेष विमान की जिम्मेदारी महाजन जी पर सौंपी जाती है। विशेष विमान जाने की सूचना मिलते ही मृतकों के रिश्तेदारों का ताँता लग जाता है। करीबी रिश्तेदार चूनने में उन्हें बड़ी मशक्कत करनी पड़ी। रोते-बिलखते रिश्तोंदारों के साथ लंदन जाना विमल जी के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम न था। उन्हें संयम रखना बहुत मुश्किल लग रहा था।

मिसेज वाडेकर बहुत रो रही थी। उनका बेटा विदेश से विवाह करने बंबई आ रहा था। लेकिन उसकी डोली से पूर्व ही उसकी अर्थी लेने की नौबत उनपर आने से वह विक्षिप्त की तरह बड़बड़ा रही थी। मगनभाई की बीस वर्ष की पोती विदेश से अकेली उन्हें मिलने आ रही थी। वे भी उदास होकर खिड़की के पास बैठे थे। दीपिंदर तो दो-दो मौतों का बोझ लिये बैठा था। हाल ही में उसके पिताजी की मौत हुई थी। उनके अंतिम दर्शन के लिए उनका भाई सुक्खी अमेरिका से आ रहा था। दुनिया की अलग-अलग एजेंसियों से एटलांटिक में खोजबीन शुरू थी। पहले विमान के कुछ क्षतिग्रस्त टुकड़े मिले और फिर छिन्न-भिन्न हुई लाशों के टकड़े मिलना शुरू हुआ। लाशें पहचानना बहुत मुश्किल काम था। लंदन एअरलाइन की ओर से सभी रिश्तेदारों की खाने-रहने का प्रबंध किया गया था। विमल महाजन सभी का खयाल रख रहे थे। तभी एक यात्री विमल महाजन के पास पहुँचकर रोजाना भत्ता देने की माँग करता है जिससे वे बाहर घूमने जा सके। विमल महाजन उसकी इस माँग से हैरान हो जाते हैं।

शीला देशमुख के पिता सरकारी अधिकारी थे। वे कहते हैं, हमारी बेटी ने एअरलाइन के लिए जान दी है। इसके बदले में सिर्फ एक लाख का मुआवजा दे रहे हैं। इससे हमारा क्या होगा? हमारी दूसरी बेटी अमेरिका में रहती है। आप मुझे और मेरी पत्नी को हर वर्ष अमेरिका आने-जाने का मुफ्त टिक दीजिए। मिनिस्टर साहब से मैं इस विषय में बात करूँगा। विमल महाजन को परिवारजनों की स्वार्थीवृत्ति पर अफसोस हो रहा था। भावनाविहीन लोगों को देख वे सब कुछ छोड़कर वापस जाना चाहते थे। लेकिन वे यह काम अपने सहयोगियों को सच्ची श्रद्धांजलि देने की नियत से कर रहे थे।

सभी लाशों को लंदन के विक्टोरिया अस्पताल में रखा गया था। ये सभी विकृत, छिन्न-भिन्न लाशे थी। इन लोगों की दर्दनाक मौत को देख विमल जी सहम जाते हैं। अंगुठी और लॉकेट से शिनाख्त करने की कोशिश की जाती है। केवल एक ही यात्री की लाश साबूत थी और वह थी नैंसी की। नैंसी चेंबूर झोपड़पट्टी में रहती थी और पढ-लिखकर वह एअरहोस्टज बन गई थी। उसपर बूढी माँ और तीन बहनों की जिम्मेदारी थी जो अभी पढ रही थी। उसकी लाश को देखकर उसकी माँ का कलेजा फट-सा जाता है। फिर भी धैर्यपूर्वक वह अपने बेटी की लाश ले जाने की तैयारी कर रही थी। छिन्न-भिन्न लाशों को देखकर काला सागर के तट पर ही सामूहिक अंतिम संस्कार करना और वहाँ पर मृतकों की याद में एक स्मारक बनाने का फैसला किया जाता है। रिश्तेदारों की हर सवाल का उत्तर देते, ब्रिटिश सरकार और एअरलाइन के अधिकारियों से बातचीत करे विमल जी तन-मन से पूर्ण रूप से थक गए थे। वे कुर्सी पर बैठ आँखे मूँद कर राहत ले रहे थे कि इतने में एक रिश्तेदार उन्हें पूछता है-

''जिस काम के लिए आए थे, वो तो हो गया। जरा बताएंगे, यदि शॉपिंग वगैरह करनी हो तो कहाँ सस्ती रहेगी? नए हैं न।'' अब विमल महाजन में उसके आगे बात सुनने का धैर्य नहीं था। सभी रिश्तेदार लंदन के बाज़ारों में घूमकर यथासंभव सामान खरीदी कर लेते हैं। जाते समय काऊंटर पर शौकत अली बहुत से यात्रियों को रोकता है क्योंकि फ्लाइट पर बीस किलो का समान ही ले जाया जा सकता है। बहुत से लोगों का सामान साठ किलो से ज्यादा था। यहाँ पर भी विमल जी बातचीत करके हल निकालते हैं। विमान ने उड़ान भरी। विमल महाजन रिपोर्ट बनाने के लिए मुआयना कर रहे थे। मिसेज वाडेकर ने खाने को छुआ तक नहीं। वे बेटे की लाश को दूल्हा नहीं बना पाई क्यों कि लाश की शिनाख्त ही नहीं हुई थी। दीपिंदर दस दिन में दो लाशों का क्रियाकर्म करके दु:खी बैठा था। कुछ यात्री गम को भूलाने के लिए मुफ्त में मिली शराब के पेग-पर-पेग चढा रहे थे। तो दो यात्री में संवाद चल रहा था, 'क्यों ब्रदर, आपने कौन-सा वीसीआर लिया?

मुझे तो एनवी 450 मिल गया।'

'बड़ी अच्छी किस्मत है आपकी। मैंने तो कई जगह ढूँढा। आखिर में जो भी मिला, ले लिया। हमें कौन-सा बेचना है।'

'आपने सोनी ढूँए ही लिया। कितने इंच का लिया?'

'27 इंच का। और आपने?

'हमारे भाग्य में कहाँ जी! जेवीसी का लिया है। पर देखने में अच्छा लगता है। फिर च्वाइस कहाँ थी।'

यात्रियों को एक झटका सा महसूस होता है और विमान 'काला सागर' के करीब से उड़ान भर रहा था। इसतरह कथानक यहाँ समाप्त हो जाता है।

3.4 'काला सागर' कहानी के प्रमुख पात्र

'काला सागर' कहानी में विमल महाजन इस व्यक्ति के केंद्र में रची-बसी है। लेकिन सहायक पात्र के रूप में कुछ पात्रों का लेखक ने संक्षिप्त परिचय दिया है। इसमें रमेशकुमार, अरूण, नैंसी, शीला देशमुख, मिसेज वाडेकर आदि प्रमुख है।

प्रमुख पात्र

※ विमल महाजन

विमल महाजन जी पिछले तीस वर्षों से इंडियन एअर लाईन में कार्यरत है। चार-पाँच वर्ष के बाद रिटायर होने वाले हैं। उन्होंने एक विमान परिचारक के रूप में नौकरी की शुरुआत की थी और अपनी मेहनत एवं ईमानदारी से उच्च पद पर पहुँचे हैं। उनकी पत्नी का नाम रंजना है और उन्हें तीन संतानें भी है। उनकी आयु को देखकर ऐसा नहीं लगता कि वे दो-दो बच्चों के नाना भी हैं। उनकी आधुनिक पोशाख के कारण उम्र का पता ही नहीं चलता। उन्हें अपनी जन्मभूमि जगराँव गाँव से बेहद स्नेह है लेकिन नौकरी के लिए मुंबई में बस जाने की मजबूरी से वे अपने गाँव को बहुत याद करते हैं। पंजाब के खराब हालात और मुंबई में भी प्रांतवाद के चलते खुद को परायेपन की भावना से ग्रस्त पाते हैं।

विमल महाजन एक कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है। जब उन्हें एअर लाईन से ०९१ फ्लाईट लंदन में क्रैश होने का फोन आता है तो वे छुट्टी के दिन तुरंत अपने दफ्तर में हाज़िर हो जाते हैं। कर्तव्यनिष्ठता का परिचय देते हुए फ्लाईट में सँवार सभी यात्रियों एवं क्रू मेंबर की सूचना लेकर उनके रिश्तेदारों को जानकारी देते हैं। बाद में मृतक यात्रियों और क्रू मेंबर के परिजनों को विशेष विमान से लंदन ले जाने, उचित मुआवजा दिलाने, समय-समय पर लंदन एअर लाईन एवं वहाँ की सरकार से बातचीत करके सभी को हरसंभव सहायता करके अपने कर्तव्य को निभाते हैं।

बेहद ही संवेदनशील व्यक्ति है। विमान दुर्घटना में मारे गए अपने क्रू मेंबर और अन्य मृतकों के प्रति उनमें गहरी संवेदना होती है। विमान में मिसेज वाडेकर, दीपिंदर, नैंसी, मगनभाई आदि दु:खों को देखकर वे पसीज जाते हैं। अपने बेटे समान अरूण के न्यूयॉर्क फ्लाइट के आने से खबर से वे बहुत ही उदास हो जाते है। लेकिन उस यात्रियों की सूची में अरूण का नाम न देखकर राहत की साँस लेते हैं। मृतकों के परिजनों को विमान में खान-पान की सुविधा का ध्यान रखते हैं। अपने क्रू मेंबर को सच्ची श्रद्धांजलि के रूप में वे बिना स्वार्थ के काम करते हैं।

उन्हें आतंकवाद या धर्म के नाम पर होने वाले झगड़ों से नफरत है। आतंकवादियों ने ३२९ लोगों को मारकर कौनसे धर्म को स्थापित किया? ऐसा सवाल वे पूछते हैं। वे मानवता को ही सबसे बड़ा धर्म समझते हैं। इसलिए वे मृतकों के परिजनों की जाति-धर्म देखकर सहायता नहीं करते बल्कि एक इंसान होने के नाते मदद करते हैं। साथ ही मृतकों के रिश्तेदारों की स्वार्थी वृत्ति देखकर उन्हें बहुत दु:ख होता है। मृतकों के रिश्तेदारों को मृतक से भी ज्यादा मुआवजा पाने, विदेश यात्रा करने, वहाँ के बाज़ारों में शॉपिंग करने और इंपोर्टेड सामान घर लाने में रूचि होती है। पारिवारिक रिश्तों में आए इस बनावटी और लालचीपन को देख

विमल महाजन को उनपर गुस्सा आता है। इस प्रकार विवेच्य कहानी के प्रमुख पात्र विमल महाजन के चरित्र में एक कर्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील, आतंकवादी प्रवृत्ति के विरोधी, मानवतावाद के समर्थक, मददगार आदि विशेषताएं देखने मिलती है।

सहायक पात्र

※ नैंसी

नैंसी चेंबूर झोपड़पट्टी में अपनी माँ और तीन बहनों के साथ रहती थी। वह इंडियन एअर लाईन में एअर होस्टज के रूप में कार्यरत थी। पिता का साया न होने के बावजूद भी नैंनी ने खुद के बलबुते पर पढ–लिखकर यह मुकाम हासिल किया था। उसके घर में वह अकेली कमाती थी। उसपर बूढी माँ और तीन बहनों की जिम्मेदारी थी। इसमें एक बहन ने बी. ए. किया था और बाकी दो अभी स्कूल में पढ रही थी। ०९१ विमान की दुर्घटना में नैंसी को छोड़कर सभी की लाशें छिन्न–भिन्न हुई थी। उसकी लाश को देखकर उसकी माँ का कलेजा फट–सा जाता है। फिर भी धैर्यपूर्वक वह अपने बेटी नैंसी की लाश ले जाने की तैयारी करती है।

※ शीला देशमुख

शीला देशमुख इंडियन एअर लाईन में क्रू मेंबर के रूप में काम करती थी। उसे के पिता सरकारी अधिकारी थे। ०९१ विमान दुर्घटना में उसकी भी मौत हो जाती है। उसके पिताजी अपने बेटी की मौत को शहादत का नाम देखकर अपना स्वार्थ पूरा करना चाहते हैं। वे एअर लाईन से मिलने वाले एक लाख रूपये के बदले पति–पत्नी को हर वर्ष अमेरिका आने–जाने का मुफ्त टिक देने की माँग करते हैं। और इसके लिए होम मिनिस्टरी बात करने की माँग करते हैं।

※ मिसेज वाड़ेकर

विमान दुर्घटना में मिसेज वाडेकर के बेटे की मौत हो गई थी। उनका बेटा विदेश से विवाह करने बंबई आ रहा था। लेकिन उसकी डोली से पूर्व ही उसकी अर्थी लेने की नौबत उनपर आने से वह विक्षिप्त की तरह बड़बड़ा रही थी। जब वे विशेष विमान से लंदन में बेटे की लाश लाने जाती है तब वह पूरी यात्रा में रोती रहती है। कुछ भी खाती–पीती नहीं। उनपर बेटे की मौत का गहरा सदमा लगा था। जीते जी न सही मरने के बाद तो तुम्हें दुल्हा बनाकर विदा करूँगी कहरक बड़बड़ा रही थी। लेकिन जब वे लंदन पहुँचती है तो नैंसी को छोड़ सभी के लाशें क्षत–विक्षत हुई थीं। वाड़ेकर के बेटे की भी शिनाख्त नहीं हो पाई और बेटे को दुल्हा बनाकर दाह संस्कार करने की इच्छा, इच्छा ही रह जाती है।

※ रमेश कुमार

रमेश कुमार एअर लाईन में क्रू मेंबर के रूप में कार्यरत था। उसका तीन महीने पूर्व ही विवाह हुआ था। उसने अपने माता–पिता के इच्छा के विरूद्ध एक पारसी लड़की से शादी की थी। वह भी इसी एअर लाईन में एअर होस्टेस थी। 091 फ्लाईट में दोनों भी क्रू मेंबर के रूप में तैनात थे। इस दुर्घटना में दोनों की भी मौत हो जाती है। रमेश कुमार की एक बहन थी और उसकी मौत भी एक विमान दुर्घटना में हुई थी।

रमेश कुमार के पिताजी और माताजी का घटस्फोट हुआ था इसकारण रमेश के मौत के मुआवजे की रकम पिताजी को मिले इसलिए वो विमल महाजन से मिलते हैं। बेटी के मौत का मुआवजा भी उन्हें दिया गया था। इसलिए वो एक अर्जी देकर रखते हैं क्यों कि उन्हें डर था कहीं उनकी तलाकशुदा बीवी मुआवजे की रकम हड़प न ले। रमेश कुमार से भी ज्यादा रमेश कुमार के मौत के मुआवजे के रुपए उन्हें अपने बुढापे का सहारा लगते हैं।

✻ **अरूण**

अरूण कहानी के नायक विमल महाजन के लिए बेटे के समान था। न्यूयॉर्क से आने वाले 091 विमान दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर से विमल महाजन और उनकी पत्नी रंजना घबरा जाते हैं। क्योंकि उनका मुँहबोला बेटा अरूण भी न्यूयॉर्क गया था। अरूण की शादी में विमल जी सभी सिद्धांतों को ताकपर रखकर, सिर पर पगड़ी बाँधकर घोड़ी के सामने नाचे थे। अरूण की पत्नी का नाम अनुराधा था। वह भी बहुत सुशील और संस्कारी लड़की थी। लेकिन ऑफिस में जाकर विमल जी जब यात्रियों की सूची को देखते हैं तो उसमें अरूण का नाम नहीं था। तब वो यह सुखद समाचार अपनी पत्नी रंजना को देकर राहत की साँस लेते हैं।

2.3.5 'काला सागर' कहानी में चित्रित समस्याएँ

'काला सागर' यह कहानी विमान दुर्घटना और उसके बाद रिश्तेदारों की गतिविधियों का सार्थक वर्णन करती हैं। लेखक तेजेंद्र वर्मा जी ने इसमें प्रांतवाद, आतंकवाद, पारिवारिक रिश्तों में स्वार्थीवृत्ति आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

✻ **प्रांतवाद**

तेजेंद्र जी ने प्रस्तुत कहानी में प्रांतवाद का संक्षिप्त उल्लेख किया है। मूलत: कथानायक विमल महाजन जी के व्यक्तित्व में हमें लेखक तेजेंद्र जी का आभास होता है। क्योंकि विमल महाजन और लेखक की जन्मभूमि जगराँव (जि. लुधियाना, पंजाब) एक ही है। विमल महाजन और तेजेंद्र जी का एअर लाईन में काम करने की बात में भी समानता है। विमल जी अपने जन्मभूमि जगराँव और पंजाब में हो रही आसामाजिक वारदातों की खबरों से बचैन हो जाते हैं। नौकरी के लिए मजबूरन उन्हें मुंबई में रहना पड़ता है। वो तीस वर्षों से मुंबई में रह रहे हैं। लेकिन 'आमची मुंबई' के नारे से वो बेहद आहत हो जाते हैं। वो पत्नी से कहते हैं-'रंजना, हम तो एकदम स्टेट लेस होकर रह गए हैं। यहाँ तो बंबई वाले तो नारा लगाते हैं 'सुंदर मुंबई, मराठी मुंबई' यानी हम तो यहाँ के कभी नहीं हो सकते।'' स्पष्ट है कि यहाँ तेजेंद्र जी ने मुंबई में आए दिन होने वाले प्रांतवाद की समस्या की ओर संकेत किया है।

✻ **आतंकवाद**

विवेच्य कहानी एअर लाईन के 091 विमान दुर्घटना की घटना पर आधारित है। जब दुर्घटना के पीछे की जानकारी मिलती है तो सब हैरान हो जाते हैं। किसी आतंकवादी गुट ने ब्रिटन सरकार से अपने माँगे पूरी

करने के लिए इस विमान को बम से उड़ाया था। बहुत सी विदेशी आतंकवादी गुटों ने इसकी जिम्मेदारी ली थी। इस हादसे में मार गए मृतकों की स्मृति में काला सागर तट पर इसलिए स्मारक बनाया जाता है कि दुनिया देख ले कि आतंकवाद का क्या परिणाम होता है? अपनी माँगों के लिए 329 निरपराध लोगों की जान लेने वाले आतंकियों की पाशविकता की समस्या को लेखक ने यहाँ उजागर किया है।

※ पारिवारिक रिश्तों में स्वार्थवृत्ति

विवेच्य कहानी में पारिवारिक रिश्तों का बनावटीपन और लालचीवृत्ति इस प्रमुख समस्या का वर्णन आया है। विमान के दुर्घटना के बाद जब रिश्तेदारों को बुलाया जाता है तो ज्यादातर रिश्तेदार मृतकों के प्रति स्नेह से ज्यादा मुआवजा के रूपए मिलने की आशा से एअर लाईन के दफ्तर में भीड़ करते हैं। मृतकों की शिनाख्त के लिए लंदन के लिए नि:शुक्ल चार्टर प्लेन (विशेष विमान) का प्रबंध करने की सूचना मिलते ही रिश्तेदारों का ताँता लग जाता है। इसकारण कार्यालय को करीबी रिश्तेदारों को चुनने में परेशानी होती है। मृतकों की शिनाख्त के नाम पर अधिकांश रिश्तेदार बिना रुपये के लंदन घूम आने की लालची इच्छा रखते हैं। क्रू मेंबर रमेशकुमार के पिता मुआवजा की रकम उनकी तलाकशुदा बीवी के बजाए उन्हें देने की अर्जी देते हैं ताकि उस रकम से बुढापा गुजार सके। जीते जी रमेशकुमार ने विजातीय शादी करने के कारण रिश्ता तोड़ने वाले पिताजी उसके मरन के बाद मुआवजे की रकम पाने पहुँच जाते हैं। उसीप्रकार शीतल महाजन के पिता जी मुआवाजे के एक लाख रुपए के बदले आजीवन पति-पत्नी को साल में एक बार अमेरिका आने-जाने का मुफ्त टिकट की माँग करते हैं। एअर लाईन के परिसर में भीख माँगने वाला ननकू भी विमान समुद्र में गिरने के बजाए यहाँ मुंबई में गिरने की इच्छा व्यक्त करता है। क्योंकि उसे मृतकों के सामान पर हाथ साफ करने को मिल जाने की बात साथी से कहता है। तो कुछ मृतकों के रिश्तेदार लंदन पहुँचने के बाद रोजाना घूमने और शॉपिंग करने के लिए रोजाना भत्ते (डेली अलाऊन्स) की माँग करते हैं। तो कुछ रिश्तेदार लंदन के बाज़ारों में घूमकर टी.वी, वीसीआर जैसी चीजें खरीदते हैं और विमान के स्टाफ से इसे भारत ले जाने के लिए झगड़ा करते हैं। कुछ रिश्तेदार पाँच-छह दिनों से लंदन में मुफ्त में रहने-खाने मिलने से खुश हैं तो कुछ शराब के शौकिन विमान में गम भूलाने के नाम पर मुफ्त शराब के पेग-पर-पेग चढाते रहते हैं। इसतरह तेजेंद्र शर्मा जी ने रिश्तों में आई असंवेदनशीलता, बनावटीपन और लालचीवृत्ति की समस्या को सटीकता के साथ उजागर किया है।

2.3.6 'काला सागर' कहानी का उद्देश्य

प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा जी एक संवेदनशील कहानीकार के रूप में परिचित है। विवेच्य कहानी के माध्यम से उन्होंने विभिन्न समस्याओं के जरिए सामाजिक एवं मानव जीवन की कई विसंगतियों को उजागर किया है। इस कहानी के उद्देश्य इसप्रकार है- 1. प्रांतवाद और आतंकवाद की भयावह परिणामों से समाज को अवगत कराना। 2. मानवी जीवन में पनप रही अवसरवादिता, असंवेदनशीलता और स्वार्थीवृत्ति को उजागर करना। 3. पारिवारिक रिश्तों में आए बनावटीपन और स्वार्थवृत्ति को उजागर करना। 4. विमल

महाजन जैसे व्यक्तियों द्वारा संवेदनशीलता, परदु:खकातरता, कर्तव्यनिष्ठता, सहयोग वृत्ति आदि जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा करना।

4. स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.1 सही विकल्प चुनिए।

1. 'काला सागर' यह कहानी किसने लिखी है?

   अ. मोहन राकेश ब. तेजेंद्र शर्मा

   क. डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल ड. कमलेश्वर

2. 'काला सागर' कहानी में विमान दुर्घटना का कारण कौनसी समस्या है?

   अ. भाषावाद ब. नारीवाद क. गुटवाद ड. आतंकवाद

3. 'काला सागर' यह कहानी कौनसे कहानी संग्रह में संकलित है?

   अ. काला सागर ब. अनामिका क. जिज्ञासा ड. वितृष्णा

4. प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा का जन्म कब और कहाँ हुआ है?

   अ. 1955 ई. संभल में ब. 1954 ई. मुंबई में

   क. 1952 ई. जगराँव में ड. 1953 ई. बस्तर में

5. तेजेंद्र शर्मा जी हिंदी साहित्य में किस नाम से पहचाने जाते हैं?

   अ. प्रवासी साहित्यकार ब. विदेशी साहित्यकार

   क. पंजाबी साहित्यकार ड. देशी साहित्यकार

4. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. 'कालासागर' कहानी में .... प्रमुख पात्र है।

   अ. विमल महाजन ब. रोशन दुबे

   क. मगन चौबे ड. राम शर्मा

2. 'कालासागर' कहानी में कथानायक के पत्नी का नाम.है।

   अ. स्नेहा ब. भावना क. रंजना ड. उषा

3. 'काला सागर' कहानी में एअर लाईन के विमान की दुर्घटना होती है।

   अ. 091 ब. 201 क. 301 ड. 081

4. 'काला सागर' कहानी में विमान दुर्घटना में .लोगों की मौत होती है।

   अ. 229 ब. 429 क. 329 ड. 129

5. विमान दुर्घटना में केवल.की लाश साबूत थी।

अ. शीतल ब. रमेशकुमार क. नैंसी ड. मिसेज वाडेकर

6. ने पारसी एअर होस्टेस से परिवार के खिलाफ जाकर शादी की थी।

अ. अरूण ब. रमेशकुमार क. ननकू ड. दीपिंदर

7. विमानों की दुर्घटना की जाँच करने के लिएबॉक्स की पड़ताल की जाती है।

अ. ब्लैक ब. व्हाईट क. रेड ड. पिंक

8. तेजेंद्र शर्मा .... में बसे प्रवासी साहित्यकार है।

अ. अमेरिका ब. ब्रिटन क. पोलंड ड. जर्मनी

9. .... कहानी संग्रह के लिए तेजेंद्र शर्मा को महाराष्ट्र साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

अ. जिज्ञासा ब. ढिबरी टाईट क. देह की कीमत ड. काला सागर

10. .... रिश्तों को तेजेंद्र जी ने उजागर किया है।

अ. बनावटी और स्वार्थी ब. सुंदर

क. संवेदनशील ड. बेबस

११. विमान दुर्घटना में मिली विक्षत लाशें लंदन के .... अस्पताल में रखी थीं।

अ. जे. जे ब. विक्टोरिया क. मदर मेरी ड. डॅनियल

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

- कोफ्त- दु:ख, रंज।
- अन्यमनस्क - जिसका चित्त कहीं और हो।
- विमान परिचारक - विमान कर्मी, यात्रियों को सेवा देने के लिए नियुक्त व्यक्ति
- एअर होस्टेस - हवाई जहाज में कार्यरत परिचारिका, हवाई सुंदरी
- क्रू यूनियन- विमान में कार्यरत कर्मचारियों की संघटना
- फ्लाइट परसर- हवाई यात्रा के दौरान यात्रियों की सेफ्टी और कंफर्ट का ध्यान रखनेवाला विमान कर्मी
- पनडुब्बियाँ - एक जलयान जो समुद्र की गहराई जाकर छान-बीन करता है।
- ब्लैक बॉक्स- एक ऐसा डिवाइस है जो उड़ान के दौरान विमान से जुड़ा डेटा इकट्ठा करता है।
- मौत को दावत देना- खतरा मोल लेना
- स्वर भर्रा उठना- आवाज रूक-रूक कर आना।

6. **स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर**

4.1 – 1. तेजेंद्र शर्मा 2. आतंकवाद 3. काला सागर 4. 1952 ई. जगराँव में 5. प्रवासी साहित्यकार

4.2 – 1. विमल महाजन 2. रंजना 3. 091 4. 329 5. नैंसी 6. रमेशकुमार 7. ब्लैक 8. ब्रिटन 9. ढिबरी टाईट 10. बनावटी और स्वार्थी 11. विक्टोरिया

7. सारांश

1. 'काला सागर' यह कहानी प्रवासी साहित्यकार जी के 'काला सागर' इस कहानी संग्रह में संकलित है जिसमें विमान दुर्घटना की घटना को आधार बनाकर रिश्तों में आए लालचीपन, स्वार्थवृत्ति और आतंकवाद की समस्या को उजागर किया है।
2. एअर लाईन के 091 फ्लाईट को आतंकवादी ब्रिटन सरकार से अपनी माँगों को पूरा करने के लिए बम से उड़ाते हैं जिसमें 329 यात्रियों की मौत हो जाती है।
3. लंदन में मृतकों की शिनाख्त के लिए ले जाए गए रिश्तेदारों की असंवेदनशीलता और स्वार्थवृत्ति को विवेच्य कहानी में दर्शाया गया है। जो मृतकों से भी ज्यादा मुआवजे के रुपए, मुफ्त में विदेश यात्रा करने, लंदन के बाज़ारों में शॉपिंग करके सामान बटोरने, शॉपिंग के लिए रोजाना भत्ते, मुफ्त का खान-पान और शराब में अधिक दिलचस्पी है।
4. 'काला सागर'कहानी के उद्देश्य इसप्रकार है-1. प्रांतवाद और आतंकवाद की भयावह परिणामों से समाज को अवगत कराना। 2. मानवी जीवन में पनप रही अवसरवादिता, असंवेदनशीलता और स्वार्थीवृत्ति को उजागर करना। 3. पारिवारिक रिश्तों में आए बनावटीपन और स्वार्थवृत्ति को उजागर करना। 4. विमल महाजन के द्वारा संवेदनशीलता, परदु:खकातरता, कर्तव्यनिष्ठता, सहयोग वृत्ति आदि जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा करना।

8. **स्वाध्याय**

8.1 **दीर्घोत्तरी प्रश्न**

1. 'कला सागर' कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'काला सागर' कहानी 'मानवी रिश्तों में आए बनावटीपन और लालचीपन को स्पष्ट करने वाली कहानी है' इसे स्पष्ट कीजिए।
3. 'कला सागर' कहानी के माध्यम से विमल महाजन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

8.2 **लघुत्तरी/टिप्पणियाँ प्रश्नः**

1. 'काला सागर' कहानी में अभिव्यक्त समस्याएं
2. 'काल सागर' कहानी की नैंसी
3. 'काला सागर' कहानी का पात्र रमेशकुमार
4. 'काला सागर' कहानी की पात्र शितल देशमुख
5. 'काला सागर' कहानी का पात्र अरूण
6. 'काला सागर' कहानी की पात्र मिसेज वाडेकर
7. 'काला सागर' कहानी का उद्देश्य

9. **क्षेत्रीय कार्य**

1. विमान क्षेत्र से जुड़े विभिन्न रोजगार और उनके कर्तव्यों की जानकारी लीजिए।
2. विमान हादसे के शिकार हुए किसी मृतक के परिवार जनों से बातचीत करके उनके अनुभवों को कक्षा में साक्षा करें।
3. हिंदी के अन्य प्रवासी साहित्यकारों और उनके साहित्य की सूची बनाओं।

10. **अतिरिक्त अध्ययन के लिए**

1. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - संपा. प्रो. प्रदीप श्रीधर
2. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - तेजेंद्र शर्मा

***

4.3 टूटते तटबंध

– भगवानदास मोरवाल

अनुक्रम

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. विषय विवेचन
    3.1 भगवानदास मोरवाल का जीवन परिचय एवं कृतित्व
    3.2 'टूटते तटबंध' कहानी का परिचय
    3.3 'टूटते तटबंध' कहानी का कथानक
    3.4 'टूटते तटबंध' कहानी के प्रमुख पात्र
        2.3.5 'टूटते तटबंध' कहानी में चित्रित समस्याएँ
        2.3.6 'टूटते तटबंध' कहानी का उद्देश्य
4. स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न
5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ
6. स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर
7. सारांश
8. स्वाध्याय
9. क्षेत्रीय कार्य
10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. उद्देश्य :

विवेच्य कहानी को पढने के बाद आप–

1) कहानीकार भगवानदास मोरवाल के जीवन एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2) 'टूटते तटबंध' कथा में अभिव्यक्त माँ और बेटे के प्रेम बंध को समझेंगे।
3) 'टूटते तटबंध' कहानी में माता-पिता के प्रति बच्चों के कर्तव्यों को जानेंगे
4) 'टूटते तटबंध' कहानी से बेटों की संवेदनशीलता एवं कर्तव्यबोध को समझेंगे।
5) 'टूटते तटबंध' कहानी के उद्देश्य को जान पाएँगे।

2. प्रस्तावना

हिंदी कहानी की परंपरा में ग्रामीण एवं आँचलिक परिवेश पर लिखी कहानियों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। गाँवों के लोकजीवन, लोकसंस्कृति एवं वहाँ के जीवन की विसंगतियों को हिंदी के कई कहानीकारों ने उजागर किया है। प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद मिश्र, निराला, जयशंकर प्रसाद आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। वर्तमान समय में भगवानदास मोरवाल जी को ग्रामांचलिक कहानीकार के रूप में बहुत प्रसिद्धि मिली है। उन्हें आधुनिक ग्रामीण जीवन के कुशल चितेरे के रूप में पहचाना जाता है। ग्राम्य-जीवन और लोक संस्कृति की यथार्थ अभिव्यक्ति उनकी कहानियों की विशेषता रही है। उन्होंने अब तक 10 उपन्यास, 11 कहानी संग्रह, 1 कविता संग्रह, 3 बाल साहित्य ग्रंथ की रचना की है। 'टूटते तटबंध' यह कहानी मोरवाल जी के 'सूर्यास्त से पहले' कहानी संग्रह में संग्रहीत है, जो लोक प्रकाशन - दिल्ली से 1990 ई. में प्रकाशित हुआ था। इस कहानी में उन्होंने धार्मिक कर्मकांड पर करारा व्यंग्य किया है।

3. विषय विवेचन

3.1 भगवानदास मोरवाल का जीवन परिचय एवं कृतित्व

※ जीवन परिचय –

भगवानदास मोरवाल जी का जन्म 23 फरवरी, 1960 ई. में हरियाणा के कालापानी में स्थित नगीना इस कस्बाई गाँव में हुआ। इनका परिवार बहुत ही गरीब और पिछड़ा था। उनके पिता का नाम श्री. मुंगतराम और माता का नाम कलावती देवी है। उनकी माताजी धार्मिक वृत्ति की एक संस्कारवान महिला थी जबकि पिताजी मस्तमौला फक्कड़ स्वभाव के व्यक्ति थे। इनके तीन भाई थे। बड़े भाई का नाम मनोहरलाल था जबकि छोटे भाई का नाम सुभाषचंद्र है। गरीबी और परिवार में अशिक्षा का माहौल होने के कारण भगवानदास जी को पढाई के लिए बहुत ही संघर्ष करना पड़ा। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कस्बा नगीना के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय-नगीना में हुई। उसके बाद उन्होंने नूँह के यासीन मेव डिग्री कॉलेज से बी.ए किया और उसके बाद राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी और पत्रकारिता की पढाई पूरी की। इनका विवाह सुनीता देवी से हुआ जो धार्मिक विचारों वाली गृहिणी है। इनके दो संतानें हैं, पुत्री डॉ. नैया मोरवाल ने हिंदी में पीएच्.डी. की है। पुत्र का नाम पुष्प मोरवाल जो दिल्ली में रहते हैं। भगवान दास मोरवाल ने दिल्ली के स्टील फर्नीचर बनाने के कारखाने से अपनी नौकरी की शुरुआत की। साथ ही वे साहित्य लेखन भी करते थे। दिल्ली आने के बाद वे कई पत्र-पत्रिकाओं में संपादन विभाग में कार्यरत रहे। अगस्त-1987 को उनकी भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की मासिक पत्रिका में प्रस्तुति सहायक पद पर नियुक्ति हुई। तब से वे यहाँ पर उप निदेशक के पद पर कार्यरत है।

※ कृतित्व –

बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखक भगवानदास मोरवाल जी ने पत्रकारिता से अपने लेखन की शुरुआत की थी। केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड में सहायक निदेशक बनने के बाद उनके संघर्षशील जीवन में स्थिरता आई

और वे लेखन कार्य में पूरी तल्लीनता के साथ जुड़ गए। उन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता, बाल साहित्य आदि विधाओं में विपुल साहित्य लिखा है। उसका संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है–

अ) **उपन्यास** – 1. काला पहाड़ (1999 ई.) 2. 'बाबल तेरा देस में' (2004 ई.) 3. 'रेत' (2008 ई.) 4. 'हलाला' (2016 ई.), 5. 'नरक मसीहा' (2015 ई.) 6. 'सुर बंजारन' (2017), 7. वंचना (2019 ई.), 9. शकुंतिका (2020 ई.), 10. 'खानजादा (2021 ई.), 11.'मोक्षवन' (2023 ई.), 12. 'काँस' (2023 ई.) आदि।

आ) **काव्य–संग्रह** – 1. 'दोहपरी चुप है' (1990 ई.) ।

इ) **कहानी–संग्रह** – 1. 'सिला हुआ आदमी' (1986 ई.) 2. 'सूर्यास्त से पहले' (1990 ई.), 3.'अस्सी मॉडल उर्फ सूबेदार' (1997 ई.), 4. 'सीढियाँ, माँ और उसका देवता' (2008 ई.), 5. 'लक्ष्मण रेखा' (2010 ई.), 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' (2004 ई.) आदि।

ई) **बाल साहित्य** – 'कलयुगी पंचायत' (1997 ई.)

※ **सम्मान एवं पुरस्कार –**

उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल जी को उनकी साहित्य साधना के लिए अनेक चर्चित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वह इसप्रकार है–

'श्रवण सहाय अवार्ड–2012 ई.', 'जनकवि मेहरसिंह सम्मान–2010', 'शब्द साधक ज्युरी सम्मान–2009 ई.', 'कथाक्रम सम्मान–2006 ई.', 'साहित्यकार सम्मान–2004 ई., 'साहित्यक कृति सम्मान–1994 ई. और 1999 ई.', 'राजाजी सम्मान– 1995 ई.', 'डॉ. अम्बेड़कर सम्मान–1985 ई., 'अंतरराष्ट्रीय इंदू शर्मा कथा सम्मान–2009', 'प्रभादत्त मेमोरियल अवार्ड–1985 ई.' और 'शोभना अवार्ड– 1984 ई.'।

3.2 'टूटते तटबंध' कहानी का परिचय

ग्रामीण कथाकार भगवानदास मोरवाल लिखित 'टूटते तटबंध' यह कहानी उनके 'सूर्यास्त से पहले' इस कहानी–संग्रह में संकलित है। इस कहानी संग्रह का प्रकाशन सन 1990 में हुआ था। विवेच्य कहानी में लेखक ने एक देहाती माँ की मरने से पूर्व तीर्थ यात्रा जाने की इच्छा, अर्थाभाव के कारण माँ तीरथ करने में असमर्थ बेटे की मजबूरी और भारतीय कर्मकांड का मार्मिक वर्णन प्रस्तुत कहानी में आया है। इसका पूरा कथानक इसप्रकार है–

3.3 'टूटते तटबंध' कहानी का कथानक

कहानी की शुरुआत किसी महानगर में नौकरी कर रहे जयनंदन के एक झोपड़ी नुमा घर के वर्णन से होता है। जयनंदन अपने गाँव से दूर एक महानगर में महीना दो सौ रुपए किराया देकर अपनी पत्नी शांता

और बेटी शीलू के साथ रहता है। उसे हर महीने गाँव में रह रहे माता-पिता को भी रुपया भेजना पड़ता है। उसे एक बहन है जिसका नाम रजनी है। उसका उसी गाँव में ब्याह हुआ है। जयनंदन जैसे-तैसे महानगर में अपनी गृहस्थी चलाकर जो बन उतने रुपए गाँव भी भेजता है। अगले महीने बेटी शीलू का जन्म दिन है। महानगर में जन्मदिन मनाने के चोचलों से वह भी छुटता नहीं और उसका जुगाड़ करने की चिंता में है।

जयनंदन की अम्माँ की मरने से पूर्व सभी तीर्थ जाने की इच्छा है। जयनंदन हर महीने पूरजोर कोशिश करता है कि माँ को तीर्थ कराकर उस मातृ ऋण को पूरा करे। लेकिन जैसे ही तनखा होती है घर के खर्चे से उसकी यह कोशिश हर बार नाकाम होती। जयनंदन को अब लग रहा था कि माँ के इस बोझ से वह शायद ही हल्का कर पाएगा। अपनी बहन रजनी या पिता जी जिसे वह काका कहता था, उनका पत्र आने पर वह बचपन की यादों में खो जाता था। बचपन में वह और रजनी स्कूल के पहले दिन काका ने लाई पट्टी-बस्ता लेकर स्कूल जाते हैं और पहले ही दिन दोनों का पट्टी-बस्ता चोरी होता है। दोनों को लगा था कि माँ-काका उन्हें पीटेंगे लेकिन उल्टे वे हँसने लगते हैं और दोनों को राहत मिलती है।

जयनंदन का जन्म कितनी मन्नतों के बाद हुआ था। इसके पूर्व अम्मा की तीन-तीन संतानों की मृत्यु हुई थीं। इसकारण काका-अम्मा की ढेर सारी आशाओं का बोझ जयनंदन पर था। केवल माता-पिता का ही नहीं तो रजनी की जिम्मेदारी भी उसपर थीं। एक दिन माँ ने उसे कहा भी था, ''नंदू बेटा, अपनी नौकरी लग जाने पर तू मुझे चारों धाम के दरसन तो कराके लाएगा न? हरिदुआर, कासी, गलता, गिर्राज सब जगह के दरसन करा लइयो। बस, आँख बंद होने से पहले तेरी अम्माँ की यह आस और पूरी हो जाए, फिर तो चाहे यमदूत मेरे कू रास्ते में से उठा ले जाए।'' जयनंदन माँ की इस मुराद को नौकरी लग जाने के बाद जरूरी पूरा करने का वचन देता है तब माँ के कलेजे को भी ठंडक महसूस होती थी। लेकिन माँ की इच्छा का बयान और नंदू का वादा यह क्रम निरंतर चलता रहता। जयनंदन रूपयों का जुगाड़ करने की चिंता में रहता कि वह माँ की इच्छा आखिर कब पूरा करेगा?

फिर एक बार बहन रजनी का पत्र आता है। उसमें माँ की तबीयत ठिक न होने की बात कही गई थी। साथ ही सूखा पड़ने के कारण चारा-पानी की किल्लत हुई है। घर की पिछली दीवार ढह गई है। जीजा जी का भी काम-धंधा मंदा है। अगर संभव हो तो..जयनंदन इसके आगे पत्र नहीं पढ़ता क्योंकि उसे मालुम था कि इसके आगे वहीं कुछ लिखा होगा जो पिछले डेढ़ वर्ष से निरंतर लिखा जा रहा है। अर्थात् रूपए भेजो। पत्र पढ़ते समय उसके आँखों के सामने बूढ़े हुए अम्माँ और काका का चेहरा साकार हो जाता है। उन दोनों की आवाजें जैसे खंडहरों में गूँज रही हो। पिछले दफा जब जयनंदन गाँव गया था तो उसकी माँ ने उसके आस-पड़ोस की रतन की माँ गिर्राज, सिब्बू के दादा-दादी हरिद्वार और सुभान खाँ के पिता हजयात्रा करके आने की बात बताई थी। उनके पड़ोस में रहने वाली अतरी ने जयनंदन के सामने ही अम्मा-काका को मरने से पूर्व अपने देवी-देवताओं के दर्शन करके आने की सलाह दी थी। उसके बेटे सिबब् ने पिता को हजयात्रा करने की बात कही थी। माँ-अतरी के बीच इस संवाद को सुनकर जयनंदन मानो आत्मग्लानि से भर गया था। चार दिन बाद वह एक प्रकार की कड़वाहट से शहर के लिए निकलता है।

गाँव से लौटने के बाद कई दिनों तक जयनंदन का मन ऑफिस में नहीं लगा। अम्माँ की बातें और उसकी आखिरी इच्छा उसका पीछा नहीं छोड़ रही थी। अभी एक महीना भी नहीं बीता कि एक पत्र आ जाता है। जयनंदन को अब पत्र पढने में भी डर लगता था। शांता भी अब इन पत्रों से परेशान होने लगी थी। वह कहती है–''गाँव में रहकर भी उनसे अपना अकेला पेट नहीं भरा जाता, जब देखो बस एक ही रटपता नहीं कैसे–कैसे यहाँ अपने दिन काट रहे हैं और एक वे हैं कि''। जयनंदन कहता है कि ''जीने के लिए सिर्फ रोटी का होना जरूरी नहीं है।'' अर्थात् माता–पिता की अन्य भी इच्छा होती है। तब शांता झुँझलाहट में कहती है, ''तो क्या चारों धाम के दरसन उनका पेट भर देंगे!'' जयनंदन पत्नी के तर्क की सच्चाई और अपनी विवशता के एहसास से संवाद में धाराशायी होकर चूप हो जाता है। शांता पत्र को जयनंदन के हाथ में रखकर रसोई में चली जाती है।

जयनंदन का मन पिछले कई दिनों से बेचैन था। शांता ने कारण पूछा तो वह बात को टाल देता था। माँ और काका का चेहरा आँखों के सामने आकर उसे हिला देता था। ऑफिस में काम निपटाकर आँखें मँदूकर कुर्सी पर बैठा था कि इतने में चपरासी हाथ में कुछ चिट्टियाँ लेकर आता है। पत्रों को देखकर जयनंदन घबरा जाता है। उसमें से एक पत्र निकालकर चपरासी जयनंदन के हाथ में थमाकर चला जाता है। पत्र में लिखा था, ''अम्माँ सख्त बीमार है। पत्र देखते ही रोटी वहाँ खाओ तो पानी यहाँ आके पीना।'' जयनंदन ऑफिस से छुट्टी लेकर सीधा घर पहुँचता है। तो शांता गुमसुम बैठी थी। शांता ने एक टेलीग्राम जयनंदन को दिया जिसमें लिखा था–मदर एक्सपायर्ड। वह फूट–फूटकर रोने लगता है। कई पुरानी यादें उसकी स्मृति में आने लगती है। वे तत्काल गाँव के लिए निकलते हैं। यात्रा में अपराध भाव जाग्रत होने से वे गुमसुम बैठे थे। अचानक जयनंदन अपनी चुप्पी तोड़ता है और शांत से कहता है कि, 'हम अम्माँ का अंतिम क्रिया कर्म पूरे सम्मान के साथ करेंगे।' अब इतना भी नहीं करेंगे तो मोहल्ले वाले थू–थू करने का डर जयनंदन को सताने लगता है। जयनंदन को यहीं मौका लगा जिससे वे दोनों गाँव के नज़रों में सम्मान पाएंगे। जयनंदन शांता के गहनें बेचकर और सूद पर दो–ढ़ाई हज़ार का कर्ज लेकर अम्मा का अंतिम कार्य पूरे सम्मान के साथ करता है।

पूरे सम्मान के साथ किए अंतिम कार्य को देख गाँववाले अम्मा–काका की तकदीर की प्रशंसा करते हैं। देर रात जब शांता सब काम निपटाकर सोने जाती है तब बदामी चाची बड़ी बुआ से कह रही थी, ''नंदू की बुआ, भगवान ऐसी औलाद सबको दे, अरी देखना, नंदू की माँ सीधी सुरग जाएगी, बेटा गंगामाई में उसके फूज जो बहाकर आया है।'' इसे सुनते ही शांता की थकान एकदम गायब हो जाती है। अंतिम क्रिया में शामिल रिश्तेदार, गाँव के लोगों को मानो अम्मा के जाने का कोई गम ही नहीं रहा था। केवल जयनंदन गमगीन था और बाकी के लोग उसकी प्रशंसा करने में लगे थे। इसतरह यहाँ कहानी का समापन हो जाता है।

3.4 'टूटते तटबंध' कहानी के प्रमुख पात्र

विवेच्य कहानी माँ-बेटे के प्रेम और कर्तव्य बोध के केंद्र में रची-बसी है। कहानी का प्रमुख पात्र जयनंदन है। तो शांता, अम्माँ, काका, रजनी सहायक पात्र के रूप में आते हैं। कहानी के चरित्रों का विवेचन इसप्रकार है-

प्रमुख पात्र

*** जयनंदन**

विवेच्य कहानी के नायक के रूप में जयनंदन यह पात्र सामने आता है। जयनंदन जिसे उसकी माँ नंदू कहकर पुकारती है। तीन-तीन संतानों के मरने के बाद बड़ी मन्नतों के बाद उसका जन्म हुआ था। इसकारण पूरे परिवार की आशाओं और जिम्मेदारी का बोझ उसके कंधों पर था। उसकी पत्नी का नाम शांता था। उसके शीलू नाम की एक बेटी भी थी। वह अपने परिवार की जिम्मेदारी पूरी करने के लिए किसी महानगर में एक झोपड़ीनुमा घर में महीना दो सौ रुपए किराया देकर रहता है। वह किसी कार्यालय में क्लर्क का काम करता है। महानगर में अपनी गृहस्थी का खर्चा उठाकर जो बन सके अपने गाँव माता-पिता को भेजता है। इसके लिए उसे बहुत मेहनत करनी पड़ती है। मरने से पूर्व तीर्थ यात्रा करने की उसके माँ की इच्छा है। लेकिन जयनंदन के पास उतने रुपए नहीं है जिससे वह अपनी माँ की यह इच्छा पूरी करके उऋण हो जाए। गाँव जाने के बाद माँ की यह इच्छा उसे विचलित कर देती थी और जब वह शहर आता तो इसी विचार से बेचैन रहता था। उसने अपनी बहन रजनी की भी शादी की थी और उसकी मुसीबतों में वह हमेशा उसकी मदद करता था। अर्थाभाव के कारण उसे अपनी बेटी शीलू का जन्मदिन नजदीक आने का भी डर लगता है। एक दिन जब माँ की मौत की खबर मिलती है तो वह खूब रोता है। माँ की तीर्थ कराने की अंतिम इच्छा पूरी न कर पाने से खुद को अपराधी मानता है। बाद में माँ का अंतिम क्रिया कर्म धूमधाम से संपन्न करके वह इस अपराध बोध से बाहर निकलने की कोशिश करता है। इसके लिए वह अपनी पत्नी शांता के गहने बेचता है और दो-ढाई हजार रुपए का खर्चा निकालता है। अंतिम क्रिया कर्म धूमधाम से करने से सभी गाँव वाले उसकी प्रशंसा करते हैं और वह सब के नज़रों में सम्मान पाता है। लेकिन माँ की अंतिम इच्छा पूरी न करने का गम उसे सताते रहता है। इसतरह विवेच्य कहानी में जयनंदन के चरित्र में एक कर्तव्यनिष्ठ बेटा, मेहनती पति, सहृदय पिता, सहृदय भाई, माँ की अंतिम इच्छा पूरा करने के लिए प्रामाणिक प्रयास करने वाला बेटा आदि विशेषताएं दिखाई देती है।

सहायक पात्र

*** शांता**

विवेच्य कहानी में शांता कथा नायक जयनंदन की पत्नी है। जिसे शीलू नाम की एक बेटी है। वह अपने पति के साथ एक महानगर में झोपड़ीनुमा किराए के घर में रहती है। वह पति परायण महिला है। पति के कम तनख्वाह में भी वह घर गृहस्थी चलाती है। वह थोड़ी तर्कनिष्ठ महिला है। वह भावनाशील पति को हरदम समझाने का प्रयास करती है कि माँ की तीर्थयात्रा जाने से क्या होगा? पति को हमेशा माँ की इच्छा

पूरी न कर पाने के अपराधबोध परेशान देखकर उसे ससुराल के सदस्यों पर गुस्सा भी आता है। महानगर में रहना मुश्किल होने के बावजूद भी गाँव को रूपए भेजने को परेशानी मानती है। लेकिन सास की बिना तीर्थ यात्रा करे मौत होने से वह भी अपराधबोध से ग्रस्त हो जाती है। अंत में पति जयनंदन द्वारा धूमधाम से अम्माँ का क्रियाकर्म करने की बात भी उसे खलती है। लेकिन वह पति की खुशी के लिए सहर्ष अपने गहनें बेचने की अनुमति देती है। अंत में बुआ और चाची द्वारा पति की प्रशंसा सुनकर वह राहत की साँस लेती है। इसप्रकार शांता के चरित्र में एक पति परायण पत्नी, तर्कशील विचार करने वाली बहू, एक सहृदय माँ की विशेषता देखने मिलती है।

✲ अम्माँ

विवेच्य कहानी में अम्माँ कथानायक जयनंदन की माताजी है। उन्हें रजनी नाम की एक बेटी भी है। अपनी पहली तीन संतानों की मौत के बाद भगवान से मन्नतें माँगने के बाद जयनंदन पैदा हुआ था। इसकारण अम्माँ की पूरी आशाएं जयनंदन पर टिकी थी। वह बचपन से जयनंदन और रजनी को बड़ा लाड़-प्यार करती थी। बहुत ही कष्ट सहकर उन्होंने दोनों की परवरीश की थी। उनकी मरने से पहले सभी तीर्थों की यात्रा करने की इच्छा थीं। इसलिए वह अपने बेटे नंदू को कहती है कि उसे नौकरी लग जाने के बाद वह माँ को तीरथ करके लाए। लेकिन जयनंदन अर्थाभाव के कारण उनकी यह अंतिम इच्छा पूरी नहीं कर पाता। अंत में बीमारी के चलते उनका देहावसान हो जाता है और उनकी अंतिम इच्छा अधूरी ही रह जाती है। उनके जीवन की यह विडंबना है कि जीते जी उनकी तीर्थयात्रा की इच्छा पूरी नहीं होती लेकिन मरने के बाद जयनंदन कर्जा निकालकर उनका अंतिम क्रियाकर्म धूमधाम से करता है।

✲ कक्का और रजनी

कक्का और रजनी कथानायक जयनंदन के क्रमश: पिता और बहन है। एक पत्र में दोनों का जिक्र आया है। कक्का ने बड़ी मेहनत से जयनंदन और रजनी की परवरीश की थी। वे थोड़े गुस्सैल स्वभाव के व्यक्ति थे लेकिन उन्हें जयनंदन से बहुत उम्मीदें थी। बुढ़ापे में वे जयनंदन ने भेजे रूपयों पर ही अपना गुजारा करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। उनकी और पत्नी की मरने से पूर्व तीर्थ यात्रा करने की इच्छा थी लेकिन वह पूरी नहीं हो पाती।

रजनी जयनंदन की छोटी बहन थी। दोनों बचपन में साथ-साथ स्कल जाते थे। अपना भाई आगे पढे इसलिए वह पाँचवी तक ही पढी। बाद में वह गाँव में ही किसी के साथ शादी करती है। वह समय-समय पर अपने माता-पिता की खबर पत्र के द्वारा जयनंदन को भेजती रहती है। एक बार बहुत सूखा पड़ने के कारण वह अपने भाई जयनंदन से रूपए की माँग करती है। माँ की अंतिम इच्छा पूरी न होने के कारण वह बहुत दु:खी हो जाती है।

2.3.5 'टूटते तटबंध' कहानी में चित्रित समस्याएँ

आधुनिक ग्रामीण कथाकार भगवानदास मोरवाल की कहानियाँ गाँव में पनप रही विसंगतियों को सूक्ष्मता के साथ उजागर करती है। विवेच्य कहानी में उन्होंने विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। इसमें सबसे पहले महानगरीय जीवन में ग्रामीणों के असहाय जीवनयापन करने की समस्या देखने मिलती है। जयनंदन किसी महानगर में एक झोपड़ी नुमा घर में जो बदबू से भरा है वहाँ हरने को मजबूर हो जाता है। क्योंकि महानगरों में अच्छे घरों का किराया ज्यादा होता है। जयनंदन प्रतिमाह 200 रुपए किराए पर रहता है। दूसरी समस्या है, अर्थाभाव और घर के बेटों पर परिवार के जिम्मेदारी का अतिरिक्त बोझ। जयनंदन पर माता-पिता, बहन, पत्नी और बेटी की जिम्मेदारी का बोझ है। उसमें भी माँ की तीर्थ यात्रा करने की इच्छा को वह अर्थाभाव के कारण पूरा नहीं कर पात और खुद को अपराधी मानने लगता है। धार्मिक कर्मकांड के लिए कर्जा निकालना, यह कहानी की तिसरी समस्या है। जयनंदन अपनी माँ की तीर्थ कराने अंतिम इच्छा पूरी न पाने कारण उसका अंतिम क्रिया कर्म धूमधाम से संपन्न करके उऋण होना चाहता है। इसलिए वह पत्नी के गहने बेचकर और साहूकार से सूद पर कर्ज लेकर अंतिम क्रिया कर्म संपन्न कराता है। इस प्रकार लेखक ने ग्रामीण लोगों के अर्थाभाव, महानगरों में उनकी सर्कसनुमा जिंदगी, धार्मिक कर्मकांड और देहाती लोगों की जीवन की विडंबना आदि समस्या को उजागर किया है।

2.3.6 'टूटते तटबंध' कहानी का उद्देश्य

भगवानदास मोरवाल की कहानियाँ सोद्देश्य होती है। 'टूटते तटबंध' उनकी धार्मिक कर्मकांड पर प्रहार करने वाली कहानी है। इस कहानी के उद्देश्य इसप्रकार है- 1. ग्रामीण जीवन के अर्थाभाव और गरीब जीवन की समस्याओं को दर्शाना। 2. महानगरीय जीवन की भयावहता और महानगर में बुनियादी जरूरतों के लिए ग्रामीणों की जद्दोजहद को दर्शाना। 3. परिवार में एक लौते बेटे पर पारिवारिक उम्मीदों के तनाव को दर्शाना। 4. ग्रामीण जीवन में धार्मिक कर्मकांडों के प्रभाव को दर्शाना। 5. धार्मिक कर्मकांडों पर व्यंग्यात्मक प्रहार करना।

4. स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

4.1 सही विकल्प चुनिए।

1. 'टूटते तटबंध' यह कहानी किसने लिखी है?

   अ. मोहन राकेश ब. तेजेंद्र शर्मा क. भगवानदास मोरवाल ड. कमलेश्वर

2. 'टूटते तटबंध' कहानी में किस समस्या पर लेखक ने प्रहार किया है?

   अ. संस्कृति ब. धार्मिक कर्मकांड क. विलासी जीवन ड. आतंकवाद

3. 'टूटते तटबंध' यह कहानी कौनसे कहानी संग्रह में संकलित है?

   अ. काला सागर ब. अनामिका क. जिज्ञासा ड. सूर्यास्त से पहले

4. भगवानदास मोरवाल का जन्म कब और कहाँ हुआ है?

अ. 1960 ई. कालापानी में   ब. 1961 ई. मुंबई में

क. 1962 ई. जगराँव में   ड. 1963 ई. बस्तर में

5. भगवानदास मोरवाल जी हिंदी साहित्य में किस नाम से पहचाने जाते हैं?

अ. प्रवासी साहित्यकार   ब. आधुनिक ग्रामीण कथाकार

क. हरियाणवी साहित्यकार   ड. देशी साहित्यकार

4. **सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

1. 'टूटते तटबंध' कहानी में .... प्रमुख पात्र है।

अ. विमल महाजन   ब. रोशन दुबे   क.जयनंदन   ड. राम शर्मा

2. 'टूटते तटबंध' कहानी में कथानायक के पत्नी का नाम .... है।

अ. स्नेहा   ब. शांता   क. रंजना   ड. उषा

3. 'टूटते तटबंध' कहानी में अम्माँ की जीवन की अंतिम इच्छा .... है।

अ. मुंबई जाना   ब. तीरथ करना   क. शॉपिंग करना   ड. विदेश घूमना

4. 'टूटते तटबंध' कहानी में ....की अंतिम इच्छा पूरी नहीं होती है।

अ. अम्माँ   ब. रजनी   क. शांता   ड. शीलू

5. जयनंदन महानगर में प्रतिमाह .... रूपए किराए के घर में रहता था ।

अ. तीन सौ   ब. दो सौ   क. चार सौ   ड. पाँच सौ

6. जयनंदन और शांता की बेटी का नामथा।

अ. अरूणा   ब. रजनी   क. शीलू   ड. दीपा

7. .... पिता को मक्का मदीना की यात्रा करवाता है।

अ. सुभान खाँ   ब. रमजान   क. जावेद   ड. ननकू

8. .... अपने दादा-दादी को हरिद्वार की यात्रा करवा लाता है।

अ. जयनंदन   ब. सुब्बी   क. कक्का   ड. अतरी

9. जयनंदन अम्माँ के अंतिम क्रियाकर्म के लिए .... रुपए का कर्जा निकालता है।

अ. दो-ढ़ाई हजार   ब. तीन हजार   क. पाँच हजार   ड. दस हजार

10. जयनंदन की बहन रजनी .... कक्षा तक पढ़ी है।

अ. छठी   ब. पाँचवी   क. सातवीं   ड. आठवीं

11. जयनंदन गाँव जाने के बाद पड़ोस की चाची अम्माँ को तीरथ हो आने की सलाह देती है।

अ. अतरी   ब. मुमताज   क. फातिमा   ड. रेश्मा

5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

- ❊ घुसड़-पुसड़- जबरन घुस जाना
- ❊ नंगी क्या तो ओढ़े और क्या बिछाए- अभावग्रस्त को दर्शाने वाली कहावत- निर्धन के पास खोने के लिए कुछ भी नहीं होता।
- ❊ पट्टी-बस्ता - स्कूल का बस्ता
- ❊ गिर्राज, कासी, हरिदुआर - हिंदुओं के तीर्थक्षेत्र गिरिराज, काशी और हिरद्वार
- ❊ परकम्मा - परिक्रमा
- ❊ हाजी होना - मक्का मदीना जाकर आना, हाज यात्रा करके आना
- ❊ अपराध बोध - अपराधी होने का भाव
- ❊ बौहरे - गाँव का सेठ या साहूकार
- ❊ अनुनय-विनय करना- बिनती करना
- ❊ सुरग जाएगी - स्वर्ग जाएगी

6. स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.1 - 1. भगवानदास मोरवाल 2. धार्मिक कर्मकांड 3. सूर्यास्त से पहले 4. 1960 ई. कालापानी में 5. आधुनिक ग्रामीण कथाकार

4.2 - 1. जयनंदन 2. शांता 3. तीरथ जाना 4. अम्माँ 5. दो सौ 6. शीलू 7. सुभान खाँ 8. सुब्बी 9. दो-ढाई हजार 10. पाँचवीं 11. अतरी

7. सारांश

1. ग्रामीण कथाकार भगवानदास मोरवाल लिखित 'टूटते तटबंध' यह कहानी उनके 'सूर्यास्त से पहले' इस कहानी-संग्रह में संकलित है। इस कहानी संग्रह का प्रकाशन सन 1990 में हुआ था। विवेच्य कहानी में लेखक ने एक देहाती माँ की मरने से पूर्व तीर्थ यात्रा जाने की इच्छा, अर्थाभाव के कारण माँ तीरथ करने में असमर्थ बेटे की मजबूरी और धार्मिक कर्मकांड का मार्मिक वर्णन प्रस्तुत कहानी में आया है

2. कथानायक जयनंदन पर महानगर में अपनी गृहस्थी और गाँव के बूढे माता-पिता और बहन की जिम्मेदारी का तनाव रहता है। अर्थाभाव के कारण वह अपनी माँ की तीरथ कराने की अंतिम इच्छा को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहता है।

4. अम्माँ की बीमारी के कारण मौत होती है और उसकी अंतिम इच्छा अधूरी ही रह जाती है। जयनंदन अपराध बोध से ग्रस्त होता है और अंतिम कार्य धूमधाम से कराने के लिए कर्जा निकालता है। वह

अंतिम क्रियाकर्म धूमधाम से संपन्न कराके गाँव की नज़रों में सम्मान पाता है और मातृ ऋण से मुक्त होने का प्रयास करता है। इसप्रकार लेखक ने यहाँ धार्मिक कर्मकांड पर गहरा व्यंग्य किया है।

5. 'टूटते तटबंध' कहानी के उद्देश्य इसप्रकार है- 1. ग्रामीण जीवन के अर्थाभाव और गरीब जीवन की समस्याओं को दर्शाना। 2. महानगरीय जीवन की भयावहता और महानगर में बुनियादी जरूरतों के लिए ग्रामीणों की जद्दोजहद को दर्शाना। 3. परिवार में एक लौते बेटे पर पारिवारिक उम्मीदों के तनाव को दर्शाना। 4. ग्रामीण जीवन में धार्मिक कर्मकांडों के प्रभाव को दर्शाना। 5. धार्मिक कर्मकांडों पर व्यंग्यात्मक प्रहार करना।

8. स्वाध्याय

8.1 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'टूटते तटबंध' कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'टूटते तटबंध' कहानी में धार्मिक कर्मकांड पर किस प्रकार व्यंग्य किया गया है?
3. 'टूटते तटबंध' कहानी के माध्यम से जयनंदन का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4. 'टूटते तटबंध' कहानी में जयनंदन अपने मातृ ऋण को कैसे पूरा करके संतुष्टि पाता है?

8.2 लघुत्तरी/टिप्पणियाँ प्रश्नः

1. 'टूटते तटबंध' कहानी में अभिव्यक्त समस्याएं
2. 'टूटते तटबंध' कहानी की अम्माँ
3. 'टूटते तटबंध' कहानी की पात्रा शांता
4. 'टूटते तटबंध' कहानी की रजनी
5. 'टूटते तटबंध' कहानी का उद्देश्य

9. क्षेत्रीय कार्य

1. आधुनिक ग्रामीण जीवन पर लिखी मराठी कहानियों का संकलन करके पढे।
2. भारत में धर्म के नाम पर फैली कर्मकांड एवं अंधविश्वासों पर निबंध तैयार कीजिए।
3. 'टूटते तटबंध' कहानी को आधार बनाकर नाटक बनाए और कक्षा में इसका प्रयोग करें।

10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. भगवानदास मोरवाल का कथा साहित्य - डॉ. वरिंदरजी कौर
2. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - भगवानदास मोरवाल

❑❑❑

इकाई –1
1. ''उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप''
2. ''नीलोत्पल मृणाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

अनुक्रम –

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

    1.3.1 उपन्यास का अर्थ एंव स्वरूप जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व

    1.3.2 नीलोत्पल मृणाल का जीवन परिचय एवं कृतित्व

    1.3.3 नीलोत्पल मृणाल का कृतित्व

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

1. उपन्यास साहित्य विधा से परिचित होंगे।
2. उपन्यास का अर्थ एंव स्वरूप से परिचित होंगे।
3. नीलोत्पल मृणाल का संक्षेप में परिचय प्राप्त करेंगे।
4. युवा साहित्यकार नीलोत्पल मृणाल के व्यक्तित्त्व से परिचित हो जायेंगे।
5. नीलोत्पल मृणाल के कृतित्व से परिचित हो जायेंगे।
6. नीलोत्पल मृणाल के माध्यम से युवाओं के जीवन संघर्ष से परिचित हो जायेंगे।

1.2 प्रस्तावना :

आज उपन्यास साहित्य समस्त विद्याओं में सबसे लोकप्रिय विधा है। इसे मानव जीवन का यथार्थ प्रतिबिंब कहा जा सकता है। इसलिए उपन्यास को मानव जीवन का यथार्थवादी कलात्मक चित्र माना जाता है। उपन्यास मानव जीवन का वह आख्यान है जो उसके जीवन-जगत की मर्मस्पर्शी, संघर्ष भरे और सुख-दुख की घटनाओं को निश्चित तारतम्य के साथ चित्रित करता है। उपन्यासकार का उद्देश्य पाठकों का सिर्फ मनोरंजन करना नहीं होता, बल्कि यह यथार्थ, कल्पना और अपने रचनात्मक कौशल के सहारे सामाजिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है।

किसी साहित्यकार की साहित्यिक कृतियों का अध्ययन करने से पूर्व उसे साहित्यकार के व्यक्तिगत जीवन तथा अनुभवों से परिचित होना आवश्यक है, क्योंकि साहित्यकार अपने समय के परिवेश की स्थितियों को अपनी रचनाओं में अंकित करता है। इसके अलावा साहित्यकार इस कृतियों में अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी अभिव्यक्ति देता है। इसी लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानना सबसे महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से सम्मानित 'डार्क हॉर्स' के लेखक नीलोत्पल मृणाल के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित होना आवश्यक है। साथ ही इस इकाई में उपन्यास का अर्थ, स्वरूप एवं तत्त्व से भी परिचित होंगे। किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने के पूर्व उसके जीवन वृत्तांत एवं व्यक्तित्व से परिचित होना नितांत अनिवार्य होता है, क्योंकि उसके व्यक्तित्त्व के तमाम रंग उसके कृतित्व में झलकते नजर आते हैं। उसका साहित्य उसकी स्वनुभूतियों का निचोड होता है।

1.3 विषय विवरण

1.3.1 उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप

प्रस्तावना :

आधुनिक युग की महत्त्वपूर्ण विधा 'उपन्यास' है। आज उपन्यास मनोरंजन की अपेक्षा मानसिक विश्लेषण और सामाजिक निरीक्षण की मात्रा अधिक है। इस विधा को विदेशी साहित्य से प्रभावित माना जाता है। परंतु भारत में उपन्यास विधा कथा, आख्यायिका के रूप में प्राचीन काल से चली आ रही है। लेकिन आधुनिक युग के जटिलता से भरे मानव मन की अंतरिक अनुभूति, कोमलतम, कल्पना और सूक्ष्म निरीक्षण श्रति से युक्त मानव जीवन की व्याख्या लानेवाली यह विधा अत्याधिक प्रसिद्ध हुई है। इसलिए जहाँ प्रारंभ में उपन्यास की रचना मनोरंजन के लिए की जाती थी, वहीं आज उपन्यास व्यक्ति, समाज और उसकी बौद्धिक तथा नैतिक धारणाओं के विश्लेषण के लिए लिखे जाने लगे है। जीवन के अधिक निकट रहने के कारण आज उपन्यास विधा सबसे चर्चित विधा के रूप में दिखाई देती है।

उपन्यास - स्वरूप :

आधुनिक उपन्यास विधा का रूप संस्कृत लक्षण ग्रंथों में दिखाई देता है। परंतु उनका विस्तृत अर्थ आज जिस अर्थ में लिया जा रहा है। वैसा प्राचीन ग्रंथों में नहीं था। 'नाट्यशास्त्र' में वर्णित प्रतिमुख संधि का एक उपभेद उपन्यास है। 'नाट्यशास्त्र' में उपन्यास की परिभाषा इसप्रकार दी है।

''उपपत्तिकृतोह्यर्थ : उपन्यास : प्रकिर्तीत:।''

अर्थात्, किसी शब्दों को उसके युक्ति युक्त अर्थ में प्रस्तुत करने को ही उपन्यास कहा जाता है। परंतु आज उपन्यास शब्द के अंतर्गत गद्य द्वारा अभिव्यक्त संपूर्ण कथा को स्वीकारा जाता है। इसलिए आज 'उपन्यास' का अर्थ इस रूप में देखा जाता है। उपन्यास 'उप' और 'न्यास' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'उप' का अर्थ समीप और 'न्यास' का अर्थ होता है 'रखना'। इस प्रकार उपन्यास का अर्थ हुआ पास रखना। अर्थात् उपन्यास वह है जिसमें उपन्यासकार मानव जीवन की यथार्थ घटनाओं को लेकर कल्पना का जामा पहनकर एक नये रूप में प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार इसमें मानव जीवन से संबंधित सुखद एवं दु:खद किन्तु मर्मस्पर्शी घटनाओं को निश्चित तारतम्य के साथ चित्रित करता है।

आधुनिक काल में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से सर्वप्रथम बंगला साहित्य में प्राप्त होता है। सन् 1856-57 में ऐतिहासिक उपन्यास के नाम से 1861 में एक अद्भुत उपन्यास के रूप में और 1864 में बंगाल की पत्रिका 'बंगदर्शन' में उपन्यास शब्द का प्रयोग हुआ दिखाई देता है।

अंग्रेजी में उपन्यास को (Novel) कहते है। इसके प्रभाव से गुजरात में उपन्यास को 'नवल कथा' कहा जाता है। दोनों में नया अर्थ निहित है। यह विधा नई रही है। इसलिए शायद इसे नयी कविता नयी कहानी की तरह 'नवल कथा' कहा है। हिंदी में सबसे पहले 1871 में 'मनोहर' उपन्यास में उपन्यास शब्द प्रयुक्त हुआ। परंतु विद्वानों ने इसे उपन्यास नहीं माना है। बल्कि हिंदी का प्रथम उपन्यास 'परिक्षा गुरू' (1882) को स्वीकार किया गया है।

उपन्यास के स्वरूप को समझने के लिए एक-दो परिभाषा देखनी आवश्यक है। उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचंद्र जी परिभाषा में कहते हैं, कि,- ''मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र-मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूलतत्त्व है।'' बाबू गुलाबराय इस सिद्धांत के अनुसार उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार देते है, ''उपन्यास कार्य-कारण-श्रृंखला में बंधा हुआ वह गेय कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।''

डॉ. श्यामसुंदर दास उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार देते हैं, ''उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखने पर उपन्यास का स्वरूप इस प्रकार दिखाई देता है। उपन्यास मानव जीवन की आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों का उसके मन के संघर्ष का, उसके चारों ओर के वातावरण एवं समाज का एक काल्पनिक कथा है। अर्थात् उपन्यास जनसाधारण के धरातल पर लिखा हो। उसकी कथावस्तु काल्पनिक होते हुए भी जीवन के यथार्थ ले ली गई हो। उसके अवांतर कथाओं के मेल रहने पर भी उसकी इसकी कथावस्तु स्पष्ट हो। भाषा सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए। उपन्यासकार उपन्यास में जिन विचारों को व्यक्त करता है, उसकी दो विधियाँ अपनाता है- प्रत्यक्षविधी, अप्रत्यक्षविधी। प्रत्यक्षविधी में

लेखक अवकाश निकालकर स्वयं किसी सिद्धांत का प्रतिपादन करने लगता है और अप्रत्यक्ष विधी में वह पात्रों के माध्यम से बोलता है। प्राय: लेखक अपने प्रधान पात्रों के माध्यम से बोलते है। जिसमें जीवन के सदृश्य व्यक्तित्व-विश्लेषण और इतिहास के सदृश्य घटनाओं का चित्रण होता है। वही दूसरी ओर कविता की कल्पना, भावों की पुष्टता एवं शैली का सौंदर्य और रोचकता हो जिससे उपन्यास को सफलता मिलेगी।

उपन्यास के तत्त्व :

प्रस्तावना : आधुनिक उपन्यास अंग्रेजी साहित्य Novel से प्रभावित है। इसलिए उसकी रूप-रचना पाश्चात्य उपन्यास शिल्प से प्रभावित है। अंत: हिंदी उपन्यास के तत्त्वों का विवेचन पाश्चात्य उपन्यास शास्त्र के आधारपर होना चाहिए। पाश्चात्य साहित्य में उपन्यास के छ: तत्त्व माने गए हैं। वही हिंदी उपन्यास के लिए पात्र है।

1) कथावस्तु, 2) पात्र तथा चरित्र-चित्रण, 3) कथोपकथन संवाद, 4) देशकाल-वातावरण, 5) भाषाशैली, 6) उद्देश्य।

1) कथावस्तु :

'उपन्यास' का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व कथावस्तु होता है। उपन्यास में प्रयुक्त होनेवाले साधनों में कथानक का अत्याधिक महत्त्व रहता है। उपन्यास या कथा का संपूर्ण ढाँचा कथानक के आधार पर ही खडा होता है। क्योंकि जो तत्त्व रीढ की हड्डी के समान सारी घटनाओं को गतीशील बनाता है, उसे कथानक कहते है। उपन्यास की कथावस्तु में कार्य कारण संबंध प्रमुख होता है और आगे की घटनाओं का कोई न कोई उचित कारण दिया जाता है। अर्थात् कथावस्तु उपन्यास में वर्णित घटनाओं का वह संग्रह है जिस पर उपन्यास का ढाँचा खडा होता है। जिसके द्वारा उपन्यासकार के विचार सामुहिक रूप में अभिव्यक्त होते है। उपन्यासकार अपने कथानक का चुनाव एक सामान्य घटना से लेकर राज्यक्रांती तक कर सकता है। अर्थात् इतिहास पुराण या जीवन के किसी भी क्षेत्र से घटना का चुनाव किया जा सकता है। परंतु उपन्यासकार जिस किसी विषय का चुनाव करे उस विषय का उसे संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

उपन्यासकार को संपूर्ण कथानक को सुसंबंधित रूप में प्रस्तुत करना होता है। इसलिए उपन्यास की कथावस्तु इतनी छोटी न हो कि उसमें सौंदर्य उत्पन्न हो न हो पाए और न इतनी अधिक बडी हो कि आगे पढते चले जाए और पीछे का भूलते जाए। कथावस्तु का पूर्ण निर्वाह प्रारंभ से अंततक होना चाहिए। सभी उलझने अंत तक पहुँचते-पहुँचते सुलझती जानी चाहिए। जीवन के किसी भी विषय पर लिखना हो उस का स्वअनुभव लेकर उसे कल्पना का पुट देना होता है। कथावस्तु ऐतिहासिक हो या काल्पनिक किंतु लेखक को न्यूनाधिक रूप में अपनी कल्पना का आश्रय लेकर उसे सरलता एवं प्रभावकरिता प्रदान करनी पडती है। कथावस्तु जीवन से संबंधित किसी भी प्रकार की हो सकती है। चाहे वह राजनीतिक हो या धार्मिक, साहित्यिक हो या सांस्कृतिक, ऐतिहासिक हो या पौराणिक, रोमांटिक हो या जासूसी उनमें अलौकिक या अस्वाभाविक अंश का समावेश नहीं होना चाहिए। बल्कि कथानक में विषयानुरूप मानव जीवन, समाज और स्थिति का वर्णन स्वाभाविक हो।

उत्तम कथावस्तु में संगठन, अनुपात, घटनाओं का सहज विकास, रोचकता, गति, स्वाभाविकता, मौलिकता तथा सत्यता के गुण विद्यमान रहते है। उपन्यास की कथावस्तु में मानव जीवन की परिस्थितियों एवं उनकी समस्याओं का ऐसा सजीव चित्रण होना चाहिए जो बिल्कुल सत्य हो या यथार्थ होते हुए भी रोचक हो। समाज के आदर्श चरित्रों के माध्यम से उपन्यास में प्रकट होते है। जीवन के उत्थान-पतन का मनोवैज्ञानिक चित्र उपन्यास की कथावस्तु में होता है। सभी घटनाओं को एक श्रृंखला में रखना चाहिए। जिससे वे समन्वित रूप में एक प्रतीत हो।

सामान्यत: उपन्यास को कथावस्तु प्रत्यक्ष प्रणाली या आत्मकथा प्रणाली अथवा 'पत्र प्रणाली' के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

2) पात्र तथा चरित्र-चित्रण :

उपन्यासों की सबसे बडी विशेषता पात्रों का व्यक्तित्व या चरित्र-चित्रण होता है। उपन्यास में चित्रित घटनाएँ जिनसे संबंधित होती है या जिनको लेकर उन घटनाओं का घटित होना दिखाया जाता है। वे पात्र कहलाते है। पात्रों के बिना कथानक नहीं चल सकता है। उपन्यास का विषय मानव जीवन से संबंधित होने के कारण पात्रों का चयन समाज के किसी भी वर्ग से किया जा सकता है। विभिन्न प्रकृति और प्रवृत्ति के पात्र उपन्यास में होते हैं। उसका मुख्य उद्देश्य मानव की कमजोरियों के साथ ही उसकी सफलताओं का प्रदर्शन भी है। क्योंकि समाज के कोई भी दो प्राणी एक जैसे नहीं होते, हर एक में कुछ न कुछ भिन्नता होती है। इस संदर्भ में प्रेमचंद कहते है, ''किन्ही भी दो आदमियों की सूरते नहीं मिलती, उसी भाँति आदमियों के चरित्र भी नहीं मिलते। जैसे सब आदमियों के हाथ, पाँव, आँख, कान, नाक, मुँह होते हैं। उसी भाँति सब आदमियों के चरित्रों में बहुत कुछ समानता होते हुए भी कुछ विभिन्नताएँ होती हैं। यही समानता और विभिन्नता दिखाना उपन्यास का मुख्य कर्तव्य होता है।

चरित्र-चित्रण की विभिन्न पद्धतियों, प्रणालियाँ प्रचलित है किन्तु मुख्य रूप में वर्णनात्मक प्रणाली और अभिनयात्मक प्रणाली ये दो पद्धतियाँ प्रचलित है। सामान्यत: चरित्र के चार प्रकार होते है- 1) वर्गप्रधान चरित्र, 2) व्यक्तिप्रधान चरित्र, 3) आदर्श चरित्र, 4) यथार्थ चरित्र।

वर्ग प्रधान चरित्रों में जातीय विशेषताओं को दर्शाया जाता है। व्यक्तिप्रधान चरित्रो में व्यक्तिविशेषभी महत्त्व देते है। आदर्श चरित्र में किसी पात्र विशेष के जीवन में आदर्शवादी दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा की जाती है और यथार्थवादी चरित्रों में पात्र देव, आसूर या मानव किसी भी कोटि के हो सकते है।

चरित्र-चित्रण के लिए मौलिकता, स्वाभाविकता, अनुकूलता, सजीवता, सहृदयता आदि गुणों का होना महत्त्वपूर्ण है।

1) मौलिकता : उपन्यास के कथाओं के विशिष्ट पात्रों के कुछ ऐसे गुण होते है कि उनका व्यक्तित्व प्रभावोत्पदकता निर्माण करके मौलिक बन जाते है। जो उपन्यासकार जितना मौलिक होता है, उसके पात्र भी उतने ही मौलिक और हमारे मन को स्वाभाविकता लानेवाले होते हैं। उपन्यास के पात्र अपने समाज से जुडे

रहे और प्राणियों जैसी विशेषताओं से युक्त हो किन्तु उनमें दूसरों की अपेक्षा रहनेवाला भेद भी स्पष्ट हो सके।

2) स्वाभाविकता : स्वाभाविकता का अभिप्राय यह है कि, पात्रों का चित्रण इस प्रकार होना चाहिए कि, वे इसे इसी जगत के अपने आसपास के प्राणी प्रतीत हो।

3) अनुकूलता : पात्रों का कथानक के अनुकूल होना उपन्यास की श्रेष्ठता के लिए आवश्यक गुण माना जाता है। पात्रों का सृजन कथाविषय और स्थिति के अनुकूल होना चाहिए।

4) सजीवता : अनुकूलता और स्वाभाविकता आदि गुण जब चरित्र-चित्रण में उपस्थित रहते हैं तभी उसमें सजीवता आ जाती है। इसलिए उपन्यास के पात्र निर्जीव और नि:ष्प्रभ प्रतीत होने की अपेक्षा सजीव प्रतीत होने चाहिए।

5) सह्रदयता : उपन्यास के पात्र अधिक से अधिक मानवीय और हमारे सुख-दु:ख आदि के साथ जुडे रहने चाहिए। हमारी सहानुभूति और संवेदना के वे अधिकारी हो तथा वे हमें अपने विश्वास में ले सके ऐसा होना आवश्यक है। जिसमें आदर्श और यथार्थ के संमन्वय से ही किसी उद्देश्य की पूर्ति हो।

3) कथोपकथन :

उपन्यास के पात्र जिस पारंपारिक वार्तालाप द्वारा कथावस्तु को आगे ले जाते हैं और अपने चरित्र को प्रकाशित करते है, उसे कथोपकथन कहते है। इसलिए कथोपकथन को उपन्यास का आवश्यक तत्त्व माना जाता है। उपन्यासकार को यह ध्यान रखना पडता है कि कथोपकथन विषय संगत, सजीव एवं स्वाभाविक हो। जो पात्रों के बौद्धिक और मानसिक स्थिति के अनुकूल होने चाहिए। इसलिए अधिक तत्त्व कथोपकथन की जगह सरल, सुबोध और मनोहर संवाद हो। कथोपकथन में नाटकीयता और स्वाभाविकता होनी चाहिए। कथोपकथन से उपन्यास में नाटकीयता उत्पन्न होती है; अंत: यथासंभव उनमें पात्रों के मनोभावों, संकल्प-विकल्पों, प्रतिक्रियाओं आदि का भव्य चित्र प्रस्तुत करना होता है। इसलिए नाटक की तुलना में उपन्यास के कथोपकथन विस्तृत होते है। उपन्यास में चित्रित पात्र के अनुकूल, स्वाभाविकता, मनोविज्ञान की उपयुक्तता और उपन्यास की रोचकता और आकर्षण को बनानेवाली अभिनयात्मकता और सरलता आवश्यक है।

कथोपकथन के द्वारा तीन विशेषताएं स्पष्ट होती है।

1) कथानक का विकास

2) चरित्र-चित्रण में सहाय्यक

3) लेखक के दृष्टिकोण की झाँकी।

उपर्युक्त बातों की ओर ध्यान देते हुए कथोपकथन को सूक्ष्म, स्वाभाविक, सशक्त और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

4) देश, काल तथा वातावरण :

उपन्यासों में स्वाभाविकता और सजीवता का आभास देने के लिए देश, काल तथा वातावरण की ओर विशेष ध्यान देना महत्त्वपूर्ण होता है।

देशकाल के अंतर्गत किसी भी समाज या राष्ट्र की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितीयाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज का वर्णन आता है। उपन्यास में चित्रित घटना की सजीवता में वृद्धि करने के लिए 'वातावरण' चित्रण उपयुक्त सिद्ध होता है। देश काल तथा वातावरण के चित्रण में भी सूक्ष्मता का ध्यान रखना पडता है। इसको सरस बनाने के लिए इसमें कल्पना का पुट भी देना चाहिए। साथ ही वातावरण का वर्णन वहीं तक उचित होना चाहिए। जहाँ तक की वे कथा-प्रवाह में सहायक हो।

पात्रों के व्यक्तित्व का चित्र उनकी बातचीत से हमारे सामने आता है, किन्तु पात्र जिस परिस्थिति और वातावरण में रहते है और विकास पाते हैं, उस परिस्थिति स्थान और काल का पूरा-पूरा चित्र दिया जाए। जिसमें कथानक की घटनाएँ घटित होती दिखाई गई हो। क्योंकि बिना देशकाल के पात्रों का व्यक्तित्व स्पष्ट नहीं होता। इसलिए कथानक के पात्र भी वास्तविक पात्र की भाँति देश-काल के बंधन में रहनेवाले चित्रित होने चाहिए। जिसकी सहायता घटनाक्रम को समझने में होती है।

5) भाषाशैली :

लेखक की अभिव्यक्ति का साधन शैली है और भाषा इसकी सहायिका है। 'शैली' एक साहित्य का ऐसा तत्त्व है जो साहित्य के सभी अंगों में समान रूप में व्यक्त रहता है। इस बारे में डॉ. श्यामसुंदर दास कहते है, ''भाव, विचार और कल्पना तो इसमें नैसर्गिक अवस्था में वर्तमान रहती है और साथ ही उन्हें व्यक्त करने की स्वाभाविक श्रति भी इसमें रहती है। अब यदि इस शक्ति को बढाकर संस्कृत और उन्नत करके हम उनका उपयोग कर सके तो उन भावों, विचारों और कल्पनाओं के द्वारा हम संसार के ज्ञानभंडार की वृद्धि करके उसका बहुत कुछ उपकार कर सकते है। इसी शक्ति को साहित्य में 'शैली' कहते है।''

उपन्यास की भाषा जन-जीवन के जितने ही समीप हो, वह उतनी ही सरल लगेगी और पाठक आकृष्ट होंगे। लोकोक्तियों एवं मुहावरों के स्वाभाविक प्रयोग से उसमें सजीवता आती है। भाषा शैली को अधिक ग्राह्य बनाने के लिए उपन्यासकार ने हास्य और व्यंग्य का यथोचित प्राविधान करना चाहिए। साथ ही पात्रानुकुल भाषा शैली में उपन्यास से प्रवाह एवं प्रांजलता जैसे गुण स्वत: आ जाते है। जिसके लिए भाषा शैली, प्रसाद और माधुर्य गुण से युक्त होनी चाहिए।

शैली जहाँ एक ओर लेखक के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है, वहाँ इसी ओर पाठक को भी विमुग्ध रखती है।

उपन्यासकार उपन्यास में प्राय: निम्न शैलियों का प्रयोग करते हैं। 1) वर्णनात्मक शैली, 2) आत्मकथात्मक शैली, 3) पात्रात्मक शैली, 4) डायरी शैली.

1) वर्णनात्मक शैली : वर्णनात्मक शैली में लेखक पात्रों एवं घटनाओं का वर्णन करता है। यह शैली सर्वाधिक प्रचलित है। वस्तु वर्णन एवं प्रकृतिवर्णन की सुविधा इस शैली में सर्वाधिक रहती है।

2) आत्मकथात्मक शैली : आत्मकथात्मक शैली में एक पात्र ही स्वत: सारी कहानी आपबीती के रूप में प्रस्तुत करता है।

3) पात्रात्मक शैली : पात्रात्मक शैली में पत्र के माध्यम से कथावस्तु विकसित होती है।

4) डायरी शैली : डायरी शैली में 'डायरी' के माध्यम से कथावस्तु का विकास किया जाता है।

6) उद्‌देश्य :

उपन्यासकार उपन्यास का उद्‌देश्य मनोरंजन के साथ-साथ जीवन की मीमांसा करना होता है। वस्तुत: कलात्मक सौंदर्य को सहभागी बनाकर जीवन दर्शन और आनंद का समान्वयात्मक चित्रण करना उपन्यासकार का लक्ष्य होना चाहिए। मुन्शी प्रेमचंद ने मानव जीवन पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना उपन्यास का लक्ष्य माना है।

उपन्यास चाहे सुखान्त हो या दु:खान्त, दोनों से आनंद की अनुभूति होती है और इसी अनुभूति की सिद्‌धी कर सकने पर लेखक का यान सफल हो जाता है। शाश्वत जीवन मूल्यों और प्रश्नों की व्याख्या करनेवाले कलाकार की ही कृति अमर होती है। उपन्यासकार भी इन्ही की साधना करता है। वह सौंदर्य का तृष्टा है; उसका कार्य उपदेश या प्रचार नहीं होता हैं।

1.3.2 नीलोत्पल मृणाल का जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व

व्यक्तित्व से तात्पर्य है- व्यक्ति विशेष है, जिसमें उसके सोचने, बोलने, लिखने तथा जीवनयापन करने को सम्मिलित करता है। व्यक्तित्व शारीरिक मानसिक प्रवृत्तियों का समुच्चय भी है। व्यक्तित्व के दो पक्ष है- एक बाह्य पक्ष और दूसरा आंतरिक पक्ष। बाह्य पक्ष में हुलिया, वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान, स्वास्थ्य आदि का विवेचन किया जाता है। व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष में स्वभाव, सादगी, सरल, भावुक, सात्विक, विवेकी, संघर्षशील तथा मानसिक क्रियाकलापों का अध्ययन करने वाला आता है।

21 वीं सदी की नई पीढी के सर्वाधिक लोकप्रिय लेखकों में एक है- नीलोत्पल मृणाल। वह लेखक के साथ-साथ एक कवि, सोशल मीडिया, सामाजिक और राजनीतिक रूप से प्रभावित है। नीलोत्पल मृणाल साहित्य अकादमी से पुरस्कृत प्राप्त लेखक है। आज उनकी किताबें बेस्ट सेलर की श्रेणी में आती है। कुछ वर्षों से नीलोत्पल मृणाल अब मंचों पे बतौर कवि सक्रिय हैं और बेहद लोकप्रिय भी। कई मंचों पर बतौर स्पीकर इनकी मौजूदगी रहती है। जिसके वीडियो वह अपने यूट्यूब चैनल के जरिए शेयर करते रहते हैं। जिसमें शैक्षणिक संस्थानों के सेमिनार से लेकर जोश टॉक और टेड टॉक जैसे प्लेटफार्म भी शामिल हैं। यू-ट्यूब और इन्स्टाग्राम पे भी युवाओं से जुड़ने हेतु इनकी सक्रियता है जहां लाख से अधिक लोग जुड़े हुए हैं।

प्रारंभिक जीवन–

नीलोत्पल मृणाल का जन्म सन् 25 दिसंबर 1984 में बिहार के मुंगेर जिला, संग्रामपुर नामक कस्बे में हुआ है। वर्तमान में यह झारखंड के दुमका जिला में, नोनीहाट आता है। वह मूलतः बिहार के निवासी हैं, परंतु झारखंड राज्य के गठन के कारण अब वो झारखंड वासी हो गए हैं। यही कारण है कि उनके व्यक्तित्व में बिहार और झारखंड की झलकियां सर्वत्र दिखाई देती हैं ।

शिक्षा–

नीलोत्पल मृणाल की आरंभिक शिक्षा अपने ही राज्य झारखंड के नोनीहाट में हो गयी है। इसके पश्चात इन्होंने अपना दाखिला सेंट जेवियर्स विद्यालय, रांची से किया है। आगे जाकर वही पर सन 2005 में बी.ए (इतिहास) में किया। जब वो अपने कॉलेज में थे तब उन्होंने कई सारे आंदोलनों में हिस्सा लिया। पढ़ाई पूरी होने के पश्चात सिविल सेवा की परीक्षा की तैयारी करने लगे। उस तैयारी के वजह से यह सन 2008 में दिल्ली में गए और मुखर्जी नगर में रहने लगे। वही पर अगले 8 वर्षों तक निरंतर परीक्षा देते रहे। लेकिन दुर्भाग्यवश एक भी परीक्षा में वह उत्तीर्ण ना हो सके। लेखक ने एक जगह बताया है कि यह किसी अच्छी कंपनी में कार्य करने के जितने साक्षर हो गए थे। लेकिन इनको समाज सेवा करना था जिस वजह से यह सिविल सेवा की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। लेकिन जब यह यूपीएससी परीक्षा में उत्तीर्ण ना हो सके। तबसे उन्होंने लेखन का सहारा लेकर समाज के कई सारे मुद्दों को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास कर रहे है।

विवाह–

नीलोत्पल मृणाल का विवाह सन 2022 में डी.एस.पी अनीता शर्मा प्रभा के साथ झारखंड के नोनीहाट में हुआ। अनीता शर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले की छोटी से इलाके कोतमा में हुआ है। मध्य प्रदेश की दबंग डी.एस.पी अनीता प्रभा शर्मा ने शादी के बाद फेसबुक पेज पर लिखा था– 'पिस्तौल और कलम. मेरे हरदम मेरे हरदम।' दोनों लंबे समय तक रिलेशन में थे। सद्यःस्थिति में दोनों झारखंड के दुमका जिले के नोनीहाट में रहते है।

करिअर (आजीविका) –

लेखक नीलोत्पल मृणाल जब 8 बार यूपीएससी की परीक्षा देने के बावजूद भी उत्तीर्ण ना हो सके। तब इन्होंने लेखन की दुनिया में अपने कदम रख दिए। उन्होंने सन 2015 में पहला उपन्यास लिखा जिसका नाम 'डार्क हॉर्स' है। इसी उपन्यास के लिए युवा साहित्य अकादमी सम्मान पुरस्कृत किया है। वर्तमान में 'डार्क हॉर्स' हिंदी की सर्वाधिक बिक्री वाली पुस्तक है। जिसकी संख्या एक मिलियन यानी दस लाख के करीब है। लेखक ने इसी को करिअर मानकर तबसे लेकर आज तक लगातार लेखन कार्य से जुड़े रहे है। लेखक निलोत्पल मृणाल द्वारा लिखे उपन्यास बहुत पसंद आती है। आज इनके उपन्यासों की संख्या अत्यधिक नहीं है, मात्र 37 वर्ष की कम उम्र में इतनी अधिक जानकारी इकट्ठा करके लिखने वाले लेखकों में विशेष है।

विवाद –

निलोत्पल मृणाल कई सारे विवादों में फंसे हैं। जैसे एक बार लल्लनटॉप वेबसाइट द्वारा बिहारी लोगों का अपमान करते हुए एक तस्वीर को लगाया था। जिस का विरोध उन लोगों ने किया और तस्वीर को हटाने के लिए कहा। साथही इनके ऊपर एक महिला ने आरोप लगाते हुए फेसबुक के ऊपर एक पोस्ट डाला। उसमें कहा है कि इन्होंने मुझे शादी का झांसा देकर मुझे शारीरिक व मानसिक तरीके से प्रताड़ित किया हैं। इसलिए उसने थाने में दुष्कर्म का मामला दर्ज कराया है। यह महिला गोरखपुर की रहने वाली थी जो दिल्ली में यूपीएससी की तैयारी कर रही थी। इसकी आयु लगभग 32 वर्ष बताई जाती थी। इनके जीवन में कई सारे विवाद है। कुल मिलाकर इन्होंने अपने करियर को बनाने के लिए बहुत मेहनत की है। तब जाकर यह वर्तमान समय में इस मुकाम पर पहुंचे हैं।

वेशभूषा –

बिहार के साहित्यकार लेखक नीलोत्पल मृणाल की वेशभूषा सफेद या कलर का शर्ट, कोट, जीन्स और कंधे में हमेशा गमछा रहता है। कंधे पर गमछा रखने के कारण दिल्ली के रेस्तरां में घुसने से रोका, इसके विरोध में डेढ़ लाख लोग उतरे। गमछा के हवाले सोशल मीडिया पर छाया बिहारी पहनावा, कई युवा, लेखक व साहित्यकार नीलोत्पल मृणाल के पक्ष में मिल चुके है। ये सभी लोग रेस्तरां में हुई घटना के विरोध में आवाज उठा रहे हैं। विदेश में काम कर रहे बिहार और यूपी के प्रबुद्ध वर्ग भी इसपर आपत्ति जता रहे हैं। नीलोत्पल ने कहा–''देश में कई लोगों के साथ ऐसा पहले भी हुआ लेकिन किसी ने इसका विरोध नहीं किया। मैंने जब अपनी बात फेसबुक पर लिखी तो कई लोग सामने आए। कही लोगों ने कहा कि मेरे साथ भी ऐसा हुआ है। सवाल यह है कि जो हो रहा था वो मुद्दा क्यों नहीं बन पाया। वेशभूषा को लेकर भेदभाव कितना सही है? मैं यह संदेश देना चाहता हूं कि आपको वेशभूषा, खान–पान व कल्चर के लिए डिमोरलाइज नहीं होना चाहिए।''

पुरस्कार–

इन्होंने कई सारे प्रसिद्ध उपन्यासों को लिखा है। जिसकी वजह से इनको कई पुरस्कार प्राप्त हुए है। इनके पहले ही उपन्यास 'डार्क हॉर्स–एक अनकही दास्तां' के लिए सन् 2016 में साहित्य अकादमी (भारत सरकार) द्वारा युवा पुरस्कार प्राप्त हुआ। साथ ही इनको बिहार का गौरव सम्मान भी दिया गया है। 2023 में झारखंड गौरव सम्मान से सम्मानित किया है। सोशल मीडिया पर भी उनकी बड़ी जबरदस्त फॅन फॉलोइंग है।

1.3.3 नीलोत्पल मृणाल का कृतित्व–

नीलोत्पल मृणाल नई पीढ़ी के सर्वाधिक लोकप्रिय लेखक में से एक है। वे युवा पीढ़ी के लब्ध–प्रतिष्ठ उपन्यासकार हैं। युवा साहित्यकार नीलोत्पल मृणाल आज के समय में निरंतर सृजनरत रहकर हिंदी साहित्य में उपन्यास, ऑडियो बुक, कविता और गीत लिखते हैं। हिंदी और भोजपुरी साहित्य में भी बहुत लोकप्रिय

हैं। कहीं मंचों पर सफल वक्ता के रूप में मौजूद रहते हैं। जिसमें शैक्षणिक संस्थाओं के सेमिनार से लेकर जो जोश स्टॉक (वार्ता) जैसे अनेक प्लेटफार्म पर भी शामिल है।

उपन्यास–

डार्क हॉर्स–

नीलोत्पल मृणाल का सन 2015 में लिखा प्रथम उपन्यास जिसका नाम डार्क हॉर्स है। बहुत ही प्रसिद्ध हुआ। जिसका अर्थ है–अप्रत्यक्ष विजेता है। निलोत्पल मृणाल जब 8 बार यूपीएससी की परीक्षा दे दी। उसके बावजूद भी यह उस परीक्षा में उत्तीर्ण ना हो सके। तब इन्होंने इसी अनुभव को लेखन की दुनिया में अपने कदम लेकर आए। तब इन्होंने अपने पहले उपन्यास में सिविल सेवा की परीक्षा को देने एवं उसकी तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के जीवन पर लिखा है। यह पहली उपन्यास इन्होंने मात्र 9 दिन में लिखी थी। उसके पश्चात यह दिल्ली में पुस्तक मेला में हिस्सा लिया और वहां पर अपनी पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए लोगों से बात की। लेकिन वहां पर लगभग 28 प्रकाशकों ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। तब इन्होंने फेसबुक के जरिए भारतवासी के हिंदी युग्म प्रकाशन द्वारा संपर्क किया। तब इनकी पहली पुस्तक प्रकाशित हो गयी। 'डार्क हॉर्स' कोई मोटिवेशनल कहानी नहीं है। यह हमारे समय में घटित हो रही सबसे ईमानदार कहानियों में से एक है। उपन्यास का परिवेश दिल्ली के मुखर्जी नगर का है। जो कुछ पिछ्ले सालों से सिविल सेवक बनाने की फ़ैक्टरी के तौर पर जाना जाने लगा है। सिविल की तैयारी की अपनी एक आभा है । इस परीक्षा में नतीजा और प्रशंसा है कि दूर से देखने पर तैयारी का दौर भी गौरवशाली लगता है। UPSC की परीक्षा के आसपास उम्मीद की अनगिनत कहानियाँ है जो मुखर्जी नगर के तंग कमरों में हर रोज़ मोटिवेशन का उजाला भरती रहती है। आदमी सफल हो कर सिविल सेवक बन जाता है, और उसका सफल होना एक कहानी, जिसे सालों–साल दोहराया जाता है। 'डार्क हॉर्स' की कथावस्तु सिविल सेवा की तैयारी कर रहे छात्रओं की आत्मकथा और यथार्थ कहानी है।

औघड़–

नीलोत्पल मृणाल का दूसरा उपन्यास 'औघड़' है। जिसका प्रथम संस्करण जनवरी 2019 में हिंदी युग्म प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया था। यह उपन्यास आदर्शवादी ना होकर विशुद्ध यथार्थवादी उपन्यास है। जो पूर्णतः ग्रामीण परिवेश को लेकर रचा गया है। इस उपन्यास के माध्यम से निलोत्पल मृणाल ने एक आम ग्रामीण के विसंगतियों और विषमताओं से भरे जीवन की एक–एक परत को उधेड़ कर पाठकों के सम्मुख रख दिया है। यह एक ऐसा विषय है जिस पर उपन्यास लेखन का जोखिम बहुत कम ही लोग उठाते हैं। उपन्यास का केंद्र मलखानपुर और सिकंदरपुर गाँव हैं। इन गाँवों में ग्रामीणों की सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियाँ, धार्मिक पाखंड, जाति–पाँति, छुआछूत, महिलाओं की स्थिति, राजनीतिक अपराध, पुलिस और प्रशासन तथा सड़ी–गली सामाजिक व्यवस्था की नग्न तस्वीर प्रस्तुत करना उपन्यासकार का मूल उद्देश्य रहा है। भारतीय समाज में मुख्यत: उच्च, मध्यम और निम्न यही तीन वर्ग है। इन तीनों वर्गों की मानसिक चेतना और उलझनों का लेखा–जोखा उपन्यास के प्रति कथाकार की निष्पक्षता को दर्शाता है। समय बदला,

परिस्थितियां बदलीं और समाज में जागरूकता भी आई है। परंतु ग्रामीण समाज का एक वर्ग अभी भी उपेक्षित है। जो पाठक केवल मनोरंजन के लिए उपन्यास पढ़ते हैं 'औघड़' उपन्यास उन लोगों के लिए नहीं है क्योंकि इसमें मनोरंजन के अवसर ना के बराबर हैं।जिस तरह बीसवीं सदी के गोदान, रागदरबारी, चित्रलेखा, मैला आँचल, शेखर एक जीवनी, महाभोज जैसे उपन्यासों को हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने के साथ ही इनकी लोकप्रियता के कारण हमेशा याद रखा जाएगा। वैसे ही भविष्य में जब चर्चा इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य के उपन्यासों की होगी तो उसमें 'औघड़' का नाम भी शामिल होगा।

यार जादूगर–

लेखक का तीसरा उपन्यास है– 'यार जादूगर' है, जिसे सितंबर 2021 में हिंदी युग्म प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। उपन्यास गांव–कस्बों में रहते किरदारों की कहानी, व्यवस्था की कहानी, जीवन के सार की कहानी। इसमें सामाजिक व्यवस्थाओं पर व्यंग्य से लेकर जीवन के अध्यात्म तक का यह पूरा पैकेज है। 'यार जादूगर' मृत्यु का महोत्सव और जीवन का लोकसंगीत है। इसके पात्र हंसाते हैं, लेकिन उनकी व्यंगात्मक शैली वर्तमान परिस्थिति पर चोट भी करती है। किसी सीरियल की तरह दिमाग़ में दृश्य बनते जाते हैं और एपिसोड की तरह पलटते पन्नों के साथ दिलचस्पी बढ़ती जाती है। सबसे मजेदार है पात्रों के संवाद के बाद लेखक की उनके मनोभाव को बताती टिप्पणी है। पात्रों की भाषा, आम बोलचाल की भाषा हैं। उपन्यास में व्यंग्य की परंपरा वाले कोट्स जो जब तक व्यवस्था रहेगी उस पर किए जाते रहेंगे। लेखक ने जिस समाज के भीतर के पात्र को लिया हैं, वो कतई काल्पनिक नहीं है। हम सब उस का ही हिस्सा हैं। इसलिए आप बंया भी करते हैं। इस किताब में कोई नायक नहीं है, खलनायक भी नहीं। सभी अपने जीवन की उधेड़बुन में फंसे वे प्राणी हैं, जिनके भावनात्मक पक्ष हैं, कभी बुरे–कभी अच्छे। इसमें पसंदीदा पात्र हरिहर है, वह यूं कि उसके संवाद ही पूरे जीवन का सार है। यह उपन्यास एक साहित्यक रोचकता है जो पाठकों को सोचने और अनुभव करने के लिए प्रेरित करता है। पूरी कहानी का निष्कर्ष यार जादूगर है।

अन्य साहित्य–

उपन्यास साहित्य के साथ नीलोत्पल मृणाल के कई सारी कविताएँ एवं लोग गीत की भी चर्चा रही हैं। जो मंचपर इसका गायन करते हैं।

कविताएँ एवं लोक गीत –

1. दुनिया ऐसी हुआ करती थी।
2. लडे लड़कियाँ बढो लड़कियों।
3. ये रिल बनाने वाले लड़के।
4. मुट्टी भर के ले के हम जमीन।
5. बचपन के वो प्यारे प्यारे दिन कहां गए।
6. सपने ऊँचाई पर थे सोने चटाई पर थे।

7. एक नौकरी के चक्कर में सिकंदर भी हार गया।
8. कहां गया हल मेरा दिन वो सलोना है।
9. हां मैं बिहारी हूँ।
10. एही नदी के तीर।
11. गेहूँ बोएंगे आसमान में।
12. पटना वाले लड़कों।
13. दालमोठ भार कटोरी रखा है सामने।
14. चल साधो कोई देश।
15. ओ मां यह दुनिया।
16. जगत माटी का ठेला रे आदी।

कविताएं और गीत के साथ-साथ जगमग करें में संसार भोजपुरी जैसे कविता और गीत भी लिखे हैं।

ऑडियो बुक और श्रृंखला

1. स्टोरिटेल ओरिजिनल्स के जखबाबा (2019)
2. श्रव्य के लिए डार्लिंग डेमोक्रेसी (2020)

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. आधुनिक युग की सर्वाधिक प्रसिद्ध विधा .... है।

   अ) उपन्यास   ब) कहानी   क) नाटक   ड) निबंध

2. आधुनिक काल में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी साहित्य में सर्वप्रथम .... साहित्य में प्राप्त होता है।

   अ) मराठी   ब) गुजराती   क) बंगला   ड) हिंदी

3. बंगाल की पत्रिका .... में उपन्यास शब्द का प्रथम प्रयोग किया गया।

   अ) हंस   ब) दर्पण   क) बंगदर्शन   ड) विशाल भारत

4. हिंदी साहित्य में उपन्यास सम्राट .... को कहा जाता है।

   अ) भारतेन्दु   ब) प्रेमचंद   क) जयशंकर प्रसाद   ड) अज्ञेय

5. गुजरात में उपन्यास को .... नाम से जाना जाता है।

   अ) नवलकथा   ब) कथा–साहित्य   क) नॉवेल   ड) कांदबरी

6. उपन्यास मनुष्य जीवन की काल्पनिक कथा है। यह परिभाषा .... प्रस्तुत की है।

अ) आ.बाबू गुलाबराय ब) डॉ.श्यामसुंदर दास

क) डॉ.नगेन्द्र ड) आ.रामचंद्र शुक्ल

7. लाला श्रीनिवासदास का .... हिंदी का प्रथम उपन्यास है।

अ) परिक्षा गुरु ब) सोजेवतन क) चंद्रकांता ड) गोदान

8. उपन्यास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व .... है।

अ) संवाद। ब) देश-काल वातावरण

क) कथावस्तु ड) उद्देश्य

9. लेखक के अभिव्यक्ति का साधन .... है

अ) शैली ब) संवाद क) शीर्षक ड) उद्देश्य

10. नीलोत्पल मृणाल का जन्म सन् .... में हुआ।

अ) 1984 ब) 1980 क) 1992 ड) 1975

11. लेखक नीलोत्पल मृणाल .... परीक्षा दे दी है।

अ) सिविल सेवा ब) वैद्यकीय क) इंजीनियरिंग ड) विधी

12. नीलोत्पल मृणाल ने बी.ए. ....विषय में किया है।

अ) राज्यशास्त्र ब) इतिहास क) मराठी ड) समाजशास्त्र

13. नीलोत्पल मृणाल का विवाह सन् ....में डी.एस.पी अनिता शर्मा प्रभा के साथ हुआ है।

अ) 2018 ब) 2023 क) 2022 ड) 2023

14. नीलोत्पल मृणाल का .... पहला उपन्यास है।

अ) डार्क हॉर्स ब) औघड क) यार-जादुगर ड) इनमें से नहीं

15. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के लिए 2016 में साहित्य अकादमी का........... सम्मान प्राप्त हुआ।

अ) युवा साहित्य अकादमी ब) बिहारी अकादमी

क) सारस्वत ड) राष्ट्रभाषा सम्मान

16. नीलोत्पल मृणाल के कुल .... उपन्यास प्रकाशित है।

अ) एक ब) दोन क) तीन ड) चार

17. 'औंघड' उपन्यास के लेखक .... है।

अ) अनुराग पाठक ब) नीलोत्पल मृणाल क) चंद्रकांता ड) अनामिका

18. 'यार जादूगर' लेखक नीलोत्पल मृणाल का .... उपन्यास है।

अ) पहला ब) तिसरा क) पाँचवा ड) दूसरा

19. साहित्यकार नीलोत्पल मृणाल को कंधे पर .... रखने के कारण दिल्ली के रेस्टोरेंट में घुसने से रोख दिया। जिसकी विरोध में डेढ लाख लोग उतरे।

अ) तौलिए ब) रुमाल। क) गमछा ड) इनमें से नहीं

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1) विधा – प्रकार, भेद
2) शैली – पद्धति
3) कथोपकथन – पात्रों की आपसी बातचीत, संवाद
4) व्यक्तित्व – व्यक्ति की विशेषता या गुण
5) कृतित्व – कृति रचने की शैली, कार्य
6) डार्क हॉर्स – अप्रत्याशित विजेता
7) औंघड – उलटा, पलटन, अटपट

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) उपन्यास
2) बंगला
3) बंगदर्शन
4) प्रेमचंद
5) नवलकथा
6) डॉ.श्यामसुंदर दास।
7) परीक्षा गुरु
8) कथावस्तु
9) शैली
10) 1984
11) सिविल सेवा
12) इतिहास
13) 2022
14) डार्क हॉर्स
15) युवा साहित्य अकादमी
16) तीन
17) नीलोत्पल मृणाल
18) तीसरा
19) गमछा

1.7 सारांश

1. आज उपन्यास साहित्य समस्त विद्याओं में सबसे लोकप्रिय विधा है। इसे मानव जीवन का यथार्थ प्रतिबिंब कहा जा सकता है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने के पूर्व उसके जीवन वृत्तांत एवं व्यक्तित्व से परिचित होना नितांत अनिवार्य होता है, क्योंकि उसके व्यक्तित्त्व के तमाम रंग उसके कृतित्व में झलकते नजर आते हैं। उसका साहित्य उसकी स्वनुभूतियों का निचोड होता है।

2. उपन्यासकार का उद्देश्य पाठकों का सिर्फ मनोरंजन करना नहीं होता, बल्कि यह यथार्थ, कल्पना और अपने रचनात्मक कौशल के सहारे सामाजिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है।

3. 21वीं सदी की नई पीढी के सर्वाधिक लोकप्रिय लेखकों में एक है– नीलोत्पल मृणाल। वह लेखक के साथ–साथ एक कवि, सोशल मीडिया, सामाजिक और राजनीतिक रूप से प्रभावित है। नीलोत्पल मृणाल साहित्य अकादमी से पुरस्कृत प्राप्त लेखक है। आज उनकी किताबें बेस्ट सेलर की श्रेणी में आती है। कुछ वर्षों से नीलोत्पल मृणाल अब मंचों पे बतौर कवि सक्रिय हैं और बेहद लोकप्रिय भी। कई मंचों पर बतौर स्पीकर इनकी मौजूदगी रहती है। जिसके वीडियो वह अपने यूट्यूब चैनल के जरिए शेयर करते रहते हैं। जिसमें शैक्षणिक संस्थानों के सेमिनार से लेकर जोश टॉक और टेड टॉक जैसे प्लेटफार्म भी शामिल हैं।

4. नीलोत्पल मृणाल का जन्म सन् 25 दिसंबर 1984 में बिहार के मुंगेर जिला, संग्रामपुर नामक कस्बे में हुआ है। वर्तमान में यह झारखंड के दुमका जिला में, नोनीहाट आता है। लेखक नीलोत्पल मृणाल जब 8 बार यूपीएससी की परीक्षा देने के बावजूद भी उत्तीर्ण ना हो सके। तब इन्होंने लेखन की दुनिया में अपने कदम रख दिए।

5. उन्होंने सन 2015 में पहला उपन्यास लिखा जिसका नाम 'डार्क हॉर्स' है। इसी उपन्यास के लिए युवा साहित्य अकादमी सम्मान पुरस्कृत किया है। वर्तमान में 'डार्क हॉर्स' हिंदी की सर्वाधिक बिक्री वाली पुस्तक है।

6. 'डार्क हॉर्स' कोई मोटिवेशनल कहानी नहीं है। यह हमारे समय में घटित हो रही सबसे ईमानदार कहानियों में से एक है। उपन्यास का परिवेश दिल्ली के मुखर्जी नगर का है। जो कुछ पिछ्ले सालों से सिविल सेवक बनाने की फ़ैक्टरी के तौर पर जाना जाने लगा है।

7. नीलोत्पल मृणाल का दूसरा उपन्यास 'औघड़' है। यह उपन्यास आदर्शवादी ना होकर विशुद्ध यथार्थवादी उपन्यास है। जो पूर्णतः ग्रामीण परिवेश को लेकर रचा गया है। इस उपन्यास के माध्यम से निलोत्पल मृणाल ने एक आम ग्रामीण के विसंगतियों और विषमताओं से भरे जीवन की एक–एक परत को उधेड़ कर पाठकों के सम्मुख रख दिया है।

8. लेखक का तिसरा उपन्यास है– 'यार जादुगर' है। उपन्यास गांव–कस्बों में रहते किरदारों की कहानी, व्यवस्था की कहानी, जीवन के सार की कहानी। इसमें सामाजिक व्यवस्थाओं पर व्यंग्य से लेकर जीवन के अध्यात्म तक का यह पूरा पैकेज है। 'यार जादूगर' मृत्यु का महोत्सव और जीवन का लोकसंगीत है।

उपन्यास साहित्य के साथ नीलोत्पल मृणाल के कई सारी कविताएँ, लोग गायन, ऑडियो बुक और श्रृंखला को भी लिखा हैं।

1.8 स्वाध्याय

1) उपन्यास के अर्थ एंव स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

2) उपन्यास के तत्वों पर प्रकाश डालिए।

3) नीलोत्पल मृणाल का जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व लिखिए।

4) नीलोत्पल मृणाल का कृतित्व लिखिए।

5) नीलोत्पल मृणाल के उपन्यास का परिचय दीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1) हिंदी उपन्यास के आधार मराठी उपन्यास के स्वरूप को जानने का प्रयत्न कीजिए।

2) 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के जरिए सिविल सेवा के बारे में जानने की कोशिश कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. 12th Fail – लेखक - अनुराग पाठक
2. नीलोत्पल मृणाल के विभिन्न वेबसाईटस, युट्यूब और आडियो बुक को देखने की कोशिश करे।
3. औंधड - नीलोत्पल मृणाल

❑❑❑

इकाई –2

1. डार्क हॉर्स उपन्यास की कथावस्तु

2. डार्क हॉर्स उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता

3. डार्क हॉस उपन्यास में चित्रित समस्याएं

अनुक्रम –

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की कथावस्तु

2.3.2 'डार्क हॉर्स' उपन्यास का शीर्षक

2.3.3 'डार्क हॉर्स' उपन्यास में चित्रित समस्याएं

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने पर आप

1) उपन्यास विधा से परिचित होंगे।
2) स्पर्धा परीक्षा के संघर्ष से परिचित होंगे।
3) 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की कथावस्तु समझ लेंगे।
4) पद से प्रतिष्ठा कैसे मिलती है यह समझ पाएंगे।
5) हर व्यक्ति की विशिष्टता को समझेंगे और प्रेरना लेंगे।

2.2 प्रस्तावना

डार्क हॉर्स नीलोत्पल मृणाल का लिखित उपन्यास है। डार्क हॉर्स का मतलब रेस में ऐसा घोडा जिस पर किसी ने भी दाँव नही लगाया हो, जिसकी किसी ने जीतने की उम्मीद न की हो और वही घोडा सबको पीछे छोड़ आगे निकल जाए, तो वही है डार्क हॉर्स। इस उपन्यास का मुख्य किरदार संतोष है। जो बिहार के भागलपुर से सिविल सर्विस की तैयारी (I.A.S. बनने के लिए) के लिए दिल्ली आता है।

इस उपन्यास को पढ़ते समय ऐसा लगता है, हम मुखर्जी नगर की किसी ऐसी जगह बठे है जहाँ से इस उपन्यास के सारे किरदारों को आते-जाते, उठते-बैठते, पढ़ते-लिखते, खाते-पीते देख रहे होते हैं। मुझको सबसे अच्छा लगा कि इस उपन्यास के सारे किरदार जिस जगह से आये है वहा की ही जुबान बोलते है। 'डार्क हॉर्स' का मुख्य किरदार संतोष दिल्ली में कदम रखते ही कैसे समझौतावादी हो जाता हैं और 'गुरूत्व' और 'चेलत्व' के भावों में उतरकर फौरन ही सोचने लगता हैं कि अब तो आईएएस की पोस्ट दूर नहीं। मुखर्जी नगर में देखता है कि किसी एक छोटी सी गलती भी इतिहास की बड़ी से बड़ी गलती साबित हो जाती है। यहाँ छात्र केवल सिविल सर्विस की परीक्षा के लिए ही संघर्ष नहीं करता वल्कि गांव-शहर की संस्कृतियों के लिए, खान-पान और रहन-सहन के लिए, भाषाई सुचिता और भदेसपन के लिए, बौद्धिकता और सहजता के लिए, पिता-पुत्र के बीच का संवाद के लिए, सफलता और असफलता के लिए, क्लास में अपनी पहली प्रेमिका या प्रेमी खोजने के लिए भी संघर्ष करता है।

पूरा उपन्यास थ्रिलरशैली में लिखा गया है। घटनाएँ घटती जाती हैं और कहानी अपनी बात कहते हुए आगे बढ़ती जाती है। शैली की स्पीड बिलकुल वैसी है जो स्पीलबर्ग की फ़िल्म 'स्पीड' के नाम में झलकता है। यह ज़माना धीमी गति का ज़माना नहीं है। इतनी तेज़ गति से कहानी आगे बढ़ती है कि ब्रेक लगाना मुश्किल हो जाता है। उपन्यास की गति और शिल्प ऐसा है कि एक बैठकी में ही ख़त्म करने की माँग करता है।

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 डार्क हॉर्स उपन्यास की कथावस्तु

'डार्क हॉर्स' का मुख्य किरदार संतोष, बिहार के 'डुमरी' गाँव के एक साधारण परिवार के विनायक और कमला देवी का बेटा है जो सिविल सर्विस की तैयारी के लिए दिल्ली आता है। उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे हिंदी पट्टी के राज्यों से सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए लड़के या तो इलाहाबाद का रुख करते हैं या तो दिल्ली का। खास तौर से हिंदी माध्यम से तैयारी करने वाले लड़कों के लिए ये दो जगहें ही मख्सूस मानी जाती हैं। जो थोड़े कमजोर घर से होते हैं, वे इलाहाबाद रह कर तैयारी करते हैं, और जो थोड़े साधन-संपन्न होते हैं, वे दिल्ली के मुखर्जी नगर में अपना आशियाना बनाते हैं। साथ ही यह भी कि मुखर्जी नगर में एक इलाहाबाद हमेशा मौजूद रहता है।

विनायक बाबू सुबह 5:00 बजे उठकर नहा धोके तैयार होकर भोरे भोरे संतोष को दिल्ली जाने के लिए स्टेशन छोड़ने जाते हैं।

संतोष दिल्ली पहुंच गया। रात को मोबाइल पर गाने सुनते-सुनते उसकी नींद लग गई और नींद में ही उसका पूरा सफर हो गया। सुबह दिल्ली स्टेशन पर उतरकर उसने मेट्रो रेलवे स्टेशन पर लाइन में खड़े होकर विश्वविद्यालय स्टेशन पहुंच चुका था। वहाँ से ऑटो पकड़कर वह मुखर्जी नगर बत्रा सिनेमा के सामने जाकर खड़ा हो गया।

संतोष अब अपने सपनों के नगर मुखर्जी नगर में जाकर खड़ा था। चारो तराफ सफल अभ्यर्थियों के पोस्टर लगे थे। नामचीन कोचिंग के होर्डींग्स। संतोष ने वहां से राय साहब को फोन लगाया, अगले 10 मिनट में भाई साहब उसे मिलने आते हैं। संतोष की रायसाहब से मुलाकात बोकारो में एक शादी में हुई थी। राय साहब का पूरा नाम कृपा शंकर राय था। वे मूलत: यूपी के गाजीपुर से थे। रायसाहब पिछले 5 साल से मुखर्जी नगर में आईएएस की तैयारी के लिए रह रहे थे। राय साहब किसान परिवार से थे।

संतोष और राय साहब चाय पीते पीते आपस में बातें कर रहे थे। इतने में संतोष के पिताजी विनायक जी का फोन आता है। रिंगटोन में लगा गाने के बारे में बात होती है। और राय साहब कहते हैं की रिंगटोन ऐसी होनी चाहिए कि कोई मैसेज मिले।

दोनों खाना खाते है उसके बाद रायसाहब बेड पर बैठे 'द हिंदू' पढ़ने लगे। हर हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए 'द हिंदू' ज्ञान और जानकारी से ज्यादा प्रतिष्ठा का अखबार था। ज्यादातर लडके इस अखबार का बस टाइटल देखकर रख देते थे, पर कुछ ऐसे भी मेहनती लडके होते थे जो डिक्शनरी निकालकर चार घंटे 'द हिंदू' पढते थे। रायसाहब ऐसे ही मेहनतकश द हिंदू रीडरों में से थे। लेकिन आज संतोष के सामने अपना टाइट भौकाल कम करना नहीं चाहते थे। इसलिए पेपर के सिर्फ चित्र ही देखकर देख रहे थे। रायसाहब ने जल्दी ही पेपर रखकर संतोष के लिए रूम देखने बत्रा जाने के लिए तैयार हो गए।

रायसाहब, संतोष और एक और मित्र मनोहर प्रॉपर्टी डीलर टोनी के ऑफिस पहुँचे। ऑफिस जैसे सरकारी ऑफिस की तरह था। वहाँ से वह छात्रों को रूम दिलाने का काम करते थे। इसके बदले में 50 फ़ीसदी किराए का पैसा लेते थे। अब मुखर्जी नगर में यह धंधा बड़े जोर से चल रहा था। वे वहा 'रूम पसंद' न आने के कारण वजीराबाद में गुरुराज सिंह के रूम पर जाते हैं। संतोष को रूम चाहिए यह बात बताते हैं। संतोष के लिए गुरुराज का कमरा भी एक नया अनुभव था। गुरुराज सिंह के रूम में देवी देवताओं की तस्वीरे रखी हुई थी। तकिये के पास सिगरेट का डिब्बा था। दिवार पर बास विश्व का नक्शा चीपका हुआ था। गुरु राज रायसाहब को पूछता है क्या खाओगे? बाद में पीने की व्यवस्था करते हैं। तब संतोष के सामने शरमाते हुए रायसाहब कहते हैं, अब पीने खाने की बात छोड़िए तब गुरु कहता है कि क्या आप पीते नहीं है क्या? तो फिर शर्माते क्यों हो। गुरुराज ने प्लेट में नमकीन निकालते हुए कहा। अचानक गुरुराज की संतोष पर नजर पडी फिर तुरंत बोला, ''ओ अच्छा, जूनियर के सामने संकोच कर रहे है! अरे ई भी एडजस्ट हो जाएगा। जैसे मनोहर हो गया। है कि नही मनोहर?'' गुरुराज सिंह झारखंड के संत कोलंबस कॉलेज का छात्र था।

कुछ समय रांची में भी सिविल की तैयारी के लिए रहा। अब मुखर्जी नगर में रहता है पिछले ५ सालों से। पिता सरकारी नौकरी में थे। गुरु राज अपने आप में एक विरोधाभास का मिश्रण था। दारू और किताब दो उसके प्रिय साथी थे। बुद्धिजीवी वर्ग के लिए वह एक बिगड़ैल आदमी था। गुरु राज ने अपने जीवन के कई साल झारखंड के आदिवासियों के बीच गुजारे थे। रायसाहब गुरु के सामने हमेशा बचाव की मुद्रा में रहते थे। रायसाहब की विद्वत्ता, उसका आदर्श, गुरु के सामने ढीले जाँघे की तरह था। जो कभी भी गुरु के एक झटके से सरक सकता था। राय साहब गुरु को कहते हैं, यह संतोष है, बिहार के भागलपुर से आए हैं। इन्हें कमरा चाहिए। तब गुरु उसी जगह पर उनको एक कमरा दिखाता है। उसका किराया ५५०० बताता है। वह कमरा पसंद आने पर कहते हैं कि आज ही शिफ्ट हो जाइए। तब संतोष गुरु को थैंक्स कहता है। मनोहर कहता है कि सिर्फ थैंक्स से काम नहीं चलेगा यहाँ गुरु को थैंक्स का मतलब होता है, रंग-बिरंगा पानी बरसना चाहिए। तब गुरु कहता है, संतोष तुम कहाँ मनोहर के बातों में आ रहे हो। मनोहर तो ऐसे ही मजाक कर रहा है। लेकिन संतोष हृदय से धन्यवाद देना चाहता था। मनोहर ने इशारों में ही वह तरीका बताया था। तब संतोष कहता है कि मेरी तरफ से कमरे पर एक पार्टी रहेगा।

संतोष अब कमरे पर अपने सपनों की दुनिया सजा रहा था। वास्तु शास्त्र के अनुसार उसने सारी रचना की। भगवान की छोटी-छोटी मूर्तियों के लिए भी एक छोटा सा टेबल पूरब और उत्तर के कोने में लगाया। यह सारा सामान लगाते हुए रात को बिना खाए उसको नींद लग गई और सुबह राय साहब के फोन की आवाज से ही उठे। तब राय साहब ने कहा कि जल्दी बत्रा आ जाओ। किताबें खरीदने हैं। बत्रा पहुँचते ही उन्होंने उसके हाथ में पुस्तक की एक लिस्ट दे दी। जिसे राय साहब ने अनुभव और जानकारी से तैयार की थी। उनके अपने विषय हिंदी साहित्य और इतिहास थे। उन्होंने संतोष को विषय के बारे में पूछा तब संतोष कहता है कि इतिहास से बी ए हूँ, दूसरा विषय के लिए आप ही मार्गदर्शन कीजिए। रायसाहब कहते हैं चलिए दूसरा हिंदी साहित्य रख लीजिए, काफी लोग सेलेक्ट हो रहे हो रहे हैं, इतिहास और हिंदी साहित्य के कांबिनेशन से। तब संतोष कहता है कि उसके एक परिचित समाजशास्त्र में मेंस दिए थे। यह कैसा विषय रहेगा जिज्ञासावश संतोष ने पूछा। ''विषय सारे ठीक हैं, आप अपनी रुचि देख लीजिए। हिंदी साहित्य का सिलेबस छोटा है, अंकदाई विषय है। यहाँ पर हिंदी पढाने वाले अच्छे शिक्षक भी तो है। इस पर संतोष कहता है, ठीक है अभी तो इतिहास और सामान्य अध्ययन की किताब दिलवा दीजिए। दूसरे विषय के बारे में थोड़ा बाद में सोचेंगे। संतोष सोचता है कि आज रात की पार्टी खत्म होते ही कमरे को धो-पोंछ लेगा और गंगाजल की छीटे मार अगरबत्ती जलाकर पवित्र कर लेगा, फिर आगे से रूम पर मांस-दारू से परहेज रखेगा। खाना-पीना गुरु के रूम पर होना तय हो गया यद्यपि गुरु भी शाकाहारी था पर वह संतोष की असहजता को समझ गया था।

शाम पाँच बजते ही मनोहर, राय साहब पहुंच चुके थे। राय साहब के साथ उनका एक मित्र भरत कुमार भी आया था। राय साहब ने भरत का सबसे परिचय करवाया। राय साहब ने बताया कि भरत ने इसी बार छत्तीसगढ पीसीएस, उत्तर प्रदेश लोअर सबोर्डीनेट की मुख्य परीक्षा दी है। संतोष बिना पिए ही उस मस्ती के माहौल में तैर रहा था, कही डूबता, कहीं कभी निकलता। रात ऐसे ही गुजर गई।

संतोष सुबह होने से पहले ही अपने कमरे पर जाकर सो गया था। बाकी लोग वही कमरे में फर्श पर लेटे हुए थे। अचानक मनोहर जल्दी-जल्दी उठा और अपने चाचा को लेने स्टेशन पहुँचा। स्टेशन पहुँचते ही रायसाहब का फोन आया। उसने बता दिया कि आज शाम भरत के कमरे पर पार्टी होगी, आप आ जाइए। तो वह कहता है कि मुझे छोड़ दीजिए मैं आज नहीं आ पाऊँगा। मेरे चाचा आने वाले हैं।

वहीं से उसने अपने रूम पर रहने वाले एक लड़के को फोन लगाया कि आज आर 'द हिंदू' खरीद कर मेरे दरवाजे के नीचे डाल देना। पेपर वाले को भी बताया कि द हिंदू अंग्रेजी अखबार आज रूम पर दे दो। तब वह अखबार वाले सेवकराम ने उधर से कहा, ''जी ठीक है, कोई आया है का घर से सर?'' असल में अखबार वाले भी इस बात को जानते थे कि कई ऐसे लडके है, जो किसी मेहमान के कमरे पर आने पर ही अंग्रेजी अखबार मँगवाते हैं। चाचा जी को किडनी की बीमारी थी इसका इलाज करने के लिए दिल्ली के एम्स अस्पताल में आ रहे थे। दिल्ली में रहने वाले लड़कों के रिश्तेदार भी जानते थे दिल्ली में इलाज करवाना है तो रहने खाने की चिंता नहीं ऊपर से पढ़ा लिखा गाइड भी फोकट में मिल जाता है। तो उठकर दिल्ली अपना इलाज करवाने आते थे। चाचा आने के बाद पूरे कमरे में मनोहर ने अंग्रेजी माहौल बनाया था। चाचा जी मनोहर को अंग्रेजी अखबार पढ़ते हुए देखकर खुश हो जाते हैं। सामान्य तौर पर हिंदी पट्टी के परिवार और समाज के लिए अंग्रेजी वह पतित पावन धारा थी जो हर पाप धो देती थी। अगर अंग्रेजी जानते हैं तो फिर आपका सब अच्छा बुरा इस आवरण में ढक सकता है। अंग्रेजी जानने वाला वहाँ सियारों के बीच लकड़बग्घे की तरह होता है। गाँव से बाहर पढ़ने जाने वाले बच्चों की योग्यता भी बस इसी बात से मापी जाती थी। हर अभिभावकों को लगता था कि हमारा बच्चा कलेक्टर बने पर अंग्रेजी में बोलेगा तो बढ़िया कलेक्टर बनेगा। मनोहर के रूम का इंग्लिश माहौल देखकर चाचा जी कहते हैं कि तुम्हारा इंग्लिश तो बहुत बढ़िया हो गया है। कूल मिलाकर चाचा जी को चाबी देकर कहा अगर बाहर जाने का फिरने का मन करे तो ताला लगाकर सड़क पर घुम आएँ। मुझे आने में रात सात आठ बज जाएँगे।

दोपहर के समय पर गुरु के कमरे में विमलेंदू आता है। तभी संतोष भी वहाँ आ जाता है। गुरु दोनों की पहचान कर देता है। विमलेंदु यादव यूपी के बलिया का रहने वाला था। पिता किसान थे। वह पढ़ने में एक ठीक-ठाक छात्र था। गुरु की और उसकी अच्छी दोस्ती थी। विमलेंदू शराब और किसी भी नशे से कोसों दूर था। उसके पिताजी खेत में हल चलाकर जो मेहनत कर रहे हैं, उसे बर्बाद नहीं करना चाहता था। चाय पीते हुए संतोष को कोचिंग क्लास लगाने के बारे में बातें होती है। तब विमलेंदू कहता है, यहाँ तो कोचिंग क्लास कुकुरमुत्ता की तरह उगे हुए हैं। संतोष के विषय के बारे में जानकारी लेते हुए मालूम होता है कि उसका इतिहास पुश्तैनी है और यहां एक विषय चुनना है। राय साहब हिंदी के बारे में बता रहे थे। लेकिन इसके एक परिचित ने समाजशास्त्र समझाएँ है।

संतोष बत्रा पहुँचकर कोचिंग क्लास की होर्डिग देखते हुए राय साहब का इंतजार कर रहा था। राय साहब के आने पर वह लोक सेवक मेकर नाम की कोचिंग के ऑफिस में पहुँच जाते हैं। वहाँ रिसेप्शन पर बैठी लड़की मन मोहिनी वर्मा से उनकी बातें होती हैं। संतोष के विषय के बारे में जानकारी लेने पर समझता है कि इतिहास पहले एक विषय है और दूसरे विषय को लेकर कंफ्यूजन है। तब मनमोहिनी सजेस्ट करती है,

आप इतिहास तो मत लीजिए। अगर आप चाहते हैं तो मैं आपको सजेस्ट करती हूँ कि आप लोक प्रशासन और सोशियोलॉजी में एडमिशन करवा दीजिए। मनमोहिनी की मोहक बातें और उसकी अदा देखकर दोनों भी पागल सा हो गया थे। आखिर में संतोष मनमोहिनी के कहने पर वहाँ फीस भरकर एडमिशन करा देता है। संतोष अब पूरे मनोयोग से तैयारी में जुट जाना चाहता था। कमरा किताब कोचिंग और कोचिंग जाने का मन मोहिनी जैसा ही खूबसूरत बहाना अब उसके पास था।

मनोहर के चाचा की रायसाहब संतोष और भरत मिलते है। चाचा सबको समोसा पकोड़ा खिलाने की बात करते हैं। सब समोसा खाने लगे, इतने में भरत ने पॉकेट से सिगरेट निकाली और एक कश लेकर उसने सिगरेट मनोहर की तरफ बढाई। मनोहर कुछ पीछे हो लिया और मुँह से पकौड़ी का ऑर्डर देने लगा। चाचा जी के पूछने पर भरत कहता है, हां अंकल 10^{th} से पीता हूँ। एक्चुअली हमारे हॉस्टल में सब पीते थे। हाँ बट स्मोकिंग हद से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। मैं ड्रिंक भी करता हूँ ना तो लिमिट में ही। राय साहब ने मामला रफू करते हुए कहा असल में यहाँ लोग इतना मेंटल प्रेशर में होते हैं दिन-रात पढ़कर, सो कभी-कभी ले लेते हैं कुछ लड़के। पर सब नहीं करते हैं ऐसा। अब अपने मनोहर को ही ले लीजिए। छूना भी पाप समझता है। मनोहर चाचा को छोड़ने रेलवे स्टेशन पहुँच जाता है। तब चाचा जी कहते हैं, ''बेटा तुम्हारा अंग्रेजी अखबार, अंग्रेजी गाना, अंग्रेजी गायिका तो ठीक है लेकिन थोड़ा ज्यादा अंग्रेजी हो गए हो, हम तुम्हारे कमरे पर बेड के नीचे अंग्रेजी बोतल भी देख लिए हैं, थोड़ा अंग्रेजी मीडियम कम ही रखो तुम हिंदी ही ठीक है समझे, बहुत मेंटल स्ट्रेस है ना तो घर वापस चल चलो, बाप चाचा का बिजनेस संभालो, बहुत पढ़ लिए तुम'' चाचा ने एकबारगी सारा क्रोध उगल दिया था मनोहर पर। तब मनोहर ने चाचा के पाँव पकड़ लिए और बाबूजी से कुछ नहीं कहने को कहा। चाचा आखिर चाचा ही तो थे। मनोहर को ऊपर उठाते हुए कहा ''ठीक है सुधर जाओ, हम कुछ नहीं बताएंगे, और सुनो हमारा रिपोर्ट दिखाकर दवा खरीद कर टाइम पर कुरियर कर देना समझे'' चाचा ने मौके पर चौका मारते हुए कहा। चाचा को ट्रेन में बिठाकर स्टेशन से निकलते समय मनोहर यही सोच रहा था कि जाते-जाते भी कपार एक हेडेक दे गए चाचा, चाचा है कि कसाई?

आज संतोष की कोचिंग की क्लास का पहला दिन था। पूजा पाठ के साथ शिव और हनुमान चालीसा का पाठ कर नई कॉपी पर अबीर से स्वास्तिक का चिन्ह बनाया, माथे पर तिलक किया। कोचिंग पहुँचते ही उसने प्रवेश द्वार को नीचे झुक हाथ से छूकर प्रणाम किया। मनमोहिनी को नमस्कार किया मन मोहिनी ने भी सुषुम रबड़ी वाली मुस्कान के साथ मोस्ट वेलकम संतोष जी बोल अभिवादन किया। समाजशास्त्र पढ़ने के लिए दुख मोचन मंडल सर क्लास में आए। आते ही उन्होंने पहला सवाल किया सब ने फीस जमा कर दी है क्या? जी सर जी मेरा हाफ, जी सर, कर देंगे सर ऐसी मिली जुली आवाज आई कितने लोगों ने पूरी फीस जमा कर दी है? हाथ उठाइए। सर का दूसरा वाक्य था, फिर आधी फीस जमा करने वालों को हाथ ऊपर उठाने को कहा। फिर डेमो क्लास वाले को हाथ ऊपर उठाने को कहा। दुख मोचन सर कहने लगे कि आप लोग सोच रहे होंगे, कि कैसे सर है? क्लास में आते ही सबसे पहले पैसे फीस की बात कर रहे हैं। असल में हम आज से समाजशास्त्र पढ़ने जा रहे हैं। और मैं आपको यह दिखाना चाहता था कि एक दुनिया एक

देश से लेकर एक छोटी सी कक्षा तक में लोग बैठे हुए हैं। कई आधारों पर अलग-अलग समाज है। क्लास खत्म होते ही संतोष मनमोहिनी मैडम से मिलकर एकदम प्रसन्न भाव से बाहर निकला। बजरंग शुक्ला की दुकान पर उसे मनोहर, गुरु, भरत और रायसाहब दिख गए। उनमें गरमा गरम बहस चल रही थी। मनोहर झल्लाए स्वर में बोल रहा था, यह क्या चुतियागिरी कर दिए थे आप भरत जी, आप मेरे चाचा के सामने ही सिगरेट दारू लंद-फंद शुरू कर दिए! भरत कहता है इट्स माय नॉर्मल बिहेवियर मनोहर, इट्स माय लिविंग स्टाइल। मै हिंदी मीडियम के लौंडो की तरह चुप कर सिगरेट दारू नहीं पिता और न ही पब्लिक में आइडियल पर्सन बनाकर घूमता हूँ। हिंदी और अंग्रेजी माध्यम को लेकर उनमें काफी बहस होती है। आखिर में गुरु ने मुस्कुराते हुए कहा हाँ मनोहर भाषा तो सब जरुरी है। अंग्रेजी व्यापार की भाषा है, उर्दू प्यार की भाषा है और हिंदी व्यवहार की भाषा है। यह सुनते ही सबके चेहरे पर एक हल्की मुस्कराहट तैर गई और आज की सभा वही भंग हो गई।

सज धज के एक दिन संतोष क्लास खत्म होते ही वह रोज की तरह पहले मनमोहिनी के ऑफिस गया। वहाँ काफी भीड़ देखी तो बाहर निकल आया। कुछ दूर चला ही था कि पीछे से आवाज आई, क्या स्मार्टी नाम क्या है तुम्हारा? पलटा तो देखा वही लड़की थी। जी संतोष कुमार सिन्हा नाम है मेरा। सिंह के फूफा हो सिन्हा। अच्छा यह बताओ मूँछ खुद से बनाई है क्या? यह अप्रत्याशित प्रश्न था संतोष के लिए। जी हाँ क्यों क्या हुआ? संतोष ने पूछा, तो जाकर पूरी तरह बना लो कहीं-कहीं छूट गया है। सर ने जो कहा था, तुमने सुना नहीं क्या? बेटर देन लास्ट डे। यानी आज कल से कम मूँछे थी, बकलोल कहीं के। बाय-बाय चलती हूं। संतोष वही खडे तय नहीं कर पा रहा था, कि वह क्या महसूस करें? गुदगुदी या कंपन। अगले दिन संतोष क्लास में थोड़ी जल्दी पहुंचा। मन मोहिनी के ऑफिस में वह जैसे ही घुसा, मन मोहिनी आज शायद महिषासुर मर्दिनी बन बैठी थी। उसने गुस्से में पूछा, संतोष जी क्या बात है? रात को दो बजे आप मुझे कॉल क्यों कर रहे थे? और यह क्या मैसेज किया है? 'जाओ कट्टी', मैं तुम्हारी कब से दोस्त हो गई। जो फोन नहीं उठाया तो कट्टी कट्टी खेलने लगे। आपको मैं कई दिनों से देख रही हूं, आप पांडे जी से पढ़िए ना, रोज मेरे पास क्यों घुसे चले आते हो? मन मोहिनी का रौद्र रूप देख संतोष सकते में आ गया। ''वो मैंने गलती से कॉल लगा दिया था मोहिनी जी।'' अच्छा तो वो मैसेज? जी हाँ, सॉरी गलती हो गई। आप लोग जैसे लड़के समझते क्या है किसी भी लड़की को यह बताइए पहले। रोज-रोज मुँह उठा कर चले आते हो। लड़की की हँसी देखी कि बस समझ गए काम हो गया। अरे भाई मेरे, यह हमारा काम है काम। हमें यहाँ बैठ के हर सूरत में हँसना पड़ता है और सब के साथ हँस के बात करनी पड़ती है। हमें इसी के पैसे मिलते हैं समझे मिस्टर। हमें रोज आपके जैसे लड़के को लोक प्रशासन और समाजशास्त्र दिलवाने के अलग से भी पैसे मिलते हैं। आप सबको क्या लगता है यहाँ इश्कन इश्कन करने बैठी हूँ मैं? मनमोहिनी ने बिना रुके सब कह डाला। संतोष कहने लगा ''अच्छा मन मोहिनी मैडम रहने दीजिए अब हो गई गलती, आपने इतनी पर्सनली बात करके सिलेक्शन की विश दी थी। सो, थोड़ा कनफ्यूजन हो गया था।'' अरे भाड़ में जाए विश! देखे हमारा काम होता है हर स्टूडेंट का बेवजह उत्साह बढाना समझे आप? वरना हम भी जानते हैं कि 100 में से 10 ही सेलेक्ट होते हैं बाकी गधे ही होते हैं पर हमें सबको घोड़ा कहना पड़ता है।

अब दिमाग मत खाइए, जाइए और आगे से बिना मतलब ना ऑफिस आना ना फोन करना आप, समझ गए न? मन मोहिनी रजिस्टर निकाल कर कुछ लिखने लगी। संतोष का मन जल रहा था। उसका क्लास करने का मूड नहीं हुआ। वह सीधा कोचिंग से बाहर निकाला और समोसे की दुकान पर पहुँच पहले समोसा खाया। फिर मोबाइल से मनमोहिनी का नंबर बड़े भारी मन से डिलीट किया। अभी वहाँ से निकला ही था, सामने गब्बर की जूस की दुकान पर उसे वही लड़की दिखाई दी। क्लास वाली जिसने उसको बकलोल कहा था। हाय सेंटी कैसे हो आज क्लास नहीं गए क्या? लड़की ने संतोष को देखते ही पूछा। उसके मुँह से सेंटी नाम सुनते ही संतोष का बुझा चेहरा पुनः खिल उठा। उसके नए रूप को नया नाम दे दिया था, उस लड़की ने। जी हाँ आज नहीं गया क्लास। आप भी नहीं गई आज क्या? संतोष ने पूछा, अच्छा यही है क्या कल वाला बकलोल दूसरी लड़की ने पहली से पूछा। हाँ यही है बेचारा पर आज देखो मुछ पर दोबारा रेजर मार के आया है। पहली लड़के ने कहा। और मेरे प्यारे हनुमान, नाम तो पूछ लो हमारा। मन मोहिनी का तो नंबर तक माँग लिए थे। पहली लड़की ने फिर हँसते हुए कहा। जी आपको कैसे पता? संतोष को बड़ा आश्चर्य हुआ जानकर। यह बात उसने रात ही को सिर्फ मनोहर को बताई थी। ''अरे प्यार मोहब्बत कहाँ छुपता है सेंटी जी!'' दूसरी लड़की ने मजे लेते हुए कहा। ''लो आओ जूस पी लो, अभी अभी तुम्हारा ब्रेकअप भी हो गया है। हमें यह भी पता है।'' पहले वाली लड़की ने मुस्कुराते हुए कहा। संतोष का चेहरा अबकी शर्म से लाल-लाल टाइप हो गया। यह पहला मौका था। जब संतोष एक नहीं बल्कि दो-दो सुंदर लड़कियों के साथ खड़ा हो जूस पी रहा था। जी क्या नाम है आप लोगों का? संतोष ने जूस के गले में उतरते ही नयी ताजगी के साथ पूछा। ''लो जी, पहले तो एक का भी नाम नहीं पूछ रहे थे, अब दोनों का चाहिए। खैर जी हमारा नाम विदिशा है और यह मेरी सहेली पायल।'' नंबर चाहिए क्या हमारा भी? पायल ने हँसते हुए कहा।

विदिशा और पायल दोनों एक स्वतंत्र जिंदगी जीने वाली खुले विचारों की लड़कियां थी। पायल के लिए स्वतंत्रता का अर्थ किसी भी तरह से जीने में था। जिसमें मर्यादाओं की बंदिश के लिए कोई जगह नहीं थी। विदिशा लड़कों से बोलती, साथ घूमती और पढती, उसे लड़के और लड़की का फर्क करना कभी नहीं आया। वह दोस्ती के साथ जी रही थी चाहे वह लड़का हो या लड़की। उसे जो अच्छा लगा उसी के साथ बात करना, खाना, घूमना उसे खूब भाता था। दूसरी तरफ पायल के लिए आजादी इससे आगे की चीज थी। वह दुनिया की कोई ऐसी बात जिसमें मस्ती हो, मौज हो, उसे छोड़ना नहीं चाहती थी। पायल रोज लड़कों पर किए नए-नए प्रयोग का किस्सा विदिशा को सुनाती। दोनों खूब मजे लेकर एक दूसरे को सुनते। विदिशा ने ना कभी उसके प्रयोग को अपने जीवन में उतारा, न ही पायल को किसी अच्छे बुरे काम के लिए रोका। एक दिन विदिशा अपने कमरे पर अकेली थी। सुबह के चार बजे होंगे। तभी दरवाजे की घंटी बजी। सामने पायल को हाथ में मिठाई का डिब्बा लेकर देखा और उसे अंदर आने के लिए कहा। विदिशा अंदर आते ही बेड पर जा गिरी। और कहने लगी अरे क्या बताऊँ मेरी जान, आज अजीब बंधु के चक्कर में पड़ गई। विदिशा ने पूछा, क्यों क्या हुआ, बहना बहना कहकर रोने लगा था क्या? तब पायल कहती है, नहीं यार क्या बताऊं, वह एक मेरे फ्रेंड का फ्रेंड है कौशिक नाम है। तीन दिन पहले इकोनॉमी के कुछ नोट्स बनाने दिए थे। पूरा ही नहीं कर पा रहा था। आज मैंने सोचा थोड़ा सा चार्ज कर दूँ, तो शायद पूरा कर दे।

लिखने बिठाया हाथों को रोककर हल्का सा टच किया। और बोली कितना अच्छा लिखते हो, तब तो रफ्तार पकड़ी बंधु ने। साला इतने धीरे लिखता है कि रात भर लिखवाया तो छ पन्ना लिख पाया। संतोष कोचिंग क्लास पहुंच चुका था। आज से लोक प्रशासन की कक्षाएं प्रारंभ होनी थी। कक्षा में पहुँचते संतोष ने अपनी सबसे आगे वाली सीट पकड़ ली। मन ही मन सोच रहा था कि शायद विदिशा ने भी उसका ही कांबिनेशन पकड़ा हो। थोड़ी देर में विदिशा कक्षा में चुपचाप पिछली बेंच पर जा बैठी। इतने में लोक प्रशासन के शिक्षक 'प्रफुल्ल बटोहिया' पहुँच गए। बटोहिया सर ने लोक प्रशासन विषय का महत्व बताते हुए, कहना शुरू किया। देखिए एक लोक सेवा की तैयारी करने वाले विद्यार्थी के लिए लोक प्रशासन विषय से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। यह विषय आपमें पढ़ाई और परीक्षा की तैयारी के दौरान ही एक प्रशंसक गढ़ देता है। आप एक अधिकारी की तरह सोचने लगेंगे। आपको खुद में एक आईएएस बैठा हुआ नजर आएगा। सर की क्लास खत्म होते ही संतोष उनके पीछे ऑफिस के अंदर आया और सर के पाँव छुए।

दुख मोचन सर आज भी कक्षा में आधे घंटे लेट पहुँचे। आते ही विद्यार्थियों के स्वास्थ्य और उनके खान-पान पर परिचर्चा प्रारंभ कर दी। ''आपने दुर्खीम टिफिन वाले का नाम सुना है?'' दुख मोचन सर ने पूछा हाँ सर, हम तो लेते हैं उसी से एक लड़के ने कहा। कैसा खिलाता है? दुख मोचन सर ने दूसरा सवाल पूछने पर, ''सर पहले तो अच्छा ही खाना देता था इधर कुछ दिनों से स्तर गिरा दिया जैसे तैसे बनाकर भेज देता है। एक ही सब्जी लगातार पाँच दिन देता है। हम तो बंद कर दिए।'' दुख मोचन सर कहते हैं, ''देखिए असल में जो मुख्य रसोईया था, वह अभी कुछ दिन के लिए अपने घर चला गया है। बिहार अपने भाई की शादी के लिए। एक-दो और एक्स्पर्ट स्टाफ भी छुट्‌टी पर है। सो एक-दो दिनों के अंदर फिर से क्वॉलिटी मेंटेन हो जाएगी। आप लोग दुर्खीम टिफिन पर विश्वास बनाए रखें।'' यह सब सुनते ही सारे विद्यार्थी भौचक थे। सोचने लगे कि आखिर दुर्खीम टिफिन से दुख मोचन सर को क्या लेना देना। एक लड़के ने पूछने पर सर ने कहा कि दुर्खीम टिफिन वही चला रहे है पिछले दो सालों से। उसी तरह निदेशक खगेंदर तूफानी आ गए। और कहने लगे प्रफुल्ल बटोहिया जी ने आई ए एस की तैयारी पर 'आईएएस बनने के 31 नुस्खे' नाम की किताब लिखी है। एक किताब आपके सामने बैठे विख्यात समाजशास्त्री दुख मोचन मंडल जी की है 'अच्छा भोजन पक्का सिलेक्शन' नाम की अगर आप में से कोई भी सच में सफलता के प्रति गंभीरता से तैयारी कर रहा है तो यह दोनों किताबें बेहद जरूरी है। आप जरूर खरीद ले फायदे में रहेंगे। संतोष यह सब देख रहा था। उसने अपनी जगह पर ही बैठे पीछे मुड़कर देखा तो विदिशा अब तक पेट पकड़ कर हँस रही थी। तब तक विदिशा पीछे से उठ संतोष के पास आ गई। क्लास लगभग खाली हो चुकी थी। उसने संतोष की पीठ पर एक जोरदार ढोल देते हुए कहा, ''क्या सैंटी जी, पूरी फीस जमा कर दिए हैं ना, यही टेंशन हो रहा है क्या?

दिन महीने गुजरते गए। जिंदगी अपनी चाल में चली जा रही थी। एक दिन सुबह-सुबह संतोष को मनोहर का फोन आया की साहब का बर्थडे है सभी मित्रों के साथ के राय साहब के कहने पर मनोहर ने पायल को भी बर्थडे पर बुलाया था। भरत, विमलेंदु, रुस्तम, गुरु, जावेद खान सभी लोग पहुँच गए। राय साहब को इंतजार था पायल का। थोड़ी देर में पायल वहाँ पहुँचती है। मनोहर राय साहब से परिचय करवाता

है। इन्हीं का आज बर्थडे है, ऐसा कहता है। राय साहब कहते हैं की कृपा शंकर नाम है मेरा। ''हैप्पी बर्थडे कृपा, मस्ती में रहो यार!'' पायल ने हाथ मिलाते हुए कहा। हाथ मिलाते ही राय साहब मतवाला हो गए थे। शरीर में कंपन और आँखों में झिलमिल सा दिखने लगा। पायल कहती हैं ''वो सब छोड़ो ना कृपा, यार मुझे यहाँ स्मोकिंग कि मेल आ रही है। कोई पीता है क्या सिगरेट? पायल ने सब की तरफ देखते हुए पूछा सब समझ गए की पायल को धुएँ से प्रॉब्लम है, इसलिए वह सिगरेट से बचना चाह रही है। यहाँ तो कोई नहीं पीता पायल जी संतोष ने सब की तरफ से कहा। ''ओह शिट, चलो मुझे अकेले ही पीना होगा। मनोहर तुम तो लो'' पायल ने अपने बैग से दो अल्ट्रा माइल्ड सिगरेट निकालते हुए कहा। वहाँ मौजूद सारे लोगों की आँखें खुली ही रह गई। संतोष तो पहली बार किसी लड़की को सिगरेट पीते हुए इतने नजदीक से देख रहा था। तब मनोहर कहता है ''अब आप लोगों से क्या छुपाना! मैडम बीयर, दारू भी पीती है। निकालिए कहाँ लुकाकर रखे हैं। चलिए जल्दी से पिया- खाया जाय। इनको जल्दी उनके कमरे पर भी छोड़ना होगा।'' राय साहब ने बेड के नीचे से बीयर का कार्टन निकालते ही पायल ने एक खोलकर तुरंत गटक लिया। फिर वोडका माँगा और खुद पेग बनाकर तीन-चार पेग पी लिया। सबके सब चुपचाप उसे देख रहे थे। पायल ने जाते-जाते राय साहब को स्पेशल थैंक्स बोला। राय साहब ने डायरी उठा ली और कहा पायल जी इस पर अपना ऑटोग्राफ और अपना नंबर लिख दीजिए। नंबर लिखते ही भरत उचक्कर डायरी में लिखा नंबर अपने मोबाइल में सेव करने लगा। मैडम मैं भरत हूँ। इंग्लिश मीडियम है मेरा। मैं कॉल करूँगा मैडम भरत पीछे से चिल्लाया। तब तक पायल सीढीयों से उतर चुकी थी। संतोष रास्ते भर बस पीछे हट पायल को देखता रहा। उसने लड़की का ऐसा प्रकार पहली बार देखा था। 'ये लड़की बोल्ड नहीं, क्लीन बोल्ड है।' संतोष ने सोचा।

संघ लोक सेवा की प्रारंभिक परीक्षा के फॉर्म आ चुके थे। फॉर्म भरते ही लड़के पढ़ाई में जुट जाते थे। संतोष मनोहर के साथ सीधे लोक सेवा आयोग के मुख्य कार्यालय धौलपुर हाउस शाहजहां रोड पहुँच गया। यहाँ पर फॉर्म भरने के में एक अलग तरह की फीलिंग आती है। साथ में यूपीएससी की मुख्य इमारत दिखाते हुए यह कहना, यही इंटरव्यू होगा हम लोगों का। यही मंजिल तक आना है। एक प्रेरणादाई प्रक्रिया थी। मनोहर और संतोष फॉर्म डालकर लौटने लगे। तभी पायल किसी लड़के के साथ फॉर्म भरती दिखाई दी। मनोहर ने उसे रोका नहीं। पिछले साल मनोहर के साथ वह फॉर्म भरने आयी थी। पायल हर साल एक नए लड़के के साथ ही फॉर्म भरती है। गुरु, विमलेंदु एक साथ तैयारी कर रहे थे। राय साहब ने भरत कुमार के साथ जोड़ी बनाई थी। मुखर्जी नगर, नेहरू विहार, गांधी विहार, इंदिरा विहार, गोपालपुर, इंदिरा विकास, निरंकारी कॉलोनी, वजीराबाद, परमानंद कॉलोनी, रेडियो कॉलोनी, विजयनगर क्रिश्चियन कॉलोनी ऐसे ही इलाके थे, जहाँ वातावरण में ऑक्सीजन से ज्यादा फैक्ट तैर रहे थे। वायुमंडल में नाइट्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड, हाइड्रोजन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन इत्यादि से ज्यादा मात्रा भूगोल, इतिहास, दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र जैसे विषयों के प्रश्न और उत्तरों की थी। ऐसा जहाँ- तहाँ हो रहे आधिकाधिक टेस्ट सीरीज के उत्सर्जन के कारण था।

गुरु अपने कमरे पर अखबारों से बने हुए नोट्स पढ़ रहा था कि अचानक उसके फोन की घंटी बजी। मयूराक्षी का फोन था लेकिन उसने उठाया नहीं। मयूराक्षी को वह तब से जानता था जब से दोनों साथ-साथ

कोचिंग ले रहे थे। मयूराक्षी पढ़ने लिखने को लेकर समर्पित लड़की थी। शर्मीली भोली कम बोलने वाली। घर से यहाँ आने के बाद गुरु ही था जिससे उसने सबसे ज्यादा बातें की थी। गुरु के अलावा वह किसी को नहीं जानती थी। दोनों घंटे बैठकर कई मुद्दों पर बहस करते थे। एक दिन गुरु ने मायुराक्षी को फोन लगाया। घंटी लगातार जा रही थी। फोन रिसीव नहीं हो रहा था। वह पार्क में खड़ा हो बार-बार फोन लगाए जा रहा था। तभी उसने जो देखा उस पर उसकी आँखों को विश्वास नहीं हो रहा था। मयूराक्षी ठीक बगल वाली सड़क से गुजर रही थी। वह गुरु का फोन काट रही थी। उसके साथ एक लड़का था। गुरु ने खुद को संभाला और उन दोनों के पीछे जाने लगा। मयूराक्षी अपने फ्लैट पर पहुँची। बाद में वह लड़का भी नीचे से दूध लेकर उसके फ्लैट में गया। गुरु घंटे इस पार्क में आकर बैठा। इस समय मयूराक्षी का फोन आया और उसने बताया कि वह व्यस्त थी इसी कारण कॉल नहीं उठा पायी। गुरु ने मुस्कुराते हुए उसका कहा मान लिया। और शायद वही उसकी आखिरी बात थी। मयूराक्षी को गुरु अब जान चुका था कि, मयूराक्षी कभी उसकी नहीं थी, और ना कभी होगी। गुरु ने मयूराक्षी को यह बात नहीं बताई थी कि वह उसके लिए क्या महसूस करता है। दूसरे दिन गुरु मयूराक्षी के कमरे पर पहुँच गया। अभी सीढ़ी चढ़ बालकनी में पहुँचा ही था कि वह लड़का दरवाजे से सटे नल के पास ब्रश करता हुआ दिखाई दिया। गुरु उल्टे पाव वापस आ गया। इस बार वह दुखी नहीं था बल्कि निश्चिंत था इस बात को लेकर के मयूराक्षी ने अपनी जिंदगी चुन ली है। तब से कोई संपर्क नहीं हुआ था दोनों का। इतने सालों की पूरी कहानी नजर के सामने से गुजर गई गुरु के। अब उसे ध्यान आया कि कॉल आया आधा घंटा हो गया उसने अपनी ओर से कॉल लगाया मयूराक्षी को कहा, हेलो कैसी हो मयूरी, सॉरी मैंने फोन साइलेंट रखा था सो उठा नहीं पाया। तुम्हें मेरा नंबर कहाँ से मिला गुरु ने एक साथ में कहा। क्यों अमेरिका में बस गए हो, जो तुम्हारा नंबर भी नहीं मिलेगा। विमलेंदू से लिया था नंबर तुम्हारा। गुरु कहता है, यह बताओ फिर आज क्यों फोन किया है? मयूराक्षी कहती है ''हाँ आज लगा अब मेरी जरूरत है, मैं ही कर लूँ। तुम्हें तो कभी मेरी जरूरत पड़ती नहीं जो करोगे।'' देखो मुझे कुछ नोट्स चाहिए और जो भी महत्वपूर्ण इश्यूज है उस पर बात कर मैटर तैयार करना है, करवा दोगे ना?'' गुरु ने सोचा जो उसके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण इशू था उस पर कभी मयूराक्षी से बात नहीं कर पाया। बस दुनिया भर के इश्यूज पर बात करता रहा। एक बार फिर उसे वही करना था। ठीक है कल से डिस्कशन कर लेंगे मैं शाम 4:00 बजे उसी पार्क में आ जाऊँगा गुरु ने कहकर फोन काट दिया गुरु की आँखों में कुछ नहीं था पानी भी नहीं।

पीटी परीक्षा की प्रेशर से पूरा मुखर्जी नगर उबल रहा था। आखिर वह दिन आ ही गया जिसके लिए लाखों विद्यार्थी देश के कोने-कोने से यहाँ आते थे। आज पीटी का एग्जाम था। राय साहब नहा धोकर तैयार होकर निकल गए। लगातार फोन पर फोन आ रहे थे। फूफा, मौसी, नाना, दादी, बड़का चाचा, छोटका मामा सब का फोन आ रहा था और परीक्षा के लिए आशीर्वाद मिल रहे थे। इधर संतोष पूजा पाठ कर तिलक लगा निकला था। 15 दिन पहले ही पिताजी ने कुरियर कर पन्ना और पुखराज की अंगूठियां भेजी थी। उसने उन्हें ऐसे पहना जैसे कोई युद्ध में जाने से पहले कवच पहनता है। माँ ने कुल देवता और याददाश में जितने भी देवी देवता थे सबको याद कर लेने को कहा था। गाँव के जख बाबा पर चढ़ा भभूत का पैकेट

रख लिया था संतोष ने। दादी ने गाँव के भैरव बाबा के मंदिर में चढ़ा अक्षत भी भिजवाया था और कहा था परीक्षा हॉल में घुसते पहले उसे अपने आसपास छिंट दें। बत्रा पहुँचते ही उसे याद आया कि उसने दही चीनी नहीं खाया था। उसकी नजर मदर डेयरी की दुकान पर गई। एक मीठी दही लेकर झटपट खाया। उधर मनोहर, गुरु, विमलेंदू, मयूराक्षी भी अपने-अपने सेंटर पहुँच चुके थे। दोनों सत्रों की परीक्षा खत्म होने के बाद संतोष पसीने से नहाया हुआ चेहरे पर थकान और संतुष्टि का मिश्रित भाव लिए इस तरह निकला जैसे सुनीता विलियम्स अंतरिक्ष यात्रा के बाद यान से बाहर निकली हों। दूसरे दिन शाम को सब बत्रा पर मिले। एक दूसरे का स्कोर पूछा तब सबसे ज्यादा स्कोर संतोष का आ रहा था। सभी लड़कों का यह आत्मविश्वास और शानदार परफॉर्मेंस का भरोसा धीरे-धीरे ७ दिनों में टूटा था। क्योंकि ७ दिन पहले प्रश्नों के सही उत्तर तो सारे कोचिंग और विद्यार्थी भी मिलकर ढूँढ नहीं पाते थे। इंटरनेट भी बस सहायता ही करता था। सीधा उत्तर तो गूगल के बाप के पास भी नहीं होता था। सब चाय पी रहे थे तब परफ्यूम छिड़क काला चश्मा लगाए जींस शर्ट पहने एक लड़का आया और उन सब से हाथ मिलाने लगा। ''अरे, अरे ई का हो! जादू! रायसाहब आप? आप तो एकदम लौंडा लग रहे हैं।'' मनोहर ने उछलते हुए कहा राय साहब के व्यक्तित्व में यह बदलाव गोरेलाल यादव ने लाया था। जो अभी उनका रूम पार्टनर था। गोरेलाल आजमगढ़ से अपनी किस्मत चमकाने आया था। असल में कुक के द्वारा खाना बनवाने से खुद के अंदर एक अधिकारी वाली फीलिंग आती थी। गोरेलाल के कमरे पर जैसे ही उसकी कुक आती। एक गाना तभी हमेशा मोबाइल पर बजता रहता था। 'हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब, एक दिन।' गोरेलाल के इस प्रेरक गीत का रहस्य किसी को समझ नहीं आता था। यह गाना किस के लिए बजता था आईएएस के लिए या आयशा के लिए। गोरेलाल बेड से उठकर किचन में जाता और जब तक वह बर्तन धोती तब तक गोरेलाल सब्जी काटकर तैयार कर लेता। उसके बाद वह चूल्हा जलाकर उसमें कढ़ाई चढ़ाती थी और अंदर कमरे में जा लैपटॉप खोल बैठ जाती। फिर गोरेलाल उसकी पसंद से खाना बनाता। दोनों साथ खाते फिर कुक चली जाती। इसीतरह रायसाहब ने पायल की व्यवहार को देखकर बहन मान लिया। कृपा भाई पर चलो नोटस दे दो फिर आती हूँ रक्षाबंधन के दिन। पायल ने भी पीछा छुड़ाने वाले मूड में कहा। ये लीजिए निकाल कर रखा था रात को ही और सुनिए ना जब भी नेहरू विहार आओगी हमारे कमरे पर बेहिचक आ जाया करिए। अपना घर समझिए। अरे, भाई का कमरा है। आपका हक है बहन, रायसाहब ने कलेजे पर पत्थर रखते हुए संपर्क बनाए रखने का आखिरी दावा खेल दिया था।

पीटी तनाव से मुक्त होने के बाद सभी हल्का महसूस कर रहे थे। यही वह सबसे अनुकूल समय होता था, जब वर्ष भर घर नहीं जाने वाले विद्यार्थी भी एक बार अपने घर गाँव घूम आते थे। राय साहब तो पिछले डेढ़ साल से घर नहीं गए थे। जावेद और राय साहब दोनों एक ही ट्रेन से गाँव जा रहे थे जाते वक्त सफर में आसपास के लोग उन्हें सम्मान से देख रहे थे। ट्रेन से उतरते वक्त कुछ लोगों ने इनका नंबर मांग लिया, तो कुछ लोगों ने उनके साथ फोटो निकाल लिया। और कहने लगे हमें याद रखना कल कहीं आईएएस बने तो हमें मत भूलिएगा। घर पहुँचते ही राय साहब ने पिताजी को प्रणाम किया। खुश रहो आ गए ''ई मोंछ ओंछ कहा उड़ा दिए जी, का दशा बनाए हो जबरदस्ती जवान बनने के फेर में!'' पिताजी ने

अपने अंदाज में कहा तभी आवाज सुन माँ दौड़ती हुई बाहर आयी। वह आप भी गजब आदमी है डेड बरस पर लड़का घर आया है और द्वार पर प्रवचन शुरू कर दिए। तनी भी नहीं बुझाता है आपको एकदम माँ ने एकदम चुप कर दिया था पिताजी को। पिताजी कहते हैं कुछ अच्छा सा खाना बना खिलाओ पिलाओ इसको। आखिर पिता का मन अपनी गलती समझ गया था। सुनो अभी 10 दिन बढ़िया से खाओ पियो। छोड़ो एकदम पढ़ाई का चिंता। देख नहीं रहे हो बाप की उम्र का दिखने लगे हो अभिए इसी उमर में!'' बोलकर जगदानंद जी बाहर किसी काम से निकल गए। शाम को राय साहब गाँव घूमने निकले। बगल मंदिर के पास चबूतरे पर लोग बैठे थे। शाम को यहाँ बड़े बुजुर्ग उठते बैठते देश दुनिया की चर्चा करते थे। कृपा शंकर के आते ही सबने उनका स्वागत किया और बातें चलती रही। बात-बात में दीनानाथ जी ने राय साहब को अंबेडकर की जन्म तिथि के बारे में पूछा। राय साहब को तिथि याद नहीं आ रही थी। तो रायसाहब को अंबेडकर की मृत्यु के बारे में पूछा। तनिक इतना बता दीजिए कि ये नेहरू के पहले मरे थे कि बाद में, मृत्यु कब हुआ था इनका। तिथि याद ना आने पर राय साहब कहने लगा यह सब आदमी कभी मरता थोड़े है। युगों युगों तक जिंदा रहता है। हमारे विचारों में जिंदा है अंबेडकर, हमारे संस्कारों में जिंदा है अंबेडकर, हमारे संविधान के रूप में हमारे मार्गदर्शक की तरह भी जिंदा है अंबेडकर। अंबेडकर मर नहीं सकते चाचा, कभी नहीं।

घर आने पर पिताजी ने मंदिर वाले चबूतरे पर हुई चर्चा के बारे में पूछा और बेटे को पुछ रहे थे कि तुम्हें अंबेडकर की जन्म तिथि तक मालूम नहीं है। पिछले 7 साल से तुम पढ़ाई कर रहे हो। ठीक है नौकरी भाग्य का चीज है। लेकिन जानकारी तो होना चाहिए, वह लेवल का। इसको अंबेडकर के जन्म का तिथि नहीं पता है। तब माँ बीच में बोली अब चुप भी कीजिए। अगर नहीं पता तो उसमें कौन सा कहर आ गया? और आप कहां उस घर उजड़न दीनानाथों के बात में लगे हैं। उसका अपना बेटा का किया? थाना में सिपाही है, दारू पीता है, दस तरह के कुकर्म करता है। हमारा बेटा कुछ करे ना करें कम से कम कोनो गलत आदत तो नहीं है ना, कोनो खाता-पीता नहीं है ना, संस्कार रहेगा तो कहियो कुछ कर ही लेगा। इधर महादेवपुर में जावेद खान के चाचा ने तांडव छेड़ रखा था। तुम्हारे अब्बा कुछ अलग से तो छोड़ गए नहीं थे। जो था बस खेती ही थी अब हम जितना कर सकते थे किया। तुम्हारे खेत भी संभाले, उपज भी देखो और जितना बन पाया तुम्हारी अम्मी के हाथ दे दिया। अब जो भी खेत बचा है या तो बेच दो या खुद आकर संभालो। हमसे अब नहीं हो पाएगा। जावेद के चाचा इलियास मियां ने कहा। पर चाचा जान हम 15 बीघा से तीन बीघा पर तो आ गए सब तो आप ही को बेच दिया। अब कुछ दिन की बात है। आप संभाल दो इसमें कौन सी आपत आ गई। अम्मी बीमार है इसलिए थोड़ा ज्यादा पैसे माँग रहा हूं। अगली उपज में हिसाब कर लेना आप। जावेद ने भरे गले से कहा। चाचा जान थोड़ा सब्र कर लो इस बार इम्तिहान दिया है। नतीजा आए तो सब वसूल कर दूँगा। कर्ज का कहर लेकर नहीं मरूँगा। जावेद की मजबूरी का फायदा उठाकर इलियास मियां ने उसकी सारी जमीन औने-पौने दाम देकर खरीद ली थी। आज भी माँ के इलाज के लिए एक बिघे का सौदा कर आया था जावेद। अब उसके सपने और महादेवपुर के बीच केवल दो बीघा का फैसला था। यह बिकता कि उसे पढ़ाई छोड़ वापस आना होता। उस दिन वह माँ से लिपटकर खूब रोया

था। पता नहीं दफन होने को 2 गज की जमीन भी बचेगी कि नहीं, पर तू मत हार मानना जावेद। अब्बा का सपना पूरा करना यह जमीन जाने दे तुझे तो आसमान जितना है।

जावेद माँ को पीएमसीएच पटना में दिखाकर वापस दिल्ली लौट आया था। रायसाहब भी तीखे – खट्टे अनुभव लेकर घर से वापस आ गए थे। रोज बत्रा पर रिजल्ट आने की अफवाह उड़ती। एक दिन परिणाम आ ही गया। मनोहर लगातार रायसाहब को फोन लगा रहा था। लेकिन फोन उठाया नहीं जा रहा था। मनोहर ने अपना खुद का रिजल्ट देखना भी जरूरी नहीं समझा खुद को लेकर आश्वास्त था कि कोई अनहोनी नहीं होगी,फैल ही हुआ होगा। गुरु, विमलेंदू सब से बात हो गई इनका पीटी होना अपेक्षित ही था। इस बार मयूराक्षी ने बाजी मार दी थी पीटी में। बहुत बार फोन करने पर भी रायसाहब फोन नहीं उठा रहे, इसलिए संतोष को लेकर मनोहर और गुरु राय साहब के कमरे पर जाते है। मनोहर ने कहा, उल्टा सीधा तो नहीं हो गया होगा ना गुरु भाई? घर पर भी बहुत बेइज्जत होकर आए थे, परेशान थे। चुप करो चलो पहले देखते हैं, डर तो मुझे भी लग रहा है। गुरु ने कहा पुलिस को 100 नंबर पर डायल कर बता दिया जाए क्या की फोन नहीं उठ रहा है। अरे नहीं भाई पहले चलकर हालत तो जान लेते है। हो सकता है फोन गिर गया हो। गिरता तो कोई उठाकर ऑफ कर देता। इतना रिंग हो रहा है पर ऑफ भी तो नहीं हो रहा है। उन्हें लड़ना चाहिए था परिस्थितियों से। आईएएस ही सब कुछ थोड़े था। होनी अनहोनी की बातें करते तीनों दौड़ते हुए रायसाहब के फ्लैट पहुँचे। सीढीओं पर चढ़ते तीनों के पाँव काँप रहे थे। दरवाजा खोलने पर सामने रायसाहब को देखते ही लिपटकर रोने लगे। वो भी यह दृश्य देख मनोहर से लिपटकर रोने लगे। राय साहब पीटी में फेल हुए थे, तो एक साथ तीन बीयर की बोतल गटक कर सो गए थे। इसलिए उनको अभी भी कुछ बहुत ज्यादा समझ नहीं आ रहा था। संतोष ने किचन से नींबू लाकर उनको चटाया। थोड़ी देर बाद उनको पूरी तरह होश आया। गुरु भाई हम बर्बाद हो गए। यह हमारा लास्ट अटेम्प्ट था। हमारा नहीं हुआ पीटी, सब खत्म। अब पीसीएस का सहारा है। पढ़ाई का तरीका बदलना होगा, राय साहब ने आँसू बहाते हुए कहा। संतोष ने सुबह पहले पिता को फोन लगाया। हेलो बेटा कैसे हो? विनायक बाबू बोले जा रहे थे। लगभग 30 सेकंड चुप रहने के बाद उधर से जवाब आया। ''पापा वो रिजल्ट आ गया पीटी का हमारा नहीं हुआ, बोलकर संतोष फूटकर रोने लगा। ''अरे तो इसमें रोने का क्या है! अरे चुप पागल! देखिए, अरे बेवकूफ! अरे चुप! अरे कहाँ है इसकी माँ, देखो भाई, समझाओ इसको, अगली बार हो जाएगा, बेटा रोओ मत, फिर पढ़ो मेहनत से, जरूर होगा।'' विनायक बाबू ने पहले तो बेटे के इस तरह रोने से असहज होने के बाद ढाँढस बँधाते हुए कहा।

पीटी फेल होने के बाद गुरू के यहा जाकर विषय बदल लिए। गुरु ने इतिहास के श्यामल सर से संतोष की सारी बातें बातें बताई और सर ने सीधे क्लास करने की स्वीकृति दे दी। तय हुआ की फीस पर कोई बात नहीं होगी। संतोष जितना जमा कर पाएगा उतना ही दे। फिर गुरु ने हिंदी साहित्य के लिए हर्षवर्धन चौहान सर से बात की। संतोष की आपबीती सुन कर उनसे अनुरोध कर वहाँ भी फीस की रकम आधी करवा दी। दोनों जगह बात हो जाने के बाद संतोष काफी हद तक तनाव से निकल गया था। अब संतोष के सामने समस्या यह थी कि जितनी भी रकम लगती थी, उतनी भी वह कहाँ से लाए। साल भर में अपने लिए

भी कुछ बचाकर उसने रखा नहीं था। सब पार्टी और मस्ती में जा चुका था। उसके पास बस एक ही रास्ता था माँ। उसने साहस बँधाकर माँ को फोन लगाकर 25000 माँगे। विनायक बाबू से बात हुई संतोष की माँ ने कहा गहने है घर में, 50000 का तो होगा ही। बेच के जितना जरूर होगा उसको भेजेंगे। विनायक बाबू बिना कुछ जवाब दिए चल दिए। शाम को स्कूल से घर लौटने में थोड़ी देर हो गई थी। कमला देवी से कहते है, आप ही फोन करके कह दीजिए, की पैसा डाल दिए हैं 30000 रु.। सुनते ही कमला देवी खुशी से उछलकर फोन उठाने दौड़ी। संतोष को फोन लगाकर बता दिया कि पैसा जरूरत से ज्यादा भेज दिया है पापा ने। विनायक बाबू इतने पैसे अपने एक परिचित से ब्याज पर लेकर आए थे।

गुरु, विमलेंदु और मयूराक्षी सब मुख्य परीक्षा की तैयारी में पूरे जी जान से भिड़े हुए थे। जल्दी ही मुख्य परीक्षा का समापन भी हो गया। संतोष भी अपनी नई कोचिंग में पूरी मेहनत के साथ पढ़ाई में जुड़ गया था। इस बार वह कोई कमी नहीं रखना चाह रहा था। मुख्य परीक्षा का परिणाम भी आ गया था। गुरु, विमलेंदू और मयूराक्षी साक्षात्कार के लिए योग्य घोषित हो चुके थे। मयूराक्षी ने पहले फोन गुरु को लगाया ''अरे गुरुदेव मेरे मुझे विश्वास नहीं हो रहा है, सुनो मैं मिठाई लेकर पार्क आ रही हूँ, तुम जल्दी पहुँचो'' कहकर मयूराक्षी ने फोन काट दिया। पार्क के रास्ते में पडने वाली मिठाई की दुकान पर उसकी नजर मयूराक्षी पर पड़ी। वह उस लड़के के साथ मिठाई खरीद रही थी। उसने देखा लड़के ने एक मिठाई पहले उसे अपने हाथों से खिलायी और फिर दोनों गले लगे। वहीं से तुरंत मयूराक्षी ने गुरु को फोन लगाया पार्क में पहुँचते ही उसने सबसे पहले दौड़कर गुरु को गले लगा लिया। गुरु क्षणभर स्थिर रहा फिर एक झटके में उसने मयुराक्षी को अपने से छुड़ा अलग कर दिया। और कहा ''सबके गले लगना ठीक नहीं मयूराक्षी। जिसकी हो उसी के गले रहो, हम ऐसे ही ठीक है।'' गुरु को बाद में पता चलता है कि वह जिसके साथ रह रही थी और अभी कुछ देर पहले मिठाई के दुकान में जिसके गले लग गई थी, वह उसका छोटा भाई था, पराशर। गुरु यह जानकर हर अगले पल जैसे जमीन में धँसा जा रहा था। ''एक लड़के लड़की के रिश्ते को लेकर सच में तुम भी औरों की तरह एक मामूली लड़के ही निकले गुरु'' मयूराक्षी ने वही बैठते हुए कहा। मैं जा रही हूँ गुरु, मुझे बहुत आगे निकलना है। तुम्हें मालूम है, तुम्हारे मामूली साबित होने का तुमसे ज्यादा दुख मुझे है। क्योंकि मैं तुम्हारे साथ आगे निकलना चाहती थी पर अब नहीं। इतने मामूली आदमी के साथ कैसे गुरु? कहकर वह फिर गुरु के गले से लिपट गई दोनों खूब रोए। दोनों समझ गए थे यह आखिरी मुलाकात है शायद। यह बात उसने विमलेंदू को बतायी तो वह भी भौंचक था और शर्मिदा भी, क्योंकि उसने भी पराशर को मयूराक्षी का प्रेमी ही बताया था।

विमलेंदू की पूरे भारत में 42 वी रैंक आई थी। गुरु को अपना परिणाम पता चल गया था। गुरु परिणाम सूची से बाहर था। उसने देखा रैंक 21 के आगे मयूराक्षी का नाम लिखा था। उसने फोन निकाला फिर रख दिया वह यही सोच रहा था मयूराक्षी ने ठीक ही कहा था उसे बहुत आगे निकलना है। मुझ जैसे मामूली आदमी को अब नहीं आना चाहिए उसके रास्ते। रिजल्ट की खबर जान बाबूजी लगातार फोन कर रहे थे। गुरु ने पहले ही की तरह फोन निकाल कर एक मैसेज टाइप किया, बाबूजी मेरा संघर्ष जारी है। बाबूजी को भेज दिया।

विमलेंदु के घर स्वर्ग उतर आया था। पिता भोलानाथ यादव अपनी टूटी कुर्सी पर इंद्र के समान बैठे थे। इतने में साँय-साँय करती सायरन की आवाज आयी।ठीक उन्हीं के दरवाजे पर आकर छः गाड़ियों का वह काफिला रुका। झट से पुलिस का जवान उतरकर आया और गाड़ी का दरवाजा खोला। भोलानाथ यादव ने देखा, इस सुबे के सबसे प्रभावी कैबिनेट मंत्री तेज नारायण यादव थे। ''नमस्कार भोलानाथ जी, कैसा स्वास्थ्य है आपका?'' मंत्री जी ने हाथ पकड़े बोला। एकदम बढ़िया, बस दुआ है, आप सबके आशीर्वाद से बेटा कलेक्टर बन गया, और क्या चाहिए हम किसान आदमी को!'' भोलानाथ ने काँपते स्वर में बोला। अरे आशीर्वाद तो दीजिए, आप हमारी लड़की को, समधि बनाने आए हैं हम आपको। कहकर गले पर हाथ रख दिया मंत्री जी ने। भोलानाथ सोचने लगे कि कितना पुण्य जमा कर आए थे हम पिछले जनम में। मंत्री जी ने कहा 4 करोड़ रूपया और बनारस में पेट्रोल पंप और लखनऊ में एक मकान सोचे हैं। कुछ और मन हो तो जरूर बताइएगा। भोलानाथ जी आप समय दे दीजिए, एक बार आप सब हमारी बिटिया भी देख लेते। मौका निकाल के मंत्री जी के अंदर का पिता बोला। एक बार विमल से पूछ लेते मतलब उसको हम बता देते फिर आ जाते हैं रसम करने।

इधर विमलेंदु ने तो अपना निर्णय ले रखा था। वह बस बाबूजी को खबर ही सुनने वाला था। उसने ट्रेनिंग अकादमी में ही अपने साथ ट्रेनिंग कर रही उड़ीसा की रितुपर्णा महापात्रा के साथ विवाह करना तय कर लिया था। दोनों को बीच प्रेम सावन में धूप की तरह बड़ी तेजी से उग आया था। विमलेंदू ने बाबूजी के फोन से पहले ही फोन करके अपना निर्णय सुना दिया था। शादी की तिथि भी तय कर ली थी। भोलानाथ यादव को लगा जैसे किसी ने उड़ा कर पर काट लिए हो। मंत्री जी को खबर भिजवा दी की बेटे ने नाता तोड़ लिया है हमसे। अपनी मर्जी का मालिक हो गया है।

रितुपर्णा महापात्रा उड़ीसा के मुख्य सचिव रहे गजपति महापात्रा की बेटी थी। उसके खानदान में तीन पीढियों से आईएएस ही थे सब। दो महीने बाद शादी थी। विमलेंदू घर आया पिताजी माँ जी समेत घर भर की खरीदारी की और सबके लिए भुवनेश्वर का टिकट भी बुक कराया। सारे टिकट एसी फर्स्ट क्लास के थे। भोलानाथ यादव कुछ चुनिंदा बारातियों को लेकर भुवनेश्वर पहुंचे। एक फाइव स्टार होटल में उनको ठहराया था। शादी होने के बाद विमलेंदू को लेकर उसके ससुराल वाले अपने घर पहुँचे। रितुपर्णा ट्रेनिंग के बाद पहली बार ही घर आई थी। शादी तो होटल में हुई थी, सो सब सीधे होटल ही पहुँचे थे। घर पहुँचते ही दरवाजे पर चेरी, रितुपर्णा का सबसे प्रिय कुत्ता, खड़ा मिल गया। रितुपर्णा ने उसे गोद में लेकर गले लगा लिया। विमलेंदू की तरफ बढाकर उसका माथा चूमवाया। रात को विमलेंदू बिस्तर पर था। तभी रितुपर्णा चेरी को लेकर आयी। डार्लिंग, आज मेरी जिंदगी की इतनी खास रात है, मैं चाहती हूँ, इस स्पेशल रात को चेरी हमारे ही साथ सोए। दृश्य कुछ ऐसा था कि अब चेरी उन दोनों के ऊपर चारों टांगे फैला कर लेटा हुआ था। जिंदगी भर जिस कुत्ते की चूतड़ पर ढेला मार उसे द्वार से भगाते इतना बड़ा हुआ, सोचा भी नहीं था कि अपनी शादी की पहली रात उसी के साथ सोएगा। उसे इंसान होने का दुख हो रहा था। रितुपर्णा रात भर चेरी के पेट में उंगली से गुदगुदी कर, उसके बचपन से लेकर अभी तक के नटखट पन के किस्से सुनाती रही और सवेरा हो गया।

मनोहर खाना खाकर कमरे पर अखबार पलट रहा था कि राय साहब की कॉल आनेपर, मनोहर, गुरु और सब लोग तिमारपुर थाना तुरंत पहुँचते हैं। वहाँ जाने पर पता चला की राय साहब के साथ रहने वाला गोरेलाल उस कुक को लेकर भागा था। मनोहर ने चिढते हुए कहा, रायसाहब गोरेलाल उसको लेकर भागा है, फिर आपको क्यों उठा लिया पुलिस ने। तो राय साहब कहते हैं, बगल वाले हमारा नाम ले रहे थे। हम कभी कबार उस कुकवा के साथ नेहरू विहार के पार्क में घूमते थे। एक बार उसका हस्बैंड ने भी देख लिया था। उसी ने नाम दिया दिया होगा। ये है ना अजब प्रेम की गजब कहानी, यह मजा ले चुके हैं जिंदगी का, गुरु ने गिरधर, मनोहर की तरफ घूमते हुए कहा। राय साहब से दो घंटे की पूछताछ के बाद पुलिस ने उन्हें छोड़ दिया। राय साहब को रूम पर छोड़कर मनोहर, गुरु वापस अपने कमरे की ओर जाने को थे कि, बत्रा में जावेद पर नजर पड़ गई। जावेद ने कहा रेल का टिकट लेने आया हूँ, कोई तत्काल करवा दे, माँ बहुत सीरियस है। पहुँचना ही होगा तब मनोहर और गुरु अपने जेब से 2300 रु. निकालकर उसका टिकट बनवाते हैं और उसे ट्रेन में बिठाते हैं। जावेद दूसरे दिन सुबह के 11:00 बजे अपने गाँव महादेवपुर के बस स्टॉप पर उतर चुका था। दरवाजे पर भीड़ लगी हुई थी। यह देख उसके हाथ से बैग छूट गया और बेतहाशा दौड़ा, भीड़ को चीरते हुए सीधे सामने पड़ी माँ से लिपटकर एक बार चीखा और फिर चुप हो गया। सुबह 9 बजे ही माँ दुनिया छोड़ चुकी थी। अम्मी पूछो ना मुझे मेरे नतीजे आए कि नहीं। अम्मी पूछो ना कब आसमान जीतूंगा मैं। इलियास मियाँ ने उसे पकड़कर उठाया और पानी पिलाया। कुछ देर बाद सब जनाजे को सुकून दे, खाक करने चले गए। अपनी ही बची जमीन में लाया था माँ को। माँ पर मिट्टी डाल और खुद को पत्थर कर जावेद घर वापस लौट ही रहा था कि उसका मोबाइल बजा। बिहार लोक सेवा आयोग का अंतिम परिणाम आ गया था। जावेद हाकीम बन गया था। खबर गांव में फैल गई, जावेद वापस माँ की कब्र पर गया और कब्र से लिपट गया और दहाड़ मार कर रोया। पीछे से मौली चाचा ने पीठ पर हाथ धरा और कहा, जावेद तेरी अम्मी तेरे लिए अब्बा से खूब लड़ती थी। देखना आज तेरे लिए अल्लाह से लड़ने चली गई अल्लाह के पास जाकर तेरे नतीजे भिजवा दिए। तेरे लिए कहाँ जाकर खुशियां भेजी उसने, मत रो, वरना उसका दिल दुखेगा। तेरे लिए फरिश्ता थी वह।

गुरु और मनोहर को जावेद के बारे में पता लग गया था। दुख भी था और उसके सेलेक्ट हो जाने की खुशी भी। एक बार फिर से पीटी का फॉर्म आ गया था। इस बार गुरु ने फॉर्म नहीं डाला। उसके पास अब एकमात्र अंतिम अटेम्प्ट बचा था। उसने एक साल रुक जाना ही ठीक समझा। संतोष तो जैसे तैयार बैठा था। इस बार उसने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। संतोष के साथ मनोहर ने फॉर्म डाला था। पीटी की परीक्षा हो गई संतोष संतुष्ट था। बिना वक्त गँवाए मेंस की तैयारी में जुट गया।

संतोष कमरे पर था किसीने रिजल्ट आने की जानकारी दी। उठकर रिजल्ट देखने बगल वाले साइबर कैफे में गया। पहली बार उसकी हिम्मत नहीं हुई, पर उसे पता था की परीक्षा ठीक हुई है। हिम्मत करके अपना रोल नंबर डाला। वहीं बैठ गया संतोष। स्क्रीन पर नॉट क्वालिफाइड लिखा आ गया। वह जैसे-जैसे खड़ा हुआ और सीधे यमुना नदी के पुल की तरफ जाने लगा। उसे खुद पता नहीं था कि वह अब क्या करने वाला है। गुरु रास्ते की दुकान पर खड़ा सिगरेट पी रहा था। इधर कहाँ जा रहे हो? गुरु ने पूछा। ''मरने,

चलना है क्या?'' संतोष ने बिना उसकी तरफ देखे कहा। गुरु ने बड़ी मुश्किल से उसे समझा बूझाकर शांत किया और कमरे पर लेकर आया। एक दिन विनायक बाबू का फोन आ ही गया आखिर। हेलो बेटा क्या हाल है? पिता ने पूछा। जी ठीक हूँ पापा, वहीं पढ़ाई चल रही है। संतोष ने धीमी आवाज में कहा। आखिर क्या सोचे हो आगे, पिता ने अगला सवाल किया। देखो बेटा हमसे जितना भी बन पाया हम किया तुम्हारे लिए, कर्जा पैसा सब लिए। अब भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिला। तुम्हारे भाग्य में आई.ए.ए.स. बनना नहीं लिखा है। ज्योतिषी भी कुंडली देखा तो बताया सिलेक्शन मुश्किल है। उतना पर भी अगर हमारे पास पैसा होता तो हम पक्का वापस नहीं बुलाते, पर अब नहीं सकेंगे। आ जाओ अब वापस। पिता विनायक सिन्हा ने अपनी बात कह दी। संतोष ने फोन काट दिया। फिर राय साहब का फोन आया हेलो संतोष जी हम जा रहे हैं दिल्ली छोड़कर। लास्ट बार मिल तो लीजिए। रायसाहब का आईएएस में प्रयास खत्म ही हो चुका था। पीसीएस भी नहीं हो पा रहा था। घर से वापसी के साथ-साथ शादी का भी दबाव अब बढ़ने लगा था। रायसाहब ने बीएड कर रखा था। अपने गृह राज्य में मास्टरी का फॉर्म भी डाल आए थे। पीसीएस से अभी भी उम्मीद थी। बड़ी मुश्किल से अपने पिता को इलाहाबाद में कुछ दिन रहने के लिए मनाया था। रायसाहब का अब दिल्ली का अध्याय समाप्त हो रहा था।

समय मुट्ठी में रेत की तरह फिसला जा रहा था। मुखर्जी नगर का संपूर्ण कालचक्र पीटी, मेंस और इंटरव्यू के बीच ही घूमता रहता था। इधर संतोष ने दिल्ली में रहना तय तो कर लिया था पर अब उसके लिए दिल्ली में रहना आसान नहीं था। पिताजी ने अपनी तरफ से साफ कह दिया था कि अब दिल्ली पढ़ाई के लिए खर्च भेजना उनके बूते की बात नहीं। फिर भी पिताजी यह सोचकर हर महीने पर पैसे भेज दे रहे थे कि शायद अगले महीने संतोष वापस आ जाएगा। कुछ पैसे माँ अपनी ओर से बचाकर भेज दे रही थी। जिसके बारे में संतोष के पिताजी को भी पता नहीं था। असल में माँ ने ही ढाँढस देकर संतोष का दिल्ली में टिकने का मनोबल बनाए रखा था। आखिरकार हर साल होली दशहरा दिवाली की तरह अटल यूपीएससी के पीटी एग्जाम का फॉर्म अपने नियत समय पर आ ही गया। गुरु के लिए भी यह परीक्षा जीवन मरण के समान थी। वह दो बार साक्षात्कार दे चुका था। इधर संतोष ने फार्म डालकर दुनिया से जैसे संपर्क तोड़ ही दिया था।

एक दिन शाम को विदिशा, मनोहर और संतोष बत्रा पर मिले। विदिशा दिल्ली छोड़कर जा रही थी। उसकी शादी तय हो गई थी एक इंजीनियर के साथ। विदिशा ने संतोष और मनोहर को कहा हमारे भाग्य में आईएएस नहीं लिखा है। और पति भी सिविल सेवक नहीं मिला। संतोष सोचने लगा, दिल्ली छोड़ जाने वाले हर विद्यार्थी के निशाने पर भाग्य ही है। खुद पर कोई इल्जाम नहीं लगाता सारी असफलता का हिसाब भाग्य को ही देना पड़ता है। संतोष कब का ही अपने भाग्य की रेखाओं पर स्याही गिरा उसे मिटा चुका था। क्योंकि उसके भाग्य में भी आईएएस बनना नहीं लिखा था। विदिशा को विदा करने के बाद वापसी में संतोष ने अचानक पायल की बात उठाई। तब मनोहर ने कहा रहने दीजिए किसका-किसका उठा दिए! उसने तीन बॉयफ्रेंड को लाथ मारने के बाद हमारा नंबर लगाया था। अभी सुनते हैं किसी के साथ लिविंग में रह रही है करोल बाग के साइड में कहीं। छोड़िए भी अब उसकी कहानी बंद करिए।

दो महीने गुजर गए थे। उन दिनों गुरु अपने किसी मित्र के यहाँ पटना में था। खाना खाकर उसने भी बोतल खोली थी कि उसके मोबाइल की घंटी बजी आधे मिनट के बाद फोन रख दिया उसके बाद लगातार पैक बनाकर पीता गया। तभी मनोहर का कॉल आया, हेलो गुरु भाई, शाम को जब से रिजल्ट आया है तब से फोन लगा रहे हैं, संतोष का फोन ऑफ जा रहा है, जरा देखिए ना कहाँ है। देखिए रूम पर है क्या? उन्होंने चिंतित होते हुए कहा। हम तो अभी पटना में हैं। अरे ऑन हो जाएगा, कोई नहीं मरता फेल हो जाने पर यार। टेंशन मत लो। जाकर देख लो रूम पर वही होगा। हमारा अंतिम चांस माटी में मिल गया सारा दर्शन खत्म हमारा। सारी गुरुवाई भीतर चली गई हमारी। फिर भी जिंदा है ना? गुरु ने भरी और लड़खड़ाई आवाज में कहा। गुरु ने पीटी फेल हो जाने की बात मनोहर को बता दी। अचानक उसे संतोष के ऑफ जा रहे फोन का ख्याल आया। तुरंत एक रिक्शा लिया और संतोष के कमरे पर गया। कमरे पर ताला झूल रहा था। मनोहर किसी अनहोनी की आशंका से भर उठा। मन में एक साथ कई उटपटांग विचार आने लगे। संतोष को कहाँ ढूँढे? कैसे उसकी खबर ले? तीन साल साथ रहे, पर घर का नंबर भी नहीं लिए हम। मनोहर सोच रहा था कि घर पर फोन करके जानकारी ले, पर यह भी संभव नहीं हो पा रहा था। एक-एक कर पाँच दिन गुजर गए। कोई आता-पता नहीं लग पाया संतोष का।

कुछ दिन बाद गुरु दिल्ली वापस लौटा। संतोष जहाँ रहता था, वहाँ पर गया तो वहाँ कोई और ही लड़का रहता था। उसने फोन निकाल कर मनोहर को लगाया। अरे मनोहर भाई, संतोष तो यहाँ कमरा छोड़कर जा चुका है। गुरु ने तेजी से कहा। क्या कमरा छोड़ दिया? हे भगवान, चलिए, मतलब जिंदा तो है ना वह, घर चला गया होगा शायद। मनोहर और गुरु को अब इस बात का सुकून जरूर था, कि संतोष चाहे जहाँ भी हो बस सुरक्षित है। संतोष ने मकान छोड़ने की जानकारी दी थी और अपने बचे पैसे का हिसाब भी कर दिया था। ऐसा मकान मालिक ने फोन पर गुरु को बताया था। इधर गुरु अपने सबसे खराब दौर से गुजर रहा था। मुखर्जी नगर में सफलता और असफलता को लेकर दो जुमले खूब चलते थे जो सफल है उसे लेकर कहा जाता था इसमें कुछ तो है, और जो असफल होता उसे लेकर कहा जाता इसमें कुछ तो कमी है। गुरु अच्छा वक्ता था। अपने पिछले जीवन में कई संगठनों में काम भी कर चुका था। लेकिन मुखर्जी नगर में अब उसके लिए सारे द्वार बंद थे। अरसे बाद आज राय सहब ने मनोहर को फोन किया। ''मनोहर जी, रुस्तम बताइए कि ई बार गुरु का पीटी भी नहीं हुआ? रायसाहब ने पूछा। ''हाँ सही बताया, क्या बोले, भाग्य ही खराब था बेचारे का।'' मनोहर ने कहा। महाराज भाग्य छोड़िए, उसका बोली चाली भी खराब थी। मतलब देखते नहीं थे बात ऐसा करता था जैसे कि जिला नहीं देश चलाएगा। रायसाहब ने बरसों की भड़ास निकाल कर कहा। अब छोड़िए जो हुआ सो हुआ, अपना सुनाइए। मनोहर ने बात काटते हुए कहा। रायसाहब आगे पूछते हैं, अच्छा वो संतोष का क्या हुआ था मामला। कहीं सुसाइड उसाइड कर लिया का! भरत का फोन आया था, बता रहा था। भगवान हमको माफ़ नहीं करेंगे। हम ही उसको दिल्ली का रास्ता दिखाए थे। रूम दिलवाए, सब सेट करवाए, हे भगवान का किया ई लौंडा? राय साहब ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा। ''पागल हो गए हैं क्या आप, का चुतियापा बतिया रहे हैं! अरे वह कहीं चला गया है। अब यहाँ नहीं रहता है। जहाँ भी होगा अच्छा ही होगा। ऐसा कहकर मनोहर ने फोन काट दिया।

इस बीच आईएएस का अंतिम परिणाम भी आ चुका था। बत्रा सिनेमा पहुँचते ही गुरु की नजर उस तीन मंजिली इमारत के सबसे ऊपरी छत पर गई तो आँख चौंधिया गई। विश्वास कर पाना असंभव था उसे। पर जो गुरु ने अभी-अभी देखा और उसे लगातार देखे जा रहा था। लगभग पाँच मिनट तक उस दृश्य को देखने के बाद उसने तुरंत काँपते हाथों से मनोहर को फोन लगाया। अरे मनोहर लाल, मेरे भाई, जल्दी आओ संतोष मिल गया। अरे क्या बोल रहे हैं, कहाँ मिला संतोष? मनोहर ने भी जोर से कहा। ''आओ ना यार बहुत ऊँचाई पर मिला है। बत्रा सिनेमा के सबसे ऊपर वाले छत पर है।'' गुरु ने बताया। उतना ऊपर का कर रहा है, उतरिए उसको, हम दौड़कर आते हैं तुरंत। मनोहर ने कहा अब उतना ऊपर जाकर कोई नहीं उतरता। वह जहाँ दिखा है वहाँ से उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं उतार सकती। तुम आओ जल्दी गुरु ने कहकर फोन काटा। दस मिनट के अंदर मनोहर दौड़ता वहाँ आ गया और उसने भी जो दृश्य देखा वह अकल्पनीय था। संतोष की फोटो लगी हुई थी। वह आईपीएस बन चुका था। श्यामल सर की कोचिंग के हर पोस्टर में पूरे बत्रा पर उसकी तस्वीर लगी हुई थी। ''अरे बाप रे! ये क्या है गुरु भाई, संतोष भाई आईपीएस बन गए।'' मनोहर खुशी से चिल्लाया। हाँ मनोहर, यह रेस का 'डार्क हॉर्स' साबित हुआ। डार्क हॉर्स निकला हमारा संतोष। गुरु ने कहकर अपनी नम आँखे पोंछी। डार्क हॉर्स मतलब रेस में दौड़ता ऐसा घोड़ा जिस पर किसी ने भी दाव नहीं लगाया हो। जिससे किसी ने जीतने की उम्मीद ना कि हो और वही घोड़ा सबको पीछे छोड़ आगे निकल जाए, तो वही 'डार्क हॉर्स' है मेरे दोस्त। संतोष एक अप्रत्याशित विजेता है। मैं तुम्हारे आने से पहले श्यामल सर को और हर्षवर्धन सर को फोन कॉल किया था। संतोष लगातार इन दोनों के संपर्क में था। पीटी होने के बाद ही उसने अपना कमरा संत नगर की ओर ले लिया था। उसने सर से अनुरोध भी किया था कि उसके बारे में किसी से कुछ ना बताएँ। जो भी हो किस्मत पलट दी उसने। भाग्य को ठेंगा दिखाकर अपनी मेहनत से अपनी तकदीर खुद गढ़ ली इसने। गुरु ने कहा हाँ बॉस सही कहे, एकदम अँधेरे में रहा साल भर और जिंदगी भर के लिए उजाला कर गया मेरा दोस्त। चलिए अब नंबर ले लेते हैं सर से, अपने इस डार्क हॉर्स को बधाई देते हैं। मनोहर ने कहा। कोचिंग पहुँचते देखा संतोष वहीं बैठा था। एक दूसरे को देखते ही तीनों उछल गए। संतोष ने दोनों से माफी माँगी और तीनों गले मिल खूब रोए। शामल सर की आँखें भी उन तीनों को साथ दे रही थी।

मनोहर अपने घर वापस आ गया था। उसकी शादी हो चुकी थी। मोतिहारी में सबसे बड़े सीमेंट व्यवसाय के रूप में वह अपनी पहचान बनाने की राह में था। एक दिन अपनी पत्नी के साथ टीवी देखते हुए वह चैनल बदल रहा था कि अचानक एक राष्ट्रीय पार्टी की ओर से प्रवक्ता के रूप में गुरू बहस कर रहा था। मनोहर की आँखे ठीक उसी तरह खुली रही जैसे कभी संतोष की फोटो देखकर बत्रा पर खुली रही थी। मनोहर ने अपने पत्नी से कहा देख लो एक और 'डार्क हॉर्स' पत्नी ने एक नजर मनोहर की तरफ देखा, पर उसे कुछ समझ नहीं आया और वह वापस टीवी देखने लगी। सीमेंट बेचने वाले मनोहर की आँख में पानी आते ही जैसे यादें ठोस हो गई। उसे गुरु की कही बात याद आ गई अचानक, की जिंदगी आदमी को दौड़ने के लिए कई रास्ते देती है। जरूरी नहीं है कि सब एक ही रास्ते दौड़े। जरूरत है कि कोई एक रास्ता चुन लो और उस ट्रैक पर दौड़ पढ़ो, रुको नहीं, दौड़ते रहो। क्या पता तुम किस दौड़ के डार्क हॉर्स साबित हो जाओ

हम सब के अंदर एक डार्क हॉर्स बैठा है। जरूरत है उसे दौडाए रखने की जीजीविषा की। तो चलिए देखते हैं अगला डार्क हॉर्स कौन कहीं वह आप ही तो नहीं!

जय हो!

2.3.2 'डार्क हॉर्स' उपन्यास का शीर्षक

उपन्यासकार ने भूमिका में उपन्यास को अंग्रेज़ी नाम 'डार्क हॉर्स' देने का बस ज़िक्र भर किया है और पूरा उपन्यास पढ़ने का अनुरोध किया है, शीर्षक का आशय जानने के लिए। यह कहानी कोई प्रेमचंद की कहानी 'बड़े भाई साहब' नहीं है जो दरजों का खेल हो। यह उपन्यास हमें बताता है कैसे हम बड़े भाईसाहब के युगसे निकल कर डार्क हॉर्स कथानक युग में प्रवेश कर चुके हैं।

जितने दिन में छात्र एम.ए.-पीएच.डी. करेगा उतने ही दिन में आईएएस बन सकता है। नीलोत्पल मृणाल के पहले उपन्यास 'डार्क हार्स' के मुख्य किरदार का यह कथन उन सभी छात्रों की संवेदना को व्यक्त करता है, जो स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद गाँवों से निकलकर सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए सुदूर शहरों की ओर जाते हैं। और इस ठसक के साथ वे एक जद्दोजहद भरी जिंदगी में कदम रखते हैं कि अब अगर बोरिया-बिस्तर उठा तो उनके नन्हे हाथों में एक कुशल प्रशासक बनने का प्रमाणपत्र होगा तथा उनके छोटे कंधों पर शिद्दत से आस लगाए माँ-बाप की आँखों में पल रहे कुछ खूबसूरत ख्वाबों को पूरा करने की जिम्मेदारी भी होगी। यह ठसक यहीं नहीं रुकती, बल्कि और भी आगे बढ़ती है और घर-परिवार, रिश्ते-नाते, गाँव-जवार, जनपद-क्षेत्र आदि को शानो-शौकत से नवाजती हुई अगली कई पीढ़ियों को तारने तक पहुँचती है। इस ऐतबार से 'डार्क हॉर्स' महज एक उपन्यास भर नहीं है, बल्कि छात्र जीवन की अनगिनत अनकही कहानियों का ऐसा दस्तावेज है, जो यथार्थ के धरातल पर एक तरफ सफलता के आस्वाद को चिन्हित करता हुआ एक अदद नौकरी के लिए सिविल सर्विस को ही पैमाना मानता है, तो वहीं दूसरी तरफ बीए-एमए-पीएचडी की डिग्रियां हासिल करने के बाद भी उसी एक अदद नौकरी के न मिलने पर हमारी शिक्षा व्यवस्था पर कई सवाल भी खड़े करता है।

किसी भी साहित्यिक कृति की पहली पहचान उसका शीर्षक होती है। शीर्षक उतना ही महत्वपूर्ण होता है जितना आदमी को पहचानने के लिए उसका चेहरा आवश्यक रहता है। साहित्य कृति का चेहरा शीर्षक होता है ऐसा कहा तो गलत नहीं होगा क्योंकि जैसे किसी भी आदमी का चेहरा देखकर ही अधिकतर लोग उसकी अच्छाई बुराई उसके सद्गुण दुर्गुण का अंदाजा लगाते हैं वैसे ही अधिकतर पाठक साहित्यिक रचना का शीर्षक देखकर ही उसकी साहित्यिक ऊँचाई उसकी रचनात्मकता,ढाँचा उसकी विषयगत गंभीरता से लेकर सफलता असफलता का अंदाजा लगाते हैं। इस दृष्टि से नीलोत्पल मृणाल द्वारा रचित उपन्यास का शीर्षक 'डार्क हॉर्स' यह शीर्षक सुनते ही पाठकों के मन में इसके प्रति आकर्षण इसमें चित्रित विषय को जानने की उत्सुकता पाठक को बेचैन करती है। इस तरह उपन्यास का यह शीर्षक प्रथम दर्शी प्राप्त लोगों को आकर्षित करने अपनी अच्छाई और साहित्यिक ऊँचाई का परिचय देने में सफल एवं सार्थक हुआ दिखाई देता है

2.3.3 डार्क हॉर्स उपन्यास में चित्रित समस्याएं

1) पारिवारिक समस्या– उपन्यास में चित्रित ज्यादातर पात्रों की पारिवारिक समस्या दिखाई देती है। नई पीढी और पुराणी पीढी में वैचारिक अंतर दिखाई देता है। परिवार की अपनी संतान से अपेक्षा, परिवार की जिम्मेदारी, पारिवारिक जीवन में तनाव–टकराहट की स्थिती निर्माण होती है।

2) शैक्षिक समस्या – उपन्यास में 'डुमरी' गाँव का वर्णन किया है। वह एक छोटासा ग्राम है। वहाँ शिक्षा की कोई व्यवस्था नही। पढने के लिए गाँव से चालीस किलोमीटर दूर भागलपुर में जाना पडता था। गाँव में अंग्रेजी माध्यम की शैक्षिक सुविधा न होने कारण हिंदी माध्यम से हि प्राथमिक शिक्षा लेनी पडती थी।

3) सांस्कृतिक समस्या – गाव और शहर की संस्कृति अलग अलग होती है। गाव में रहे लडके को शहरी संस्कृति में रहना बडा कठीण लागता है। संतोष के दिल्ली जाते ही उसे वहा की सांस्कृतिक समस्याओ से संघर्ष करना पडता है। वहा का राहाण सहन उठने बैथाने का ढंग सब अलग हि होता है। दिल्ली के स्टेशन पर पहुँचते हि उसे गाव का निरीह बुढापा और शहर का सयाना बुढापा का फर्क समझ आय था। संतोष को लगा गाव की तरह दिल्ली में भी चाचा कहने से काम बनेगा, लेकिन ऐसा होता नही।

4) दुर्गंधी की समस्या – रायसाहब के साथ संतोष उनके कमरे पर जाता है, तो दरवाजा खोलते हि ऐसी गंध आती है, कि ऐसी दुर्गंध भागलपुर सब्जी मंडी में,बरसत का दिनों में भी नही सूँघी थी। ज्यादा लडके एक हि रूम में राहते है, उनका वॉशरूम भी कॉमन होने के कारण ऐसी दुर्गंधी का सामना करना पडता है। सार्वजनिक शौचालय, ट्रेन का शौचालय भी दुर्गंधी से भरा रहता है। इस समस्या का जिक्र उपन्यास में किया है।

5) कमरे की समस्या – संतोष को दिल्ली में किराए पर कमरा लेणे के लिए भी संघर्ष करना पडता है। छोटे से कमरे के लिए भी बहुत ज्यादा किराया रहता था। वॉश रूम कॉमन होता था। सेपरेट वाशरूम तो किराया ज्यादा पडता था। किराए पर कमरा दिलाने के लिए एजंट होते थे, उनको कमिशन देना पडता था। दिल्ली के मुखर्जी नगर में आए छात्रो को ऐसे एजंटों का शिकार होना हि पडता था।

6) प्रॉपर्टी डीलर की समस्या – दिल्ली में कमरा लेने के लिए, सिर्फ रूम का पता बताने के लिए किराये का पचास परसेंट देना पडता था। संतोष प्रॉपर्टी डीलर की गांधी सोच और भाषा से नाराज होते हुए कहता है, एक बार सबने मिलकर आवाज उथानी चहिए इनके खिलाफ।

7) खान पान की समस्या – संतोष का रूम फायनल होने पर संतोष की तरफ से पार्टी राखी जाती है। रायसाहब और बाकी मित्र चिकन खाने वाले और दारू पीनेवाले थे। संतोष वैष्णव था। वो पूर्ण रूप से व्हेजितटेरीयन था। वो ना तो मांस खाता था और न दारू पिता था। टिफिन से जो खाना आता था वो भी अच्छा नही मिलता था।

8) कोचिंग क्लास की समस्या – दिल्ली के मुखर्जी नगर में कोचिंग क्लास की इतनी भरमार थी की तय कर पाना मुश्कील होता था, कहाँ एडमिशन ले। सफलता दिलाने का वादा करने वाले होर्डींग्स से पूर इलाका भर पाडा था। बत्रा के इन विज्ञापनों में आई ए एस बनाने का दावा वैद्यो से ज्यादा ग्यारंटी वाला था। यह सब देखकर कन्फ्युजन होता था।

9) रीश्तेदारो की समस्या – गाँव से रीश्तेदार डाक्टर से इलाज करवाने दिल्ली आते थे। उनको पूर दिल्ली घुमाना पडता था। पढाई छोडकर उनके साथ दिल्ली दिखाने के लिए जाना पडता था। गाँव से आए रीश्तेदारों के विचार अलग होते थे। उनकी कल्पना होती थी की मुखर्जी नगर का माहौल ऐसा होगा, जहाँ लडके दिन रात कमरे में बंद बास पढते होंगे। हर आदमी गंभीर होगा। पर वास्तव में ऐसा नही था। लोग शाम को घूमते-फिरते, हँसते- मिलते थे। रंग-बिरंगे कपडे पहने थे, ठिठोली और बहस चाल रहा था। यह सब देखकर ये रीश्तेदार गालात मतलब निकालते थे।

10) माध्यम की समस्या – अंग्रेजी और हिंदी माध्यम के लाडको में फर्क रहता था। हिंदी माध्यम के लडकों से, अंग्रेजी माध्यम के लडकों को अंग्रेजी पढना, समझना आसन होता था। अंग्रेजी अखबार,अंग्रेजी गाना, अंग्रेजी गायिका या ॲक्टर की फोटो लगाना, फ्रेंच दाढी रखना यह सब करके अंग्रेजी वातावरण तैयार करते थे। अंग्रेजी माध्यम के लडके अपने आपको बोल्ड समझते है।

11) संस्कारो की समस्या – मुखर्जी नगर में आई ए एस की तैयारी करने वाले लाडको में संस्कारों की कमी दिखाई देती है। बडों के सामने सिगरेट पीना, शराब पीना उनको नॉर्मल लगता है। मनोहर के चाचा के सामने भरत सिगरेट पिता है, चाचा के पुछ्ने पर 10^{th} से पिता हू ऐसा बताता है।

12) आर्थिक समस्या – दिल्ली में रहना, खाना-पीना, क्लास इन सबके लिए आर्थिक समस्या होती थी। संतोष के पिताजी तो ब्याज पर पैसे लेकर भेजते है। जावेद को अपनी जमीन बेचानी पडती है। दिल्ली में रहकर आई ए एस की तैयारी करने वाले लडकों को किताब खरीदना, क्लास की फीस भरना, कमरे का किराया आदि के लिए आर्थिक समस्या होती थी।

13) अंध:विश्वास – आई ए एस की तैयारी करणे वाले छात्र अपनी सफलता या असफलता के लिए भाग्य पर थोप देते है। परिवार वाले भी भाग्य, कुंडली की बात करते है। संतोष अपने क्लास के पहले दिन काला पाहण्कर नही जाना चाहता था, क्योंकी कला शुभ नही होता। पूजा-पाठ के साथ शिव और हनुमान चालीसा का पाठ करता है। माथे पर तिलक लगाकर, पहले पन्ने पर माँ सरस्वती लिख देता है। परीक्षा के वक्त पिताजी ने भेजी पन्ना और पुखराज की अंगुठीयाँ पह्नता है, जखबाबा का भभूत साथ राखता है। परीक्षा हॉल में घुसते हि दादी ने भेजी हुई अक्षत आस-पास छींट देता है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1) डार्क हॉर्स उपन्यास के लेखक .... है।

अ) शंकर दयाल ब) नीलोत्पल मृणाल क) कुणाल सक्सेना ड) हरिवंश राय बच्चन

2) संतोष के पिता का नाम................ है।

अ) रामनायक ब) गजानन क) विनायक ड) मृणाल

3) संतोष की माता का नाम................ है।

अ) कमला देवी ब) विमला देवी क) सरला देवी ड) फुलनदेवी

4) संतोष की पढाई .... हुई है।

अ) एम.ए. ब) बी.ए. क) बी.कॉम ड) एम.बी.ए.

5) संतोष के गाँव का नाम .... है।

अ) ठुमरी ब) डुमरी क) मुखर्जी नगर ड) बिहार

6) विनायक सिन्हा स्कूल में................ थे।

अ) टीचर ब) क्लर्क क) सिपाही ड) छात्र

7) संतोष ने भागलपुर के .... कॉलेज से बी.ए. कर लिया।

अ) एस एन बी ब)आर एम डी क) टी एन बी ड) टी के सी

8) संतोष .... की तैयारी करने दिल्ली जाता है।

अ) डाक्टर ब) आई ए एस क) इंजिनियर ड) वकील

9) दिल्ली पहुंचते संतोष ने सबसे पहले .... को फोन किया।

अ) गुरु ब) मनोहर क) रायसाहब ड) पायल

10) राय साहब का असली नाम .... था।

अ) कृपा शंकर ब) भोले शंकर क) श्री शंकर ड) रवि शंकर

11) हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए .... ज्ञान और जानकारी से ज्यादा प्रतिष्ठा का अखबार था।

अ) लोकसत्ता ब) द हिंदू क) भास्कर ड) नवभारत

12) गुरुराज सिंह झारखंड के संत .... कॉलेज का छात्र था।

अ) कोलंबस ब) तुकाराम क) नामदेव ड) कबीर

13) दारू चरित्र नही .... खराब करता है।

अ) किडनी ब) हार्ट क) पेट ड) सिर

14) विमलेंदु यादव यूपी के .... का रहने वाला था।

अ) कालिया ब) नगर क) बलिया ड) जोधपुर

15) गोरेलाल .... से अपनी किस्मत चमकाने आया था।

अ) राजगढ	ब) मोतीगढ	क) आजमगढ़	ड) रायगढ

16) गोरेलाल की कुक का नाम................ था।

अ) विदिशा	ब) आयशा	क) नताशा	ड) पायल

17) रायसाहब के पिता का नाम................ था।

अ) जगदानंद	ब) देवानंद	क) आत्मानंद	ड) आनंद

18) मयुराक्षी के भाई का नाम................ था।

अ) राकेश	ब) पराशर	क) मनोहर	ड) विमलेंदू

19) विमलेंदू की पूरे भारत में................ वी रैंक आई थी।

अ) 50	ब) 40	क) 42	ड) 32

20) विमलेंदू के पिता का नाम .... था।

अ) रामनाथ	ब) भोलानाथ	क) काशिनाथ	ड) श्रीनाथ

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

चापानल - हस्त पंप (जमीन से पानी निकलने का मानवी शक्ति से चलित यंत्र)

भोर- सबेरा

लिट्टी - टिकिया के आकार की गोल छोटी रोटी जो आग पर सेककर तैयार होती है।

छोहारा - खजूर

गरीयाना - गालीयाँ बकना, दुर्वचन कहना।

कठहल - फणस

भौकाल - रुतबा

बकचोद - अक्ल से कमजोर, ना समझ, मूर्ख मिजाज का।

रियायत - कन्सेशन

चुक्कड - कुल्हड, मिट्टी का पकाया गया छोटा बर्तन जिसमे चाय, पानी आदि पिया जाता है।

लालटेन - हाथ में लटकाने लायक चीमनीदार लैम्प।

ठिठोली-हसी-मजाक, हास-परिहास

तल्खी - कडुवापन, कटुता।

फुटानी - डिंग, दंभ से भरी बात

अभिभावक - देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी लेनेवाली व्यक्ति।

कुकुरमुत्ता - सीली जगहों पर पौधा।

ठेकुआ – भारतीय उपमहाद्वीप में बनने वाली सूखी मिठाई।

कमोबेश –थोडा– बहुत।

सकते में आना – घबराना।

बोरसी – अंगीठी, गोरसी।

थेथरई – जिसको लाख समझा दो कोई फर्क नही पडता।

केहुनी – बाह और भुजा का मोड।

हैजा – एक संक्रामक रोग, कालरा, विसूचिका।

उडण खटोला – उडने वाला बिस्तर।

कहर – आफत।

पीटी – पूर्व परिक्षा।

चरवाहा – पशुओ को चराकर अपनी जीविका चलाने वाला।

हाकिम – प्रधान या बडा अधिकारी।

उटपटांग – टेढामेढा, बेढंगा, निरर्थक।

चौंधिया – आश्चर्य चकित होना।

जिजीविषा – जीने की चाह।

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) निलोत्पल मृणाल	2) विनायक	3) कमलादेवी	4) बी.ए.
5) डुमरी	6) टीचर	7) टी एन बी	8) ब–आई ए एस
9) क–राय साहब	10) अ–कृपा शंकर	11) ब–द हिंदू	12) कोलंबस
13) किडनी	14) बलिया	15) आजमगढ	16) आयशा
17) जगदानंद	18) पराशर	19) 42	20) भोलानाथ

2.7 सारांश

1. 'डार्क हॉर्स' का मुख्य किरदार संतोष बिहार के भागलपुर से सिविल सर्विस की तैयारी के लिए दिल्ली आता है। उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे हिंदी पट्टी के राज्यों से सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए लड़के या तो इलाहाबाद का रुख करते हैं या तो दिल्ली का। खास तौर से हिंदी माध्यम से तैयारी करने वाले लड़कों के लिए ये दो जगहें ही मख्सूस मानी जाती हैं। जो थोड़े कमजोर घर से होते हैं, वे इलाहाबाद रह कर तैयारी करते हैं, और जो थोड़े साधन–संपन्न होते हैं, वे दिल्ली के मुखर्जी नगर में अपना आशियाना बनाते हैं। साथ ही यह भी कि मुखर्जी नगर में एक इलाहाबाद हमेशा मौजूद रहता है। बहरहाल

2. इस उपन्यास को पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि नीलोत्पल ने हमें मुखर्जी नगर की एक इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल की खिड़की पर बिठा दिया है, जहाँ से हम इसके सारे किरदारों को आते-जाते, उठते-बैठते, पढ़ते-लिखते, खाते-पीते देख रहे होते हैं।

3. सबकी जुबान पर पुरबिया बोली ऐसा माहौल पैदा करती है कि मानो बत्रा के पास पूरा का पूरा पुरबिस्तान इकट्ठा हो गया हो।

4. यह भी नजर आता है कि बरसों से वैष्णव परंपरा का निबाह करते चले आ रहे छात्र दिल्ली में कदम रखते ही कैसे समझौतावादी हो जाते हैं और 'गुरूत्व' और 'चेलत्व' के भावों में उतरकर फौरन ही सोचने लगते हैं कि अब तो आईएएस की पोस्ट जरा दूर नहीं। चाय पर चकल्लस के दौरान हुई किसी से एक छोटी सी गलती भी कैसे इतिहास की बड़ी से बड़ी गलती साबित हो जाती है। इसी गलती को जो पकड़ के अच्छी तरह से समझ लेता है, उसके लिए परिणाम के दिन जश्न और जो नहीं समझ पाता है उसके लिए मातम।

5. इसी जश्न और मातम के पहले की संघर्षपूर्ण मगर सच्ची तस्वीर को 'डार्क हार्स' में पेश किया है नीलोत्पल ने। जिसमें संघर्ष सिर्फ एक परीक्षा की तैयारी को लेकर नहीं है, बल्कि गाँव-शहर की संस्कृतियों का भी संघर्ष है, खान-पान और रहन-सहन से लेकर भाषाई सुचिता और भदेसपन का भी संघर्ष है, बौद्धिकता और सहजता का संघर्ष है, गंवई बाप और शहर से समझौतावादी हो चला उसके पुत्र के बीच का संवाद संघर्ष है, सफलता और असफलता का संघर्ष है, कोचिंग क्लास में अपनी पहली प्रेमिका या प्रेमी खोजने का संघर्ष है, भारी-भरकम सिलेबस के बीच कहीं कोई मस्ती का कोना ढूँढने का संघर्ष है, मर्यादाएं-परंपराए बनाए रखने या झट से तोड़ देने का संघर्ष है। खुद के मिजाज और व्यवस्था के लिजलिजेपन का संघर्ष है। ये सारे संघर्ष मिलकर एक आत्मकथा तैयार करते हैं, मुखर्जी नगर या हिंदुस्तान के किसी भी कोने में सिविल या दूसरी किसी भी परीक्षा की तैयारी करने वाले लड़के-लड़कियों की आत्मकथा, मगर एक विशेष देश-काल के दौरान ही घटित हुई आत्मकथा, जिसमें जीवन का एक खास हिस्सा हमारे सामने हो। नीलोत्पल खुद भी सिविल की तैयारी करते हैं, इस ऐतबार से यह उनकी भी आत्मकथा है।

अपने गाँव कस्बों से बाहर निकलकर शहरी जीवन के साथ चालबध्द होने का जो चित्रण मुखर्जी की पृष्ठभूमि में रची इस कथा में है,वह अपूर्व है। पाठ्कीय लोकप्रियता के सम्मान के अलावा इस उपन्यास को साल 2015 का साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार भी मिल चुका है।

2.8 स्वाध्याय

ससंदर्भ – डार्क हॉर्स

1. ''अच्छा हम देखते हैं कोई मीनिंगफुल गाना, जो सिविल अस्पिरेंट पे फिट करेगा। आपको कलतक देंगे खोज के।'' पृ. 26

2. ''नहीं महाराज पैसा देंगे तो धर्मशाला में थोडे न रहेंगे।'' पृ. 36
3. ''खुल के इन्जॉय करने के बाद पढाई का मजा ही कुछ और है। पढने में दोगुना एनर्जी आ जाता है।'' पृ. 55
4. ''या! थ्री टाइम्स दिया। .... तैयारी छोड दी है।'' पृ. 72
5. आदमी बहुत फिट .... कर दिए ई।'' पृ. 78
6. ठीक है सुधर .... देना समझे।'' पृ. 85
7. मैं बात भाषा की नहीं........... नहीं दिखता।'' पृ. 91
8. अरे भाई मेरे, ये हमारा .... समझे मिस्टर पृ. 99
9. नहीं उसने मना कर दिया। .... पहचान बनेगी न! पृ. 116
10. ''ई रयवा को क्या .... बर्फ कैसे हो गया?'' पृ. 134
11. का कह रहे हैं .... तिथि नहीं जानता है।'' पृ. 141
12. ''अच्छा ये बताओ तुम पढ़ .... कौन भुगतेगा।'' पृ. 147
13. अरे का हुआ यार। .... आओ अंदर चले।'' पृ. 154
14. हमारा तो साला सब .... सब देख लिए। पृ. 164
15. ''ले बेटा, अबे मजाक.......... फेल हो गया हूँ।'' पृ. 171
16. हाँ बॉस .... डार्क हॉर्स को।'' पृ. 175
17. जिंदगी आदमी को .... एक ही रास्ते दौडें।'' पृ. 176

2.9 क्षेत्रीय कार्य

1) स्पर्धा परीक्षा में सफल हुए अपने किसी परिचित का साक्षात्कार लिजिए।
2) स्पर्धा परीक्षा विषय पर निबंध लिखने का प्रयास करें।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) https://youtu.be/BzvRIDeu0rQ?si=H8spmLc0LSJkM_el
2) यार जादूगर - नीलात्पल दत्त

❑❑❑

इकाई –3

डार्क हॉर्स– नीलोत्पाल मृणाल (उपन्यास)

1. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास में पात्र एक चरित्र–चित्रण

2. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास में कथोपकथन

3. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास का देश काल तथा वातावरण

अनुक्रम –

3.1 उद्देश

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 'डार्क हॉर्स' में पात्र एवं चरित्र–चित्रण

3.3.2 'डार्क हॉर्स' उपन्यास में कथोपकथन

3.3.3 'डार्क हॉर्स' उपन्यास का देश काल तथा वातावरण

3.4 स्वयंम अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द : शब्दार्थ

3.6 स्वयंम अध्ययन के प्रश्न के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 श्रेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश :

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- लेखक नीलोत्पल मृणाल के साहित्यिक एवंम सामाजिक दायित्व से परिचित होंगे।
- 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के प्रमुख पात्रों से परिचित होंगे।
- उपन्यास के गौण पात्रों का महत्व और उनका सामाजिक दायरे को समझेंगे।
- छात्र उपन्यास का देश काल तथा वातावरण एवं कथोपकथन शैली से अवगत होंगे।

3.2 प्रस्तावना :–

'डॉर्क हॉर्स' उपन्यास नीलोत्पाल मृणाल द्वारा लिखित उपन्यास है। इसका कथानक कल्पनात्मक न होकर यथार्थवादी युवाओं की कहानी बयान करता है। जो नव छात्र अपने ग्रॅज्यूएट होने के पश्चात अपना घर छोडकर सिविल सेवा की तैयारी में अपना सब कुछ डाव पर लगाकर जी जान से अध्ययन करते हैं। कुछ ऐसे छात्रों की यह आत्मकथा है। जो छात्र सफलता पाने के पीछे अपना आनंद, वय, प्रेमिका, मित्र छोडकर एकांत में जाते हैं। वही एक दिन इतिहास रचाते हैं। 'डॉर्क हॉर्स' पर रेस में हमेशा कम मूल्य का सट्टा लगाया जाता है, क्योंकि उसके जीतने के चान्सेस कम रहते हैं। मगर वही डॉर्क हॉर्स एक दिन रेस जीतकर हिरो बनता है। इस प्रकार, की संतोष की कहानी है। जों छात्रों के जीवन को, प्रेरणा प्रदान करती हैं। सत्यघटना यर्थाथवादी कहानी पर आधारित उपन्यास काफी प्रसिध्द हुआ हैं।

3.3 विषय विवेचन :–

प्रस्तुत उपन्यास 'डॉर्क हॉर्स' नीलोत्पाल मृणाल द्वारा लिखित उपन्यास है। इसे ही युग्म प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र या नायक संतोष सिन्हा स्पर्धात्मक परीक्षा की तैयारी करते समय आये अनेक समस्याओं को किस तरह निभाकर आगे बढता है। इसका चित्रण उपन्यास का विषय है। उसके जैसे अनेक छात्र छात्राएँ अपना समय, आयु, और जिदंगी किस तरह दाँव पर लगाते हैं। इसका उदाहरण उपन्यास मे मिलता है। आईएएस की तैयारी करने वाला संतोष भागलपूर गाँव से आया हैं। संतोष जैसे हर छात्र को आत्मकथा का मूख्य विषय विवेचन उपन्यास का मूख्य विषय है।

3.3.1 पात्रों का चरित्र चित्रण –

किसी नाटक, या उपन्यास में आयें पात्रों के सोच, कार्यपध्दती, आदि के बारे में सूचना देना ही पात्र का चरित्रचित्रण होता है। इस उपन्यास में प्रमुख पात्र और गौण पात्र के रुप मे चित्रण हुआ है। मूख्य पात्र में संतोष सिन्हा, गुरुराज भाई, रायसाहब, भरत मनोहर, विनायक सिन्हा, कमलादेवी, मनोहर चाचा, प्रा. दु:खमोचन, प्रफुल कटोलिया, पायल, ठाकूर, जावेद आदि का चित्रण है।

गौणपात्रों में – सस्तमसिंह, बैजू शुक्ला, मुखर्जी विदिशा, विमेंलदु, गोरेलाल, भोलानाथ यादव, रुस्तम सिंह.

रितूपुर्णा महापात्र – मयुराक्षी, जगदानंदजी राय – रायसाहब के पिता विरंची पांडे, आदि है।

प्रमुख पात्र:–

डार्क हॉर्स के प्रमुख पात्रों के कारण ही उपन्यास को गति मिलती है। उपन्यास पढने की जिज्ञास पैदा होती है। प्रमुख पात्र इस प्रकार है–

1. प्रमुख पात्र –

1) संतोष – गाँव से आया एक लडका है। वह भागलपूर टी. एन कॉलेज से ग्रॅज्यूएट होकर आपने अध्यापक पिता से आशीर्वाद लेकर दिल्ली आईएएस कि तैयारी करने आया है। वह सीधी साधा भोला

लडका हैं। वह अकेला एक दोस्त के पहचान लेकर दिल्ली आया है। रायसाहब उनका दोस्त है जो उन्हें एक शादी में मिला था उसके भरोसे वह अपना गाँव छोडकर बुलंद इरादा लेकर दिल्ली आता है। वह 'डॉर्क हॉर्स' उपन्यास का नायक हैं।

सामान्यकुटूंब से मध्यमवर्गीय परिवार का है। अपने इरादे बुलंद रखनेवाला, कठोर, परिश्रम करनेवाला एक दिन कैसे यशस्वी बनता हैं। यही उपन्यास की कहानी है। यह उपन्यास यर्थादवादी है। उसमें चित्रित प्रसंग, ठिकाण, परीक्षा का हॉल चाय की टपरी, शराब की दूकान, यहाँ तक गर्लफ्रेंड प्रसंग, सत्य घटनापर आधारित है। संतोष के चरित्र का अध्ययन करने के पश्चात उसके चरित्र की विशेषता सामने आती है। जिससे यह पात्र चरित्र नायक बनता है। वही विशेषता इस प्रकार है। –

2) श्रद्धालू संतोष :–

संतोष ग्रामीण क्षेत्र का लडका है। वह वैष्णव समाज से है। उसके घर में हमेशा देव देवताओ की पुजा होती हैं। जब वह गाँव छोडकर दिल्ली आता है। तब भी वह भगवान की फोटो, मुर्तियाँ साथ रखता है। सुबह शाम पूजा पाठ करता है। मंत्रोच्चारण करता रहता है। प्रा. संकटमोचन सर की हर बात को स्वस्तिक बनी नोटस में लिखता है। कोचिंग क्लास के पहले दिन में प्रवेश करते समय क्लास के प्रवेश द्वार को प्रणाम करता है। वह पिताजी और माँ कमलादेवी के पाव छूकर दिल्ली निकलता हैं। संतोष सुबह उठकर हनुमान चालीसा पढता हैं। ऐसा श्रध्दालू लडका शहर में पहली बार अकेला पढने आता है। मित्रों के बीच रहकर भी घर के संस्कार भूलता नही।

3) आत्महत्या का प्रयत्न करने वाला संतोष –

संतोष छोटे प्रयास से आये अपयश से निराश हो जाता है। जब तिसरी बार संतोष आयईएएस परीक्षा में फेल हो जाता है। तब आत्महत्या करने के इरादे से यमुना नदी के पुल की तरफ जाने लगता हैं। बीच में गुरु रास्ते की दूकान पर खडा मिलता है। वह उसे टोकता है तो, वह मरने जा रहा हूँ बताता है। ''पागल गए हो का सारे बकचोदी बन रहा'' कहते हुए उसे शांत करता है। और वापस उसे रुम पर छोड देता हैं। उसे समझता है जीवन का असली मकसद क्या है। माँ – बाप की सेवा, करता। उनके ऋण से कैसे परे होना, तब संतोष आत्महत्या की बात मन से निकलवाता है। आगे की पढाई में ध्यान देता है।

4) अंधश्रध्दालू :–

गाँव से आया संतोष धर्म पर विश्वास करनेवाला यूवक है। साथ में अंधविश्वासू भी है। परीक्षा के दौरान वह पिताजी द्वारा भेजा पन्ना और पुष्कराज की अंगुठी पहनता हैं। ताकि सफलता मिले लेखक इस बारे में लिखते है उन्होने ऐसी अंगूठी पहना जैसे कोई युध्द जाने से पहले कवच पहनता है। इसके अलावा परीक्षा हॉल जाने पहले वह देवदेवता को याद करता है। गाँव के जखबाबा पर चढा विभूती पाकेट में रखता हैं। वह दादी द्वारा दिए भैरव बाबा की अक्षता परीक्षा हॉल के बाहर उडा देता है। परीक्षा पहूचने से पहले मदर डेअरी दुकान से दही चीनी लेकर खाता हैं। मन में मंत्रजाप करता है। जब चावल का एक दाणा किसे के आँख में

जाता हैं तब घबराकर रुमाल से निकाल देता है। और उसकी खुद की यह भावना होती है बाबा के कारण ही झगडा टला है।

5) शहर मे नया अनजान पंछी –

संतोष दिल से एक बात पक्की करता है। कि उसे आईएएस बनना है। रायसाहब के सिवाय दिल्ली मे उसका कोई पहचानवाला नहीं है। एकमेव रायसाहब उसका पहचानवाला है। वह जो बताता है। उसके नुसार वह अपना मुख्य विषय चुनता है। खुब अध्ययन करता है। जो भी उसे मिलता है असे मार्गदर्शन रहता है। दिल्ली शहर के कायदा कानून लोगों के स्वभाव, मित्रों के स्वभाव से वह अनजान है। इसलिए वह अनेक वर्षो तक फेल होता हैं। पाठयक्रम नया, क्लास नई, मित्र नये, माहौल नया, गर्लफ्रेंड नई, इनमें वह अपने आप में खो जाता है। जैसे–जैसे वह फेल होता है। वैसे वैसे उसका आत्मविश्वास भी खो जाता है। वह मित्रों से दूर होता हैं। शहर में एक नये अनजान पंछी की तरह रहता है।

6) फिर से अपना भाग्य लिखनेका व्रत लेनेवाला संतोष –

गुरु मनोहर, रायसाहब, फेल होने के बाद संतोष भी विचलित होता हैं। मेज पर रखी स्याही की बोतल अपने हाथ पर गिराकर पुरानी भाग्य रेखा मिटाने की कोशिश करता है। अब अपना भाग्य खुद लिखेगा यह कसम खाकर वह अपना नया रस्ता चूनता हैं। और नया इतिहास बनाने के पीछे भाग जाता है। वह कई महिने अपना फोन बंद रखता है। घर जाना बंद करता है। कही दूर जाकर वह व्रत साधना एक साधू की तरह करता है।

मित्रों से बार बार सूना शब्द, परीक्षा में पास होना व केवल भाग्य मे होना चाहिए। इस शब्द को वह गलत साबित कर देता है। प्रामाणिकता से कष्ट करके संतोष यशस्वी बनाता ही हैं।

7) माँ –बाप से बेहद प्यार करनेवाला

माँ बाप के हर शब्द को आज्ञा मानता हैं। मगर माँ ही उसे गाँव बार बार न आने के लिए रुकवाते हैं। माँ और पिता गाँव में उसके लिए काम करते हैं। उसके लिए पैसे भेजते है। मगर बार –बार फेल होने के बाद वह निराश बनता है। एक बार पिताजी उसे निराश होकर दिल्ली से वापस आने को कहते है। तब संतोष तुरंत वापस निकलने की तैयारी करता है। मगर माँ – बाप से बेहद प्यार करनेवाला संतोष उनके प्यार के कारण ही आईएएस बनता है । माँ का प्यार आशीर्वाद से ही वह सफल होता है। वह हर क्षण उनके यादों में जीता है।

8) क्षमा माँगने वाला –

संतोष ऐसा लडका है। छोटी भी हाथ से गलती होती है। तुरंत वह माफी मांगकर विषय को वही पर निपटाता है। जब क्लास की क्लार्क मनमोहीनी शर्मा को रात में फोन करता है। और सुबह वह उसे झापती है। तब वह झट से माफी मांगता है। और विषय को वही समाप्त करता है। जब आइएएस परीक्षा में पीटी फेल होता है। तब वह एक साल गायब होकर अंत्यत परिश्रम से पास होता है। सभी को लगता उन्होने

आत्महत्या की सब नाराज होते है। तब वह अपने मां –बाप मित्रों से, शामल सर से, मनोहर, गुरु से माफी मांगता है। और अपने यश में शामिल करा लेता है। तुरंत क्षमा, माफी माँगनेवाला।

2) विनायक सिंह –

(बाबू) संतोष के पिताजी है। वे उसी गाँव में स्कूलमास्टर है। अपने लडके को आईएएस के तैयारी के लिए दिल्ली भेजने में उनकी महत्व पूर्ण भूमिका हैं। वे हर महिने पैसे भेजते हैं। बार–बार फोन करके संतोष की कुशल मंगल की जानकारी लेते हैं। पिताजी का हर कर्तव्य निभाते हुए नजर आते हैं।

सलग दो, तीन बार पीटी न होने से संतोष की तरह वे नाराज होते हैं। मगर अपने आप संभालकर संतोष को समझाते हैं। और फिर से प्रयान करने के लिए उसे प्रोत्साहित भी करते हैं। जिम्मेदारी लेने वाले, कर्तव्यनिष्ठ जबाबदार पिता के रुप में उनका चित्रण प्रस्तूत उपन्यास में आता हैं।

एक समय संतोष को आर्थिक कठिनाई के कारण पैसे भेजने असमर्थता दिखाते है। मगर दो दिन में सहयोगी से कर्जा लेकर संतोष को पैसा भेजते है। विनायक सिंह का विश्वास है कि एक ना एक दिन संतोष आईएएस हो, जायेगा। गाँव के स्कूल मास्टर होकर भी अपने काम में प्रामाणिकता, परस्थिति में सतत कार्यरत अत्यंत, प्रामाणिक, कष्टाळू, दूसरों की मदद करनेवाले, आदि रुप में उनका चित्रण इस उपन्यास में दुआ है। उनके इसी विश्वास के जोर पर संतोष ज्यादा मेहनत करके आखिर बार आईएएस परीक्षा पास होता है।

3) कमलादेवी –

क्मलादेवी संतोष की मां है। वह विनायक बाबू की पत्नी थी। गाँव में घर संभालती है और खेती बाडी की देखभाल करती हैं। विनायक बाबू के जैसी इच्छा संतोष को आईएएस करने की है वैसी उसकी भी हैं। वह हर समय संतोष को फोन पर गांव – घर की चिंता न करने की बात करती है।

एक समय विनायक बाबू संतोष को पैसा भेजने में असर्मथता दिखाते है। तब वह अपनी गहने बेचकर पैसा इकटटा करती है, और पैसा भेजने की तैयारी करती है। विनायक बाबू और संतोष को धीर देनेवाली भारतीय समझदार नारी के रुप में कमलादेवी का चित्रण उपन्यास में आता है। उनके मुंह से ज्यादा संवाद नही है, मगर माँ का ममत्व, प्यार, बच्चे के प्रति चिंता उसके व्यवहार से स्पष्ट होती है। कमलादेवी जैसी मां संतोष को मिली है इसलिए वह अंतिम अॅटम तक परीक्षा देता है और पास होता हैं। भारतीय समाज की आर्दश के रुप में उनका चित्रण मिलता है। कमलादेवी का पूरा व्यवहार ही एक बेटो को कैसे यशस्वी बने इसका जिमा उठाता हुआ दिखाई देता है।

4) रुस्तम सिंह –

रुस्तमसिंह यह इलाहाबाद का रहनेवाला है। विश्वविद्यालय में पढाई के बाद दिल्ली आईएएस की तैयारी के लिए आ गया है। नेतागिरी उसके स्वभाव में हैं। लंबी–लंबी बातें हाकना दो चार दब के पुतले मरमरहाले सेवक के साथ घुमना। उनको चेला बनवाकर उनसे मूक्त का खाना खाना। दूसरों से कर्ज लेना

और वापस न देना। उनके साथ आये उनके कई मित्र परीक्षा पास होकर अच्छी जगह पर बैठ गए। वह अपने मित्रों के घरेलू आफत, खुशी में शामिल होकर कामचलाऊ समाजसेवी का पद प्राप्त कर अभी भी घुमता रहता है। वह चेला बनाने में तुगतक के साडू भाई है। चेला बनाना और चेला से खाना बनवाना कोई इनसे सीखे। इन मित्रों में जिससे उनकी जमती नहीं थी फटती थी वह गुरु था। अब रुस्तमसिंह भी वह इसी में संतुष्ट रहता है। कि ज्युनिअर उसके पांव छुते है। वह पार्टी में शामिल होकर संतोष को रुम देने की बात करता है। मगर दुसरे दिन मुकर भी जाता है। परंतु रायसाहब को उसपर विश्वास है वह उनके बारे में कहता है। ऐसा भी फालतू नही है रुस्तम भाई दो बार युपी का मेंस भी लिखें हैं। लोगों का मदद करते रहते है। अब काम मुश्किल है तो वह क्या करे। अच्छा नेचर का है रुस्तम सिंह है। कुलमिलाकर अपनी शेखी उप्पर रखनेवाला यह पात्र है। उपन्यास में घमंडी आत्मशेखी, और दूसरों पर रोष जमनिवाल है।

5) गुरुराज सिंह–

यह उपन्यास का आदर्शवादी पात्र है और उपन्यास में प्रमुख भुमिका के रुप में दिशा दर्शक के रुप मे सामने आता हैं। वह झारखंड के संत कोलबंस कॉलेज का छात्र है। कुछ दिन सें राँची में सिविल की तैयारी के लिए रहता है। वही से पहली परीक्षा दी थी। पाँच साल से दिल्ली में रहता है। पिताजी सरकारी नौकरी मे है। आईएएस की तयारी के लिहाज से वह ज्यादा पढ चुका है। जितने जरुरत न थी वह दुनिया को अपनी बात कह देता है। स्पष्टवादी है। कुछ लोग उसे अखडू दंभी कहते है। वह साहसी है। जहाँ वह रहता है मुखर्जी नगर वहाँ के बुध्दिवादी वर्ग के लोग असे बिगडा आदमी समझते है। बौध्दिकता, गंभीरता, तार्किकता पर ममता से व्यंग करता है। बुध्दिजीवी को यह फुहडपन कहता है। शराब और किताब दोनो प्रिय हैं। थोडासा धार्मिक और ज्योतिष पर विश्वास रखनेवाला यह छात्र हैं। गुरुराज कमरा हमेशा साफ सुतरा रखता है। उसके कमरे में तीन रैक पर बहुत किताब रखी हैं। एक बडे टेबल पर लैम्प और पत्र पत्रिकाएँ, किताब की कॉपी ीं रहती है । टेबल के नीचे म्युझिक सिस्टीम है। जिसपर धीमी आवाज में अबिदा परवीन की गझल लगाई जाती है। उसके कमरे के छोटी चौकी पर देवताओं की तस्वीर रखी हैं। तकिये के पास सिगरेट का ट्रे (ऐंश) रखी जाती है। दीवार पर विश्व का नक्शा चिपका दिया हैं। नीचे चटई पर अल्वेअर कामू की ''द रिबेत'' किताब ीं है। इस बारे मे पुछने पर वह बता देता है कि यह अल्वेअर कामू की किताब है जो मार्क्सवाद की छाती पर बैठकर लिखी गई है। गुरुराज अपने पिता को जीवन दर्शन के गुरु मानता है। गुरुराज ने झारखंड के आदिवासी के बीच काफी दिन गुजारे हैं। उनके प्रति संवेदना है बारे में वह बताते है कि कई दिन वह नक्सवीयो के संपर्क में था। उनपर कई केसेस दर्ज है। गाव से आये संतोष को गुरु उसे कमरा दिलाता है किचन का सामान, एक मेज, एक कुर्सी, एक बेड कि लिस्ट बनाकार देता है।

रायसाहब हमेशा गुरु के सामने बचाव की मुद्रा मे रहाता है। गुरुराज पुरे उपन्यास मे अपनी अनूठी छाप छोड देता हैं। वह कभी भी छोटी छोटी बातों मे गलतीयाँ नही करता है। चार पाच साल में वह प्रमुख विषयों का ज्ञान अध्ययन के बाद पुरा करके मॅच्युअर व्यक्ति बनाया है। जब भरत कुमार मनोहर के चाचा के सामने सिगरेट पीता है। अपनी यह कृति सही हैं। उपर यही कहता है की मै कभी हिंदी वालो की तरह छुपकर नही करता क्योंकी मैं अंग्रेजी मिडयम का हुँ। हम दब्बू नही हैं हम खुलकर पिना साहस है कहते है। तब उसको

चूप कराने के लिए गुरु कहता है साहस को उन्माद कहता है साहस क्या है बताते वह कहता है साहस दहेज प्रथा का विरोध करना, बाल विवाह को रोकना, सरकार की गलत नीतियों के विरुध्द सडक पर उतर जाना, दबे कुचले कि लढाई में उनके साथ खडे हो जाना यही साहस है जो हम इसे साहस कहते है।

6) मनोहर के चाचा –

यह पात्र भी इस उपन्यास के बीच में आता है। चाचा के कारण कथावस्तू में रंगत आती है पहले गँवार और अनाडी चाचा बार–बार प्रश्न करके मनोहर को तंग करते हैं। गाँव से दिल्ली किडनी का इलाज करने वे अपने भतीजे के पास आये हैं। पहली बार दिल्ली आए चाचा रेल के डिब्बे में टॉयलेट का इस्तेमाल ही नहीं करते बार – बार वे प्रश्न पुष्कर मनोहर की परेशानी बढती हैं।

दिल्ली में उनका भतीजा मनोहर स्मार्ट लडका पढता है। इसलिए वे दिल्ली आते है। यह बात वे जानते है। उसके पीछे उनका मकसद यह की दिल्ली में न खाने पीने की और न रहने की चिंता करने की जरुरत नही है। दिल्ली में जहाँ जाना हो बस मुक्त में जाना घुमना फिरना और साथ में पहचान वाला पढा लिखा आईएएस करने वाला भतीजा के जेब से खर्चा यही उनका मकसद है। मनोहर के रुम पर सेक्सी चित्र देखकर वे कुछ बोलते नहीं पर घर वापिस लौटते वक्त इसका हिसाब किताब करके अपने साल भर की दवा का इंतजाम भी करते हैं।

चाचा की किडनी के जगह इनका हार्ट खराब होता तो कम से कम हजारो प्रश्न से मुक्ति तो मिलती। ऐसा मनोहर को लगता है। चाचा के आने कारण मनोहर का पीना, गंधी फिल्मे देखना, पार्टी जाना सब बंद होता है। वापस जाने से पहले चाचा दिल्ली देखते समय इंडिया गेट देखकर उसे क्यों बनवाया?, कुतुबमीनार मे लोहा उपयोग क्यों नहीं किया? कुतुबमीनार की उँचाई पर प्रश्न उठाते है। लाल किल्ला, चांदणी चौक पर भी अनेक प्रश्न पुछकर मनोहर को परेशान करते है। जब खैनी की बात बताकर अपने अंदर रही दर्शनिकता भी दिखाते है। रिश्ते की बात से आज लोग कितने दूर हो गये है। खैनी खाते समय लोक एक दूसरे से बोलते है। पास आते है जिससें संवाद भाईचारा बढता है। यही बात बताकर गाँव में आज भी लोग क्यों अनघो रिश्तों से बने रहते है यह बात बताती है।

आइसक्रिम खाने में शहर में नजदिक बैठते है। लेकिन बात नहीं करते मगर खेती में, गाँव में खैनी खाते समय बिना पहचानवाले भी भिम बनते है। यह बताते अब चाचा कितने होशियार यह बात साबित है। तब छात्रो मे कितने संस्कार है यह भी जानते है परंतु छोटा दाढी वाला उनके मुह पर धुआं छोडता है। तब वे आग बबूल हाते हैं। अंग्रेजी बाते कम ही रखो, बहुत स्ट्रेस है तो घर वापस चले जाओं। बाप – चाचा का बिजनेस संभालो यह कडवी बात भी सुनवाते है।

कुल मिलाकर चाचा गाँव से आकर भी उपन्यास मे अपनी अनूठी छाप छोडते है। छात्रों को या मनोहर के वेस्ट जाते समय को अंकित करते हुए उसे सावधान करते है। जो आज के नये छात्रों को इस तरह के मार्गदर्शक की जरुरत हैं।

उपन्यासकार को जो उपदेश देना है। वे इस पात्र के माध्यम से देते है। मनोहर जब खुद के दिन भर आईएएस की तैयारी में से दिन भर तीन क्लास के अलावा एक टेस्ट क्लास भी जॉईन करता है। इतना व्यस्तात से चाचा के लिए अपना किंमती समय चाचा को देखकर उनपर नैतिक बोझ रखता है। यह बात जानते है। सब देखकर अंत में मनोहर की पोल खोलते है। चाचा उनके मित्र-संगत, रुम पर दिखे चित्र, अश्लील सीडी, और शराब की खाली बोतले देखकर सब समझते है। और मनोहर को घर चलने को कहते है। तब मनोहर उनसे माफी माँगकर पैर पकडता बाबूजी से कुछ न कहने की विनंती करता है।

यही उत्तर बताकर भरत कुमार की चुपडी बंद करता है। साहस इसे कहते है। बूजूर्ग के सामने सिगरेट पी अपना कल्चर दिखाना, अपना बोल्डनेस दिखानी कहाँ का साहस? किसी भी चीज के बारे में जानना समझना उस पर सोचना ज्ञान है। उसे अंग्रेजी या हिंदी से जाना चाहिए। ज्ञान को संप्रेक्षित करने का माध्यम है। आप अंग्रेजी वाले है तो आप में ऐसा क्या खास है जो आरा या बिहार के कल्चर से अलग सतुआ नहीं पीते - ठेकुआ नहीं खाते, बोरसा नहीं तापा आपके दादा धोती नहीं पहनते है। पिताजी सरसो का तेल नहीं इस्तेमाल करते। माँ ज्युतियां का व्रत नही करती, दादी व्रत नही करती। भोजपूरी नहीं बोलती, किस कल्चर की बात करते हो इस देशकी पाँच हजार साल की सभ्यता के निचोड के बाद पाया हैं। गंगा-जमूना, संस्कृति, राम-रहिम, संस्कृति, ईश्वर-अल्लाह संस्कृति, खीर-सेवई संस्कृति, यह सब हमारी संस्कृति है। इस देश में हिंदी और अंग्रेजी देंानो बोलने वाले की संस्कृति है। इतना सार संयुक्त तार्किक, आदर्शवादी बात करके भरत कुमार को परास्त करता हैं। गुरु कहता है कि अंग्रजी सीखना चाहिए। पर आईएएस बनने के लिए नहीं जिसे आईएएस मौकीकी परीक्षा में अंग्रेजी न आने के कारण बाहर करनेवाले अफसर के विरोध लडने का साहस करना है क्योंकी वह खुद आईएएस के मौकिकी में उसी वजह से बाहर किया गया था। अपने बात को पुक्ता करते हुए वह कहता है। अंग्रेजी व्यापार की भाषा है, उर्दू प्यार की भाषा और हिंदी व्यवहार की भाषा है। गुरुराज उर्जावान पात्र है। वही संतोष को सही मार्ग दिखाता है। उसे अपने पास रुम दिलाकर उसके हर काम मे मदत करता है। उसे सही विषय, परिस्थिति, समय, टाईम मॅनेजमेंट सिखाता हैं।

गुरुराज सिंह अपने मित्रों को हर संकट में आधार देता हैं। रायसाहब को पुलिस ठाणे से छुडवाता है। संतोष, मनोहर, जावेद, को हर समस्या में मदत करता है। जावेद की माँ का अंतिम संस्कार करने के लिए जावेद को दिल्ली से स्वंयम खर्चा करके टिकट निकालकर भेजने का इंतजाम करता हैं। सभी मित्रों को सही सलाह देनेवाला यह पात्र मयुराक्षी से दिल से प्यार करता है। मगर उसके करिअर पर प्रभाव ना ें इसलिए अलग रहता है। वह भी उससे प्यार करती है। जब वह परीक्षा पास होती है। तब उन्हे पहले मिलने आती हैं।

7) विमलेंदू - यह पात्र गुरुराज का सच्चा मित्र है। दोंनो में अंत्यत घनिष्ठ मैत्री है। होशीयार, बुध्दिमान है गुरु की तरह तेज है विमलेंदू पर गुरुका पुरा भरोसा हैं। यु. पी. के बलिया प्रदेश का रहनेवाला है। विमलेंदू के पिता किसान है। उन्होने स्नातक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी में पास किया है। वह अत्यंत शांत मेहनत करनेवाला छात्र है। अपनी इमानदारी और मेहनत पर दो बार आईएएस की मुख्य परीक्षा दी है। एक बार वह पास होकर मौखिकी साक्षात्कार तक पहूँच गया था। गुरु से उसके साथ ज्यादा पटती है। उसका स्वभाव यह है की वह शराब पीता नही, गुरु भाई शराब पीता है।

विमलेंदू के चचेरा भाई की मौत शराब पीने से हुई थी। उनका परिवार बरबाद हुआ था। उन्होने अपने आँखो से देखा था। इसलिए इन सभी चीजों से विमलेंदू दूर रहता है। उसे एक ही नशा है। पिताजी ने भेजी कमाई को सफलता कें अमृत में बदल देना। वह संतोष को मदद करता है। अत्यंत प्रामाणिक और नि:स्वार्थी विमलेंदू उसे इतिहास संस्थानों के नाम, कोचिंग क्लास के नाम, पता देता रहता है। इतना ही नही संतोष को दिल्ली छोडते वक्त खुद का मोबाईल नबंर भी को देता है। जब वह आईएएस परीक्षा पास होता है। तब मामाजी के बेटी का रिश्ता ठूकराकर ट्रेनिंग में उसकी साथी राही रितुपूर्णा महापात्रा से प्रेम विवाह करता है।

8) मनोहर – इस उपन्यास में मनोहर पात्र प्रमुख पात्र में चित्रित हैं। मनोहर गाँव से दिल्ली पाच साल पहले आया है। वह अंग्रेजी फोबियावाले हिंदी समाज से आया था। आईएएस की तैयारी करनेवाला मनोहर अपना समय पार्टी मांस मच्छी, बिअर, सिगरेट शराब, पर बरबाद करता रहता है। गाँव से आया संतोष को रुम फिक्स करने के बाद वह पार्टी का आयोजन करने की सलाह देता है। वह बताता है कि गुरुभाई को खुश करना है तो शराब, सिगरेट, मच्छी, बिअर तो होनी चाहिए।

अपना तत्वज्ञान संतोष को बताता है कि 'शराब से मेंटेल ट्रेस कम होता है। हम इसलिए कभी–कभार लेते रहते हैं। रुम मे रखे अंग्रेजी नग्न चित्र देखता है। मगर चाचा आने के बाद उतारकर खटिया के नीचे रखता है। गाँव से आये चाचा को नाटक दीसे एम्स अस्पताल में इलाज करने ले जाता हैं। दिल्ली घुमता है। मगर अपनी दिन में दो बार क्लास है। दिनभर उसे समय मिलता नही यह भी झूट बताता है।

जब गुरुभाई को संतोष द्वारा पार्टी के लिए मनोहर और रायने सल्लाह दी है। यह बात पता चलती है। तब गुरु स्पष्ट कहता है। 'ये साले चुतिए राय और मनोहर, जिसे–तिसे फँसाते है।'

मनोहर अपने चाचा को दिल्ली घुमाकर अपने दोस्तो की पार्टी में शामिल करा देता है। वहाँ भरत उनके मुहँ पर सिगरेट कि धुआँ छोडता हैं। तब चाचा अपने भतीजा के सारी करतूद समझता है। दरसल मनोहर इसी काम मे रहता जैसे संतोष को कमरा, देना, क्लास का अॅडमिशन, रायसाहब की बर्थडे पार्टी का इंतजाम करना। पार्टी में शराब मास का इंतजाम करके अपने दोस्तो को भी बुलाना। वह संतोष को छाती और गाल से बाल हटाने की क्रिम देता हैं। मनोहर पायल से प्यार करता है परंतु उसका नेचर उसके अलग अलग यार देखकर उसीसे नाता तोडता है। पार्टी में वह जावेद की गझल सुनते उसे दाद भी देता है।

जब संतोष पहली बार फेल होता है। तब वह अपना फोन बंद करके बैठता है। तब मनोहर उसे हर ठिकाणे पर जाकर ढूँढता है, गुरु को फोन करके बताता है। मनोहर को लगता है संतोष ने कई आत्महत्या तो न की गई। मनोहर संतोष, गुरु, रायसाहब याने सभी की चिंता करनेवाले पात्र है। उसके इस गुण के कारण ही वह प्रमुख पात्र है।

उपन्यास के अंत में वह लास्ट अॅटम तक पास न होने के कारण वह सब छोडकर गाँव चला जाता है। शादी करके सिमेट बेचने की भी दूकान सजाकर बैठता है। घर गृहस्थी में लग जाता हैं।

9) रायसाहब – 'डार्क हॉर्स' उपन्यास का यह भी मुख्य मात्र में एक पात्र है। उपन्यास के शुरवात से अंत तक हर प्रसंग में वह सहायक बनकर आता है। दिल्ली में आईएएस के लिस्ट में आये छात्रों, को मदद करना उनका स्वभाव है। बहुत मजेदार रायसाहब का स्वभाव है। इनका पूरा नाम कृपाशंकर है। यु. पी. के गाजीपूर के निवासी है। पिछले पाँच साल से मुखर्जी नगर में तैयारी कर रहे हैं। पिछले साल मे उन्होने तीसरे प्रयास में आईएएस की मुख्य परीक्षा दी थी। परंतु फेल हो गये थे।

रायसाहब ने इलाहाबाद के विश्वविदयालय से इतिहास मे एम. ए. करने के बाद बी. एड. भी किया था। गाजीपूर के वे किसान परिवार से है उनकी खासियत यह कि शरीर मजबूत है। काफी बाल झडते है और तेजी से लटकती झुरियो के कारण भी छात्र उन्हे अदब से रायसाहब कहते है। जब वह पहली बार संतोष को दिल्ली में मिलते है तब उन्होने पहने हुए कर्मों से संतोष को वे 2007 का मॉडल 'अरस्तु' लगता हैं। एकदम एक विद्वान, तत्वज्ञानी, संत, गांधी, पुरनी विचारों का आदर्श नैतिकतेपर आदर्श भाष्य करनेवाला रायसाहब पहली मुलाखात में संतोष को प्रभावी लगता है। शराब पीने के बारे में कहता है देखिए पीना बुरा थोडी है। कुछ लोग कहते है। ये चरित्र का मामला है पर ऐसा नही है। आप पुजा करके उठे और और किसी का बलात्कार कर दिजिए। तो वो बुरा है, आइये तो दारु बुरा नही होता। आदमी का मन कैसा है ये मायने रखता है। मुझे देखिए ओकेजनल पीता हूँ पर आज तक पीने कें बाद कुछ अनैतिक न किया है।

इतना ज्ञान देने वाले को कमरे पर जाने के बाद वहाँ की दुर्गंध से उन्हे भागलपूर की सब्जी मंडी की याद आती है। उनका बाथरुम इतना गंदा था की कम से कम पंद्रह लोगो जरुर बाथरुम उपयोग किया होगा, इतना गंदा था। बाथरुम के बाहर चप्पल थी। पान, गुटखा खाकर इतना अटा पढा था। जैसे चौरसियाँ पान भंडार का पिछवाडा हो इतना गंदा रुम था। रायसाहब के कमरे में घी की शीशी, बनपूल तेल की बोटल इसबगोल, बालबढाने की दवाईयाँ, एन. सी. आर टि. के किताबे, दर्पण, मुलतानी मिटटी, दाँतकी टुथपेस्ट, फेसवॉश, आवला जूस, घृतकुमारी तेल से उनका कमरा जैसा दवाखाना लग रहा था।

पहली टाईम में वह संतोष का मूल विषय चेंज कराकर परीक्षा देने के लिए उसे तैयार करता है। उसके मोबाईल की धुन है ''हर घडी बदल रही है रुप जिंदगी, छाँव है कही कही है धूप जिंदगी'' इसी रिंगटोन पर प्रवचन देता है। बुध्द, क्षणभंगुरता, सिध्दनाथों की परंपरा, आदि पर व्याख्यान देकर वह संतोष को प्रभावित करता है। मगर जैसे जैसे समय निकलता है उसकी बौध्दिक क्षमता का परिचय होने लगता है। वह गुरुभाई के सामने कुछ बोलता नही पायल पर फिदा होता है। मगर उसके अनेक यार देखकर अपना इरादा बदल देता हैं। हर काम के बाद पार्टी करने में वह आगे रहता हैं। अपने जन्मदिन की पार्टी का आयोजन मनोहर को करने के लिए कहता है। लास्ट ॲटम पीटी एम न होने के बाद संतोष वहाँ से गायब होता है पर उस संतोष ने सुसाइड कि होगी बताते हुए श्रध्दाजंली अर्पित करता है। गाँव जाते समय आईएएस परीक्षा देनेवाले इज्जतदार भारतीय नागरिक हूँ यह बताकर रेल में बहूत इज्जत कमाता हैं। कामवाली आयशा जब अपने चौथे यार के साथ पति से भाग जाती है। तब पुलिस रायसाहब को उठाकर ले जाते है। गुरुभाई और मनोहर, संतोष उन्हे छुडवाते है। रायसाहब के शरीर से दुर्गध्दी आती है। इसलिए उनसे सभी मित्र परिवार दूर रहते हैं।

जब वह गाँव जाता है तब खूब इज्जत पाता है। लोगोंसे मिलता है। सात साल में क्या क्या किया कितने कठीन समय में अध्ययन कैसे जारी रखी बताता है। उसके डिंगे को एक गाववाला दीनानाथ परास्त करता है। उनके द्वार पुछा प्रश्न आंबेडकर की जन्मदिनी बता नही पाता हैं। उनका कार्य संविधान का महत्व रायसाहब बताता है मगर अंबेडकर की जन्म तिथी बता नही पाता है। तब सब के सामने उसकी बेइज्जती होती हैं। गाँव में यह बात फैलती है की सात साल आईएएस परीक्षा की तैयारी करनेवाला रायसाहब को आंबेडकर की जन्मतिथी मालूम नही है। ये कैसा अफसर बनेगा जिनको संविधानदाता की जन्मतिथी मालूम नही है।

इस बात के बाद उनके पिताजी उनका पैसा पानी बंद करके उन्हे वापस घर बुलते है और खेती करने की सलाह देते है। इस प्रकार उसकी आईईएस बनने का स्वप्न अधुरा है।

10) **भरत –** यह पात्र उपन्यास के बीच प्रवेशित होता है। जब मनोहर गाँव के चाचा मनोहर के मित्रों से मिलकर वापस गाँव जाने के टाइमपर आता है। बहुत घमंडी और अपने आप को दूसरो से अलग माननेवाला भरत वह मनोहर के चाचा के सामने सिगरेट दारु, पिता है और उपर से इट स माई नार्मल बिहेविअर कहता है। उपर यही कहता है कि मै हिंदी मिडियम के लौंडो की तरह छुपकर सिगरेट, दारु नही पीता और न ही पब्लिक में आइडियल पर्सन बनकर न घूमता हूँ मैं फ्रैंक हूँ हम इंगिलश मिडियमवाले कुछ छुपाते नहीं हमेशा खुद को एक्सपोज करता हूँ। मै हमेशा राइट काम करता हूँ बोलते हूए हाथ और कंधे बगुले की भाँति उचकाता है। यह पात्र म्यॅच्युअर नहीं है।

11) **पायल –** यह भी आईएएस की तैयारी करनेवाली छात्रा हैं। वह खुले विचार लडकी की है। जिंदगी को स्वंतत्र जीना चाहती है। स्वतंत्रता का अर्थ है किसी भी तरह जीने में है। जिसमें मर्यादा की बंदिश के लिए कोई अर्थ नही हैं। वह दुनिया की कोई भी ऐसी बात जिसमें मस्ती हो मौज हो उसे छोडना नही चाहती हैं। उसने कई लडको को छोडा है, जो उसे प्यार कहते थे या प्यार का नाटक करते थे। वह बदरंग दुनिया ना सच्च अपनी सहेली विदिशा से जादा समझती हैं। वह बोल्ड और अपना काम कैसे करवाना जानती है। वह मित्र के मित्र कौशिक के साथ उसके कमरे पर जाकर उसके सामने बैठकर उससे रात भर नोटस लिखवाने के लिए विवश करती है। उसे ऐसा डोस देती है जो रातभर उसके लिए नोटस तैयार करके देता हैं। पायल हँसी मजाक और तरुण युवकोओ के बीच हमेशा रहती है। वह प्यार, मुहब्बत पर जादा भरोसा नहीं करती हैं। जब संतोष के साथ क्लास की क्लार्क मनमोहीनी का ड्रामा होता हैं। वह दूर से देखती हैं। समय आने पर संतोष को मिलकर कहती है। हाय! सेंटी कैसे हो प्रश्न पुछकर मनमोहिनी के साथ कल का पूरा ड्रामा बताती हैं। और दोनो हँसने लगते हैं। वह संतोष से दोस्ती करती है।

पायल संतोष को उस ड्रामे का संदर्भ बताते हुए उसे जलील करती है। उसे ज्यूस पीलाकर अपना और सहेली विदिशा का फोन नंबर देती हैं। जिससे दो दिन से टेन्शन मे रहा संतोष रिलॅक्स हो जाता है। वह मनोहर की मैत्रिण है। इसलिए संतोष ने मनमोहीनी क्यों देररात फोन किया था बताता हैं। मनोहर के कहने पर पायल रायसाहब अर्थात कृपाशंकर के हॅप्पी बर्थडे पर उनके कमरे पर अकेली जाती हैं। रायसाहब से

हाथ मिलाती है। तब रायसाहब के शरीर मे कंपन और शुरु हो जाती है। और आँखो में झीलमील तारे दिखने लगते है। पार्टी में पुछती है यहाँ कोई सिगरेट पीता है क्या? संतोष ना कहता है। वह अपने बॅग से अल्ट्रा माइल्ड सिगरेट निकालती हुए माचिस माँगती हैं। माचिस से सिगरेट में आग लगते एक सराईत की तरह एक झटके मे आधा सिगरेट पी लेती हैं। परिस्थती को समझकर मनोहर उनके बारे में कहता है की मॅडम बिअर, दारु सब पिती है। रायसाहब दारु का क्काटर निकालते है उसमे से वह एक बीअर बॉटेल लेकर गटकती हैं। फिर वोडका का पेग बनाकर चार पाच पेग पीती है। जाते वक्त रायसाहब को थॅंक्यू कहकर बीना किसी से बाते न करें के निकलती है। आधुनिक विचार और पाश्च्यात प्रभाव की पायल उपन्यास में छाँ जाती है।फिर एक दिन नोटस के बहाने रायसाहब के कमरे पर आती है उसके मन मे बहूत कुछ है। रायसाहब के गंदगी कमरे मे बैठती है उसका बाथरुम का उपयोग करती है। उसी वक्त उसके फोन पर आये मित्रों के कॉल देखकर रायसाहब का भी इरादा बदलता है उससे बहन का रिश्ता जोडकर उसे भगा देता हैं। कुल मिलाकर यह पात्र अपने छात्रा करिअर मे अध्ययन कम और बाकी ऐयाशी की तरफ झूकता हुआ नजर आता है। उनके जैसे छात्र के कारण छात्रों का सामाजिक कारण छब्बी बदलती नजर आती है।

12) जावेद – छपरा जिल्हा महादेवपुर का छात्र था। रायसाहब के साथ उसकी दोस्ती है। बहुत दिन गांव मे जाके परीक्षा में दोनों व्यस्त रहते है। पढाई में वह बचपन से अवल आता था। जब वह इंटर में पढ रहा था। तब उसके पिताजी गुजर जाते है। खेती लायक उसकी जमीन है। उसके भरोसे वह पढता है। और सिविल की तैयारी के लिए दिल्ली में आकर जिंदगी का जुआ खेलता है। माँ के बचे हुए जिदंगी को सुख देना चाहता है। वह दिल्ली में जी तोडकर मेहनत दिन रात करता है। और बिहार लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा देता है। जावेद एक कलाकार भी है। एक अच्छा गायक है।

बिहार की कला, लोक, संस्कृति पर उसकी गहरी पकड है। बिदोरीया, छठ के गीत विवाह संस्कार के गीत, धोमिंया, डोमकच, जतसार कजरी, चैती, चैता, फगुआ, होली के समय के सभी गीत जानकारी रखता है। रायसाहब के बर्थ डे पार्टी में बेटी बचाव का गीत गाकर सूनवाता है। विदिशां भी गाती है। संतोष भी अपनी फर्माइश का माता का गीत पथरा सुनवाने का अनुरोध कता है।

उपन्यास में यह पात्र परीक्षा की तैयारी करते हूए भी बाहर क्लास लेकर अपनी फिस का इंतजाम करता है। अंत में परीक्षा पास होकर इतिहास रचता है। लेकिन बीच मां चल बसती है।

इसलिए दोनों पर नजर रखता है। अर्थात गोरेलाल परीक्षा छोडकर बाकी के धंदे करता है।

2. गौण पात्र –

प्रस्तूत उपन्यास में उपपात्र द्वारा कथानक को गतिशीलता प्राप्त होती है। कही ना कही इस पात्रों द्वारा अनेक प्रसंग उपकथानक आगे बढता है।

1) विदिशा – पायल की सहेली है वह आईएएस की तैयारी कर रही है। विदिशा पायल के बराबर विरोध गुण की लडकी है। वह लडको से हँसी मजाक करती हैं। मगर अपना टाईम पास नही करती है किसी के साथ शारीरीक संबध भी नही रखती हैं। अपने माँ बाप का सम्मान रखनेवाली विदिशा हैं। वह पायल के

साथ संतोष की चेष्टा करती है, मगर संतोष को चाय, शरबत, पिलाती है। खुद न वह शराब सिगरेट पीती है। न किसी को अपने प्यार में पागल बनाकर लूटती हैं। पप्पा का फोन आते ही इंजिनिअर लडके से शादी के लिए हाँ करके वहाँ घर वापस जाती है। सरल, सीधी प्रभावी चरित्र है। वैसे वह उपन्यास की नायिका ही है।

2) रीतपूर्णा महापात्रा – वह उडीसा के मुख्य सचिव रहे महापात्रा की बेटी है। उनके खानदान में तीन पीढी से आईएएस ही हो चूके हैं। विमलेंदू और वह दोनो ट्रेनिंग में मिलते है। दोनों एक दुसरे को पंसद करने लगते हैं। उसकी शादी होटल में विमलेंदू से होती है। शादी की पहली रात वह उसका पंसती प्यारा कुत्ता चेरी को दोनों के बीच लेकर वह सोती हैं। रीतू का यह ममत्व देखकर विमलेंदू चूपचाप जीवन के अंतिम क्षण तक चूप रहता है। जीवन की अंत तक वह उसकी बात मानता है। आईएएस रीतपूर्णा का प्रभाव विमलेंदू जीवन पर काफी रहा है। रीतपूर्णा करिअर ओरियंटेल है इसलिए वह अपना करिअर ओरियंटल पति चुनती हैं। अपने तरीके से जीना चाहती है। सक्सेस पर परिवार कुटूंब से ज्यादा वह करिअर के तरफ ज्यादा ध्यान देती नजर आती हैं। उसका यह स्वभाव अंतिम क्षण तक ऐसा ही रहता है।

3) प्रफुल बटोहिया –

इस उपन्यास में प्रफुल बटोलिया शिक्षक है। वे लोकसेवा परीक्षा की तैयारी करनेवाले छात्रों को लोकप्रशासन विषय सिखाते हैं। प्रशासक गुण ज्यादा कैसे मिलेंगे मौकीकी परीक्षा की तैयारी खुद कैसे करे यह बाते छात्रों को बताने के बाद सभी छात्र उनसे प्रभावित होते हैं। कई लडके उनके व्याख्यान से पागल होते हैं। हर एक बंदा अपने आप में एक अधिकारी देखने लगता है। संतोष भी प्रफुल सर से इतना प्रभावित होता है। उनके पाँव छुता है, और अपने अंदर आईएएस अधिकार छूपा है महसूस करने लगता है।

उनके व्याख्यान से प्रभावित कई लडके अपने आप को अधिकारी समझने लगते हैं। क्लास के दुसरे, दिन से कुछ लडके कोट पॅन्ट पहनकर आने का संकल्प करते हैं। क्लास में प्रफुल बटोलिया सर खुद आईएएस अधिकारी न बनने की मर्मस्पर्श कहानी सुनाते हैं, और अपने माँ का अंतिम वचन की बात बताते है।

उनके लेक्चर से अब तक २३४ छात्र आईएएस अधिकारी बन गये हैं। इतना पॉवरफुल ज्ञान का भांडार उनके पास है। जब पाँच सौ आईएएस अधिकारी बनेंगे तब उनके माँ की आत्मा को शांती मिलेगी। यह बात अपने छात्रों को बताकर उन्हे और प्रेरित करते हैं। जब पाँच सौ छात्र अधिकारी बनेगें तब यह शिक्षक की नौकरी भी छोडेंगे यह भी बताते है। सभी छात्रों का भला चाहनेवाले ज्ञानी, हंसमुख, प्रफुल जी को क्लास के सभी छात्र इज्जत देते है। उनको आदरपूर्वक गुरु मानते है ।

उनके पात्र द्वारा आदर्शवादी अध्यापक का चरित्र सामने आता है। विषय को समझकर छात्रों के नब्ज को पहचानवाला यह अध्यापक उपन्यास में छात्रों का प्रेरणा स्त्रोत है।

4) प्रा. दु:खमोचन –

'डार्क हॉर्स' उपन्यास में आईएएस अधिकरी बननेवाले छात्रों को समाजशास्त्र विषय पढानेवाले यह अध्यापक हैं। विषय कम और बाकी के धंदे ज्यादा करते हैं। समाजशास्त्र लेक्चर में हमेशा लेट आते है। उनका छात्रों पर अच्छा प्रभाव नही है। क्लास में आते ही खाना पीना और स्वास्थ विषय पर आधा घंटा बोलते है। उनका मत है कि अच्छा भोजन आपको अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करता है। जिससे आप मन दु:खींम लगाकर पढाई कर अच्छी तैयारी कर सकते है। वह क्लास में दु:खीम टिफिनवाले की बात बताते है। दो-तीन दिन से वह क्यो खराब खाना दे रहा है। इसका कारण बताते है। दु:खमोचन बताते है कि इस दु:खींम टिफिनवालो का कूक शादी के कारण बिहार गया है। वापस आने के बाद वह शुअर क्वालिटी मेंटन करेगा । मुझ पर भरोसा करो यह बात बताते उसका मालिक खुद हूँ यह कबूल करते है। तब छात्र जोर से हँसने लगते है।

क्लास में वह खुद की आईएएस की संघर्षपूर्ण कहानी बताते है। किस प्रकार परीक्षा के दौरान खराब खाना खाने से हैजा हो गया था। और उनका करिअर कैसा खराब हुआ था इसकी रंजक कहानी बताते हैं।

अब छात्रों का पेट खराब न हो इसलिए खुद ही दुखीम टिफिन शुरु किया है यह बात बताते है। उनके क्लास के प्रमुख निर्देशक खगेंदरजी प्रा. दु:मोचन जी की किताब 'अच्छा भोजन पक्का सिलेक्शन' यह खरीदने कि शिफारस करते है। और यह बताते है कि अगर आप गंभीर न हो तो यह पुस्तक मत खरीदों क्यों की आप टाइम पास कर रहे हो। उस पैसे से आप चाउमीन खरीद ले यह भी बातते है।

संक्षेप में हम इतना कह सकते है कि यह दु:खमोचन अध्यापक अपनी डयूटी अच्छी तरह निभाते नही है। छात्रों का समय बरबाद करते हैं। आईएएस जैसे क्लास में बुध्दिहिन अध्यापक का भरना करना कितना नुकसान होता है। इसका यह उपन्यास उदाहरण है। उनके ज्ञान से किसी को फायदा नही होतो है। बल्कि ज्यादा नुकसान होता है।

5) मनमोहिनी वर्मा –

डॉर्क हॉर्स के उपन्यास की पात्र है। उपन्यास के उपपात्र में इसका चरित्र चित्रण सामने आता है। वह 'लोकसेवक मेकर' नाम कोचिंग क्लास की रिसेप्शनिष्ट है। उनका काम है, अॅडमिशन करने आये छात्रो को क्लास कि स्ट्रक्चर बताना है। लेकिन वह कभी खुद एक अभ्यासपूर्ण और विषय तज्ञ की तरह छात्रों को विषय के बारे में बताती है। वह संतोष और रायसाहब को इतिहास विषय बदलने की सलाह देती हैं। वह इतिहास विषय बिलकूल न ले यह भी बताती है। अजीब सब्जेक्ट है। ऐसा बताती है। दरसाल उसे इस विषय में कम मार्क मिले थे। इसलिए वह छात्रों को सोशालॉजी, पब्लिक अँड सोशालॉजी लेने को फोर्स करती है। उनका यह मानना है की थ्री मंथ में सब्जेक्ट कंम्पलिट होता है। बाकी के विषय को रिवाज करने की लिए छात्रो को समय मिलता है। यह विषय रिटायर्डमेंट तक काम आ सकता है। इस विषय के कारण आईएएस ट्रेनिंग के दौरान बडा कंर्फट फील होता है। यह बाताते हुए खुद हँसते हुए संतोष का फार्म भर कर यही विषय सिलेक्ट करती है। उसे फोर्स करवाकर अपना काम बनवाती है।

दरसल संतोष के जो ग्रॅज्युएशन का विषय था छूट जाता है। मनमोहीनी मुस्कुराकर यह काम करवाती पर इसके लिए कौन जिमेदार है उसकी पहिला मुस्कान पर ही विषय चेंज होता है। वह खुद बारहवी पास है मगर भारत के सर्वोच्च आईएएस परीक्षा में छात्रों का विषय कहाँ से कहाँ पहूँचाती है। इतना ही नही वह रायसाहब का भूगोल विषय बदल देती हैं। और हिंदी विषय मेन के लिए रखती है। इस तरह खुद का मनमानी करनेवाली मनमोहीनी अपने हँसी का उपयोग करके कोचिंग क्लास के छात्रो को उल्लू बनती है।

उसकी हँसी का अर्थ न समझनेवाले अनेक संतोष की तरह पागल होते है। गाँव से आया संतोष उसकी हँसी में अपनी प्रियेसी ढूँढता हैं। उसका नंबर मांगकर सेव कर देता है। रात को उसे फोन करके के बोलने की कोशिश करता है। दूसरे दिन उसे अपना वह असली रुप दिखाकर संतोष को जमीन पर लाकर खडा कर देती है। वैसे यह पात्र व्यावहारिक रुप में सामने आता है। केवल क्लास का भला और पैसा मिले इसलिए वह यह सब काम करती हैं। इस पात्र के कारण संतोष के जीवन को नया मोड मिलता है। और सब कुछ छोडकर अंत में एकांत वास में चला जाता है। पहले, दूसरे, तिसरी बार प्रयत्न करना तिंा है।

6) मयुराक्षी – गुरु, संतोष, मनोहर के तरफ दिल्ली में आईएएस की तैयारी करनेवाली मयूराक्षी का चित्रण उपन्यास के बीच आता है। होशियार, अध्ययनशील यह छात्रा हैं। शर्मिली, भोली और कम बात करनेवाली मयुराक्षी का कोई मित्र नही है। वह केवल गुरु के साथ बात करती है। उनके साथ रहती है। दोनो कई घंटे परीक्षा के अध्ययन क्रम, जनरल न्यूज के बारे मे और नॉलेज पर बाते करते है।

ई किताबों मे से नोटस निकालते दोनों में जोर से बहस होती है। उसमे बढे विचारों का महाग्रंथ तैयार होता हैं। मयुराक्षी मृदूल है वह अंर्तमन से गुरु को पंसद करती हैं। मगर गुरु का सपना आईएएस जल्द पूरा हो जाये इसलिए वह उसके ज्यादा संपर्क में नही रहती हैं। वह अपने भाई के साथ रुम लेकर रहती है। जब वह पास होती है तब पहले गुरु को रिजल्ट बताती है। दोनो खूब रोते है और एक दुसरे के विवाह बंधन में रहने की कसम खाते है।

उपन्यास में गुरु और मयुराक्षी की लव स्टोरी, से अत्यंत मर्यादापूर्ण और भारतीय संस्कृती की आर्दश वर्णन प्रेम कहानी सामने आती हैं।

7) गोरेलाल यादव – रायसाहब के बगलवाले कमरे में रहता यह लडका है। जिन्होने आते ही रायसाहब का रहन सहन पॅटर्न सब चेंज कर दिया हैं।

गोरेलाल यादव आजमगढ का रहनेवाल है। उसका रंग काल है जो कभी न छूटनेवाला गहरा पक्का रंग है। उसकी पाँच फिट पाँच इंच लंबाई है। सताईस साल में उसके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नही िं है। हर कंपनी कि गोरेलाल ने क्रिम लगाई । मंहगी से मंहगी क्रिम परंतु फर्क नही पडा था। गोरेलाल का नाम सार्थका था। उसे लडकियों में का ज्यादा रुचि है। जितनी तेंदुलकर को क्रिकेट में अधिक उसकी तरह उसे है। उसका कुविचारो से प्रेरित होकर बहुत सारा कुडा दिमाग में भरता है।

गोरेलाल ने कमरे में खाना बनवाने के लिए महिला आयशा रखी है। जिसके दो बच्चे है। गोरेलाल के अंदर अधिकारी वाली फिलिंग आती है। जैसे उसकी कुक आती उसके मोबाईल में ‘हम होंगे कामयाब एक

दिन' यह गाना बजता है। यह गाना लगाने के पीछे किसी को समझ नही आता है। यह होने वाले आईएएस अधिकारी के लिए बजवाता था यह रहस्य है।

आयशा आने के बाद गोरेलाल दौडकर किचन में जाता है। जब तक वह बर्तन धोती तब तक वह सब्जी काटकर तैयार करता है। उसके बाद आयशा चूला चढाकर उसपर कढाई चलाकर अंदर कमरे में जाकर लॅपटॉप खोलकर बैठती है। फिर गोरेलाल उसके पंसद का खाना खुद बनवाता है। दोनो साथ बैठकर खाते है। वह चली जाती है। यही दिन कम होता है। कभी चुपके से रायसाहब गोरेलाल के कमरे में जाकर उनके बारे में पुछताछ करता है। तब आयशा गोरेलाल कमरे नही कहकर उन्हे भगा देती है। उस दिन आयशाने पंसती का लच्छा पराठा और चिकन करी लाने के लिए गोरेलाल को कैम्प में भेजा था। इन दोनों के बीच कुछ न कुछ है यह संदेह रायसाहब को है।

8) आयशा – 'डार्क हॉर्स' में मध्य पर यह पात्र का चरित्र चित्रण मिलता है। आयशा को दो बच्चे है। उसका शौर उसे घर में मारता है। वह बहुत ही चालू चीज हैं। वह गोरेलाल की नौकरानी है पर उसे काम लगाकर अपनी हर तमन्ना पुरी करती है। इतना ही नही वह रायसाहब के साथ भी संबध जोडकर उसके साथ बगीचा में घुमती है। जब उसका पती देखता है। तब उसे पीटता हैं। वैसे उसके अनेक लोगों के साथ अनैतिक संबंध है। इन दोनो छात्रों के साथ संबंध रखते हुए भी वह किसी और के साथ पती को घर में छोडकर भाग जाती है। और पति को चुना लगाती है ।

इस प्रकार उपन्यास में इन उप पात्रों से अनेक कहानियाँ, प्रसंग का चित्रण व गतिशिलता लाने में लेखिका सफल हुई है।

3.3.3 देश काल तथा वातावरण –

उपन्यास लेखन में जिस प्रकार कथा वस्तू, चरित्र चित्रण घटनाएँ आवश्यकता होती है। उतनी देशकाल वातावरण भी महत्वपूर्ण तत्व होता है। उपन्यासकार जिस देश और काल का वर्णन अपने उपन्यास में करता है उतना वह उपन्यास प्रसिध्द होता है। डॉ. गोविंद जी के मतानुसार ''देशकाल तथा वातावरण का उपन्यास में वही स्थान है जो चित्र में उसकी पृष्ठभूमि का है।'' डॉ. गोविंद के नुसार उपन्यास में वर्णित कथानक के पात्र काफी देशकाल के बंधन में रहने चाहिए क्योंकी उपन्यास में देशकाल तथा वातावरण उसके चरित्रों को सोच-विचार तथा वातावरण के वर्णन में औचित्य रहता है। इसके अंतर्गत कथातत्व से संबधित सभी बाहय उपकरण जैसे आचार-विचार, रहन-सहन, रिती रिवाज, सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक प्राकृतिक विशेषताएँ परिस्थितियाँ आती है।

किसी भी अध्ययन का अध्ययन करते समय उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक भौतिक, प्राकृतिक आदि विविध भागों मे वर्णित देशकाल एवं वातावरण पर प्रकाश डाला जाता है। सामाजिक, सांस्कृतिक चित्रण के अंतर्गत उस देश और काल की, जहाँ उस उपन्यास का कथानक घटता है। वहाँ की सामाजिक, रीती रिवाज शिष्टाचार, भाषा का प्रयोग, वेशभूषा, त्योहार आदि को चित्रण होता है। यर्थाथवाद, भौतिक प्राकृतिक चित्रण क अंतर्गत उपन्यास कार चरित्रों की मानसिक भावनात्मक, रागात्मक स्थितियों का परिचय देता है।

प्रकृति का कभी अनुकुल अवस्था मे होता है तो कभी प्रतिकुलवस्था में गंभीर भयानक, व्यंगात्मक, विरोधात्मक चित्रण व्यक्त किया जाता है।

वैसे तो देशकाल वातावरण हर उपन्यास में होता है परंतु उपन्यास यर्थायवादी सत्य घटना पर आधारित हो तो स्वंय अभ्यासकार उस काल का पूर्ण अभ्यास जानकारी लेकर कयानक में ढालता है। तभी उपन्यास में एक और कलात्मकता सजीवता, स्वाभाविकता, उत्कंटता छा जाती है। वातावरण से संबधित सैध्दांतिक बातों की मध्य नजर रखते हुए जब नीलोपाल मृणाल के 'डार्क हॉर्स' उपन्यास का अध्ययन करते हैं। तब दिल्ली के आसपास के परिसर का वर्णन हुबहुब चित्रण मिलता है। दिल्ली का बत्रा चौक, खर्जी नगर, नेहरु विहार, गांधी विहार, नजदिक के छोटे छोटे उपनगर शहर गोपालपूर, इंदिरा विलास, निरंकारी कॉलनी, वजीराबाद, परमानंद कॉलनी, रेडिओं कॉलनी, विजय नगर, क्रिश्चन कॉलनी आदी के परिसर में रहनेवाले छात्र और उनके संबध में घटी घटना, प्रसंग और परिसर का वर्णन उपन्यास के कथानक को आगे बढाने में मदत करता है। इस परिसर में यु.पी एस.सी आईएएसी परीक्षा की तैयारी करनेवाले छात्र 5 ते 8 वर्ष रहते है। उनके संबध में उदा: परीक्षा फॉर्म भरने का प्रसंग हो या किताबे खरीदारी करने का क्षण हो। घर से आए पैसो का मामला हो। यह सभी घटनाएँ ईदगर्द घटती रहती है। छात्र लोकसेवा आयोग ऑफिस में जाकर अपने आप को किस प्रकार महसूस करते है। इसका चित्रण भी छात्रों के व्यवहार से है। कई प्रसंग हो या वहाँ के रेस्टॉरंट, दुकान झेरॉक्स, सेंटर, होटल, आदि का वातावरण चित्रण उपन्यास में उत्कंता बढता हैं। सभी घटना चित्रपट की तरह प्रस्तूत उपन्यास में चित्र बध्द होती है। जिससें उपन्यास पढने में मजा आता है। एक बार उपन्यास हाथ लेने से पूरा करके ही रखने की भावना होती है।

लेखिका ने सभी घटनाओं का काल, वातावरण उपन्यास में बहुत सुंदर निर्मित किया है। छात्रों की रंगील पार्टी, हँसी, मजाक, शराब सिगरेट की धुआएँ घटना स्थल पर हुए विनोद चुटकुले गाने का माहौल, डॉर्क हॉर्स उपन्यास में यशस्वी चित्रित होता नजर आता है।

3.3.2 कथोकथन या संवाद

उपन्यास में तीसरा महत्वपूर्ण तत्व है। कथोकथन इसका स्वरुप इतना वैविध्यपूर्ण रहा है की आज तक इसे कोई भी विद्वान परिभाषा में बद्ध करने में सफल नही हो सका है। प्राय: पात्रो की बातचीत को ही कथोयकथन या संवाद कहाँ जाता है। प्रारंभिक उपन्यासों में कथोयकथन का वह रुप देखने नही मिलता है जैसा कि आज है। आज के उपन्यासों के संवाद में स्वाभाविकता को देखा जा सकता है। जब की आरंभिक उपन्यासों में नाटकीयता दिखाई देती थी। ''कथापेकथन के द्वारा कुछ विचारो को सजीवता देने में सरलता र्तिी है। नाटको में जो वस्तू अभिनय द्वारा व्यक्त होता है, उपन्यासों मे वह बहुत कुछ कथोपकथनों द्वारा लाया जाता है'' संवाद चयन के पीछे प्रत्येक उपन्यासकार का अपना एक निश्चित उद्देश होता है। कथानक का विकास करना, पात्रों की व्याख्या करना, लेखक के उद्देश को स्पष्ट करना, कथोपकथन के द्वारा ही उपन्यासकार दृश्यों में सजीवता लाते है और कथानक विस्तार करने में कथोपकथन मदद गार है। 'डॉक

हॉर्स' उपन्यास के लेखक नीलोपाल मृणाल द्वारा उचित स्पष्ट, सजीव एंव सरस कथोपकथन पात्रों के जरिए लेखिका उद्देश की पूर्ति तक पहूँचने में कामयाब हो गयी है।

उपन्यास में कथोपकथन के निम्न प्रकार के गुण देखने को मिलते है। या इसप्रकार संवाद देखने को मिलते है।

१) उपयुक्तता कथोपकथन (संवाद)

'डॉर्क हॉर्स' उपन्यास में जो संवाद है महत्वपूर्ण है। इस संवादो द्वारा घटना वातावरण के दृष्टिसे उपयुक्तता है। डॉर्क हॉर्स उपन्यास में आईएएस का अध्ययन याने स्पर्धा परीक्षा का अध्ययन करने वाले छात्रों की आत्मकहानियाँ है। जो भी छात्र एक दुसरे से मिलता बोलता है। वही बातें है। परीक्षा में रखे गये विषय, पेपर, लेक्चर, क्लास की बातें करता है। यात्रा के दौरान छात्र, और उपन्यास पात्र करते है। संवाद, अध्यापक की बाते संवादक रुप में दी गई है ।

उदा.

1) ''चाचा ये विश्वविदयालय का टिकट हैं। यही मिलेगा?

2) ''जी हमको विश्वविदयालय जाना था।''संतोष ने स्पष्ट स्वर में कहाँ।

3) ''अच्छा, ये सब इसका मुखजी नगर में ही है ना? संतोष ने पुछा

4) ''हाँ यहाँ सारी कोचिंग है, और बस नाले के पास सडा हुआ है नेहरु बिहार, सब एक ही एरिया है।

5) ''आप क्या विषय रखिएगा, कुछ सोचे है संतोषजी इतिहास से बी.ए.हूँ वही रख लेगे एक तो, दुसरा आप ही मार्गदर्शन कर दिजिए''

6) ''चलिए फिर दुसरा हिंदी साहित्य रख लीजिए हाल से अच्छा अंक आ रहा है इसमें काफी लोग सिलेक्ट हो रहे है, इतिहास और हिंदी साहित्य के कॉम्बिनेशन से ''रायसाहब ने एक एलआयसी एजेंट की भाँती पॉलिसी समझाने जैस कहाँ।

7) ''देखिए, एक लोक सेवा की तैयारी करने वाले विद्यार्थी के लिए लोक प्रशासन विषय से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कुछ भी नही हैं। यह विषय आप में पढाई और परीक्षा की तैयारी के दौरान ही एक प्रशासक गढ देता है। आप एक अधिकारी की तरह सोचने लगेंगे। आप में एक प्रशासक के गुण विकसित होने लगेंगे। मतलब आपको इंटरव्यू के लिए तो अलग से कुछ नही करना होगा पार्टी आपका खुद-ब-खुद तैयार हो जाता है। आपको खुद में एक आईएएस बैठा हुआ नजर आएगा, बस उसे निकालने की जरुरत होगी, और समझिए आप सिलेक्टेड विषय पढनेवाले का आत्मविश्वास इतना बढ जाता है की हमारी कक्षाओ में कई छात्र कोट पैंट पहनकर बिलकूल एक प्रशासकीय अधिकारी की भाँति बनकर पढने आते हैं। जब तक आप खुद में दिन रात वो फिलिंग नही लाओगे तब तक कहाँ से उसे पाओगे।

आप सिलेक्ट न भी हुए तब भी किसी आईएएस की जगह आईपीएस देख रहा था क्योंकी एक ही जिले में दो जिलाधिकारी संभव नही थे।''

2) **स्वाभाविक संवाद –** 'डॉर्क हॉर्स' पात्रो के द्वारा उनके मुख से स्वाभाविक संवाद द्वारा ये कथानक में सरलता सहजता आ गई है। जैसे जैसे उपन्यास पढते है। पात्रों द्वारा उपन्यास का विषय उसका महत्व प्रतिपादित होता है। संतोष, गुरु, मनोहर रायसाहब का वार्तालाप छात्रो अवस्था से प्रेरित और सहज स्वाभाविक है। जैसे –

1) विनायक बाबू ने बाल्टी रखते कहा – ''तनी नल चला व त 5 मंगनू, झट से नहा ले, निकलना है।

2) ''अभी ई भोरे भोरे दिल्ली?'' ठाकूर जी ने बडे कौतुहल से पूछा

3) ''हाँ बी.ए कर दिया ''

4) ''ऊ बात तो ठिके बोला हाँ यहाँ कुछ भविष्य न है। खाली एम.ए.,बी.ए. के कौन पूछता है आजकल! हमारे साढू साहब भी यही किए, इन्हे बोकारो स्टिल – प्लांट में है।''

5) ''आइए आप जल्दी – जल्दी कलिंता पहनिए संतोष तैयार हो गया है''

6) संतोष से पुछा – एटीएम रख लिए हो?

7) अरे रखलो केतना भारी है, खाना –पीना! फेर कब आओगे, छ:महिना कि सालभर पर''

8) मेट्रो स्टेशन किधर पडेगा? संतोष वो सामने ही तो है, लेफ्ट में भई''

9) ''नबंर चाहिए क्या हमारा भी? पायल ने हँसते हुए कहाँ

10) हे भगवान! अरे रात को क्या कर रहे थे। आप लोग महाराज?

11) ''कितने बजे की ट्रेन है? मनोहर ने पुछा ''6.30 बजे, चलो अब निकलना होगा मुझे? विदिशा ने कहाँ

12) ''चलिए हम स्टेशन तक छोडने आते है, जहाँ तक साथ चले, वहाँ तक तो चले'' संतोष ने अजीब सी मुस्कुराहट से साथ कहा।

13) अरे मनोहर लाल, मेरे भाई जल्दी आओ संतोष मिल गया है। गूरु ने लगभग चीखते हूए कहाँ

14) ''अरे का बोल रहे है कहाँ मिला संतोष?

''आओ न यार बहू उँचाई पर मिला है। बत्रा सिनमा के सबसे उपर वाले छत पर है''

15) अब उतना उप्पर जा के कोई नही उतरता.

३) संक्षिप्तता संवाद –

प्रस्तूत उपन्यास के संवाद इतने संक्षिप्त है कि उपन्यास कहानी का प्रसंग सहज पाठको के ध्यान में आत है। उदा. के लिए संक्षिप्त संवाद देखते है।

1) ''अभी ई भोरे - भोरे दिल्ली?''

''चले हम आते है छोड के और हाँ आज दोपहर का खाना मा बना दुएगा हमारा''

2) ''आइए चाय लिजिए, बिस्कूट दूँ क्या?

''नही बस चाय ही रहने दिजिए।''

''हाँ! हेलो प्रणाम पापा!

'' हाँ, खूश रहो, अरे पहूँच गए? फोन भी नही किए!

''टेन्शन हो रहा था यहाँ ।'' विनायक बाबू बोले

3) ''चलिए थोडा बाहर चले, कुछ खाकर आ जाएगा - रायसाहब। संतोष ने पेट पर हाथ रखते हुए कहाँ।

''भूख लग गया! यहाँ रहिएगा तो हम लोगों की तरह इस पर विजय पा लिजिएगा पढाई और उसकी परिचर्चा में भूख का पता ही नही लगता है यहाँ लोगो को ''

4) रुस्तम भाई एक हेल्प करिए ना! ये संतोष जी का कमरा चाहिए था। जुगाड हो तो बताइए

''कमरा खोजना है संतोष के लिए'' रायसाहब ने का

''अच्छा रुम का लफडा है। चलिए, चलते है, जल्दी से मुँह - हाथ धो लेते है।''

5) आज पीटी का एक्जाम था। किसी के लिए कयामत...... किसी के लिए जिंदगी बदलने की शुरुवात का दिन।''

''उधर, मनोहर, गुरु, विमलेंदू, मयूराक्षी भी अपने अपने सेंटर पहूँच चूके थे''

''अरे अरे ई का हो! जादू! रायसाहब आप? महाराज आप तो एकदम लौंडा लग रहे हो''

''हाँ हाँ पायलजी! मैं ही बोल रहा हूँ अब लगा न थोडा अपनापन तभी आप एकदम से अजनबी की तरह बोल दिए थे'' रायसाहब ने कहाँ

''नही यार तब जस्ट पी थी न सो थोडी तमीज आ गई थी। अच्छा मुझे पर एक कृपा करोगे मेरे कृपा रॉक स्टार, मेरे? पायल ने मारक अदा से कहा।''

''अहो, अरे कृपाशंकर हो का बेटा? मिआजी ने कहाँ

''हाँ चचा, बस अबकी होना ही है, लगे है बस इहे साल और'' रायसाहब कहते निकल गए।

4) **उद्देशपूर्ण संवाद -** 'डॉक हॉर्स' उपन्यास की विशेषता है कि लेखिकाने जो संवाद लिखे है वह जनमानस भाषा में लिखे हैं। प्रत्येक वाक्य का कुछ न कुछ उद्देश देखने को मिलता है। गुरु के संवाद,

संतोष, रायसाहब, मनोहर विमलेंदू के संवाद में सफलता के लिए जो वातावरण स्फुर्ति, चेतना पूर्ण संवाद है जो उपन्यास का मुख्य उद्देश सफल बनाने में कामयाब हुआ है। उदा: के लिए कुछ संवाद देखते है–

1) ''ऐसा है मनोहर बाबू तुम अपना समय खराब ना करो। कल एम्स जाना है भोरे - भोरे आज तुम अपना कर लो हम यही रहते है, रुम पर अपना पढाई मत बर्बाद करो'' चाचाने बाल झाडते हूए कहा.

2) ''एक तो इतिहास है जो इसका पुश्तैनी है ये लेकर आया है और एक इसे यहाँ हासिल करना है। हिंदी की वकालत रायसाहब करने गए है कि जब कि इसके एक परिचित समाजशास्त्र समझाए है? गुरु ने स्पष्ट करते कहाँ

3) ''कोचिंग का सिलेक्शन में सिमित ही महत्व है। मैं तो कहता हूँ बिना कोचिंग किए भी तैयारी करके सफलता प्राप्त की जा सकती है'' विमलेंदू ने चाय सुडकते हुए कहाँ।

4) ''भाई विमलेंदू जरा एक नए आए विद्यार्थी के नजरिये से सोचकर देखो। ये कैसे संभव है कि हम किसी को कोचिंग लेने की सलाह दे दें। अरे! यार, कोई आदमी हजार किलोमीटर अपने घार से दूर यहाँ दिल्ली आता है कि यहाँ रह के तैयारी करेगा, अच्छा मार्गदर्शन पाएगा. विषयों को पढानेवाले विशेषज्ञों से पढेगा, सफल लोगों का अनुभव लेगा, ऐसे में दिल्ली आया कैसे कोचिंग नही लेगा भई! उसके तो आने का प्रयोजन ही कोचिंग लेना था। भला एक कमरा लेने थोडे आया है दिल्ली इतनी दूर''गुरु ने कहा -

5) पर ये तो मानता होगा की यहाँ कुकूरमुतों की तरह उगे कोचिंग मे क्वालिटी नहीं है। कुछ को छोडकर बाकी मायाजाल फैलाए हुए है गुरु।'' विमलेंदू ने कहा

6) हॅलो गुरु भाई, भाई शाम को जब से रिजल्ट आया है तब से फोन लगा रहे है, संतोष का फोन ऑफ जा रहा है। जरा देखिए न कहाँ है रुम पर है क्या''

7) ''आँय, अरे हम तो अभी पटना में है। अरे ऑन हो जायेगा कोई नहीं मरता फेल हो जाने पर यार, टेशंन मत लो जा के देख ले रुम पर। वही होगा अब हमारे जैसा पीकर थोडे मन हल्का कर रहा सुतल होगा। जाओ देख। आओ हमारा अंतिम चांस माटी में मिल गया। सारा दर्शन खत्म सारी गुरुभाई भीतर चली गई हमार फिर भी जिंदा है न?

8) ''अरे बाप रे ये क्या गुरु भाई संतोष आईपीएस बन गए।'' मनोहर खुशी से चिल्लाया

''हाँ मनोहर ये रेस का डार्क हॉर्स साबित हुआ डार्क हॉर्स निकला हमारा संतोष।'' गुरु ने कहकर अपनी नम आँखे पोंछी

5) कथा संबधित संवाद – प्रस्तूत उपन्यास में पात्रो के कथोपकथन में कई भी असंकलीत संवाद आयें नहीं है, क्योंकी यह कहानी उन छात्रों की है जो अपना सबकुछ छोडकर एकांत दूर कही में अध्ययन

तपस्या करते है। अनेक प्रसंग को लेखिकाने चित्रित किया हैं। कोई भी छात्र अध्यापक/आईएएस/या सिविल परीक्षा को छोडकर बात करते नहीं हैं। इसलिए यह उपन्यास प्रसंग, कथा और कहानी उपन्यास में संदर्भ में ही पात्रों के संवाद संबधित रहें है उदा: के लिए हम परीक्षा के विषय संदर्भ में संवाद देख लेते हैं –

1) ''हाँ आप ठीक बोल रही है और वैसे भी हमें चाहिए कोई भी हो।'' संतोष ने आँख मुँदकर सहमत होते हूए कहा.

2) ''तो ओके, फस्ट आप ये फॉर्म, फिलकर दो दिन की फी जमा कर देना कोई क्वेरी हो तो कहिए?'' लडकी ने रजिस्टर निकालते कहाँ।

3) ''आप कभी दी थी कि नहीं, मैडम यूपीएसी? संतोष ने अपना मौखिक सवाल दागा।

4) ''या! थ्री टाइम्स दिया। थ्री टाइम्स मेंस लिखा बट मुझे लगा कि दिस इज नॉट माई फिल्ड मैं और कुछ करना चाहती थी। सो अब तैयारी छोड दी।

5) ''रायसाहब बहूत याद आइएगा आप यार।'' संतोष ने कहा ''खैर बहूत कुछ सीखे यहाँ और ये भी जाने कि टैलेंट ही सब कुछ नहीं हैं भाग्य में भी होना चाहिए तभी होगा। साला बोलिए हमरे जैसे किताबी कीडा का नही हुआ, गुरु जैसा लडका रह गया हैं। भाग्य में नही है तो कभी नही होगा। अब आप लोग भी देखिए क्या होता है? हमारा तो साला करम ही दारु मुर्गा, से लेकर थाना पुलिस साला सब देख लिए।''

6) **मनोवैज्ञानिक संवाद –**

प्रस्तूत उपन्यास छात्रों के जिंदगी पर उनके यश पर बात करता है। तब पात्रों की हर दिन नई मानसिकता, आंनद, उन्हास, खिन्नता, निरसता, 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के पात्रो मे पाई जाती है, परंतु ये पात्र रुपी छात्र अपने समाज, माँ बाप, और करिअर के प्रति रही उनकी मनादेशा मनोवैज्ञानिकता उपन्यास को बढियाँ उंची पेर लेकर खडा करती हैं। छात्र सफलता न मिलने के बाद भी वे स्थिर रहते है। इस उपन्यास में छात्र की मानसिकता अत्यंत जरुरी है। वे हर काम में अपने आप को आईएएस अधिकारी के रुप में देखते हैं। जब छोटी मोठी परीक्षा देते हैं तो बाकी के लोग उन्हे उपर चढाते है। उनकी यह मानसिकता दुसरे व्यक्ती को भी उसी प्रकार बनाती।

1) ''अरे किरपा बाबू कहाँ आइए महाराज! कहाँ थे दो दिन गायब एकदम महफिल सुना था यार।''

अरे उ लोअर मेंस का थोडा तैयारी मे फँसे हुए है'' क्या किरपा बाबू आप जैसा विद्यार्थी लोवर – फोवर के चक्कर में पडा है? अरे! आप आईएएस पर फोक्स होइए महाराज।'' रुस्तम ने रायसाहब में कृत्रिम हवा भरते हुए कहाँ।

7) गालियाँयूक्त संवाद :–

मनोहर की मानसिकता रिस्पेक्ट को लेकर सामने आती है ''अजी यहाँ लोकल लोंगो का व्यवहार ऐसा ही है। मकान मालिक भी लडको को झाँट ही समझता है। एक तारीख आ नही कि कपार पर चढ जाता है। लगता है जैसे देश छोड के भाग रहे हैं। प्रॉपर्टी डिलर की भाषा तो आप सुन ही लिया। और साला यहाँ हमी लोग हिजडा है। एक बार मिल के आवाज उठा देते तो दिल्ली हिल जाता लेकिन नही आया चूप चाप सूनेगा काहे कि आईएएस बनते आया है। साला, हम तो कहते है डूब मरना चाहिए ऐसा आईएएस बनने से पहले। भोसडी के जब इज्जत ही नही बचेगा तो का उखाडेंगे आईएएस बन के''

''ये क्या चुतियागिरी कर दिए ये आप भरतजी..... का तरीका है। ''

''इटस माई नॉर्मल बिहेविअर मनोहर, इटस माई लिविंग स्टाइल । मै हिंदी मिडियम के लौंडो की तरह छुपकर सिगरेट – दारु नही पीता और न ही पब्लिक में आईडियल पर्सन बनकर घूमता हूँ वी आर फ्रैंक । हम इंग्लिश मिडीयम वाले कुछ छूपाते नही।

8) **विनोदी कथोपकथन (संवाद)** – प्रस्तूत उपन्यास में दिल्ली के विविध क्षेत्र से आये लडके परीक्षा की तैयारी करते, एक दुसरे के मित्र बनते है हँसी मजाक विनोद पूर्ण वातावरण बनता है। इसका चित्रण भी प्रस्तूत उपन्यास में हुआ है। हुआ है। उदा. के लिए कुछ....

1) ''वो कौन था एक बुजूर्ग सा आदमी'' चाचा ने किसी के बारे में पूछा ।

''वो रायसाहब थे''

''जी वो हम लोग प्यार से रायासाहब कहते है, वो भी साथ मे तैयारी कर रहे है।''

''क्या इतना उम्र का आदमी भी तैयारी करता है? धन्य है ई जगह हो बाबू''

2) ''अरे अरे ई का हो !जादू! रायसाहब आ? महाराज आप तो एकदम लौंडा लग रहे हो।''

''अरे आप लोग तो जान ले लिजिएगा महाराज आप सब एतना फैशन करते है, तनी हम कर लिए तो बवाल काट दिए ई त अन्याय है। रायसाहब ने हँसते कहा।

3) ''गुरु भाई हम बर्बाद हो गए है, ई हमारा लास्ट अटेम्ट था हमारा नही हुआ पीटी । सब खतम अब पीसीएस का सहारा है। पढाई का तरीका बदलना होगा''

आँसू बहाते रायसाहबने कहाँ

''गुरु ने मूंह पोछने के लिए गमझा दिया – आप पढाई का तरीका बाद में बदलना पहले ई जॉघिया बदलिए साला यूपीएससी को सलेबस से ज्यादा पुराना हो गया है।'' गुरु के कहते ही सब हँसने लगे ''अरे कुकवा – वाला नही बोले हट मर्दवा आप भी! हा!हा!हा!'' सब हँसने लगे आशावादी संवाद – प्रस्तूत

उपन्यास का आदर्शपात्र गुरुभाई सभी को हिम्मत, आशावाद, आधार देता है। उसके सामने सभी चूप होते है। संतोष फेल होने पर उसके पिताजी भी हिम्मत देते है

1) ''अरे इसमें रोने का क्या है? अरे चूप! पागल देखिए, अरे बेवकूफ। अरे चूप अरे कहाँ है। इसकी माँ देखो भाई समझाओ इसको अगली बार हो जाएगा बेटा रोओ मत फिर पढो मेहनत से जरुर होगा।'' विनायक बाबू ने पहले तो बेटे के इस तरह रोने से असहज होने के बाद ढाँढस बंधाते हुए कहा।''

2) परेशान क्यों हो इतना अभी पहला चाँस था पहले चांस में विमलेंदू का भी नही हुआ था, अब की देखो अंतिम चांस में मयुराक्षी का हो गया पीटी! इतना अब का काहे गए हो'' गुरु ने औपचारिक सात्वना देते हुए कहा।

9) भावनात्मक संवाद – इस उपन्यास में बहूत ही भावनिक संबधीन संवाद है क्योंकी छात्र जब गाँव से निकलते है, माँ, बाप से विदा होते, शहर आते है। मित्र मैत्रिण से दोस्ती होती है। प्यार में धोखा मिलता है। गाँव से आने के बाद घर में दु:खद घटना घटती ऐसे प्रसंग उपन्यास में है इसलिए ज्यादा से ज्यादा भावनात्मक सुख दु:ख के कथोपकथन (संवाद) प्रस्तूत उपन्यास में ज्यादा मिलते है। कुछ उदा: के लिए इस प्रकार है –

1) जावेद घर पहूँचता है तब आम्मा गुजर चूकी थी –''अम्मी पूछो न कब आसमान जीतूंगा मै। अम्मी उठ अम्मी उठो न उठो न अम्मी।''

2) ''बहुत चूतिया फिल्ड है यूपीएससी पढकर मर गए सालभर पीटी नही हुआ। ''रोने लगता है।

3) ''अलविदा बुढऊ, अलविदा'' मनोहर आते रायसाहब के गले लग कहा।

''हाँ मालिक अब हम तो बुढा हो गए, हमसे नही हआ ई साला आईएएस अब इजाजत मांग लिए है दिल्ली से'' रायसाहब ने कहा सब भावूक हो गये इसी प्रकार के बहुत प्रसंग में आँखो में पानी आने लगता है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

अ) विकल्पीय समग्र पाठ्यक्रम पर आधारित बहुदिल्लीय प्रश्नों के उचित विकल्प लिखिए।

1) संतोष के पिताजी ....थे।

अ) अध्यापक ब) दूकानदार क) व्यापरी ड) शास्त्रज्ञ

2) गुरुराज के कमरे में .... की गजल लगाई जाती गई थी।

अ) पंकज उदास ब) आबिद परवीन क) नासिर फतेहरी ड) भीमराव पांचाल

3) संतोष ने ....कालेज से ग्रॅज्यूशेन किया था।

अ) मदनपूरन सी.बी.सी.कॉलेज ब) दिली नेवाडा कॉलेज

क) भागलपूर ड) आर.सी कॉजेज गंगापूर

4) संतोष के माता का ....नाम था।

अ) इंदिरादेवी ब) चिमादेवी क) कमलादेवी ड) श्रीदेवी

5) गुरुराज झाराखंड के...........कालेज का छात्र था।

अ) के.सी. कॉलेज ब) रौनक तमाना कॉलेज

क) संत कोलंबस कॉलेज ड) सेंट झेविअर कॉलेज

6) संतोष............गाँव से दिल्ली आया था।

अ) कानपूर ब) बनारस क) उजैन ड) भागलपूर

7) गुरु पार्टी के बारे में............ को गालियाँ देता है।

अ) मनोहर और रायसाहब ब) संतोष और मनोहर

क) विदिशा और पायल ड) प्रफुल और दुःखमोचन

8) गाँव से आये चाचा का............भतीजा दिल्ली में था।

अ) रायसाहब ब) संतोष क) प्रफुल ड) मनोहर

9) गोरेलाल के रुम में........... खाना बनाती है।

अ) सुफिया ब) नूरजहाँ क) आयेशा ड) फरिदा

10) मनोहर की ....सहेली थी।

अ) पायल ब) सोफिया क) विदिशा ड) सुनेत्रा

3.5 पारिभाषिक शब्दार्थ

गमच्छा - अंगोछा

दतूवन - दातून, पौधे का तना जिससे दांत साफ किया जाता है।

गढिया - गढनेवाला वस्तूओं को गढकर सुडौल करनेवाला व्यक्ति

सॅटूअना - आदमी की खिन्न होने की अवस्था

पेट का गुलाम - लाचार

लटक - धोकेबाज, धुर्त, फोकटा

बकचोदी करना - वायफल फालतू बकवास

कॉम्बिनेशन - एकत्रित

एम्स - दिल्ली का प्रसिध्द अस्पताल

चौपालो - चपल

मतलबी – स्वार्थी

मौके पर चौका – मुहावरा:– सही संधी का फायदा उठाना

सतुआ – सतू (खाने का पदार्थ)

ठेकुआ – हाथोडा मारना

बोरसी – अंगीठी

ज्युतिआ का व्रत – संतान के लंबी आयू के लिए किया जानेवाला व्रत वैकल्प

छठपूजा – सूर्य देवता की पूजा

केहूनी – बाहू

भकलोल – मुर्ख

बदरंग – रंगिली

शुतुरमुर्ग – लंबी गर्दनवाला मुर्गे की जाति का बडा पक्षी

मसोसकर रह जाना– मन की भावों को मन मे दबा देना।

थोथना – छतीसगढी मुहावरा दु:खी होना।

बकलोल का पुछ – मतीमंद की पूछ ।

फुहँडफन – अश्लील, गंवार।

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्न के उत्तर

1. अ)	2. ब)	3. क)	4. क)	5. क)
6. ड)	7. अ)	8. ड)	9. क)	10. अ)

उचित मिलान

निम्नलिखित प्रश्नो का उचित मिलान किजिए।

प्रश्न 1. 'डार्क हॉर्स' के पात्रों का उचित मिलान किजिए

सूची - 1	सूची - 2
1. नायक	अ) गुरु
2. नायिका	ब) सत्तेदरशय
3. आदर्शपात्र	क) संतोष

4. गौणपात्र　　　　　　　　　　ड) पायल

उत्तर अ) 1 क) 2 ड)　　3 अ)　　4ब)

ब) 1 ड)

प्रश्न 2. प्रसिध्द साहित्यकार नीलोपाल मृणाल से जुडे तथ्यों का मिलान किजिए

सूची 1	सूची 2
1. नाम	अ) साहित्यअकादमी
2. जन्म	ब) औघड
3. उपन्यास	क) 1984
4. पुरस्कार	ड) नीलोत्पाल मृणाल

टार

उत्तर –

सही गलत

1) रायसाहब हमेशा गुरु के सामने बचाव मुद्रा में रहता है।

2) संतोष के पिताजी व्यापारी थे।

3) पायल यह पात्र आदर्शपात्र हैं।

4) कमलादेवी संतोष की माँ थी।

5) संतोष मांस मच्छी खाता था।

6) भरतकुमार आदर्शपात्र हैं।

7) वैजू शूक्ला अध्यापक थे।

8) विमलेंदू बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी से पास था।

9) मनमोहिनी वर्मा संतोष की प्रेमिका थी।

10) मयुराक्षी से गुरु प्यार करता था।

स्वयं अध्ययन प्रश्नो के उत्तर

1. अ　　2. क　　3. ब　　4. क　　5. क

6. ड 7. अ 8. ड 9. क 10. अ

उचित मिलान

क) निम्नलिखित अवतरणो की संदर्भ व्याख्या किजिए

1. ''एतना विहाने - असनान धयान हो रहा है, कहा का जतरा है मास्टर साब?'' खैनी रगडते हुए ठाकूर जी ने पूछा। ....हां बी.ए कर लिया। यही भागलपूर टीएन बी कॉलेज से कराए अब बोला एम.ए. पीएच.डी का डिग्री जमा करके का होगा ई जुग में सो दिल्ली जाते है, आईएएस का तैयारी करेंगे।

2. ''देख लो सामान सब एक बार अच्छा से कूछू छूटा त नही है?''

3. ''वो सामने से मिल रहा है पकड लो'' भइया मूखर्जी नगर बत्रा चौक पर रोक दिजिएगा।''

4. ''अंदर तो आइए उपर थर्ड फ्लोर पर ही अपना इसमें चार फ्लोर है, आठ लडका रहता है, सब फ्लोर पर पच्चीस गज का कमरा है। देखिएगा थोडा सीढी पर सर बचाकर चढिएगा।''

5. देखिए संतोष जी पहली बात तो ये है की हरामी होना उम्र निरपेक्ष है। आदमी किसी भी उम्र में बुरा हो सकता है कोई छोटा बच्चा से ज्यादा बुरा हो सकता है तो कोई बूढा उस बच्चे से ज्यादा बुरा हो सकता है ये तो परिस्थतीजन्य अवस्था है.... यी गलती दुनिया के कई इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों ने की वही गँलती आप दुहरा रहे है जो किसी सिविल सेवा की तैयारी करनेवाले छात्र से तो कतई नहीं होनी चाहिए''

6. ''अरे हम तो अभी ई हां साला लाल किला में है महाराज, चचा को घुमाने लाये है''

7. ''केतना साल पहले बे कोनो आजे का बना है, का अच्छा छोडो देखो ये यही से झंडवा फहराते है न मनमोहन सिंह?

8. चलिए ये पेन ड्राइव लिजिए और कोई दस- बीस ठो हॉलीवूड का फिल्म डालिए इसमें

9. ''गोरेलाल को लडकियों मे उतनी रुचि थी जितनी तेंदूलकर को क्रिकेट में।

10. ''नहीं बताइए सीधे बोर्ड देखने को कह दिया फिर पूछताछ काऊंटर का औचित्य ही क्या हैं? क्या जंगलराज हैं। यहाँ अरे जब हम लोग को ऐसा जबाब मिलता है, तो बताइए आम आदमी का क्या होता होगा?

11. भाई जी रहने दिजिए किसका किस्सा उठा दिए! अरे नचवा के रख दी हमको हम साला फुली बकलोल का पूंछ बन रहे। उसने तीन बायफ्रेंड को लात मारने के बाद हमारा नंबर लगाया था।

12. आप अब इतना भी खुद को शर्मिंदा न करिए अरे अभी तो आज ही आप को क्या पता एक आईएएस के छात्र को किस एंगल से सोचना चाहिए हम लोग भी शुरु में ऐसी ही सोचते थे पर धीरे – धीरे खुद को बदले आपका भी हो जाएगा।''

13. ''क्या किरपा बाबू आप जैसा विद्यार्थी लोवर फोवर के चक्कर मे पडे हैं? अरे! आप आईएएस पर फोकस होइए महाराज।

14. ''अबे! जरा लेई जाओ बेटा चाय एकदम छोछर लग रहा है शुक्ला जी का थी क्वालीटी गिर रहा क्या? अब इलाहाबाद वाला चाय यहाँ कही नहीं मिलता रुस्तम भाई।

15. ''रुमवा खोजना है संतोष के लिए रायसाहब ने कहाँ अच्छा रुम का लफडा है चलिए चलते है जल्दी से मुहँ हाथ धो लेते हैं।

16. ''कौन, उ रुस्तमसिंह! उ नेतवा! का भाई मेरे कउन बकचोद के चक्कर में पडे है! उ फरजी के भौकाल टाइट किए कहता है, चचवा के इंटरव्यू के फसल अपने काटता है कहानी सुना सुनाके किचाइन कर देता है महाराज।''

17. ''सुनिए गुरु को थैंक यू बोलने से काम नही चलता गुरु को थैंक्स का मतलब होता है, कि कुछ रंग बिंरगा पानी बरसना चाहिए।''

18. आप क्या विषय रखिएगा कुछ सोचे है संतोष जी? इतिहास से बी.ए हूँ वही रख लेंगे एक तो दूसरा आप ही मार्गदर्शन कर दिजिए।

19. ''ये बीयर वाला कार्टन और दारु वाला बोतल थोडा ठीक से ले जाइएगा रहने दिजिए कोई औपचारिकता थोडे है, आप इतना खर्च कर रहें है।''

20. ''ये साले चुतिए राय और मनोहर जिसे तिसे फसाते रहते है यार तु अभी अभी आए हो तुंरत रफतार पकड लिए व्यक्तित्व का लुचीला होना और गीला होना दोनो अलग अलग बाते है मित्र!''

21. मुझे देखिए ओकेजनली पीता हूँ पर आज तक पीने के बाद कूछ भी अनैतिक न किया बोल आत्मनियंत्रण होना चाहिए। फिर आप चाहे कुछ भी पीजिए! दारु चरित्र ही खराब करता है आदमी खुद अच्छा था खराब होता है।''

22. हमारे चाचा आनेवाले है एकदम ध्यान से उतर गया उन्ही को लेने आ गया हूँ स्टेशन।''

23. छि. छि! ट्रेनवा में बाथरुम जाने लायक है का? कैसे घुसता है लोग उसमें ।''

24. चाहिए, अब आप हम जैसो को आईएस बना रही है, ज्यादा बडा काम है।''

3.8 स्वाध्याय :–

3.8.1 दिर्घोत्तरी प्रश्न

1. नीलोपाल मृणाल का व्यक्तित्व कृतित्व लिखिए।
2. डार्क हॉर्स का प्रमुख पात्र संतोष का चित्र चित्रण करे।
3. मनाहेर का चरित्र चित्रण करें।
4. पायल का चरित्र चित्रण करें।
5. मनोहर के चाचा का चरित्र चित्रण करें।
6. आदर्शवादी पात्र गुरुराज सिंह का चित्रण करें।
7. डार्क हॉर्स उपन्यास की भाषा शैली का विवेचन करें।
8. रायसाहब का चरित्र चित्रण करें।
9. प्राध्यापक प्रफुल बटोलिया का चित्रण करें।
10. भरत कुमार के स्वभाव का चित्रण करें।
11. क्लास की क्लार्क मनमोहीनी का स्वभाव का चित्रण करें।
12. प्रोफेसर दु:खमोचन का चित्रण करे।
13. रुस्तमसिंह के स्वभाव के गुण दोष बताइए।
14. विमलेंदू के स्वभाव गुण बताइए।
15. विदिशा के व्यक्तित्व का चित्रण करे।
16. पायल के गूण दोष बताकर उसका चित्रण करें।
17. कमलादेवी का चरित्र चित्रण करें।
18. बैजू शुक्ला का स्वभाव गुण दोष स्पष्ट करें।
19. विनायक बाबू अर्थात संतोष के पिताजी के स्वभाव का चित्रण करें।
20. गोरेलाल पात्र का चित्रण करें।

3.9 **क्षेत्रिय कार्य –**

1. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के पात्रो की संवाद योजना छात्रो के द्वारा कर दिजिए।
2. संतोष, गुरु और रायसाहब के संवादो की लघूपट बनाकर छात्रो द्वारा मंचपर प्रदर्शन करे।

3.10 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए**

1. 'औघड' उपन्यास हिंदयुक्त प्रकाशन नई दिल्ली
2. यार जादुगर – निलोपाल मृणाल

❑❑❑

इकाई –4
1. डार्क हॉर्स उपन्यास की भाषा–शैली
2. डार्क हॉर्स उपन्यास का उद्देश्य

अनुक्रम –

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

 4.3.1 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की भाषा–शैली

 4.3.2 'डार्क हॉर्स' उपन्यास का उद्देश्य

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप –

1. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की भाषा से परिचित होंगे।
2. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की शैली से परिचित होंगे।
3. सिविल सेवा अभ्यर्थियों के मानसिकता और मनोविज्ञान से परिचित होंगे।
4. कोचिंग संस्थानों की धोखाधड़ी से परिचित होंगे।
5. छात्र जीवन की अनगिनत अनकही कहानियों से परिचित होंगे।

4.2 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास विधा एक सशक्त प्रभावशाली और सबसे महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है। यह एक ऐसी गद्य विधा है, जिसमें मानवीय जीवन का सर्वांगीण चित्रण सूक्ष्मता एवं वास्तविकता के साथ किया जाता है। नीलोत्पल मृणाल के द्वारा लिखित 'डार्क हॉर्स' उपन्यास इस बात का सही प्रमाण माना जाता है। 'डार्क हॉर्स' नीलोत्पल मृणाल का प्रथम उपन्यास है। 'डार्क हॉर्स' महज़ एक उपन्यास भर नहीं है, बल्कि छात्र जीवन की अनगिनत अनकही कहानियों का ऐसा दस्तावेज है, जो यथार्थ के धरातल पर एक तरफ सफलता के आस्वाद को चिन्हित करता हुआ एक अदद नौकरी के लिए सिविल सर्विस को ही पैमाना मानता है, तो वहीं दूसरी तरफ बी.ए., एम.ए., पीएच.डी की डिग्रियां हासिल करने के बाद भी उसी एक अदद नौकरी के न मिलने पर हमारी शिक्षा व्यवस्था पर कई सवाल भी उपस्थित करता है। इस उपन्यास में लेखक ने भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी में व्यतीत की गयी जिंदगी के अनुभवों को कुछ पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। लेखक ने दिल्ली के मुखर्जी नगर में प्रशासनिक परीक्षा की तैयारी करने के लिए आए छात्रों के जीवन के हर पहलू को बारीकी से रेखांकित किया है। अलग-अलग शहरों से आयें युवाओं की सफलता में नीलोत्पल मृणाल ने अपनी खुशी जाहिर की है और उनकी असफलताओं में दुःख भी व्यक्त किया है। इस उपन्यास की टैग लाईन है 'एक अनकही दास्तां' जिसे लेखक ने सत्ताईस भागों में संयोजित किया है।

4.3 विषय-विवेचन

हिंदी साहित्य में जिन साहित्यकारों ने अपने साहित्य-सृजन से जो अमीट छाप छोड़ दी है उनमें नीलोत्पल मृणाल का महत्वपूर्ण स्थान है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के कारण नीलोत्पल मृणाल ने साहित्य की उपन्यास, कविता, गीत, भोजपुरी कविता और गीत, ऑडियोबुक श्रृंखला आदि सभी विधाओं में लेखन कार्य किया है। हिंदी उपन्यास साहित्य में नीलोत्पल मृणाल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय रहा है। उनके उपन्यास साहित्य में विषय वस्तु की विविधता दिखाई देती है, जिसमें व्यक्ति, घटना, वातावरण, भाव, विचार और समस्या इन सभी को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के लिए उन्हें सन् 2016 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया है। नीलोत्पल मृणाल 21 वीं सदी की नई पीढ़ी के सर्वाधिक लोकप्रिय लेखकों में से एक है, जिनमें कलम के साथ-साथ राजनैतिक और सामाजिक मुद्दों पर जमीनी रूप से लड़ने का तेवर भी दिखाई देता है। इसलिए इनके लेखन में सामाजिक विषमताएँ, विडम्बनाएँ और आपसी संघर्ष बहुत स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। उन्होंने प्रस्तुत उपन्यास में हिंदी माध्यम से तैयारी करने वाले तथा दिल्ली के मुखर्जी नगर में रहने वाले प्रतियोगी परीक्षा यू.पी.एस.सी की तैयारी करनेवाले संघर्षरत छात्रों की यात्रा की जीवंत तस्वीर उकेरी है। अतः हिंदी साहित्य में नीलोत्पल मृणाल की पहचान एक संभावनाएँ जगाने वाले लेखक के रूप में हैं।

4.3.1 'डार्क हॉर्स' की भाषा–शैली

साहित्य के संप्रेषण में अनुभूति पक्ष जितना महत्वपूर्ण होता है, उतना ही अभिव्यक्ति पक्ष भी महत्वपूर्ण होता है। इस अभिव्यक्ति पक्ष की महत्वपूर्ण महतम इकाई भाषा है। साहित्यकार जब साहित्य सृजन करता है तब वह अपने भावों, विचारों, जीवनानुभवों और संवेदनाओं को भाषिक अभिव्यक्ति के माध्यम से ही समाज के सामने प्रस्तुत करता है। 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की भाषा में संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, देशज, विशुद्ध, द्विरक्त तथा अनुकरणात्मक जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। कलात्मक, प्रतीकात्मक भाषिक गठन के साथ सहज-सरल अभिव्यक्ति नीलोत्पल मृणाल की पहचान है। उन्होने परिवेश का चित्रण करते समय भाषा का सफल प्रयोग किया है। लेखक ने शहरी एवं ग्रामीण दोनों परिवेश में प्रयुक्त होनेवाली भाषा का प्रयोग किया है। नीलोत्पल मृणाल ने इस उपन्यास को मूलतः लोक भाषा के प्रयोग से जीवंत करने का सार्थक प्रयास किया है। उन्होंने भूमिका में ही स्पष्ट किया है कि इसमें भाषा को नहीं सत्य को चुना गया है। 'डार्क हॉर्स' में प्रयुक्त भाषा की विशेषताओं का विवेचन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है–

1. **बिहारी और पूर्वी हिंदी का लहजा :**

'डार्क हॉर्स' में लेखक ने बिहारी और पूर्वी उत्तर प्रदेश की भाषा का लहजा प्रस्तुत किया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्रस्तुत उपन्यास के अधिकतर पात्र बिहार और उत्तर प्रदेश की पृष्ठभूमि से जुड़े हुए हैं। भाषा का लहजा और गीत पूरी तरह से बिहारी और पूर्वी उत्तर प्रदेश से मिलते-जुलते हैं। जिसमें एक अलग प्रकार की मिठास दिखाई देती है। जैसे -

'फोनवा नहीं लग रहा था आपका, अजी संतोष जी का एडमिशन करवा दिए हैं।'

'ऊ बात तो ठीक बोला। हाँ, यहाँ कुछ भविस नै है। खाली एम.ए., बी.ए. के पूछता है आजकल!'

'अबें जरा माचिस लेई आओ बेटा।'

2. **काव्यात्मकता एवं गीतों का प्रयोग :**

नीलोत्पल मृणाल ने यथार्थ को यथासंभव समग्रत: अनुभव करने के लिए उपन्यास की भाषा में काव्यात्मकता एवं गीतों का अधिक प्रयोग किया है। लेखक ने सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों की मनोवृत्ति को दिखाने के लिए अलग-अलग प्रकार के गीतों का प्रयोग किया है। निम्नलिखित पंक्तियों में काव्यात्मक भाषा एवं गीतों के उदाहरण प्रस्तुत किए है–

काव्यात्मकता– 'वाह मनोहर जी जाकि रही भावना जैसी, प्रभू मूरत देखी तिन्ह तैसी।'

'जाकि देखी पोस्टर जैसी, ऊहाँ एडमिशन लिया कराया।'

भोजपुरी लोकगीत– पटना से पाजेब बलम जी, आरा से होंठलाली.मंगाई द छपरा चुनरिया छींट वाली।

''हँसी हँसी पनवा, खिलऊले गोपीचनवा

तऽ अपने तऽ गईले बिदेश

कोरी रे चुनरिया में दगिया लगाई गईले

लगाई के करेजवा में ठेस।''

'करिके गवनवा भवनवा में छोड़ी कर

अपने परईलन पुरबवा बलमुआ

साँवली सुरतिया सालत बाटे छतिया में

एको नाही पतिया भेजवल बलमुआ

कहत भिखारी नाई आस नइखे एको

पाई हमरा से धोखे के दीदार हो बलमुआ''

3. गाली–गलौज की भाषा

नीलोत्पल मृणाल के द्वारा लिखित 'डार्क हॉर्स' एक अत्यंत ईमानदार प्रयास है जिसके पात्र असल परिस्थितियों में अपनी भाषा बोलते और झूझते हैं। प्रस्तुत उपन्यास के कुछ पात्र गालियाँ देते हुए नजर आते हैं। यह भाषायी शुचिता के पहरेदारों को नागवार लग सकता है। लेकिन प्रसंगों में बहुत मजा देता है। इस उपन्यास की एक सबसे महत्वपूर्ण और खास बात यह है कि लेखक ने कही पर भी अपने किरदारों की जुबान नहीं काटी है। किरदारों ने जब चाहा, जो चाहा बोल दिया है। जैसी गाली देनी चाही दे दी है। लेखक ने भी ठीक वैसे ही उसे लिख दिया है। इसलिए वे शब्द, शिल्प, बिंब आदि के साहित्यिक पैमानों से बरी हो जाते हैं। किरदारों के साथ ऐसा इंसाफ यथार्थ लेखन में ही संभव है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में गाली–गलौज की भाषा का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है। कुछ स्थानों पर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करनेवाले छात्र अपनी निराशा और भड़ास को निकालने के लिए गाली–गलौज का प्रयोग किया है। जिसके उदाहरण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है –

'कुछ नई जी, टोकन नूँ घुस रहा था लौंडा।'

'हाँ साला यहां का बुड्ढ ा लोग बड़ा हरामी टाइप है हो रायसाहब।'

'साला कितना हरामी हैं यहां प्रापर्टी डीलर।'

'भोसडी के जब इज्जत ही नहीं बचेगा तो का उखाड़ेंगे आईएएस बन के।'

'पगला गए हो का यार, का बकचोदी बक रहे हो।'

4. शब्द योजना :

'डार्क हॉर्स' में नीलोत्पल मृणाल ने विविध भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। जिसमें प्रमुख है – संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, अरबी, उर्दू, देशज, विशुद्ध, द्विरक्त तथा अनुकरणात्मक आदि जैसे शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने अंग्रेजी भाषा के शब्दों को सर्वाधिक प्रधानता दी है। प्रस्तुत उपन्यास का अध्ययन करने से पता चलता है कि इसमें अंग्रेजी भाषा के शब्दों की भरमार दिखाई देती है। जैसे– अंग्रेजी शब्द– बेसिक, स्टार्ट, लेफ्ट, फेल, फुल वॉल्यूम, एडजस्ट, सिलेबस,

वालपेपर, कम्फ़र्टेबल, डिस्कशन, सब्जेक्ट, माइंड आदि। अरबी शब्द– महफ़िल, इत्मीनान, अबीर, उर्दू शब्द– दावत, फारसी शब्द– कारीगरों, कमीनेपन, इज्जत आदि।

5. **मुहावरों और कहावतों का प्रयोग :**

मुहावरे और कहावतें प्रत्येक भाषा का अक्षय भंडार होती है। इनमें समाज की समग्र जीवनानुभूति संचित होती है। मुहावरे और कहावतें भाषा में प्रवाहमयता, अर्थवत्ता, चुस्ती तथा सप्राणता प्रवाहित करते हैं। यह भाषा में चैतन्य उत्पन्न करते हैं। साहित्य में मुहावरे और कहावतों की आवश्यकता अधिक होती है। जब सामान्य ढंग से बात कहने पर उद्दिष्ट का प्रभाव नहीं पड़ता ऐसी स्थिति में साहित्यकार के लिए मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों का प्रयोग अधिक सहायक होता है। 'डार्क हॉर्स' की भाषा में कहीं पर भी बनावटीपन नहीं है। मुहावरों एवं कहावतों के प्रयोग से प्रस्तुत उपन्यास की भाषा में स्वाभाविकता और मिठास आयी है। जैसे–

'कल करे सो आज कर।' 'फर्स्ट इंप्रेशन इज द लास्ट इंप्रेशन।' 'जो जीता वहीं सिकंदर।' 'मुगलिया दावत' आदि जैसे मुहावरे, कहावतें और लोकोक्तियों के माध्यम से लेखक ने अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

शैली :

साहित्यकार जिस प्रकार से अपनी कृति को आकर्षक और प्रभावशाली बनाने के लिए अपने विचारों एवं भावों को जिस ढंग से अभिव्यक्त करता है उसी को शैली कहते हैं। लेखक के भावों की अभिव्यक्ति का नाम ही शैली है। शैली को साहित्य की अभिव्यक्ति का कला पक्ष भी कहा जाता है। प्रत्येक रचनाकार की शैली में अंतर होता है। उसकी अपनी स्वतंत्र शैली होती है और यह शैली उसके विचार, भाव, स्वभाव, कल्पना, संस्कार, प्रतिभा और जीवन दृष्टि के अनुरूप अभिव्यक्त होती है। 'डार्क हॉर्स' की सफलता बहुत कुछ उनकी शैली पर निर्भर करती है। जिसका विवेचन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है–

1. **वर्णनात्मक शैली :**

उपन्यास साहित्य में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में होता है। किसी घटना, स्थिति या पात्र आदि को स्पष्ट करने के लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। साहित्यकार की सर्वज्ञता और प्रत्येक पात्र के भावनाओं की अभिव्यक्ति आदि गुण वर्णनात्मक शैली में होते हैं। 'डार्क हॉर्स' में अनेक स्थानों पर वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। जिसके उदाहरण निम्नांकित रूप में प्रस्तुत है –

'गांधीजी के साथ यह अजीब विडंबना आज तक रही थी कि जिस देश ने इन्हें बापू कहा, उसी अपने देश ने इन्हें सबसे कम पढ़ा था। इनके बारे में सबसे कम जानना चाहा था।'

'हाँ मनोहर भाषा तो सब जरूरी है, अँग्रेजी व्यापार की भाषा है, उर्दू प्यार की भाषा है और हिंदी व्यवहार की भाषा है।'

2. **संवादात्मक शैली :**

किसी भी साहित्य में संवादों का विशेष महत्व होता है। पात्रों के मध्य बातचीत एवं मनोभावों को व्यक्त करने के लिए संवादात्मक शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है। 'डार्क हॉर्स' में अनेक स्थानों पर संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में संवादात्मक शैली के प्रसंग आकर्षक एवं प्रभावशाली रूप में चित्रित हुए हैं। नीलोत्पल मृणाल ने 'डार्क हॉर्स' में संवादों का प्रयोग पात्रों का चरित्र-चित्रण, कथानक का विकास और मौजूदा परिवेश को स्पष्ट करने के लिए किया है।

3. **नाटकीय शैली :**

नाटकीय शैली साहित्य और थिएटर की मुख्य श्रेणियों में से एक है। यह उन कार्यों को शामिल करता है, जो मानव स्थितियों और संघर्षों के प्रतिनिधित्व के माध्यम से जनता को रोमांचित करता है। 'डार्क हॉर्स' में नाटकीय शैली का प्रयोग हुआ है। इसमें फिल्मी और बॉलीवुडीय नाटकीयता है। उसी नाटकीयता में गांव से आए चाचा भी है, जो दिल्ली दिखाने की जिद्द करते हैं। उसी में ग़रीबी भी है, गांव की बिकती हुई जमीन भी है। कई दफा हो जाने वाला नवयुवकीय प्रेम भी है। संक्षेप में प्रस्तुत उपन्यास में कई स्थानों पर नाटकीयता से युक्त प्रसंगों का दर्शन होता है।

4. **आलोचनात्मक शैली :**

आलोचनात्मक शैली में किसी वस्तु, विषय की, उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उसके गुण-दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचन किया जाता है। 'डार्क हॉर्स' में नीलोत्पल मृणाल ने अनेक स्थानों पर आलोचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। जैसे - 'अँग्रेजी में बोलना - लिखना ही ज्ञान है क्या? अगर ऐसा होता तो अमेरिका और इंग्लैंड में तो स्कूल ही नहीं होना चाहिए था, वहां तो बच्चे बचपन से ही अंग्रेजी बोलते हैं। इंग्लैंड में बर्गर बेचने वाले को यहां आईएएस बना देना था क्योंकि वो तो अंग्रेजी बोलता है।'

'ये लड़की बोल्ड नहीं, क्लीन बोल्ड है।'

संक्षेप में 'डार्क हॉर्स' की भाषा-शैली आम लोगों के इतने करीब है कि वह तुरंत पाठकों से जुड़ जाती है। नीलोत्पल मृणाल ने इस उपन्यास में भाषा को बड़ी ही चुटीले और सहज अंदाज में प्रस्तुत किया है। इसमें वास्तविकता का सृजन है कहीं पर भी कला पक्ष का लेश मात्र नहीं है।

4.3.2 'डार्क हॉर्स' के उद्देश्य

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास विधा अन्य गद्य विधाओं की तुलना में प्रारंभ से ही मानवीय जीवन और जगत का यथार्थ चित्रण करनेवाला एक सशक्त माध्यम बना है। विद्वानों और समीक्षकों के अनुसार हर रचना के लेखन के पीछे उसके रचनाकार का कोई-न-कोई विशिष्ट उद्देश्य या ख़ास दृष्टिकोण रहता है। बिना उद्देश्य के कोई भी रचना साकार ही नहीं हो सकती, यही कारण है कि उपन्यास में उद्देश्य तत्व अवश्य उपस्थित रहता है। चाहे वह उद्देश्य मनोरंजन करना हो या मानवीय जीवन जगत के अस्तित्व का बोध कराने वाला हो इस प्रकार उपन्यास में उद्देश्य तत्व अनिवार्य रहा है। वर्तमान समय के उपन्यासकारों की धारणाएं,

कल्पनाएं, जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण, बदलते जीवन मूल्य, बदलता सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश, नक्सली एवं आतंकी गतिविधियां, निजी जीवन से लेकर पारिवारिक जीवन तक की जटिलताएं, बदलते रिश्ते-नाते, स्त्री-पुरुषों के बीच के बदलते संबंध आदि नई-नई समस्याएं औपन्यासिक रचनाओं की निर्मिति के लिए विषयगत सामग्री प्रदान कर रही हैं। जिसमें वर्तमान युगीन उपन्यास जीवन की बहुमुखी यथार्थ का प्रतिबिम्ब बनकर उपस्थित होता हुआ दिखाई देता है। आलोच्य उपन्यास 'डार्क हॉर्स' इस बात का सही प्रमाण है। 'डार्क हॉर्स' हिंदी में लिखा गया इक्कीसवीं सदी के द्वितीय दशक का सबसे लोकप्रिय उपन्यासों में से एक है। हिंदी माध्यम से सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करनेवाले अभ्यर्थियों के जीवन का इतना सजीव चित्रण आज तक किसी अन्य पुस्तक में नहीं हुआ है। देश की सर्वोच्च सम्मानित परीक्षा की तैयारी करनेवाला अभ्यर्थी केवल एक अभ्यर्थी ही नहीं होता है, बल्कि उसकी गोद में बहुआयामी जीवन शैली और संघर्ष भी होता है। उसी संघर्ष की कहानी को पाठकों तक पहुंचाना नीलोत्पल मृणाल का प्रमुख उद्देश्य रहा है। यह उपन्यास विशेष रूप से मुखर्जी नगर, दिल्ली की पृष्ठभूमि में गांवों और कस्बों से बाहर निकलने और शहरी जीवन से निपटने की असामान्य उदासी को दर्शाता है।

देश के हर युवक का सपना एवं ख्वाहिश होती है कि वे भी लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी से प्रशिक्षित होकर देश की सेवा करें। इसी सपने को साकार करने के लिए लाखों युवा प्रति वर्ष यूपीएससी और पीसीएस की परीक्षा देते हैं। किंतु हर कोई इस सपने को हकीकत में नहीं बदल सकता। सच कहा जाए तो उन लाखों बच्चों में से कुछ सौ डेढ़ सौ बच्चे ही अपने इस सपने को साकार करते हैं। जिन्होंने अफसर बनने के सपने को साकार करने की क़सम खाईं है, वे कहां असफलताओं से पीछे हटते हैं। वे फिर लग जाते हैं परीक्षा की तैयारी में नयी सीख और नयी उम्मीद के साथ। अफसर बनने के सपने को हकीकत बनाने के लिए हर युवा अपने हिसाब से मेहनत करता है। उन्हीं मेहनतकश युवाओं की संघर्षरत कहानी को चित्रित करना लेखक का प्रधान लक्ष्य रहा है।

वर्तमान समय में कोचिंग संस्थानों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की खामियों को ओर इशारा करती है। देश में अधिकतर प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम स्नातक स्तर के ही होते हैं। यह बात सोचनीय है कि छात्र स्नातक करने के बावजूद उसी स्तर की परीक्षाओं में सफलता के लिए कोचिंग संस्थानों का सहारा लेता है और मां-बाप की कठिन कमाई को लुटाता है। जहां एक ओर कई बच्चे स्वयं अध्ययन करके परीक्षा देते हैं, तो दूसरी ओर काफी बच्चे कोचिंग संस्थानों की मदद लेकर पढ़ाई करते हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के मुखर्जी नगर को यूपीएससी की तैयारी का गढ़ माना जाता है। ये बच्चे किस प्रकार मुखर्जी नगर और उसके आसपास के इलाकों में रहकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करते हैं। लेखक ने तैयारी में आनेवाली मुश्किलों को उनके सुख-दुखों की कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत उपन्यास में बच्चों के कोचिंग संस्थानों के चुनाव में आनेवाली कठिनाइयाँ, संस्थानों के आचार-विचार, शिक्षण प्रणाली के संदर्भ में विस्तार से समझाने का सफलतापूर्वक प्रयास किया है। साथ ही लेखक ने प्रिपरेशन के विभिन्न पहलुओं और समस्याओं का भी बड़ी सूक्ष्मता से विश्लेषण किया है। बाजार जाकर ठेला-भर किताबें खरीदना, सुंदर चेहरों पर लार-टपकाना, विषयों के चयन में लापरवाही बरतना, तैयारी को

पंचवर्षीय योजना समझ कर चलना और सफलता को सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ने वाली प्रक्रिया मानकर चलना आदि पर बड़े सहज तरीके से अपने अनुभव-बम गिराए हैं।

प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करनेवाला छात्र समाज के पढ़े-लिखे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन जी तोड़ मेहनत करने के बावजूद जब उसे असफलता हाथ लगती है, तो वह तनाव में आता है। इस तनाव के संदर्भ में न वह अपने परिवार से बात कर पाता है और न ही अपने शिक्षकों से। सिविल सेवाओं की तैयारी करने वाले युवाओं का तनाव संतोष के इस कथन से साफ-साफ दिखाई देता है। लेखक लिखते हैं- ''बहुत चुतिया फील्ड है यूपीएससी पढ़कर मर गये साला पर पीटी नहीं हुआ।'' सिविल सेवा की परीक्षा में असफलता मिलने पर छात्र निराश होते हैं। अवसादग्रस्त मानसिकता में चले जाते हैं। निराश और अवसादग्रस्त मानसिकता से अपने आप को किस प्रकार बाहर निकालना है और सकारात्मक रहकर पुनः परीक्षा की तैयारी में जुड़ने का हौंसला देने में नीलोत्पल मृणाल को काफी हद्द तक सफलता प्राप्त हुई है। यह उपन्यास उस हर युवा की आत्मकथा है, जो सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करता है। नीलोत्पल मृणाल स्वयं भी सिविल सेवा की तैयारी करते थे, इस लिहाज से यह उनकी भी आत्मकथा है।

'डार्क हॉर्स' के माध्यम से लेखक ने सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी करनेवाले युवाओं की सामाजिक और पारिवारिक संघर्ष को भी जीवंतता प्रदान की है। लेखक ने पात्रों को इतने सलीके से गढ़ा है कि वे सीधे पाठकों के अंतःकरण में प्रवेश करते हैं। संतोष की मां एक मध्यमवर्गीय ग्रामीण परिवारों के अभिभावकों का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने बच्चे को आज के भूमंडलीय समाज में एक सम्मानजनक नौकरी पाने का सपना अपनी आंखों में संजोकर रखती है। जिसकी पलकें बेटे के सपने के साथ खुलती हैं और बंद होती है। वह अपने बेटे के खर्च के लिए अपने जेवर तक गिरवी रखती है। लेखक लिखते हैं- ''देखना उदास मत होना, खूब पढ़ना बढ़िया से, यहां का चिन्ता एकदम नहीं करना, खर्चा के भी मत सोचना, सब भेजेंगे पापा, तुम बस जल्दी खुशखबरी देना।'' मां-बाप अपनी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बावजूद अपने बच्चों को हौसला देने का काम करते हैं। जावेद की मां पति के न होते हुए भी बेटे की तैयारी के लिए जमीन बेचती है। बीमार होने के बावजूद वह अपना इलाज न करते हुए सारा पैसा बेटे की पढ़ाई के लिए दिल्ली भेजती है। उपन्यास में यह भी दर्शाया है कि किस तरह से परिवार के लोग शुरूआती दिनों में प्रतियोगी छात्रों के प्रति उत्साही और सहयोगी होते हैं। लेकिन उनका यह उत्साह और सहयोग समय के साथ धीरे-धीरे निरुत्साह में परिवर्तित होता है। जिसे बड़े ही बारिकी के साथ लेखक ने चित्रित किया है। संक्षेप में लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से युवाओं के परिवारों की मानसिकता और संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने का सार्थक प्रयास किया है।

लेखक ने उपन्यास में यह भी दिखाने की कोशिश की है कि आज के युवाओं की संवेदनाएं किस तरह से मर रही है। आज लड़के और लड़कियों के बीच विकसित होने वाले संबंध पूरी तरह से उपयोगिता के सिद्धांत पर केंद्रित है। लड़कियाँ उन्हीं को पसंद करती हैं, जो उनके लिए परीक्षा संबंधी नोट्स तैयार करके दे सकें और नोट्स मिलने के बाद वे दूध में पड़ी मक्खी की तरह लड़कों को बाहर निकालकर फेंकती है। लड़के भी इसके लिए पूरी तरह से तैयार रहते हैं। गुरु और मयूराक्षी के बीच कुछ इसी तरह का संबंध

विकसित होता है जहां न प्रेम है न ही दोस्ती जैसा कोई रिश्ता। भूमंडलीकरण के दौर में संवेदनाएं धीरे-धीरे किस प्रकार समाप्त हो रही है इसको दिखाना भी लेखक का प्रधान उद्देश्य रहा है।

अतः नीलोत्पल मृणाल ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि यदि आप एक जगह सफल नहीं हुए तो ज़रूरी नहीं कि आप जीवन भर असफल ही हो। जिंदगी मनुष्य को दौड़ने के लिए कई रास्ते देती है, जरूरी नहीं कि सब एक ही रास्ते दौड़े। आज विश्व में बहुत सारे ऐसे रोजगार के क्षेत्र है जहां हमें अपना करिअर करने के बारे में सोचना चाहिए।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

i) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'डार्क हॉर्स' नीलोत्पल मृणाल का .... उपन्यास है।

   अ) प्रथम   ब) द्वितीय   क) तृतीय   ड) चतुर्थ

2. .... छात्र जीवन की अनगिनत अनकही कहानियों का दस्तावेज है।

   अ) औघड़   ब) डार्क हॉर्स

   क) अप्रत्याशित विजेता   ड) यार जादूगर

3. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास .... भागों में संयोजित है।

   अ) बीस   ब) पच्चीस   क) सत्ताईस   ड) तीस

4. मुखर्जी नगर .... शहर में स्थित है।

   अ) मुंबई   ब) इलाहाबाद   क) भागलपुर   ड) दिल्ली

5. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के अधिकतर पात्र बिहार और .... की पृष्ठभूमि से जुड़े हुए हैं।

   अ) मध्य प्रदेश   ब) अरुणाचल प्रदेश

   क) उत्तर प्रदेश   ड) राजस्थान

6. 'डार्क हॉर्स' में .... भाषा के शब्दों की भरमार है।

   अ) ऊर्दू   ब) अंग्रेजी   क) मलयालम   ड) मराठी

7. .... को यूपीएससी की तैयारी का गढ़ माना जाता है।

   अ) मुखर्जी नगर   ब) गांधी नगर   क) नेहरू नगर   ड) आंबेडकर नगर

8. जिंदगी मनुष्य को दौड़ने के लिए कई .... देती है।

   अ) किताबें   ब) पत्रिकाएं   क) रास्ते   ड) योजनाएं

9. यूपीएससी से तात्पर्य .... है।

   अ) संघ लोकसेवा आयोग   ब) राज्य लोकसेवा आयोग

क) प्रांतीय लोकसेवा आयोग ड) प्रोविंशियल सिविल सेवा

10. पीसीएस से तात्पर्य .... है।

अ) राज्य लोकसेवा आयोग ब) संघ लोकसेवा आयोग

क) महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग ड) राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा

11. आईएएस से तात्पर्य .... है।

अ) भारतीय प्रशासनिक सेवा ब) भारतीय पुलिस सेवा

क) भारतीय राजस्व सेवा ड) भारतीय वैज्ञानिक सेवा

12. आईपीएस से तात्पर्य .... है।

अ) भारतीय प्रशासनिक सेवा ब) भारतीय पुलिस सेवा

क) भारतीय राजस्व सेवा ड) भारतीय वैज्ञानिक सेवा

13. आईआरएस से तात्पर्य .... है।

अ) भारतीय प्रशासनिक सेवा ब) भारतीय पुलिस सेवा

क) भारतीय राजस्व सेवा ड) भारतीय वैज्ञानिक सेवा

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1. अनकही दास्तां – अव्यक्त कथा, अकथित कथा,
2. दस्तावेज – कागज़ात, प्रलेख
3. किरदार – चरित्र, पात्र
4. शुचिता – निष्कपटता, निर्दोषता, पवित्रता
5. यूपीएससी – यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन, संघ लोकसेवा आयोग
6. पीसीएस – प्रोविंशियल सिविल सेवा, राज्य/प्रांतीय लोकसेवा आयोग
7. अदद – संख्या, अंक , तादाद,
8. नागवार – अप्रिय, अरुचिकर
9. अकादमी – ज्ञान विज्ञान की उच्च शैक्षणिक संस्था
10. अवसादग्रस्त – निराशा, उदासीनता
11. अभिभावक – संरक्षक, देखरेख करनेवाला, आश्रय देनेवाला
12. प्रिपेरेशन – तैयारी करना

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. (अ) प्रथम	2. (ब) डार्क हॉर्स	3. (क) सत्ताईस
4. (ड) दिल्ली	5. (क) उत्तर प्रदेश	6. (ब) अंग्रेजी
7. (अ) मुखर्जी नगर	8. (क) रास्ते	9. (अ) संघ लोकसेवा आयोग
10. (अ) राज्य लोकसेवा आयोग		11. (अ) भारतीय प्रशासनिक सेवा
12. (ब) भारतीय पुलिस सेवा		13. (क) भारतीय राजस्व सेवा

4.7 सारांश

'डार्क हॉर्स' महज़ एक उपन्यास भर नहीं है, बल्कि छात्र जीवन की अनगिनत अनकही कहानियों का ऐसा दस्तावेज है, जो यथार्थ के धरातल पर एक तरफ सफलता के आस्वाद को चिन्हित करता हुआ एक अदद नौकरी के लिए सिविल सर्विस को ही पैमाना मानता है, तो वहीं दूसरी तरफ बी.ए., एम.ए., पीएच.डी की डिग्रियां हासिल करने के बाद भी उसी एक अदद नौकरी के न मिलने पर हमारी शिक्षा व्यवस्था पर कई सवाल भी उपस्थित करता है।

नीलोत्पल मृणाल ने शहरी एवं ग्रामीण दोनों परिवेश में प्रयुक्त होने वाली भाषा का प्रयोग किया है। जिसमें आधुनिक हिंदी को प्रधानता दी गई है।

'डार्क हॉर्स' में बिहारी और पूर्वी उत्तर प्रदेश की भाषा का लहजा, गाली-गलौज की भाषा, काव्यात्मकता एवं लोकगीतों का प्रयोग तथा अंग्रेजी भाषा के शब्दों की भरमार दिखाई देती है। इसके साथ ही वर्णनात्मक, संवादात्मक, नाटकीय तथा आलोचनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

नीलोत्पल मृणाल का यह उपन्यास आज के युवाओं की अंतरगाथा है। पारिवारिक और सामाजिक दबाव में आज का युवा किस तरह जकड़ा है, यह उपन्यास में बखुबी स्पष्ट किया है। नौकरी की आकांक्षा में आज का नवयुवक अपने परिवार सहित सर्वस्व कुर्बान करने के लिए तैयार है।

4.8 स्वाध्याय

अ) निम्नलिखित दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की भाषा - शैली पर प्रकाश डालिए।
2. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की भाषा - शैली का विवेचन कीजिए।
3. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
4. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास के उद्देश्य का विवेचन कीजिए।

आ) टिप्पणियाँ लिखिए।

1. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास की भाषा - शैली।

2. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास का उद्देश्य।

4.9 क्षेत्रीय कार्य

1. 'डार्क हॉर्स' उपन्यास और 'एस्पिरेंट वेब सीरीज' का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
2. प्रतियोगिता परीक्षाओं की सूची तैयार कीजिए।
3. प्रतियोगिता परीक्षाओं पर आधारित फिल्मों की सूची बनाइए।
4. 12^{th} फेल फिल्म की समीक्षा कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ :

1. पाठ्य–पुस्तक: डार्क हॉर्स – नीलोत्पल मृणाल, शब्दारंभ प्रकाशन, दिल्ली, 2015
2. समीक्षा : डार्क हॉर्स – आउटलुक, outlookhindi.com/art-and culture/review/novel-review-dark horse-1905
3. नव वैश्विक युवाओं की संघर्ष गाथा 'डार्क हॉर्स' – धर्मेंद्र प्रताप सिंह, जनकृति, बहु–विषयी अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, अंक 63, जुलाई –2020

❑❑❑